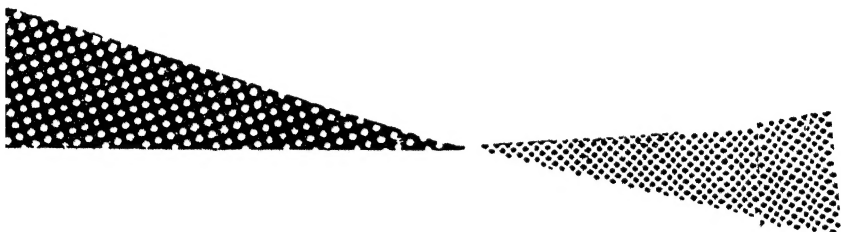


भारत

महान अमरीकी साहित्यिकों के चुने
हुए बीस श्रेष्ठ निबन्ध



राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

अनुवादक : वीरेन्द्रकुमार गुप्त

मूल्य

साधारण सस्करण : ~~प्रांश्व~~ रुपये

विशिष्ट सस्करण : छह रुपये

© हिन्दी संस्करण, 1968 राजपाल एण्ड सन्ज

SELECTED AMERICAN ESSAYS

CREATIVITY IN AMERICA, Aaron Copland Copyright 1953, by Aaron Copland; THE ETHICS OF A COUNTRY EDITOR, William Allen White From 'America Remembers', edited by Samuel Rapport and Patricia Schartle. Copyright 1956, by Samuel Rapport and Patricia Schartle, THE ART AND CRAFT OF THE MACHINE, Frank Lloyd Wright Reprinted by permission of the publisher, Horizon Press Inc. From 'The Future of Architecture' by Frank Lloyd Wright Copyright 1953; OLD TIME REVIVAL MEETING, Hartzell Spence Copyright 1943, by Hartzell Spence. All rights reserved under international Copyrights conventions, HERE IS NEW YORK, E. B. White. Copyright 1949, by The Curtis Publishing Company, THIS OLDER GENERATION, Falph Bourne, Copyright 1920, by B. W. Buebsch Inc Copyright 1947, by The Viking Press, Inc, ON AMERICAN LEISURE, Irwin Edman. Copyright 1929, by Irwin Edman, THE PURSUIT OF HUMOR, Frank Moore Colby Copyright 1904, by Dodd, Mead & Co.; AMERICAN FOLKWAYS, Duncan Emrich. Reprinted by special permission from Holiday Copyright 1955, by The Curtis Publishing Company, JOHN STEINBECK, Edmund Wilson, Copyright 1950, by Edmund Wilson, HUCKLEBERRY FINN, Lionel Trilling. Copyright 1950, by Lionel Trilling. Issued by arrangement with the Viking Press, New York, THE AMERICAN DREAM, James Truslow Adams Copyright 1931, 1933, James Truslow Adams. Copyright renewed 1959, by James Truslow Adams; THE FREEDOM OF THE FINE ARTIST, Milton C Nahm. From Milton C. Nahm, 'The Artist As Creator'. Copyright 1956, by the Johns Hopkins Press; THE YOSEMITE, John Muir. Copyright 1912, by Century Company renewed 1939, DEMOCRACY AND AMERICA, John Dewey Copyright 1954, World Publishing Company.

भूमिका

भाग्यवश कोशकारों द्वारा अथवा व्यवहार में, 'ऐसे' (लेख) की कोई रूढ़ परिभाषा कभी नहीं की गई। साधारणतः हम इतना जानते हैं कि वह क्या नहीं है। कहानी अथवा कथा वह नहीं है। एक गम्भीर अभिलेख अथवा विद्वत्तापूर्ण लेख भी वह नहीं है। विभिन्न विषयों पर विचारों और उक्तियों का एक मिश्रित सग्रह भी वह नहीं है। एक बहुत लम्बा खड भी वह नहीं हो सकता। 'ऐसे', यह शब्द सोलहवीं सदी में मॉण्टेन ने गढ़ा था। तब से उपर्युक्त नकारात्मक मापदण्डों के पार गौरवपूर्ण रूप में एक उन्मुक्त और विविध-विषयक विकास इस शब्द को प्राप्त हुआ है। इसकी भरपूर ज़िन्दगी की कुंजी मॉण्टेन के इस शब्द के शायद मूल फ्रांसीसी अर्थ में निहित है—एक प्रयोग, एक प्रयास, मानसिक जगत् में पथ की खोज।

शायद इसी कारण 'ऐसे' (लेख) अत्यन्त व्यक्तिगत और सापेक्ष वस्तु रहा है। बात लेखक पर निर्भर करती है। यह व्यक्तिगत विशेषता उदार और कल्पनापूर्ण भी हो सकती है जैसेकि चार्ल्स लैम्ब अथवा ई० बी० व्हाइट में वह है। अथवा वह गम्भीर और महोच्च भी हो सकती है जैसीकि राल्फ वाल्डो इमर्सन में है। सापेक्ष होने के कारण 'ऐसे' अक्सर प्रकट पूर्वाग्रह-पूर्ण और विवादास्पद भी हो सकता है। प्रस्तुत सग्रह में यह गुण टामस पेन के लेख में स्पष्ट दीख पड़ता है।

एक और विशिष्टता, जो यद्यपि सदा नहीं, पर लेखों में अक्सर मिलती है, एक अवकाशपूर्ण, ध्यान में डूबा वेग है मानो कि किसी धूप-भरी छुट्टी के दिन पेड़ के नीचे बैठकर अथवा सन्ध्या के समय घर में आग के सामने स्थित होकर उसे लिखा गया हो। एडमंड विल्सन की साहित्य-समालोचना-

सम्बन्धी कृति अथवा इर्विन एडमैन का लेख इस सग्रह में इसी प्रिय आकर्षण को साकार करते हैं।

अमरीकी साहित्य में 'ऐसे' (लेख) ने अपना एक सम्पन्न अस्तित्व बनाए रखा है, यद्यपि ठीक यही नाम उसे सदैव नहीं मिल सका है। प्रस्तुत सग्रह में यह दर्शनीय है कि अमरीकी 'ऐसे' (लेख) के चुनाव में हमने बहुत उदारता से काम लिया है। कुछ कृतियाँ जिन्हें चुना गया है, वस्तुतः पहले-पहल राजनीतिक भाषणों के रूप में प्रकाश में आई थीं। अन्य परिवर्द्धित पुस्तक-समालोचनाओं जैसी है। कुछ लेख लम्बी कृतियों के अंश हैं।

लेकिन इन सभीमें एक निगूढ़ धारणा की एकसूत्रता प्राप्त है। वह धारणा है मन्तव्य की एक सक्षिप्त और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और आम तौर पर एक चिन्तनात्मक अनुपदेशवादी निर्वचन।

हम नहीं कह सकते कि इन लेखों में कोई एक खास अमरीकी विशिष्टता पाठक को ऐसी मिल पाएगी या नहीं जो इन सभीमें अथवा अधिकतर में समान रूप से मौजूद हो। शायद नहीं मिल पाएगी क्योंकि अमरीकी चरित्र की एक प्रमुख विशेषता है उसकी विविधता। पर हमारा विश्वास है कि ध्यानपूर्वक पढ़ने पर इन विविध-विषयक लेखों में अमरीकी सभ्यता की कुछ गुणधर्म और उसकी सम्पन्नताओं की एक बढ़िया भूमिका तो पाठक को मिलेगी ही।

क्रम

१. आत्मनिर्भरता	: इमर्सन	११
२. सकट की घड़ी	: टामस पेन	५३
३. सर्जनात्मकता	: आरन कापलैड	६६
४. एक देहाती सम्पादक की आचार-सहिता	: विलियम एलन व्हाइट	८१
५. मशीन की कला और उसका शिल्प	: फ्रैंक लायड राइट	८७
६. हमारे जीवन में भौतिकवाद और आदर्शवाद	: जार्ज सान्तायन	११७
७. पुराने जमाने की पुनर्जागरण-सभाएं	हार्टजल स्पेन्स	१३६
८. यह है न्यूयार्क	: ई० बी० व्हाइट	१५५
९. यह पुरानी पीढ़ी	: रैडाल्फ बर्न	१८७
१०. अवकाश	इर्विन एडमैन	२०५
११. सच और उसका नया सविधान	: एलेग्जैंडर हैमिल्टन	२२१
१२. हास्य की साधना	: फ्रैंक मूर कॉलबी	२२६
१३. लोकतंत्र के उपयुक्त शिक्षा	: बेजामिन रश	२३५
१४. हमारी लोकरीतियां	: डकन एमरिच	२४५
१५. जॉन स्टीनबेक	: एडमंड विल्सन	२६३
१६. हकलनेरी फिन	: ल्योनल ट्रिलिंग	२७७

: १० :

१७. हमारा एक महान स्वप्न : जेम्स ट्रस्लो एडम्स
१८. ललित कलाकार की स्वतन्त्रता . निष्कर्ष
: मिल्टन सी० नेह्रूम
१९ सियरा मे पहली गर्मिया . जॉन म्यूर
२० लोकतन्त्र और अमरीका : जॉन डिवी

आत्मनिभरता

इमर्सन

आत्मनिर्भरता

उस दिन मैंने एक प्रमुख चित्रकार की लिखी कुछ कविताएं पढ़ी जो मौलिक थी और परम्परागत नहीं थी। ऐसी कविताओं से आत्मा को सदा ही एक झिड़की सुननी पड़ती है; इन कविताओं का विषय चाहे कुछ भी क्यों न हो। जो भावना हममें भरती है वह किसी भी निहित विचार से अधिक मूल्यवान होती है। अपनी निजी विचारणा में विश्वास रखना, अपने अन्तर्मन में यह बात मानना कि जो आपके लिए सच है वही सभी मानवों के लिए भी सच है—यही प्रतिभा है। अपने अन्तर्निहित विश्वास को व्यक्त करिए और वह जन सामान्य की अनुभूति बन जाएगा, क्योंकि उचित समय बाद अन्तरगतम बहिरग बन जाता है और हमारा प्रथम विचार अन्तिम निर्णय के दिन नगाडो की आवाज के साथ हमें ही लौटा दिया जाता है। मन की वाणी प्रत्येक के लिए सुपरिचित होती है। मोजेज^१ अफलातून^२ और मिल्टन^३ को जो सर्वोच्च प्रतिष्ठा हम देते हैं वह इसीलिए कि उन्होंने पुस्तकों और परम्पराओं को व्यर्थ बना दिया और जो लोग सोचते थे वह नहीं, बल्कि जो वे सोचते थे वही उन्होंने कहा। व्यक्ति को प्रकाश की उस किरण को खोजना और उसपर नज़र रखना सीखना चाहिए जो सन्तो

१. मोजेज—यहूदी पैगम्बर व विधि-निर्माता जो यहूदियों को मिस्र से निकाल ले गया था।

२. अफलातून—ग्रीस का महान दार्शनिक।

३. मिल्टन—अंग्रेजी का महान कवि जिसने 'पैराडाइज लॉस्ट' लिखा।

और ऋषियों के नभोमण्डलो की ज्योति से भी अधिक उसके अपने अन्दर से फूटकर उसके मन में कौंध जाती है। फिर भी व्यक्ति अपने विचारों की अवज्ञा कर देता है, क्योंकि ये विचार उसके होते हैं। हर प्रतिभापूर्ण कृति में हम अपने ही तिरस्कृत विचारों को देख पाते हैं। वे एक विशिष्ट पृथक्कृत दमक के साथ हमें वापस मिलते हैं। कला की महान कृतियाँ इससे अधिक प्रभावपूर्ण शिक्षा हमें नहीं देती। वे हमें यही सिखाती हैं कि हम अपनी सहजानुभूतियों का अनुसरण एक सद्भावपूर्ण अविचलता के साथ उस समय सबसे अधिक करते जाएँ, जब सभी आवाजों की चीख हमारे प्रतिपक्ष में हो। नहीं तो जो कुछ हम सदा से सोचते और महसूस करते आए हैं, ठीक वही बात एक अजनबी कल बड़ी पटु अनुभूति के साथ कह जाएगा। और हमें शर्म के साथ अपनी ही राय को दूसरे से ग्रहण करने के लिए विवश होना पड़ेगा।

हर व्यक्ति की शिक्षा में एक समय आता है जब वह इस धारणा तक पहुँच जाता है कि ईर्ष्या अज्ञान है और नकल आत्महत्या है। और व्यक्ति को अपने हिस्से के रूप में अपने अच्छे या बुरे होने को स्वीकार करना चाहिए। यद्यपि विशाल विश्व अच्छाईओं से भरा पड़ा है, लेकिन पुष्टि-दायक अन्न का एक भी दाना उसे जमीन के उसी टुकड़े पर श्रम करने से मिल सकेगा, जो उसे जुताई के लिए दिया गया है। जो शक्ति उसमें निहित है वह प्रकृति में नहीं है और स्वयं उसके सिवाय कोई नहीं जानता कि वह क्या कर सकता है। और वह भी तब तक नहीं जान पाता जब तक वह प्रयास नहीं करता। यह अकारण नहीं होता कि एक चेहरा, एक चरित्र, एक तथ्य उसपर अपनी छाप डाल जाता है और दूसरा नहीं डाल पाता। स्मृति में उपलब्ध यह साचा पूर्वनिर्धारित समस्वरता से शून्य नहीं है। जहाँ एक किरण गिरनी है आँख वही स्थिर की गई है, जिससे वह उस विशिष्ट किरण का साक्षी बन सके। हम स्वयं को बस आधा ही अभिव्यक्त करते हैं और हममें से प्रत्येक जिस दिव्य विचार का प्रतिनिधित्व करता है उससे हम लज्जित महसूस करते हैं। इस विचार को स्पष्ट ही आनुपातिक

और शुभ प्रयोजनों से युक्त माना जा सकता है। इसलिए सच्चाई के साथ हम इसे कह डाल सकते हैं। लेकिन ईश्वर अपनी कृति को कायरो के द्वारा व्यक्त नहीं कराएगा। व्यक्ति जब अपने काम में अपना दिल लगाता है और उसे अच्छी से अच्छी तरह करता है तब वह हल्का और खुश महसूस करता है। अन्यथा जो कुछ भी चाहे वह कहे या करे, उसे शान्ति नहीं मिलती। यह एक ऐसा उन्मोचन है जो उन्मुक्त नहीं करता। इस प्रयास में उसकी प्रतिभा उसका साथ छोड़ देती है। कल्पना उसकी मित्र नहीं रहती। न कोई खोज की जाती है, न कोई आशा रहती है।

अपने में आस्था रखो। इस लोहे की तार की लय पर हर हृदय स्पन्दित होता है। दिव्य नियति ने जो स्थान तुम्हारे लिए चुना है उसे स्वीकार करो। अपने समकालीनों के समाज को, घटनाओं के सम्बन्ध-सूत्रों को ग्रहण करो। महापुरुषों ने सदा ऐसा ही किया है। अपने युग की प्रतिभा के सामने वे बच्चों की तरह झुक गए हैं। अपनी इस अनुभूति को उन्होंने व्यक्त किया है कि चरम विश्वसनीय उनके हृदय में विराजमान है, उनके हाथों के माध्यम से कर्मरत है और उनके पूरे अस्तित्व पर हावी है। और हम अब पुरुष हैं। अपनी सर्वोच्च मानसिकता में हमें उसी सर्वोत्कृष्ट नियति को स्वीकारना चाहिए। एक सुरक्षित कोने में पड़े अवयस्क रोगी नहीं हैं, क्रान्ति के समक्ष पीठ दिखा देनेवाले कायर हम नहीं हैं, बल्कि हम मार्ग-दर्शक हैं, उन्मोचक हैं और संरक्षक हैं, और सर्वशक्तिमान की आज्ञा-नुसार विश्रुखला और अन्धकार पर चढ़ाई कर रहे हैं।

इस प्रसंग में बच्चों, शिशुओं, पशुओं तक की आकृतियों और व्यवहारों में कैसे मनोरम भविष्य-दर्शक, प्रकृति ने हमें प्रदान किए हैं। वह विभाजित और विद्रोही दिमाग एक भावना का वह अविश्वास—क्योंकि हमारी गणना ने हमारे प्रयोजन के विरोध में पड़नेवाली शक्तियों और साधनों को पगु बना डाला है—इनमें नहीं होता। उनका दिमाग संपूर्ण होता है। उनकी आख अभी तक अविजित है और जब हम उनके चेहरों में झांकते हैं तो हम गडबडा उठते हैं। शैशव किसीका अनुवर्ती नहीं होता।

सभी उसके अनुवर्ती होते हैं। इस प्रकार एक बच्चा उन बड़ों में से साधारणतया चार या पाच को अपने से हिला लेता है, जो उसे गुदगुदाते हैं और उसके साथ खेलते हैं। इस प्रकार ईश्वर ने यौवन, वयस्कता और बड़प्पन को अपनी कमनीयता और अपने आकर्षण में कुछ कम सुसज्जित नहीं किया है। उससे उन्हें इतना स्पृहणीय और मनोहर बनाया है कि उनकी मांगों को ठुकराया नहीं जा सकता, बशर्ते कि वे अपने सहारे खड़े हों। क्योंकि जवानी आपसे या मुझसे कुछ कह नहीं सकती, इसलिए मत सोचिए कि जवानी के पास ताकत नहीं होती। सुनिए अगले कमरे में उसकी आवाज पर्याप्त स्पष्ट और जोरदार है। लगता है, अपने सम-वयस्को से बोलना उसे आता है। शर्मीला अथवा साहसपूर्ण, उस समय वह जानता है कि अपने बड़ों को किस प्रकार एकदम अनावश्यक बना दिया जाए।

जो लड़के अपने भोजन के बारे में आश्वस्त होते हैं उनकी अनुत्तेजना, और कोई समझौता करने के लिए कुछ भी कहने या करने में एक लार्ड की तरह उनकी अरुचि—यह मानव-प्रकृति का एक स्वास्थ्यपूर्ण रुख है। अपनी बैठक में बैठा लड़का वैसा ही होता है जैसी कि खेल के मैदान में 'पिट' होती है। स्वच्छन्द, अनुत्तरदायी। अपने कोने से, सामने से गुजरने वाले लोग और तथ्यों को वह परखता है, उनकी योग्यता के आधार पर उन्हें कसता है और लड़कों की स्वाभाविक शैली में तेजी और संक्षिप्तता के साथ अपने फँसले सुनाता है—अच्छा, बुरा, रोचक, मूर्खतापूर्ण, मुखर, परेशान करनेवाला आदि। कभी भी वह परिणामों और हितों की चेतना से स्वयं को नहीं लादता। वह एक स्वच्छन्द और सच्चा निर्णय देता है। आपको उसे अपने अनुकूल बनाना पड़ेगा, वह आपकी खुशामद नहीं करेगा। लेकिन आदमी को तो जैसे उसकी चेतना ने कारा में बन्दी बना दिया है। जैसे ही एक बार भी पूर्ण सफलता के साथ उसने कार्य किया अथवा वह बोला, वह वचनबद्ध हो गया। अब सैकड़ों लोग सहानुभूति अथवा घृणा के साथ उसे देखने लगे और उनके झुकाव उसके हिसाब में

दर्ज हो गए। उसके लिए नरक की वह नदी वैतरणी लीथे वर्तमान नहीं है जो अतीत को विस्मृत कर देती है। कहीं अपनी निष्पक्षता को वह फिर से प्राप्त कर सकता। जो अपने सब वादों से इस प्रकार बच सकता है और जिसने उसी प्रभावशून्य, निष्पक्ष, रिश्वत से न बदले जा सकनेवाले, भयरहित भोलेपन के साथ सब परखा है और आगे भी परखेगा, उसे तो दुर्द्धर्ष होना ही चाहिए। वह तो सभी घटित होते विषयों पर अपनी राय देगा ही। राय निजी नहीं, आवश्यक समझी जाएगी और लोगों के कानों में नेजों की तरह धस जाएगी और उन्हें आतंकित कर देगी।

ये वे आवाजें हैं जिन्हें हम एकान्त में सुनते हैं। लेकिन जैसे ही हम ससार में प्रवेश करते हैं, ये मद्धिम और अश्रव्य बन जाती हैं। समाज हर कहीं अपने हर सदस्य के पुरुषत्व के विरुद्ध षडयन्त्र रच रहा है। समाज वह व्यापारिक कम्पनी है जिसके सदस्य अपने हिस्सेदारों को अधिक बढ़िया रोटी दे पाने के उद्देश्य से खानेवालों की स्वतन्त्रता और संस्कृति के विसर्जन के लिए परस्पर राजी हो जाते हैं। अधिकांश स्थितियों में अनुवर्तन ही गुण माना जाता है। आत्म-निर्भरता से इसे वितृष्णा है। यह वास्तविकताओं और स्रष्टाओं से नहीं, नामों और प्रथाओं से प्यार करता है।

जो भी आदमी है, वह अनुवर्ती ही होगा। जो दिव्य खजूरों को इकट्ठा करना चाहता है, उसे अच्छाई के नाम से अवरुद्ध नहीं हो जाना चाहिए; बल्कि खोज करनी चाहिए कि अच्छाई वहां है भी या नहीं। अपने मन की सच्चाई और अखंडता से बढ़कर कोई चीज अन्ततः पवित्र नहीं है। अपने प्रति पवित्र रहिए और ससार का जनमत आपको प्राप्त हो जाएगा। मुझे वह उत्तर याद आता है जो, जब मैं लड़का था तब एक प्रतिष्ठित उपदेशक को देने के लिए मुझे प्रेरित किया गया था। यह व्यक्ति चर्च के प्राचीन 'प्रिय सिद्धान्तों' को स्वभाववश ही मुझे समझाना चाह रहा था। मेरे कहने पर कि "यदि मैं पूरी तरह अन्तःप्रेरणा से जीऊ तो परम्पराओं की पवित्रता से मुझे क्या लेना-देना है", मेरे मित्र ने प्रस्तावित किया, "लेकिन ये अन्तःप्रेरणाएं, हो

सकता है, अधोदेश से आई हो, ऊर्ध्व से नहीं।” मैंने उत्तर दिया, “मुझे नहीं लगता कि वे ऐसी हैं, लेकिन यदि मैं शैतान का ही बालक हू तो शैतान के ही अनुसार जीऊंगा।” अपनी प्रकृति के सिवाय कोई अन्य कानून मुझे पवित्र नहीं लग सकता। अच्छा और बुरा ऐसे नाम हैं जो इस या उसपर बड़ी सरलता से स्थानान्तरित कर दिए जाते हैं। सही वही है जो मेरी प्रकृति के अनुकूल है, गलत वही है जो उसके विरुद्ध है। व्यक्ति को, सारे विरोध के बावजूद स्वयं को आगे ले चलना है, जैसेकि उसके सिवाय हर चीज दायित्वशून्य और क्षणिक है। यह सोचते हुए मुझे लज्जा आती है कि हम बिल्लो और नामो, बड़े समाजों और मृत सस्थाओं के सामने कितनी आसानी से समर्पण कर देते हैं। हर उत्तम और सच बोलनेवाला व्यक्ति मुझे उचित से अधिक प्रभावित करता है और बहा ले जाता है। मुझे माथा ऊचा रखना चाहिए, मजबूत होना चाहिए और सब तरीकों से क्रूर सत्य को व्यक्त करना चाहिए। यदि ईर्ष्या और दम्भ जन-कल्याण का कोट पहन ले तो क्या उन्हें मान्यता मिल जाएगी? यदि कोई रोपदग्ध धर्मान्ध दास-प्रथा के उन्मूलन के उदार प्रयोजन को ओढ़कर आता है और बारबेडाज^१ की एकदम ताजी खबरे लाता है तो उससे क्यों न मैं इस प्रकार कहूँ, “जाओ, अपने बच्चे से प्यार करो, अपने लकड़हारे से सहानुभूति करो, नम्र और अच्छे स्वभाव के बनो, अपने में वह उच्चता पैदा करो और हजार मील परे के काले लोगो के प्रति इस अविश्वासनीय नम्रता से अपनी क्रूर अनुदार आकाक्षा पर बार्निश मत करो। दूर के प्रति तुम्हारा प्रेम घर पर द्रोह का सूचक है।”

इस प्रकार का स्वागत रूखा और अशिष्ट होगा; लेकिन सत्य प्रेम की बनावट से सुन्दरता होता है। आपकी अच्छाई पर कुछ धार तो होनी ही चाहिए, नहीं तो यह कुछ भी नहीं है। प्रेम जब घिघियाने और कू कू करने लगे तब इस सिद्धान्त की प्रतिक्रिया में घृणा के सिद्धान्त का

उपदेश दिया जाना चाहिए। जब मेरी अन्तःप्रतिभा आह्वान करती है, मैं पिता, माता, पत्नी और भाई को त्याग देता हूँ। मैं अपने द्वार की चौखट पर लिख देता हूँ, 'सनक'। मैं समझता हूँ, ऐसा करना सनक दिखाने से अन्ततः अधिक अच्छा है, लेकिन स्पष्टीकरण देने में ही अपना दिन हम नहीं बिता सकते। मुझसे यह आशा मत करो कि मैं बताऊँगा कि क्यों मैं एक के सग की आकांक्षा करता हूँ और एक को दूर रखता हूँ। फिर जैसा-कि एक भले आदमी ने आज किया मुझे मन जताइए कि सभी गरीबों को अच्छी स्थिति में लाने की जिम्मेदारी मेरी है। क्या वे 'मेरे' गरीब हैं? ओ मूर्ख विश्वकल्याणवादी, मैं तुम्हें बताएँ देता हूँ कि जो लोग मेरे नहीं हैं और मैं जिनका नहीं हूँ, उन्हें एक भी रुपया, आना या पैसा देने में मुझे ऐतराज है। एक वर्ग के लोग हैं जिनके हाथों, पूरे आत्मिक सादृश्य के कारण मैं खरीदा और बेचा जा चुका हूँ। अगर ज़रूरत पड़े तो मैं उनके लिए जेल भी जा सकता हूँ। लेकिन आपकी मिली-जुली जनप्रिय दानशीलताएँ, मूर्खों के कालिज में शिक्षा, सभा-भवनों का निष्प्रयोजन निर्माण जिसके लिए बहुत-से लोग प्रयत्नशील हैं, पियक्कड़ों को भीख और हज़ारों सहायक सस्थाएँ ! मैं यह बात शर्म के साथ स्वीकार करता हूँ कि कभी-कभी मैं भी रुपया देने के लिए तैयार हो जाता हूँ। यह दान दूषित है जिसे न देने का साहस मैं धीरे-धीरे प्राप्त कर लूँगा।

साधारण अनुमान के अनुसार, उच्चगुण नियम की अपेक्षा अपवाद हैं। आदमी है और उससे अलग उसके गुण हैं। जिसे भला काम कहा जाता है, जैसेकि साहस अथवा दान का कोई कृत्य, उसे लोग ऐसे करते हैं जैसे वे परेड पर प्रतिदिन उपस्थित न होने के प्रायश्चित्त के रूप में जुर्माना भर रहे हों। उनके कार्य मसार में उनके रहने के पाप-मार्जन अथवा उसके लिए क्षमा-याचना के रूप में वैसे ही किए जाते हैं, जैसे बीमार और पागल भरण-पोषण के लिए अधिक खर्च करते हैं। उनके गुण उनके तप हैं। मैं प्रायश्चित्त करना नहीं चाहता, मैं जीना चाहता हूँ। मेरा जीवन स्वयं जीवन के लिए है, तमाशे के लिए नहीं। मैं पसन्द करूँगा कि भले ही वह

निम्नतर कोटि का हो, पर सच्चा और समतावादी हो, इसके बदले कि वह चमक-दमकवाला और अस्थिर हो। मैं चाहता हूँ कि वह पुष्ट और मधुर हो, और उसे मोटी खुराक और रक्त-विसर्जन की आवश्यकता न पड़े। मुझे इस बात की प्राथमिक गवाही चाहिए कि आप एक मानव हैं और मानव की ओर से उसके कार्यों के प्रति ऐसी अपील को मैं अस्वीकार करता हूँ। मैं जानता हूँ कि जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मेरे लिए इस बात में कोई अन्तर नहीं पड़ता कि मैं उन कार्यों को करता हूँ या त्यागता हूँ, जिन्हें श्रेष्ठ समझा जाता है। मैं उस सुविधा के लिए पैसा देने को राजी नहीं हो सकता, जिसे पाने का मेरा स्वाभाविक अधिकार है। मेरे गुण बहुत अल्प और तुच्छ भले ही हों, जो भी वास्तव में मैं हूँ, हूँ। अपने निजी आश्वासन अथवा अपने साथियों की तसल्ली के लिए किन्हीं आनुषंगिक प्रमाणों की आवश्यकता मुझे नहीं है।

मेरे सम्बन्ध की बात सिर्फ यह है कि मुझे क्या करना है। यह नहीं कि लोग क्या सोचते हैं। यह नियम वास्तविक और बौद्धिक जीवन में समान रूप से कष्टकर है और महानता और तुच्छता के बीच पूर्ण अन्तर करने के काम आ सकता है। यह और भी अधिक कठिन इसलिए है क्योंकि ऐसे व्यक्ति आपको सदा मिलेंगे जो समझते हैं कि आपके कर्तव्य के बारे में आपसे अधिक वे जानते हैं। ससार में ससार की राय के अनुसार जीना आसान है और एकान्त में अपनी निजी इच्छा के अनुसार जीना सरल है। लेकिन महान व्यक्ति वही है जो भीड़ के बीच में भी पूरी मधुरता के साथ एकान्त की उन्मुक्तता को कायम रख सकता है।

जो प्रथाएँ जड़ बन चुकी हैं उनके अनुवर्तन में ऐतराज यह है कि अनुवर्तन आपकी शक्ति को बिखरा देता है। वह आपके समय को नष्ट करता है और आपके चरित्र को छाप को धुधलाता है। आप एक मृत गिरजाघर को टिकाएँ रखते हैं, एक मृत बाइबिल सभा को चन्दा देते हैं; सरकार के पक्ष अथवा उसके विपक्ष में किसी महान दल को मत देते हैं; नीच गृहस्थों के ढंग पर अपना दस्तरख्वान बिछाते हैं—इन सब पदों के

कारण जो आप है ठीक उसीको पहचान लेने में मुझे कठिनाई होती है । और इस प्रकार आपके सगत जीवन से उतनी ही शक्ति खींच ली जाती है । लेकिन आप अपना काम कीजिए और मैं आपको पहचान लूंगा । अपना काम कीजिए और आप स्वयं को सशक्त बनाएंगे । आदमी को समझना चाहिए कि यह अनुवर्तन का खेल, आखों पर पट्टी बांधकर साधियों को पकड़ने का खेल है । यदि मैं आपके वर्ग से परिचित हूँ तो मैं आपके तर्कों का पूर्वानुमान लगा सकता हूँ । मैं एक उपदेशक को यह घोषित करते हुए सुनता हूँ कि उसके उपदेश का पाठ और विषय इस चर्च की संस्था-विशेष के हितों के लिए आवश्यक है । क्या मैं पहले से ही नहीं जानता कि किसी भी नये और स्वप्रेरित विचार को सम्भवतः वह रख ही नहीं सकता ? क्या मैं नहीं जानता कि संस्था के आधारों की परीक्षा करने के इस पूरे दिखावे के बावजूद वह ऐसा कोई काम नहीं करेगा ? क्या मैं नहीं जानता कि वह एक व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक धर्मोपदेशक के रूप में केवल एक पक्ष, अनुमित पक्ष की ही विवेचना करने के लिए वचनबद्ध है ? वह एक खरीदा हुआ जज है और उसके ये सब दिखावे खोखली बनावटें हैं । खैर, अधिकांश लोग इस या उस रूमाल से अपनी आँखें बाँधे रखते हैं और किसी न किसी विचारधारा से स्वयं को चिपकाए रखते हैं । यह अनुवर्तन कुछ विशिष्ट बातों में ही भूठा नहीं, कुछ-एक भूठों का ही स्रष्टा नहीं, बल्कि सभी विशिष्टताओं में भूठा है । उनका हर सत्य एकदम सत्य नहीं होता । उनके दो, असली दो नहीं होते । उनके चार, असली चार नहीं होते । यहाँ तक कि उनका कहा हुआ प्रत्येक शब्द हमें उद्धिग्न बनाता है और हम नहीं जान पाते कि उन्हें सही करने के लिए हम कहाँ से आरम्भ करें । इसी बीच प्रकृति भी, जिसके हम अनुवर्ती हैं, उस दल की जेल-पोशाक हमें पहना देने में ढील नहीं करती । हम चेहरे और आकृति के एक विशेष कटाव को ग्रहण कर लेते हैं और क्रम-क्रम से एक नम्रतम बुद्धूपन का भाव ओढ़ लेते हैं । यह एक विशिष्ट त्रासक अनुभव है जो स्वयं को सामान्य इतिहास

एक मूर्खतापूर्ण 'चेहरा'। एक जबरन मुस्कान जिसे हम तब धारण करते हैं, जब हम किन्हींके सग में सहजता अनुभव नहीं करते अथवा जब कोई बातचीत हमें तनिक भी रुचिकर नहीं होती। जिन स्नायुओं को सहज रूप में न हिला-जुलाकर एक निम्न अनैतिक जिद्द के अनुसार हरकत दी जाती है, वे कसकर चेहरे की रूपरेखा के बीच जड बन जाते हैं और बड़ा ही अरुचिकर भाव देते हैं।

अननुवर्तन के लिए दुनिया आपपर नाराज़ी के कोड़े बरसाती है। इसलिए, व्यक्ति को सीख लेना चाहिए कि एक कर्कश चेहरे की थाह कैसे ली जाए। जन-सामान्य, गली में अथवा मित्र की बैठक में खड़े लोग उसकी ओर कनखियों से देखते हैं। यदि इस विरक्ति का मूल स्वयं उसीकी तरह घृणा और विरोध में हो तो वह एक उदास चेहरा लेकर अपने घर जा सकता है। लेकिन भीड़ के इन विकृत चेहरो का, उनके मधुर चेहरो की तरह ही कोई गहरा कारण नहीं होता। जैसी हवा चलती है अथवा समाचार-पत्र जैसा आदेश देता है, उसीके अनुसार वे पहने अथवा उतारे जाते रहते हैं। फिर भी भीड़ का असन्तोष सीनेट और कालिज की अपेक्षा अधिक दुर्द्धर्ष होता है। एक दृढ़ व्यक्ति के लिए, जो दुनिया को जानता है, संस्कृत वर्गों के रोष को सहन करना काफी आसान होता है। उनका रोष शालीन और विवेकपूर्ण होता है; क्योंकि वे दबू होते हैं और स्वयं ही अत्यन्त समीक्ष्य होते हैं। लेकिन जब उनके स्त्रियोचित रोष में जन-क्षोभ आकर मिल जाता है, जब गरीब और अज्ञानी उठ खड़े होते हैं, जब अविवेकी पशु-शक्ति जो अब तक समाज की तह में पड़ी थी, गुरानि और आतक पैदा करने लगती है, तब दैववत् इसे चिन्ता के अयोग्य, तुच्छ समझ लेने के लिए सदाशयता और धर्म के संस्कारों की आवश्यकता होती है।

दूसरा आतक जो हमें डराकर आत्मविश्वास से दूर रखता है, वह है हमारी सगति-निष्ठता। अर्थात् हमारे अतीत कृत्य अथवा वचन के प्रति आदर का भाव; क्योंकि हमारे क्षेत्र को संकुचित बनाने के लिए दूसरों

की दृष्टि के पास पिछले कृत्यों के सिवाय अन्य कोई विवरण होते नहीं और उन्हें निराश करना हम चाहते नहीं।

लेकिन आप अपने कन्धों पर अपना यह सिर क्यों उठाए हुए हैं ? स्मृतियों की यह लाश क्यों आप ढो रहे हैं ? इसीलिए न कि कहीं इस या उस सार्वजनिक स्थान पर कहीं गई बात को आप नकार न दें ? मान लीजिए आपने स्वयं को नकार दिया, तब ? विवेकशीलता का यह नियम प्रतीत होता है कि अपनी स्मृति पर कभी निर्भर न किया जाए, बल्कि हज़ारों आखोंवाले वर्तमान के सामने अतीत को विवेचना के लिए खींच लाया जाए, और सदा एक नये दिन में जिया जाए। अपने अध्यात्म में, अपने इष्ट को एक व्यक्तित्व देने से इन्कार किया है। फिर भी, जब आत्मा की अनुरक्त सक्रियता सामने आए तो दिल और जीवन के साथ उसके सामने झुक जाइए। भले ही एक आकार और रंग से वह ईश्वर को साकार रूप दें। जैसे जोज़ेफ^१ बेथशा के हाथ में अपना कोट देकर भाग लिया था, वैसे ही आप भी अपना सिद्धान्त छोड़ दें।

मूर्खतापूर्ण संगतिनिष्ठता छोटे दिमागों का हौवा है। छोटे कटनीतिज्ञ और दार्शनिक और धर्म-पुरुष उसे प्रतिष्ठा देते हैं। एक महान आत्मा को संगतिनिष्ठा से कुछ नहीं लेना है। अच्छा हो, वह दीवार पर पड़ी अपनी छाया में ही सम्बन्ध रखे। जो कुछ आप आज सोच रहे हैं वही सख्त शब्दों में कह दें और जो कल सोचेंगे उसे कल कठोर शब्दों में कह देना, भले ही वह आज की कही बात के हर अक्षर का निषेध कर दें। “आह, तब तो आपको गलत समझ लिया जाएगा।” तो क्या गलत समझ लिया जाना इतना बुरा है ? पाइथा-गोरस^२ को गलत समझा गया और सुकरात^३,

१. जोज़ेफ—एक यहूदी सामन्त जेकब का प्रिय पुत्र। जेकब ने इसे एक कोट दिया था जो कितने ही रंगों का था।

२. सुकरात से पहले हुआ महान ग्रीक गणितज्ञ।

३. ग्रीक सन्त व दार्शनिक।

जीसस^१, लूथर^२, कार्पनिकस^३, गैलीलियो^४, न्यूटन^५, और हर विशुद्ध और विवेकशील आत्मा को, जिसने कभी भी शरीर धारण किया है, सदा गलत ही समझा गया। बड़े होने का अर्थ ही गलत समझा जाना है।

मेरा अनुमान है, कोई व्यक्ति अपनी प्रकृति के विरुद्ध नहीं चल सकता। उसकी इच्छाशक्ति के सभी झपाटे उसके अस्तित्व के नियम से परिसीमित हैं, वैसे ही जैसे एण्डीज़ और हिमालय का ऊचा-नीचापन पूरे गोलक की वक्रता में नगण्य है। इससे कोई मतलब नहीं कि आप कैसे उसे नापते और परखते हैं। कोई भी चरित्र एक बावन-अक्खरी अथवा अलेग्जेड्रियन छन्द के समान होता है, जिसे सामने से, पीछे से या आर-पार कैसे भी पढ़िए, हर तरह उसका एक ही अर्थ निकलता है। इस ईश्वर द्वारा दिए गए सुहाने, फिर भी वितृष्णापूर्ण जगली जीवन में, क्यों न मैं हर दिन के अपने सच्चे विचारों को भविष्य अथवा अतीत की हितचिन्ता से प्रभावित हुए बिना ज्यों का त्यों लिखता चला जाऊँ, और मुझे कोई सन्देह नहीं कि मेरे विचार एक-से पाए जाएंगे, यद्यपि न मेरा प्रयोजन और न मैं ही इसका ध्यान रखता हूँ। मेरी पुस्तक से चीड़ की खुशबू आनी चाहिए और कीड़ों की झकार उसमें प्रतिध्वनित होनी चाहिए। मेरी खिड़की की अबाबील जो धागा अथवा तिनका अपनी चोच में दबाकर लाती है उसे, मेरे इस जाल में भी उसे बुन देना चाहिए। जो हम होते हैं वही हम समझ जाते हैं। चरित्र हमें हमारी इच्छाओं से ऊपर हमें कुछ सिखाता है। लोग सोचा करते हैं कि वे अपने प्रकट कृत्यों के माध्यम से

१. ईसामसीह।

२. मध्ययुगीन यूरोप का महान धर्म-सुधारक व क्रांति-कर्त्ता।
(१४८३-१५४६)।

३. पोलैंडवासी ग्रह-वैज्ञानिक (१५७३-१५४३)।

४. इतालवी ग्रह-वैज्ञानिक (१५६४-१६४२)।

५. प्रसिद्ध अंग्रेज वैज्ञानिक व गणितज्ञ (१८३०-१८९६)।

ही अपने पुण्य अथवा पाप को सूचित करते हैं, पर वे नहीं देखते कि हर पुण्य या पाप प्रतिफल एक सास छोड़ता रहता है।

यदि अपने समय पर हर कृत्य ईमानदार और स्वाभाविक हो तो चाहे कितनी भी विभिन्नता उनमें क्यों न हो, एक समानता उनमें पाई जाएगी। कर्म कितने भी विषम क्यों न प्रतीत हो, यदि उनके पीछे सकल्प एक है तो समस्वरता उनमें पाई जाती है। थोड़ी-सी दूरी पड़ने पर अथवा विचार में थोड़ी-सी ऊँचाई आ जाने से ये विभिन्नताएं ओझल हो जाती हैं। एक प्रवृत्ति उन सबको एक किए रहती है। सर्वोत्तम जहाज की यात्रा सैकड़ों गाठों से पूर्ण एक टेढ़ी-मेढ़ी रेखा है। इस रेखा को पर्याप्त दूरी से देखिए; यह औसतन सीधी बन जाती है। आपका एक सच्चा कृत्य स्वयं अपना स्पष्टीकरण कर देगा और आपके दूसरे सच्चे कामों को भी स्पष्टता दे देगा। आपकी अनुवर्तिता कुछ भी समझा नहीं पाती। काम अकेले करो और जो कुछ आप पहले अकेले कर चुके हैं वही अब इसे भी संगत सिद्ध कर देगा। महानता भविष्य के प्रति अपील करती है। यदि मैं आज इतना काफी दृढ़ हो सकता हूँ कि ठीक काम कर सकूँ और लोगों की आंखों की उपेक्षा कर दूँ तो इसका अर्थ है कि पहले भी मैंने इतना ठीक किया है कि वह आज मेरी रक्षा कर ले। जैसे भी क्यों न हो, आज सही करो। दिखावट की सदा ही निन्दा करो। और ऐसा आप हमेशा कर सकते हैं। चरित्र-बल संचयशील है। पुण्य के सभी बीते हुए कार्य इसमें स्वास्थ्य भरते हैं। सीनेट और रण-क्षेत्र के वीर पुरुषों का गौरव, जो हमारी कल्पना को इतना आकर्षित करता है, किस चीज से बना है? अतीत के महान दिनों की और विजयों की एक लड़ी की चेतना। ये सब आगे बढ़ते हुए अभिनेता पर एक इकट्ठी रोशनी फेंकते हैं। देवदूतों की एक प्रकट रक्षा-पक्ति जैसे उसके सिर पर होती है। यही है जो चैथम^१ की आवाज में बिजली भर देती है,

१. विलियम पिट, अलं आफ चैथम (१७०८-१७७८) ब्रिटिश कूट-नीतिज्ञ व प्रधानमंत्री।

वाशिंगटन^१ की आकृति में उच्चता और अदम्स^२ की आखों में अमरीका को भर देती है। प्रतिष्ठा हमारे लिए आदरणीय है क्योंकि वह क्षण-जीवी नहीं होती। वह सदा ही, अतीत पुण्य होती है। हम आज भी उसकी पूजा करते हैं क्योंकि वह आज की नहीं होती। हम उसे प्यार करते हैं और उसे श्रद्धाजलि देते हैं, क्योंकि वह हमारे प्रेम और हमारी श्रद्धाजलि के लिए एक फन्दा नहीं होती। एक युवक व्यक्तित्व के रूप में दीख पड़ते हुए भी वह आत्म-निर्भर आत्म-प्रसूत और इसीलिए एक निष्कलक पुरानी पीढ़ी होती है।

मैं आशा करता हूँ, अनुवर्तिता और सगतिनिष्ठता के बारे में हम अंतिम बार ही सुन रहे हैं। ये शब्द गजट हो जाएँ और आगे उपहास के विषय बन जाएँ। खाने की सूचना के घंटे के स्थान पर स्पार्टा की बासुरी हम सुनें। हम कभी झुककर क्षमा न मांगें। एक बड़ा आदमी मेरे घर खाने पर आ रहा है। मैं उसे खुश करना नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि वह मुझे खुश करना चाहे। मानवता की खातिर मैं यहाँ खड़ा रहूँगा। यद्यपि मैं इसे उदार बनाऊँगा, पर इसे सच्चाई का रूप भी दूँगा। समय की मामूली मध्यमता और निकृष्ट सन्तुष्टता का हमें मुकाबला करना चाहिए और उसकी निन्दा करनी चाहिए और प्रथा और व्यापार और पद के मुह पर यह तथ्य दे मारना चाहिए,—यह तथ्य जो पूरे इतिहास की निष्पत्ति है—कि जहाँ भी कोई मानव कार्यरत है वही एक महान जिम्मेदार विचारक और अभिनेता काम में लगा है, कि एक सच्चा आदमी किसी एक समय अथवा स्थान का नहीं होता बल्कि वह चीजों का केन्द्र होता है। जहाँ वह होता है, वहाँ प्रकृति होती है। वह आपको, सब लोगों को और सब घटनाओं को नापता है। साधारणतया समाज का हर व्यक्ति किसी और चीज की अथवा किसी और व्यक्ति की याद हमें दिलाता है। चरित्र, वास्तविकता किसी और चीज की

१ अमरीका का प्रथम राष्ट्रपति (१७३२-१७९९)।

२ अमरीका का दूसरा राष्ट्रपति (१७३६-१८२६)।

याद नहीं दिलाती। वह तो पूरी सृष्टि का ही स्थान ग्रहण कर लेती है। मनुष्य को इतना होना चाहिए कि वह सभी परिस्थितियों को व्यर्थ बना दे। हर सच्चा आदमी एक कारण, एक देश और एक युग होता है और अपने मन्तव्य को पूरी तरह सिद्ध करने के लिए उसे अनन्त स्थान, संख्या और समय की अपेक्षा होती है। आनेवाली पीढ़िया मुअक्किलो की कतार की तरह उसका अनुगमन करती है। एक आदमी सीजर पैदा होता है और आनेवाले कितने ही युगों के लिए एक रोम-साम्राज्य हमें मिल जाता है। ईसा पैदा होता है और लाखों दिमाग पनपकर उसकी प्रतिभा की ओर ऐसे रास्ता बनाते हैं कि उसे पुण्य और मानव की सम्भावनाओं के साथ गडबड़ा डालते हैं। कोई भी सस्था व्यक्ति-विशेष की ही लम्बी छाया होती है जैसे कि हरमिट एन्टोनी का मोनाकिज्म^१, लूथर का रिफॉर्मेशन^२, फाक्स का क्वेकरवाद^३, वेजली का मॅथोडिज्म^४, क्लार्कसन का एबोलीशन^५। मिल्टन^६, सीपियो^७ को 'रोम की ऊँचाई' मानता था। पूरा इतिहास थोड़े-से मजबूत लगनवाले व्यक्तियों की चरित्र-कथाओं में बड़ी आसानी से भरा जा सकता है।

तब, व्यक्ति को अपनी कीमत जाननी चाहिए और चीजों को अपने पैरों के नीचे रखना चाहिए। दान पर पले लडके, नाजायज सन्तान अथवा दाल-भात में भूसरचन्द की तरह, जो दुनिया उसके लिए अस्तित्व रखती है,

१. ईसाई धर्म में एक सन्यास मार्ग का प्रवर्तक।

२. जर्मन धर्म-सुधारक व सुधार-आन्दोलन का जन्मदाता (१४८३-१५४६)।

३. अंग्रेजी समाज-सुधारक (१६२४-१६९१) क्वेकर सस्था का संस्थापक।

४. ईसाई धर्म की मॅथोडिज्म शाखा का संस्थापक (१७०३-१७९१)

५. नीग्रो लोगों की गुलामी का विरोधक (१७६०-१८४६)।

६. अंग्रेजी कवि (१६०८-१६७४)।

७. रोम का वीर सेनापति। इस नाम के कई सेनापति हुए।

उसमें उसे ताका-भाकी अथवा चोरी नहीं करनी चाहिए और यहा-वहा दुबकते नहीं फिरना चाहिए। लेकिन जन-साधारण एक स्तम्भ अथवा पत्थर की देव-मूर्ति बनाने योग्य शक्ति भी अपने में नहीं पाता और जब वह इन सब चीजों को देखता है तो स्वयं को गरीब महसूस करता है। उसके लिए तो एक महल, एक मूर्ति, अथवा मूल्यवान पुस्तक बहुत कुछ एक प्रसन्न उपकरण की तरह है और कुछ इस प्रकार कहती प्रतीत होती है—“श्रीमन् आप कौन है ?” फिर भी वे सब उसके ध्यान के उम्मीदवार हैं, उसकी योग्यताओं के प्रार्थी हैं। योग्यताएं प्रकट होंगी और उसपर हावी होंगी। चित्र मेरे निर्णय की प्रतीक्षा करता है। वह मुझे आदेश नहीं देता, बल्कि मैं प्रशंसा की उसकी मांग का उत्तर देता हूँ। एक शराबी की वह प्रसिद्ध कहानी जिसमें उसे गली में से धुत्त उठाकर लाया जाता है, ड्यूक के घर में ले जाया जाता है, नहला-धुलाकर और कपड़े पहनाकर ड्यूक के बिस्तर पर लिटा दिया जाता है, और जब वह जागता है तो ड्यूक की ही तरह सब चाटुकारितापूर्ण उपचारों से लाद दिया जाता है और उसे समझाया जाता है कि वह पागल हो गया था, —इस कथा की जनप्रियता इस तथ्य में निहित है कि यह मानव की स्थिति का बहुत ही बढ़िया प्रतीक है। मानव भी ससार में एक प्रकार का शराबी ही है जो जब-तब जागता है, अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है और स्वयं को एक सच्चा राजकुमार पाता है।

हमारा पठन भिक्षुक और खुशामदी की तरह का होता है। इतिहास में हमारी कल्पना हमें झूठा बना देती है। एक छोटे घर में रहनेवाले, साधारण दैनिक काम करनेवाले सामान्य जान और एडवर्ड की अपेक्षा राज्य और लार्ड, शक्ति और रियासत जैसे शब्द अधिक रंगीन प्रतीत होते हैं। लेकिन जीवन के विषय दोनों के लिए ही एकसमान हैं। दोनों का ही कुल योग एक-सा है। तब एल्फ्रेड^१ और स्कैंडरबेग^२ और गस्टेबस^३ के

१. सैक्सनो का राजा (८७१-८९९)

२. अल्बानिया का राजा।

३. स्वीडन का राजा

साथ इतना जिहाज क्यों ? मान लीजिए वे पुण्यात्मा थे, तो क्या उन्होंने पुण्य को चरम तक पहुँचा दिया था ? उनके सार्वजनिक और प्रसिद्ध कदमों पर जितनी बड़ी जिम्मेदारी आई थी उतनी ही आज आपके निजी कामों पर है । जब साधारण व्यक्ति मौलिक विचारों के अनुसार काम करेंगे तो दीप्ति राजाओं के कामों से उतरकर लोगों के कामों पर आ जाएगी ।

ससार अपने राजाओं के द्वारा, जिन्होंने राष्ट्रों की आखों को चुम्बक-युक्त बना दिया है, शिक्षित किया गया है । इस बृहद् प्रतीक ने उसे वह पारम्परिक सम्मान-भावना सिखाई है, जो व्यक्ति से व्यक्ति को मिलनी चाहिए । लोगों ने हर कही जिस उत्फुल्ल वफादारी के साथ राजा, सामन्त अथवा बड़े जागीरदार को सहा है—कि वह उनके बीच अपना निजी कानून चलाए, उनके मापदण्ड को उलटकर अपने निजी माप से लोगों और चीजों को नापे, लाभों की कीमत पैसे से नहीं सम्मान से चुकाए और अपने व्यक्तित्व द्वारा कानून का प्रतिनिधित्व करे—वह वफादारी ऐसी चित्रलिपि थी जिसमें आम लोगों ने अपने निजी अधिकार और शोभा की तथा हर व्यक्ति के अधिकार की चेतना को धुंधले रूप में चित्रित पाया ।

सभी प्रकार के मौलिक कृत्य जो चुम्बक पैदा करते हैं, उनका स्पष्टीकरण तब होता है जब हम आत्मविश्वास के कारणों की खोज करते हैं । ट्रस्टी कौन है ? वह आदिम व्यक्तित्व क्या है जिसपर एक सामान्य निर्भरता को आधारित किया जाए ? विज्ञान को भी चक्कर में डालनेवाले उस ग्रह की प्रकृति और शक्ति क्या है जो विस्थापनाभास से रहित है, जिसके तत्वों की गणना नहीं की जा सकती और यदि स्वच्छन्दता का न्यूनतम संकेत भी मिल जाए तो तुच्छ और अशुद्ध कृत्यों में भी जो सौन्दर्य की एक किरण भर देता है ? खोज से हम उसके स्रोत तक पहुँचे हैं जो तत्काल ही प्रतिभा और पुण्य और जीवन का सार तत्त्व है जिसे हम सहजता अथवा सहज प्रेरणा कहते हैं । इस प्राथमिक विवेक को हम अन्तःप्रज्ञा कहते हैं,

जबकि बाद की सभी शिक्षाओं को प्रशिक्षण कहते हैं। इस गहन शक्ति में अन्तिम तथ्य, जिसके आगे विश्लेषण नहीं जा सकता, यह है कि सभी चीजों का मूल एक है। क्योंकि अस्तित्व का भान, जो पता नहीं कैसे शान्त क्षणों में हमारी आत्मा में उद्बुद्ध होता है, पदार्थों से, स्थान से, प्रकाश से, समय से, आदमी से, विषम नहीं होता बल्कि उनसे एकात्म होता है और स्पष्टतः उसी स्रोत से उद्भूत होता है जहाँ से उनका जीवन और अस्तित्व आरम्भ करता है। पहले हम, जिसके सहारे पदार्थ अस्तित्व रखते हैं उस चेतना में हिस्सेदार बनते हैं और बाद में प्रकृति-रूपों के रूप में उन्हें देखते हैं और भूल जाते हैं कि उनके कारण में हम भी भागीदार रहे थे। यह है कर्म और विचार का स्रोत। ये उस प्रेरणा के फेफड़े हैं जो व्यक्ति को विवेक देते हैं और जिनसे नास्तिकता और अपवित्रता शून्य हुए बिना इन्कार नहीं किया जा सकता। हम अथाह विवेक की गोदी में पड़े हैं। वही हमें उसके सत्य का प्राप्त-कर्ता और उसकी सक्रियता का वाहक बनाता है। जब हम न्याय को पहचानते हैं, जब हम सत्य को पहचानते हैं, तब हम स्वयं तो कुछ नहीं करते, बस उसकी किरणों तक एक रास्ता बना लेते हैं। यदि हम पूछें कि यह कहाँ से आता है, यदि हम उस आत्मा में झाँकना चाहें जो इसका कारण है, तब तो पूरा दर्शन ही सद्योष प्रतीत होगा। इसकी उपस्थिति अथवा इसकी अनुपस्थिति, बस इसीको पुष्टि हम कर सकते हैं। हर व्यक्ति अपने मस्तिष्क के ऐच्छिक कृत्यों और अपने अनैच्छिक अनुभवों में भेद करता है और जानता है कि अनैच्छिक अनुभवों के लिए एक पूर्ण आस्था अपेक्षित है। इनकी अभिव्यक्ति में वह गलती कर सकता है, लेकिन दिन और रात की तरह वह जानता है कि ये चीजें ठीक ऐसी ही हैं। इनके बारे में कोई विवाद नहीं किया जा सकता। मेरे सकल्प-पूर्ण कृत्य और उपलब्धियाँ अस्थिर हैं; व्यर्थ दिवास्वप्न और मन्दतम निजी भावना है। वे मेरी उत्कण्ठा और मेरे आदर की पात्र हैं। विचारहीन लोग अनुभवों की वाणी का उतनी ही शीघ्रता से निषेध कर देते हैं जितनी कि सम्मतियों का, अथवा उससे भी अधिक शीघ्रतापूर्वक, क्योंकि

वे अनुभव और विचार में अन्तर नहीं करते। वे सोचते हैं कि हम इस या उस चीज को देखना चुन सकते हैं। लेकिन अनुभव सनक की चीज नहीं है, वह भाग्य की देन है। यदि मैं एक प्रवृत्ति को देखता हूँ, तो मेरे बाद में मेरे बच्चे उसे देखेंगे और कालान्तर में पूरी मानव-जाति देख लेगी। वैसे ऐसा हो सकता है कि मुझसे पहले इसे किसीने भी न देखा हो। इसका मेरा अनुभव वैसा ही एक तथ्य है जैसाकि सूर्य है।

आत्मा का दिव्यात्मा से सम्बन्ध इतना पवित्र है कि इनके बीच में सहायताओं को लाना पाप है। यह आवश्यक है कि जब ईश्वर बोलता है तो उसे एक नहीं, बल्कि सभी चीजें सूचित करनी चाहिए, पूरी दुनिया को अपनी आवाज से भर देना चाहिए, वर्तमान विचार के केन्द्र से प्रकाश, प्रकृति, समय और आत्माओं को बिखराना चाहिए और सब कुछ का नया सृजन करके उसे नया काल देना चाहिए। जब भी कोई मस्तिष्क सरल होता है और एक दिव्य विवेक को प्राप्त कर लेता है तब पुरानी चीजें बीत जाती हैं, साधन, शिक्षक, ग्रन्थ, पाठ और मन्दिर व्यर्थ हो जाते हैं। वह इस समय जीता है और अतीत और भविष्य को वर्तमान क्षण में समा लेता है। सब चीजें इससे सम्बन्धित होने के आधार पर पवित्र बन जाती हैं, जितनी एक उतनी ही अन्य। सब चीजें उनके कारणों के द्वारा उनके केन्द्र-स्थल तक क्षरित कर दी जाती हैं। विश्व के आश्चर्य में से तुच्छ और विशिष्ट आश्चर्य गायब हो जाते हैं। इसलिए यदि कोई व्यक्ति ईश्वर को जानने और उसके बारे में कहने का दावा करता है और आपको किसी पुरानी सड़ी-गली जाति की शब्दशैली तक पीछे किसी और देश में, किसी और दुनिया में ले जाता है तो उसका विश्वास मत करिए। क्या बलूत का बीज उस वृक्ष से उत्तम है जो उसका परिपाक है, उसकी पूर्णता है? क्या माता-पिता उस बच्चे से अधिक बेहतर हैं जिसमें उन्होंने अपने प्रौढ़ अस्तित्व को ढाला है? फिर यह अतीतपूजा कहां से आई? आत्मा की विवेक-शीलता और उसकी सत्ता के विरुद्ध शताब्दियाँ षडयन्त्र करती रही हैं। समय और स्थान तो बस आख द्वारा देखे गए शारीरिक वर्ण हैं। लेकिन

आत्मा तो प्रकाश है। जहा यह है, वहा दिन है। जहा यह थी, वहा रात है। और यदि इतिहास मेरे अस्तित्व और मेरे जीवन-क्रम के एक आनन्द-पूर्ण नैतिक आख्यान अथवा दृष्टान्त से बढकर कोई चीज है तो वह एक धृष्टता और एक आघात ही है।

आदमी दबू है और विनयी है। वह अब दृढ नहीं रहा है। वह यह कहने की हिम्मत नहीं करता, कि “मैं सोचता हूँ,” “मैं हूँ”। बल्कि किसी सन्त अथवा ऋषि को उद्धृत कर देता है। घास के तिनके अथवा भूमते हुए गुलाब के सामने वह लज्जित हो उठता है। मेरी खिड़की के नीचे उगे थे गुलाब किन्ही पुराने गुलाबों अथवा अधिक बढ़िया गुलाबों का सन्दर्भ नहीं देते। ये वही हैं, जो वे हैं। आज वे ईश्वर के साथ रह रहे हैं। उनके लिए समय कुछ नहीं है। बस, सीधा-सादा गुलाब है। अपने अस्तित्व के हर क्षण में वह पूर्ण है। एक पत्ती के फूटने से पहले इसकी पूरी जीवनी-शक्ति ने काम किया है। यह शक्ति पूरे खिले फूल में उससे अधिक नहीं होती और पत्तियों से रहित जड़ में कम नहीं। इसकी प्रकृति सन्तुष्ट है और यह प्रकृति को अपने सभी क्षणों में समान रूप से सन्तुष्ट करती है। लेकिन आदमी आगे टाल देता है अथवा स्मरण करता है। वह वर्तमान में नहीं रहता। अपनी आखें पलटकर वह अतीत के लिए बिलखता है या अपने चारों ओर बिखरे वैभव की चिन्ता न करके अगूठों पर उचककर भविष्य की ओर देखता है। वह तब तक प्रसन्न और शक्तिशाली नहीं हो सकता जब तक वह भी कालातीत होकर प्रकृति के साथ वर्तमान में नहीं जीता।

यह बात काफी साफ हो जानी चाहिए। फिर देखिए, कितनी पुष्ट मेधाएँ तब तक ईश्वर की बात सुनने का साहस नहीं करती जब तक वह, किसी न किसी डेविड^१ अथवा जरमियाह^२ अथवा पाल^३ की शब्दावली में

१. इसराइल का महान राजा।

२. ई० पू० का एक पैगम्बर।

३ सन्त पाल (सन् '६७)

नहीं बोलता। थोड़े-से ग्रन्थपाठों अथवा थोड़े-से जीवनो की इतनी बड़ी कीमत हम सदा ही लगाते नहीं रहेंगे। हम भी बच्चों की तरह हैं जो दादी-अम्माओं और शिक्षकों के वाक्यों को क्रम-क्रम से दोहराते रहते हैं। और जब हम बड़े हो जाते हैं तो जिनसे मिलने का अवसर हमें मिल जाता है, उन प्रतिभाओं और चरित्रों के बोले हुए ज्यों के त्यों शब्दों को कष्ट के साथ याद कर-करके दोहराते रहते हैं। बाद में, जिन्होंने ये बातें कही थीं उनके दृष्टिकोण को जब हम समझ जाते हैं तब हम उन्हें ही समझ जाते हैं और शब्दों को छोड़ देने पर राजी हो जाते हैं; क्योंकि कभी भी जब मौका आता है, शब्दों का प्रयोग तो हम कर ही सकते हैं। यदि हम सच्चाई से रहेंगे तभी हम सत्य को देखेंगे। एक मजबूत आदमी के लिए मजबूत होना उतना ही सरल है जितना कमजोर के लिए कमजोर होना। जब हम नई अनुभूति पा लेंगे तो इसके सचित कोष की स्मृति को पुराना कूड़ा कहकर बड़ी खुशी से त्याग देंगे। जब कोई व्यक्ति ईश्वर के साथ जीता है तो उसकी आवाज़ सोते की कुलकुल और फसल की सरसराहट जितनी मीठी बन जाती है।

और अब अन्त में इस विषय का उच्चतम सत्य अनकहा रह गया है; शायद उसे कहा भी नहीं जा सकता, क्योंकि जो कुछ हम कहते हैं, वह जैसे अन्त प्रज्ञा की बात को लम्बे समय बाद याद करना होता है। जिस विचार के माध्यम से उसे कहने का निकटतम प्रयास मैं कर सकता हूँ, वह यह है। जब कुछ अच्छा आपके पास है, जब आपमें जीवन है तो वह किसी परिचित अथवा अभ्यास-सिद्ध माध्यम के कारण नहीं है। आप किसी अन्य के पदचिह्नों को वहाँ नहीं पहचानेंगे। आप किसी आदमी का चेहरा नहीं देखेंगे। आप किसीका नाम नहीं सुनेंगे। माध्यम, विचार और अच्छाई सब अनोखी और नई होगी। उदाहरण और अनुभव से ये अलग होगी। आप मानव से मार्ग लेंगे, उस तक पहुँचेंगे नहीं। जितने भी लोग कभी अस्तित्व में थे वे इसके विस्मृत कार्यवाहक हैं। भय और आशा समान रूप से इसके नीचे हैं। आशा तक में कुछ निम्न है। ज्ञान-दर्शन के क्षणों में ऐसा

कुछ नहीं होता जिसे कृतज्ञता कहा जा सकता है, न ही उसे आनन्द कहा जा सकता है। आत्मा उद्वेगों से ऊपर उठ जाती है और गृहरूपता और शाश्वत कारणवाद को देखती है। सत्य और मुक्त के स्वतः अस्तित्व को परखती है और यह जानकर शान्त हो जाती है कि सब चीजें ठीक चल रही हैं। प्रकृति के विशाल अन्तराल, अतलातक समुद्र, दक्षिणी समुद्र, समय के लम्बे व्यवधान वर्ष और शताब्दियाँ किमी गिनती के योग्य नहीं रहती। यह जो मैं सोचता हूँ, अनुभव करता हूँ; वह जैसे मेरे वर्तमान का और जिसे जीवन कहते हैं और जिसे मृत्यु कहते हैं, उसका आधार है। वैसे ही वह जीवन और परिस्थितियों की हर पूर्वस्थिति का भी आधार है।

सिर्फ जीवन हितकर होता है, वह नहीं कि जो जिया जा चुका है। विश्राम के क्षणों में शक्ति समाप्त हो जाती है। वह एक अतीत से एक नई स्थिति में कालान्तरित होने के, खार्ई को पाटने के, और एक लक्ष्य की ओर झपाटा भरने के क्षणों में ही निहित मिलती है। इस एक तथ्य से कि आत्मा होती है, ससार घृणा करता है, क्योंकि यह अतीत को सदा के लिए गिरा देता है, सभी वैभवों को निर्धनता में और सम्पूर्ण प्रतिष्ठा को लज्जा में बदल देता है। सन्त को दुष्ट के साथ गडबडा देता है और जीसस^१ और जूडास^२ को समान रूप से एक ओर हटा देता है। तब हम आत्मनिर्भरता का प्रलाप क्यों करते हैं? जितनी दूर तक आत्मा उपस्थित है उतनी दूर तक शक्ति प्रधान नहीं, बस माध्यम ही होगी। निर्भरता की बातें करना कहने का एक दीन, बाहरी तरीका है। बल्कि उसकी बातें करो जो निर्भर है, क्योंकि वही काम करता है, और है। जिसमें मैं से अधिक आज्ञा-कारिता है, जो मुझे वश में कर लेता है यद्यपि उंगली नहीं उसे उठानी चाहिए। प्राणों की आकर्षण शक्ति के द्वारा उसीके चारों ओर मुझे घूमना चाहिए। जब हम प्रतिष्ठित गुण के बारे में बातें करते हैं तो हम

१. ईसा मसीह

२. ईसा मसीह को धोखा देकर पकड़वानेवाला।

उसे आलकायिक समझते हैं। हम अभी तक यह नहीं समझते कि गुण उच्चता का नाम है, कि एक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह को, जो सिद्धान्तों के प्रति नम्य और पारगम्य हैं, प्रकृति के नियमानुसार उन नगरों, राष्ट्रों, राजाओं, धनिकों, कवियों पर हावी होना चाहिए, जो वैसे नहीं हैं।

यह अन्तिम तथ्य है, जिस तक हम उतनी ही शीघ्रता से पहुँच जाते हैं जितनी कि हर विषय पर। सभीका एक चिरशुभ सकल्प में एक हो जाना। आत्मस्थ अस्तित्व परम प्रयोजन का उपकरण है और यह जिस क्रम से निम्न रूपों में प्रवेश करता है उसी क्रम से कल्याण का मापदण्ड बनता है। सब वास्तविक पदार्थ उतने ही वास्तविक हैं, जितने गुण-युक्त वे हैं। वाणिज्य, कृषि-कर्म, शिकार, ह्वेल मारना, युद्ध, भाषण व्यक्तिगत प्रभाव से कुछ है और उसकी उपस्थिति के और अशुद्ध कर्म के उदाहरण बनकर मेरी मान्यता के विषय बनते हैं। सुरक्षण और विकास के इसी नियम को प्रकृति में भी काम करता हुआ मैं देखता हूँ। प्रकृति में शक्ति अधिकार का अनिवार्य माप है। जो अपनी सहायता स्वयं नहीं कर सकते, उनका अपने राज्य में रहना प्रकृति सहन नहीं करती। एक ग्रह की उत्पत्ति और उसका परिपाक, उसका सन्तोल और उसकी कक्षा, तेज हवाओं में से उभरता हुआ भुका पेड़, हर पशु और वनस्पति के प्राणस्रोत—ये आत्मा के आत्म-पर्याप्त और इसलिए आत्मनिर्भर प्रदर्शन हैं।

इस प्रकार, सब सकेन्द्रित होता है। हम अस्थिर न हो। एक प्रयोजन लेकर हम घर बैठे। हस्तक्षेप करनेवाले मनुष्यों, पुस्तकों और सस्थाओं के गडबडभाले को हम इस दिव्य तथ्य की साधारण घोषणा से सन्ना दें और आश्चर्य-चकित कर दें। आक्रामकों को आदेश दो कि वे अपने जूते उतार लें, क्योंकि यहाँ अन्दर ईश्वर विराजमान हैं। हमारी सादगी उनका फैसला करे और अपने निजी कानून के प्रति हमारी विनय हमारी निजी सम्पन्नता के साथ-साथ प्रकृति और भावी की विपन्नता का भी प्रदर्शन करे।

लेकिन अब तो हम एक भीड़ हैं। आदमी आदमी से नहीं दबता। घर पर ही टिके रहने और आन्तरिक समुद्र से सम्पर्क स्थापित करने के लिए

उसकी प्रतिभा को मजबूर नहीं किया जाता। उल्टे वह अन्य लोगों के कलसों से एक प्याला पानी मागने के लिए दूर-दूर तक चला जाता है। हमें अकेला जाना चाहिए। मैं उपदेशों की अपेक्षा प्रार्थना शुरू होने से पहले के खामोश गिरजे को अधिक पसन्द करता हूँ। लोग कितने दूर, कितने शान्त, कितने पवित्र लगते हैं। उनमें प्रत्येक एक परकोटे अथवा वेदी से घिरा है। ऐसे ही सदा हम बैठें। अपने मित्र अथवा पत्नी अथवा पिता अथवा बच्चे के दोषों को क्यों हम इमीलिए अपने ऊपर ले कि वे हमारे हृदय के निकट हैं अथवा उसी खून से सम्बन्धित माने जाते हैं। सब लोगों में मेरा खून है और मुझमें सबका। लेकिन इसी कारण मैं उनकी दुशीलता अथवा मूर्खता को इतनी सीमा तक भी ग्रहण नहीं करूँगा कि उसके लिए शर्मिन्दा तक बनूँ। लेकिन आपका अलग हटना यन्त्रवत् नहीं, बल्कि आत्मिक होना चाहिए, अर्थात् वह ऊपर उठाना होना चाहिए। कभी-कभी लगता है कि पूरी दुनिया ही प्रभावपूर्ण तुच्छताओं को लेकर आपको फुसला लेने का पड़्यन्त्र कर रही है। मित्र, ग्राहक, बच्चा, बीमारी, डर, अभाव, दान—ये सब एकसाथ आपके बन्द द्वार को खटखटाते हैं और कहते हैं, “हमारे बीच में आ जाओ।” लेकिन अपनी स्थिति पर अडिग रहो और उनके गडबड़भाले में मत पड़ो। लोग मुझे तग करने की जो शक्ति रखते हैं, वह मैं एक दुर्बल उत्कठा के द्वारा उन्हें देता हूँ। कोई व्यक्ति मेरे कार्य के माध्यम के सिवाय अन्य रीति से मेरे निकट नहीं आ सकता। “जिसे हम प्यार करते हैं उसे हम पा लेते हैं, लेकिन कामना के द्वारा हम स्वयं को प्रेम से शून्य बना डालते हैं।”

यदि हम आज्ञानुकारिता और आस्था के पुण्य तक तत्काल ही ऊपर नहीं उठ सकते तो कम से कम हमें प्रलोभनों को तो काबू में रखना ही चाहिए। हम युद्ध की स्थिति में प्रवेश करें और अपनी सैक्सन छाती में थोर^१ और वोडन^२ साहस और स्थिरता को जगाएँ। ऐसा अपने निर्द्वन्द्व समय में सब

बोलकर हमें करना चाहिए। इस झूठे सत्कार और झूठे स्नेह को परखिए। जिनके साथ हम व्यवहार करते हैं उन प्रवर्चित और प्रवचक लोगों की आशाएँ पूरी करने के लिए मत जीइए। उनसे कहिए, “हे पिता, हे माता, हे पत्नी, हे भाई, हे मित्र, मैं आभासों के पीछे भागते रहने के कारण ही आज तक आपके साथ रहता रहा हूँ। अब के बाद मैं सच्चाई का अनुकरण कर रहा हूँ। आप लोग यह जान ले कि अब के बाद शाश्वत नियम से कम किसी कानून को मैं नहीं मानूँगा। सान्निध्य के सिवाय कोई करारनामा मैं स्वीकार नहीं करूँगा। मैं अपने माता-पिता का पालन करने, अपने परिवार का भरण-पोषण करने, एक पत्नी का सच्चा पति होने का प्रयत्न करूँगा। लेकिन ये रिश्ते मैं एक नये और अभूतपूर्व तरीके से ही पूरे करूँगा। आपकी प्रथाओं से मैं नाता तोड़ता हूँ। मैं स्वयं में होना चाहता हूँ। मैं अब आगे आपके लिए अपने को या आपको तोड़ नहीं सकता। जो मैं हूँ, यदि उसे आप चाह सकते हैं तो हम खुश होकर रहेगे। यदि आप ऐसा नहीं कर सकते तब भी इस योग्य बनने का प्रयत्न मैं करूँगा कि आप मुझे चाह सकें। मैं अपनी रुचियों अथवा अरुचियों को आपसे छुपाऊँगा नहीं। मैं ऐसा विश्वास रखूँगा कि जो कुछ गहन है, वह पवित्र है, कि मैं सूर्य और चन्द्रमा के सामने खड़ा होकर मजबूती से वही करूँगा जो मुझे आनन्द देता है और जिसके लिए मेरा हृदय मुझे नियुक्त करता है। यदि आप सज्जन हैं, मैं आपसे प्रेम करूँगा। यदि आप नहीं हैं तो मैं झूठे व्यवहार से आपको या अपने को आघात नहीं पहुँचाऊँगा। यदि आप सच्चे हैं; लेकिन आपका सत्य वही नहीं है जो मेरा है, तो आप अपने साथियों के पास चले जाइए। मैं अपने साथी स्वयं खोज लूँगा। मैं ऐसा स्वार्थवश नहीं, बल्कि नम्रता के साथ सच्चाई से कर रहा हूँ। कितनी भी देर तक हम झूठ में क्यों न रह चुके हों, आपका और मेरा और सभी लोगों का हित समान रूप से इसीमें है कि अब हम सच्चाई में जीएँ। क्या आज यह बात आपको कठोर प्रतीत होती है? आपकी प्रकृति और मेरी भी, जो आदेश देती है, उसे आप शीघ्र ही प्यार करने लगेंगे। और यदि हम सत्य का अनुगमन करेंगे तो अन्ततः यह हमें सुरक्षित जगह

पहुँचा देगा ।” लेकिन इस प्रकार आप इन मित्रों को पीड़ा देंगे । ठीक है, लेकिन मैं उनकी भावना की रक्षा के लिए अपनी स्वच्छन्दता और अपनी शक्ति को नहीं बेच सकता । इसके अतिरिक्त जब लोग चरम सत्य के प्रदेश में भाँकते हैं तो उन सबके अपने विवेक-क्षण होते हैं; तब वे मुझे ठीक समझेंगे और स्वयं भी वैसा ही करेंगे ।

साधारण लोग सोचते हैं कि जनप्रिय मानों का आपके द्वारा निषेध सभी मानदण्डों का निषेध है और मात्र एक स्वेच्छाचारिता है । एक साहसी इन्द्रियवादी अपने अपराधों पर सुनहरा मुलम्मा चढ़ाने के लिए दर्शन के नाम का उपयोग करता है । लेकिन चेतना का नियम आपसे सहमत होता है । आत्म-स्वीकार की दो वेदियाँ हैं । एक या दूसरी के सामने समर्पण करना ही पड़ता है । आप ‘प्रत्यक्ष’ अथवा ‘अप्रत्यक्ष’ पद्धति से अपने को दोष-मुक्त करते हुए अपने कर्तव्यों को निभा सकते हैं । सोचिए, क्या आपने अपने सम्बन्धियों को—पिता, माता, भतीजा, पड़ोसी, नगर, बिल्ली और कुत्ते को—सन्तुष्ट कर लिया है ? क्या इनमें से कोई भी आपकी भर्त्सना करेगा ? लेकिन मैं इस प्रत्यक्ष मानदण्ड की भी उपेक्षा करता हूँ और अपने को अपने प्रति उन्मुक्त करता हूँ । मेरे अपने निजी कठोर दावे हैं और एक पूरा वृत्त है । कितने ही कर्तव्यों को जिन्हें कर्तव्य कहा जाता है यह नाम देने से वह इन्कार करता है । लेकिन यदि मैं इसके ऋण को चुका सकूँ तो यह मुझे जनप्रिय कानून को त्याग देने में समर्थ बना देता है । यदि कोई सम्भ्रता है कि यह कानून शिथिल है तो एक दिन इसके आदेशों का पालन करके वह देखे तो ।

जिसने मानवता के सामान्य उद्देश्यों को त्याग दिया है और स्वयं को काम लेनेवाले स्वामी के रूप में पेश करने का साहस किया है, उसमें सच ही देवत्व-जैसा कुछ होना आवश्यक है । उसका हृदय ऊँचा, उसका सकल्प सच्चा, उसकी दृष्टि साफ होनी चाहिए जिससे वह लगनपूर्वक स्वयं अपने लिए अपना सिद्धान्त, समाज, कानून बन सके । एक साधारण प्रयोजन उसके लिए उतना ही ठोस लोहे-जैसा हो सके जितनी कि दूसरों की ज़रूरतें

उनके लिए होती है।

जिसे हम विशिष्ट रूप में 'समाज' कहते हैं उसके वर्तमान पक्षों पर विचार करते हुए इस नीतिशास्त्र की जरूरत हम महसूस करेंगे। मानव की शिराएँ और उसका हृदय जैसे खींचकर बाहर निकाल लिया गया है और हम भीरु, विषण्ण और रिरियानेवाले बन गए हैं। हम सत्य से डरते हैं, भाग्य से डरते हैं, मृत्यु से डरते हैं और एक-दूसरे से डरते हैं। हमारा युग किन्हीं महान और पूर्ण पुरुषों को जन्म नहीं देता। उन स्त्री-पुरुषों की हमें जरूरत है जो जीवन को और हमारी सामाजिक स्थिति को पुनरुज्जीवित करें। लेकिन हम देखते हैं कि अधिकतर व्यक्ति दीवालियाँ हैं। वे अपनी ही जरूरतों को पूरा नहीं कर सकते। हर अनुपात से अधिक अपनी व्यावहारिक शक्ति को बढ़ाने की महत्वाकांक्षा उनमें है और वे रात और दिन लगातार भुक्ते और मागते रहते हैं। हमारी गृहस्थी भिक्षुक है; हमारी कलाएँ, हमारे धन्धे, हमारे विवाह, हमारे धर्म, ये हमारे चुने हुए नहीं हैं। इन्हें समाज ने हमारे लिए चुना है। हम बैठकी सिपाही हैं। जहाँ शक्ति पैदा होती है, भाग्य के उस क्रूर युद्ध से हम भागते हैं।

हमारे युवक यदि अपने पहले ही प्रयास में विफल हो जाते हैं तो वे दिल तोड़ बैठते हैं। यदि कोई युवक व्यापारी असफल हो जाता है तो लोग कहते हैं वह बर्बाद हो गया है। यदि कोई सर्वोत्तम प्रतिभा हमारे किसी एक कालिज में पड़ती है और बाद में एक वर्ष के भीतर ही यदि उसे नगर में या बोस्टन अथवा न्यूयार्क के उपनगरों में कोई पद नहीं मिल जाता तो उसे और उसके मित्रों को प्रतीत होने लगता है कि उसका निराश होना, और शेष जीवन-भर शिकायत करते रहना उचित ही है। न्यूहैम्पशायर अथवा वरमाट का एक हट्टा-कट्टा किसान लड़का जो एक-एक करके सभी धन्धों को अजमाता है और आनेवाले वर्षों में ठेकेदारी करता है, किसानी करता है, फेरी लगाता है, स्कूल खोलता है, उपदेश देता है, एक पत्र का सम्पादन करता है, कांग्रेस में जाता है, एक बस्ती खरीदता है, आदि-आदि और सदा ही अप्रत्याशित सफलता प्राप्त करता है। वह वैसे सौ नागरिक

गुड्डो के बराबर अकेला ही है। अपने समय से वह छाती से छाती मिला-कर चलता है और किसी धन्धे का अध्ययन न करने की शर्म महसूस नहीं करता। वह जीने को टालता नहीं, बल्कि वह तो जी ही रहा है। उसे एक मौका नहीं मिलता, बल्कि सैकड़ों मिलते हैं। कोई साधक मनुष्य के स्रोतों को उन्मुक्त करे और लोगो को बताए कि वे भुकी हुई बेतें नहीं हैं; वे स्वयं को निःसंग बना सकते हैं और उन्हें बनाना चाहिए, कि आत्मविश्वास के प्रयोग से नई शक्तियाँ प्रकट होंगी, कि मनुष्य मांस के आकार में ढला हुआ शब्द है; राष्ट्रों को स्वास्थ्य देने के लिए ही वह पैदा हुआ है; कि उसे हमारी दया पर शर्मिन्दा होना चाहिए और जिस क्षण वह कानून, मूर्तिपूजाओं और प्रथाओं को खिड़की के रास्ते बाहर उछाल देता है और अपनी अन्तःप्रेरणावशः कार्य आरम्भ कर देता है हम उसपर दया नहीं करते, बल्कि उसे धन्यवाद और सन्मान देते हैं। ऐसा शिक्षक मानव-जीवन की शान को वापस दिला देगा और उसके नाम को इतिहासों में प्रिय बना देगा।

यह देख पाना सरल है कि एक उच्चतर आत्मनिर्भरता को मनुष्यों की सभी स्थितियों और सम्बन्धों में क्रान्ति लानी चाहिए : उनके धर्म, उनकी शिक्षा, उनके उद्देश्य, उनकी जीवन-विधि में, उनके सम्पर्कों, उनकी सम्पत्ति और उनकी विचारात्मक धारणाओं में।

(१) किन प्रार्थनाओं में लोग अपने को दे डालते हैं ! जिसे वे पवित्र पद कहते हैं वह उतना ही वीर और पौरुषपूर्ण नहीं है। प्रार्थना बाहर की ओर देखती है और चाहती है कि किसी बहिर्भव विशिष्टता के माध्यम से कोई बाहरी बात आकर जुड़ जाए। वह प्राकृत, अतिप्राकृत और मध्यस्थ और आश्चर्यपूर्ण अन्तहीन भूलभुलैयाँ में स्वयं को खो देती है। प्रार्थना जो पूर्ण शुभता से कम किसी एक विशिष्ट पदार्थ की कामना करती है, दोष-दग्ध है। प्रार्थना है, उदारतम दृष्टिकोण से जीवन के तथ्यों की विचारणा। वह एक द्रष्टा और हर्षपूर्ण आत्मा का मूक संवाद है। वह ईश्वर का प्राण है जो उसके अच्छे कामों की घोषणा कर रही है। लेकिन एक निजी उद्देश्य

को लागू करने का साधन बननेवाली प्रार्थना नीचता है और चोरी है। वह प्रकृति और चेतना में एकता का नहीं द्वैत का उपदेश देती है। जैसे ही मनुष्य ईश्वर के साथ एकीभूत हो जाएगा, वह मागेगा नहीं। तब वह प्रार्थना को पूरी कर्मशीलता में देखेगा। खेत में निराई करने के लिए भुका हुआ किसान प्रार्थना कर रहा है। अपने चप्पू की चोट के साथ भुका हुआ मल्लाह प्रार्थना-रत है। ये हैं सच्ची प्रार्थनाएँ, जो यद्यपि मामूली उद्देश्यों के लिए हैं, पर पूरी प्रकृति में सुनी जाती है। फलेचर की 'बान्डूका'^१ में जब आडेट देवता के मन्तव्य की खोज-बीन करने के लिए करटैश को डाटा जाता है तो वह उत्तर देता है

उसका गुह्य प्रयोजन हमारे प्रयत्नों में निहित है। हमारे वीर कर्म ही हमारे सर्वोत्तम देवता है।

दूसरी प्रकार की भूठी प्रार्थनाएँ हैं, हमारे अनुताप। आत्मनिर्भरता की कमी का नाम ही असन्तोष है। यह सकल्प की चपलता है। उन विपत्तियों पर अफसोस मानिए जो दुखी की सहायता का अवसर देती है। यदि नहीं, तो अपने काम में लगिए और दुख स्वयं ही दूर होने आरम्भ हो जाएंगे। हमारी सहानुभूति भी ठीक उतनी ही अधम है। जो लोग मूर्खता-पूर्वक रो रहे हैं, बैठे हैं, और सग-साथ के लिए चिल्ला रहे हैं, उनके पास हम आते हैं और बिजली के अक्खड़ धक्को के माध्यम से उन्हें सत्य और स्वास्थ्य देने के बदले उन्हें एक बार फिर उन्हींके निजी तर्कों से जोड़ देते हैं। सौभाग्य का रहस्य है हाथ में आई खुशी। अपनी सहायता स्वयं करनेवाला व्यक्ति देवताओं और मनुष्यों के अधिकाधिक स्वागत का पात्र बनता है। उसके लिए सभी द्वार पूरे खुले हैं। सभी जिह्वाएं उसका स्वागत करती हैं। सभी सम्मान उसके मुकुट बनते हैं। सभी दृष्टियाँ इच्छापूर्वक उसका अनुसरण करती हैं। हमारा प्रेम उसकी ओर बहता है और उसका आलिंगन करता है क्योंकि उसे उसकी जरूरत

१ अंग्रेजी नाटककार (१५७६-१६२५) की दु खान्त कृति।

नहीं थी। हम लालायित होकर विनयपूर्वक उसे प्यार करने हैं और उसे प्रतिष्ठा देते हैं क्योंकि वह अपने मार्ग पर दृढ़ रहा और उसने हमारी असहमति का तिरस्कार किया। देवता उसे चाहते हैं क्योंकि आदमियों ने उससे घृणा की। जरथुस्त्र^१ ने कहा है, “दृढ़ता से टिके रहनेवाले मर्त्यों के पास पुण्यात्मा अमर तेजी से पहुँचते हैं।”

जिस प्रकार मनुष्यों की प्रार्थनाएँ संकल्प के रोग हैं, उसी प्रकार उनके विश्वास विवेक के रोग हैं। मूर्ख इमरायलियों की तरह वे कहते हैं, “ईश्वर हमसे न बोले। कहीं ऐसा न हो कि हम मर जाएं। तुम बोलो, कोई भी आदमी हमसे बोले। हम आज्ञा मानेंगे।” हर कहीं अपने भाई में छुपे ईश्वर से मिलने से मुँहे रोका गया है। कारण यह कि उसने अपने निजी मन्दिर के द्वारों को बन्द कर रखा है और वह मात्र अपने भाई के अथवा अपने भाई के भाई के देवता की कहानियाँ कहता रहता है। हर नया दिमाग एक नया वर्गीकरण है। यदि वह असाधारण सक्रियता और शक्ति-सम्पन्न दिमाग है, एक लॉके^२, एक लेवोजियर^३, एक हटन^४, एक बन्थेम^५, एक फोरियर^६ सिद्ध होता है तो वह अपने वर्गीकरण को दूसरों पर आरोपित करता है और लीजिए, एक नई प्रणाली पैदा हो जाती है। विचार की गहराई के अनुपात में और जिनकी चीजों का स्पर्श वह करता है और जिनको वह अपने शिष्य की पकड़ में ले आता है, उनकी सख्या के अनुसार ही आत्मतुष्टि उसे मिलती है। लेकिन यह बात विश्वासों और चर्चों में प्रमुख रूप से प्रकट है, जो स्वयं उस

१. प्राचीन पारसी धर्म का संस्थापक।

२. अंग्रेजी दार्शनिक (१६३२-१७०४)

३. फ्रांसीसी रसायन शास्त्री (१७४३-१७९४)

४. सम्भवतः अंग्रेजी गणितज्ञ (१७३७-१८२३)

५. अंग्रेजी दार्शनिक (१७४८-१८३२)

६. फ्रांसीसी समाजवादी (१७७२-१८३७)

शक्तिशाली दिमाग के वर्गीकरण है जो कर्तव्य और उच्चतम से मानव के सम्बन्ध के मूलभूत विचार के अनुसार काम करता है। कालविनवाद^१ क्वेकरवाद^२, स्वीडनबर्गवाद^३, ऐसे ही हैं। शिष्य नये पारिभाषिक पदों के नीचे हर चीज को ले आने में वही रस लेता है जो अभी-अभी वनस्पति-शास्त्र सीखकर आई लडकी उसके माध्यम से एक नई धरती और नई ऋतुओं को देखने में लेती है। कुछ समय तक शिष्य को लगेगा कि गुरु के दृष्टिकोण का अध्ययन करने से उसकी बौद्धिक शक्ति बढ़ी है। लेकिन सभी असन्तुलित दिमागों में वर्गीकरण जड़ बन जाता है। उसे लक्ष्य समझ लिया जाता है, तेज़ी से चुक जानेवाला साधन नहीं। और इस प्रकार उनकी आखों में उनकी प्रणाली की दीवारें सुदूर अन्तरिक्ष में विश्व की दीवारों के साथ एकीभूत हो जाती हैं। स्वर्ग के सितारे उनके गुरु द्वारा बनाए गए तोरण से लटके उन्हे प्रतीत होते हैं। वे कल्पना नहीं कर सकते कि आप विदेशियों को भी देखने का कोई अधिकार है। आप देख भी कैसे सकते हैं, “हुआ यही है कि जैसे-तैसे प्रकाश को हमसे चुरा ले गए हैं आप।” वे अब भी नहीं समझ पाते कि पद्धति-विहीन अबद्ध, अनवरुद्ध प्रकाश किसी भी कक्ष में, स्वयं उनके कक्षों में भी घुस सकता है। उन्हे चहचहाने दीजिए और उसे अपना निजी कहने दीजिए। यदि वे ईमानदार हैं और ठीक चलते हैं तो उनका यह नया साफ-सुथरा बाड़ा अत्यन्त सकीर्ण और निचला बन जाएगा, वह तड़क जाएगा, झुक जाएगा, जर्जर हो जाएगा और लुप्त हो जाएगा, और पूरी तरह ताजा, हर्षोत्फुल्ल, करोड़ों मण्डलों और करोड़ों रंगोंवाला प्रकाश विश्व के ऊपर ऐसे चमकेगा जैसे पहली सुबह को चमका था।

(२) आत्म-संस्कृति के अभाव के कारण ही यह है कि इटली, इंग्लैंड,

१ जान कालविन (१५०९-१५६४) का सुधारवाद।

२ फाक्स (१६२४-१६९१) का बन्धुत्व सच।

३. स्वीडिश—दार्शनिक वैज्ञानिक (१६८८-१७७२) का सिद्धान्त।

मिस्र को आदर्श माननेवाला घुमक्कड़ी का अन्धविश्वास सभी शिक्षित अमरीकनो के लिए आकर्षण का विषय बना हुआ है। इंग्लैंड, इटली अथवा यूनान को कल्पना में प्रतिष्ठित कर देनेवाले वे लोग थे जो, जहाँ थे उम्मी जगह से धरती की धुरी की तरह चिपक गए। पौरुष के क्षणों में हम महसूस करते हैं कि हमारा कर्तव्य अपनी ही जगह पर है। आत्मा कोई यात्री नहीं है। विवेकी पुरुष घर पर ही टिकता है और जब उसकी आवश्यकताएँ, उसके कर्तव्य किसी भी अवसर पर उसे घर से बाहर बुलाते हैं अथवा विदेशों में ले जाते हैं तब भी वह घर पर ही रहता है। और अपने चेहरे के इस भाव से लोगों को समझा देता है कि वह बुद्धिमत्ता और पुण्य का प्रचारक बनकर ही बाहर जा रहा है और नगरो और व्यक्तियों से एक स्वायत्त राजा की तरह मिल रहा है, किसी मूसरचन्द अथवा टहलुग की तरह नहीं।

कला, अध्ययन और उदारता के प्रयोजनों के लिए पृथ्वी की परिक्रमा करने में मुझे कोई उजड़्ड ऐतराज नहीं है। पर व्यक्ति पहले गृहस्थ बन जाए और जितना वह जानता है उससे अधिक पाने की आशा में दूर भागता न फिरे। जो मनोरजन के लिए अथवा जो कुछ उसके पास नहीं है उसे पाने के लिए यात्रा करता है वह अपने से दूर चला जाता है और पुरानी चीजों के बीच जवानी में ही बूढ़ा हो जाता है। थोबे^१ में, पामीरा^२ में उसका सकल्प और मस्तिष्क उनकी तरह ही पुराना और जर्जर बन गया है। वह खंडहरो को खंडहरो तक ढोता है।

यात्रा मूर्खों का एक स्वर्ग है। हमारी प्रथम यात्राएँ ही स्थानों की तटस्थता हमपर प्रकट कर देती है। घर पर मैं स्वप्न लेता हूँ कि नेपल्स, रोम जाकर वहाँ के सौंदर्य के नशे में मैं डूब जाऊँगा और इस प्रकार अपने विषाद को समाप्त कर लूँगा। मैं अपना बिस्तर बाधता हूँ। मित्रों से मिलता हूँ। समुद्री जहाज पर चढ़ता हूँ। और अन्त में नेपल्स में जागता हूँ।

और वहा भी यह कठोर तथ्य कि मेरी विषण्ण आत्मा, कठोर और जिससे मैं भागा था ठीक वैसे ही, मेरे साथ है। मैं पोप की नगरी और महलो को खोजता हूँ। मैं दिखावा करता हूँ कि दृश्यो और प्रस्तावो ने मुझपर नशा चढ़ाया है। पर मैं उन्मत्त नहीं होता। जहा भी मैं जाता हूँ मेरी समस्या मेरे साथ जाती है।

(३) लेकिन यात्रा का यह पागलपन उस गहनतर अस्वास्थ्य का लक्षण है जो पूरे बौद्धिक कर्म को प्रभावित कर रहा है। बुद्धि आवारा होती है और हमारी शिक्षा-प्रणाली अस्थिरता को बढ़ाती है। जब हम घर रहने पर विवश हो जाते हैं तो हमारे दिमाग यात्रा करते हैं। हम नकल करते हैं। और नकल करना क्या है? वस, दिमाग का यात्रा करना। हमारे घर विदेशी रुचि के साथ बनाए जाते हैं। हमारी अलमारियाँ विदेशी साज-सज्जाओं से सजी होती हैं। हमारी सम्मितियाँ, हमारी रचियाँ, हमारी योग्यताएँ, अतीत और सुदूर की ओर झुकती हैं और उनका अनुसरण करती हैं। जहा भी वे फली-फूली हैं अत्मा ने कलाओं का सृजन किया है। अपने निजी मन में ही कलाकार ने अपने आदर्श को खोजा है। किए जाने-वाले काम और रची जानेवाली स्थितियों पर उसने अपने निजी विचार को ही लागू किया है। और डोरिक^१ अथवा गॉथिक^२ नमूने की नकल करने की जरूरत हमें क्यों हो? सौन्दर्य, सुविधा, विचार की उत्कृष्टता और अपरूप अभिव्यक्ति हमारे उतनी ही निकट है जितनी कि किसी भी अन्य के, और यदि कोई अमरीकन कलाकार आशा और अनुरक्ति के साथ ठीक उसी चीज का अध्ययन करेगा जिसे उसे तैयार करना है, जलवायु, मिट्टी, दिन की लम्बाई, लोगों की आवश्यकताओं, सरकार की प्रकृति और रूप—इन सबका विचार वह करेगा तो एक ऐसा घर वह बना लेगा जिसमें ये सब चीजें फिट मिलेंगी और रुचि और भावना की भी सन्तुष्टि होगी।

१ प्राचीन ग्रीस के डोरिस नगर-जैसे

२ ट्यूटन जाति की गॉथ शाखा का शिल्प।

अपनेपन पर जोर दो। कभी नकल मत करो। एक पूरे जीवन के सस्कारों की सचित शक्ति से हर क्षण अपनी निजी देन आप प्रस्तुत कर सकते हैं। लेकिन दूसरों की योग्यता को ग्रहण करके एक अचिन्तित अर्द्ध-सम्पत्ति ही आपको मिल पाती है। जो काम हर कोई सर्वोत्तम रूप में कर सके वह तो बस स्रष्टा भगवान ही मिखा सकता है। वह क्या है, कोई व्यक्ति तब तक नहीं जानता, न जान ही सकता है जब तक वह इसे प्रत्यक्ष नहीं कर देता। कौन है वह गुरु, जो शेक्सपीयर को शिक्षा दे सकता था ? कौन-सा मर्मज्ञ है जो फ्रैन्कलिन^१ अथवा वाशिंगटन^२ अथवा वेकन^३ अथवा न्यूटन^४ को पढा सकता था। हर महान व्यक्ति अनूठा होता है। सीपियो का सीपियनवाद उसका ठीक वह हिस्सा है जिसे वह उधार नहीं ले सकता था। शेक्सपीयर का अध्ययन करने से शेक्सपीयर नहीं बना जा सकता। जो काम आपको सौपा गया है, वह कीजिए। बहुत अधिक की न आप आशा कर सकते हैं, न बहुत अधिक साहस ही कर सकते हैं। इस क्षण एक वह आदेश आपके लिए है जो फीडियास^५ की विशाल छेनी अथवा मिस्र वालों के बेलचे अथवा मोजेज़^६ या दान्ते^७ की लेखनी के समान ही साहसपूर्ण और उत्कृष्ट है, पर जो इन सबमें भिन्न है। आत्मा पूर्ण सम्पन्न, पूर्ण मुखर होते हुए भी, अपनी सहस्र विदीर्ण जिह्वा के द्वारा अपनी पुनरावृत्ति करने का अनुग्रह शायद नहीं करेगी। लेकिन यदि आप इन पूर्वपुरुषों को सुने, तो निश्चय ही स्वर की उसी ऊँचाई से आप उन्हें उत्तर दे सकते हैं, क्योंकि कान और जीभ एक ही प्रकृति के दो अंग हैं।

१ अमरीकी दार्शनिक (१७०६-१७९०)

२ अमरीका का प्रथम राष्ट्रपति।

३ अंग्रेज़ी दार्शनिक व राजनीतिज्ञ (१५६१-१६२६)

४ अंग्रेज वैज्ञानिक व दार्शनिक (१६४२-१७२७)

५. ई० पू० पाचवी सदी का ग्रीक शिल्पकार व निर्माता।

६ यहूदी पैगम्बर। ७ इतालवी महाकवि (१२६५-१३२१)

अपने जीवन के सरल और उदार प्रदेशों के अनुवर्ती बनिए। अपने हृदय की आज्ञा पर चलिए। और आप पहले के ससार का पुनर्सृजन कर सकेंगे।

(४) जैसे हमारा धर्म, हमारी शिक्षा, हमारी कला विदेशों की ओर देखती है, वैसा ही हमारे समाज की आत्मा भी करती है। मव लोग समाज-सुधार की कलगी अपने सिर पर बांधते हैं, पर किसी भी व्यक्ति का सुधार नहीं होता।

समाज कभी आगे नहीं बढ़ता। जितनी तेजी से वह एक पक्ष में आगे बढ़ता है, उतनी ही तेजी से पीछे की ओर हट जाता है। वह निरन्तर परिवर्तनों का शिकार बनता है; यह बर्बर है, यह सम्य है, यह धर्मनिष्ठ है, यह सम्पन्न है, यह वैज्ञानिक है। लेकिन ये परिवर्तन बेहतर नहीं लाते। जो कुछ भी दिया जाता है उसके बदले कुछ ले लिया जाता है। समाज नई कलाएँ प्राप्त करता है और पुरानी अन्त प्रेरणाएँ खो देता है। अच्छे कपड़े पहनने, पढ़ने, लिखने, सोचने—वाले जब में एक घड़ी, एक पेन्सिल और एक हुडी लिए एक अमरीकन की तुलना उस नये न्यूजोलैंडवासी से करके देखी तो जाए जिसकी सम्पत्ति मात्र एक गदा, एक भाला, एक बटाई और सोने के लिए एक भोपड़े का अविभाजित बीसवा भाग है। दोनों व्यक्तियों के स्वास्थ्य की तुलना कीजिए और आप देखेंगे कि श्वेत मानव ने अपनी आदिम शक्ति को खो दिया है। यदि यात्री सच बताते हैं, तो उस जगली पर आप एक चौड़ी कुल्हाड़ी से आघात कीजिए और एक या दो दिन में ही मांस जुड़कर ठीक हो जाएगा, ऐसे जैसे कि आपने मुलायम मिट्टी में चोट की हो। यही आघात श्वेत व्यक्ति को उसकी कब्र तक पहुँचा देगा।

सम्य मानव ने एक बग़ी बना ली है लेकिन अपने पैरों का इस्तेमाल खो दिया है। उसने बैसाखी का सहारा लिया, लेकिन उसकी पेशियों के सहयोग में उतनी ही कमी आ गई है। उसके पास एक बढ़िया जिनेवा घड़ी है, लेकिन सूर्य को देखकर समय बताने की उसकी योग्यता समाप्त हो गई है। उसके पास ग्रीनविच की बनी एक नाविक ऋतु-पत्री है और इस प्रकार आवश्यक सूचना के बारे में निश्चिन्त होकर साधारण व्यक्ति आकाश के

किसी भी तारे से परिचित नहीं रहा है। वह अयनकक्ष को नहीं देखना। वह विषुव के बारे में बहुत थोड़ा जानता है। और वर्ष का पूरा चमचमाता वलेण्डर उसके दिमाग में अब कोई डायल नहीं रखना। उसकी नोटबुकें उसकी स्मृति को हानि पहुंचाती हैं। उसकी पुस्तकें उसकी बुद्धि पर बोझ बन गई हैं। बीमे के दफ्तरों ने दुर्घटनाओं की सख्या को बढ़ा दिया है। एक प्रश्न यह पैदा हो गया है कि क्या मशीनें हमपर भार नहीं बन गई हैं। क्या हमने सस्कार के द्वारा कुछ शक्ति तथा समस्याओं और बाह्य रूपों में दबी ईसाइयत के द्वारा वन्य गुणों की ऊर्जा को खो नहीं दिया है। हर स्टायक (तपस्वी) पहले एक स्टायक था, लेकिन इस ईसाइयत में ईसाई कहा है ?

ऊर्चाई अथवा वजन के स्तर की अपेक्षा नैतिक स्तर में कोई अधिक अतिक्रम नहीं आया है। जितने कभी भी रहे हैं, उससे महानतर व्यक्ति अब नहीं है। प्रथम और एकदम आज के युगों के महान व्यक्तियों में एक अनूठी समानता देखी जा सकती है। उन्नीसवीं शताब्दी के विज्ञान, कला, धर्म और दर्शन तेईस अथवा चौबीस सदी पहले के प्लूटार्च^१ के बीर पुरुषों से महानतर लोगों को शिक्षित करने की धमती नहीं रखते। जाति किसी भी समय में प्रगतिशील नहीं रही है। फॉशियन^२ मुकरात^३, अनेक्सागोरम^४ डायोजीन्स^५ बड़े आदमी हैं लेकिन वे कोई वर्ग नहीं छोड़ गए हैं। जो वास्तव में उनके वर्ग का है, उसे उनके नाम से नहीं पुकारा जाएगा। वह स्वयं निजी व्यक्ति होगा और अपनी बारी में एक अलग शाखा का संस्थापक होगा। हर युग की कलाएँ और अन्वेषण सिर्फ उसके परिधान होते हैं। वे उसे अनु-प्राणित नहीं करते। बढ़िया मशीनों से होनेवाली हानि उसके लाभ की

१. ग्रीक जीवनी-लेखक (४६-१२०)

२. एथेन्स का राजनीतिज्ञ व सेनापति (ई० पू० ४०२-३१३)

३. ग्रीक सन्त।

४. ग्रीक दार्शनिक (ई० पू० ५००-४२८)

५. ग्रीस का सनकी दार्शनिक (ई० पू० ४१२-३२३)

भरपाई कर देती है। हडसन^१ और बेहरिंग^२ ने अपनी मछलीमार नावों से वह उपलब्ध किया जिसे देखकर विज्ञान और कला के सभी स्रोतों के पूरे उपयोग से निर्मित यन्त्रों से सज्जित पैरी^३ और फ्रैंकलिन^४ ताज्जुब में रह गए। एक आपेरा शीशे के सहारे गैलीलियो^५ ने तबसे किसी भी अन्य की अपेक्षा कहीं अधिक सुन्दर स्वर्गीय ग्रहों की एक लड़ी खोज निकाली थी। कोलम्बस^६ ने बिना डेक की नाव से नई दुनिया को ढूँढ निकाला था। कुछ वर्ष अथवा शताब्दिया पहले जोर-शोर की प्रशंसा के साथ जिन साधनों और मशीनों को खोजा गया था एक समय के बाद उनका बेकार और नष्ट हो जाना देखकर बड़ा अजीब लगता है। महान प्रतिभा, अनिवार्य मानव के पास वापस लौट जाती है। विज्ञान की उपलब्धियों में हमने युद्ध-कला में सुधारों की गणना की है। फिर भी नेपोलियन ने खुली हवा में पड़ाव डाल-डालकर यूरोप को जीत लिया था और इसमें उसका, सभी सहायक उपकरणों को त्यागकर नग्न वीरता के अतीत में लौट जाना भी शामिल है। लास कोसास^७ कहता है, कि सम्राट की मान्यता थी कि हमारे शत्रु, शस्त्रागारों सम्भरण अधिकारियों और गाड़ियों को इतनी दूर तक समाप्त किए बिना कि रोम की प्रथा की नकल पर सिपाही अपना अनाज ले, अपने हाथ से चक्की पर पीसे और स्वयं अपनी रोटी पकाए। एक पूर्ण सेना का निर्माण असम्भव है।

समाज एक लहर है। लहर आगे बढ़ती है, लेकिन जिससे वह बनी

१. अग्रेजी नाविक (मृत्यु १६११)
२. डेनिश नाविक (१६८०-१७४१)
३. अग्रेजी ध्रुव अन्वेषक (१७६०-१८५५)
४. अग्रेजी ध्रुव अन्वेषक (१७८६-१८४७)
५. इतालवी ग्रह-वैज्ञानिक (१५६४-१६४२)
६. अमरीका का अन्वेषक (१४५१-१५०६)
७. फ्रांसीसी इतिहासकार (१७६६-१८४२)

है वह पानी आगे नहीं बढ़ता। घाटी में उठकर वही कण पहाड़ी तक नहीं पहुँचना। इसकी एकता मात्र रूपात्मक है। जो लोग आज एक राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं, वे अगले वर्ष मर जाते हैं और उनके साथ उनका अनुभव भी मर जाता है।

और इसीलिए सम्पत्ति पर निर्भरता, उसकी रक्षा करनेवाली सरकारों पर निर्भरता समेत, आत्मनिर्भरता की कमी का नाम है। जितनी दूर तक लोग धार्मिक, शैक्षिक और नागरिक सस्थाओं को सम्पत्ति के संरक्षक मानते रहे हैं उतनी ही दूर तक वे स्वयं अपने पर और अन्य चीजों पर ध्यान देने से विरत रहे हैं। और वे इनपर हुए आक्रमणों की निन्दा इसलिए करते हैं क्योंकि इन्हें वे सम्पत्ति पर आक्रमण मानते हैं। एक-दूसरे के आदर का मानदण्ड वे इस बात को मानते हैं कि प्रत्येक के पाम क्या है, इसको नहीं कि प्रत्येक क्या है। एक संस्कृत व्यक्ति को अपनी सम्पत्ति से शर्म आने लगती है क्योंकि वह अपनी प्रकृति का आदर करने लगता है। खासकर जो कुछ उसके पास है, उससे तब तो वह घृणा करने लगता है जब वह अकस्मात् ही उसे मिल जाए, उत्तराधिकार में अथवा उपहार में अथवा अपराध द्वारा उसे प्राप्त हो। तब वह महसूस करता है कि यह सम्पत्ति नहीं है, यह उसकी नहीं है; इसकी जड़ें उसमें नहीं हैं। यह सिर्फ बहा पड़ी है क्योंकि कोई क्रान्ति अथवा डाकू उसे उठा नहीं ले जाता है। लेकिन जो आदमी है वह हमेशा आवश्यकता के अनुसार ही उपलब्ध करता है; और जो वह ग्रहण करता है वह सजीव सम्पत्ति होती है। वह शासको या भीड़ या क्रान्तियों या अग्निकांडों या तूफानों या दीवालियेपन के संकेत का इन्तज़ार नहीं करती। चाहे जहाँ भी रहे, वही वह अपना पुनर्नवीकरण करती रहती है। खलीफा अली ने कहा था, “जीवन का तेरा भाग्य या अश यह है कि तू अपनी खोज करे। इसलिए इसकी खोज करने से विराम ले।” इन अप्राकृतिक वस्तुओं पर हमारी निर्भरता हमें अको के एक दासतापूर्ण सम्मान तक पहुँचा देती है। राजनीतिक दलों के अनगिनत सम्मेलन होते हैं, बड़ा सगम होता है और प्रत्येक के साथ एक नई घोषणा

का नया शोर उठता है। ऐसेक्स का प्रतिनिधि-मंडल, न्यू हैम्पशायर के डैमोक्रेट, मेन के व्हिग्स। और युवक देश-भक्त एक सहस्र नई आखे और हाथ अपने सामने पाकर उतना ही अधिक मजबूत महसूस करता है। इसी प्रणाली पर सुधारक लोग सम्मेलन बुलाते हैं, मन देते हैं और बड़ी सख्या मे प्रस्ताव स्वीकार करते हैं। हे मित्रो, ईश्वर इस ढंग से आपमे प्रवेश नहीं करेगा और आपमे नहीं बसेगा। वह ऐसा ठीक एक विपरीत तरीके से ही करेगा। जब एक व्यक्ति सभी बाहरी सहारो को त्याग देता है और अकेला खड़ा होता है, उसे मजबूत और प्रेरणावाला मैं तभी मानता हूँ। अपने झुंडे के नीचे एक भी रगलूट को लाकर वह उतना ही कमजोर बन जाता है। क्या एक अकेला व्यक्ति एक पूरे कस्बे से बेहतर नहीं है? लोगो से कुछ न चाहो और अन्तहीन परिवर्तनो के बाद दीखेगा कि एकमात्र आपका दृढ स्तम्भ ही, जो कुछ भी आपके चारो ओर है, उसे थामे हुए है। जो व्यक्ति जानता है कि शक्ति अन्दर से पैदा होती है, कि वह कमजोर है क्योंकि उसने अच्छाई को अपने से बाहर कही और खोजा है, यह देखकर वह बिना हिचकिचाए विचारमग्न हो गया है, तत्काल ही उसने स्वयं को ठीक कर लिया है, सही स्थिति मे जमकर खड़ा हो गया है, अपने हाथ-पैरो को उसने काबू मे कर लिया है; वही आश्चर्यजनक काम करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अपने पैरो पर खड़ा होनेवाला व्यक्ति उलटा सिर के बल खड़े होनेवाले से अधिक मजबूत होता है।

इस प्रकार, जिसे हम भाग्य कहते हैं उसका पूरा इस्तेमाल करो। अधिकांश लोग जुआ खेलते हैं और उसके पहिये की गति के अनुसार सब पा लेते हैं, सब खो देते हैं। लेकिन जीतो को आप गैरकानूनी मानकर छोड़ दे और तब कारण और परिणाम अर्थात् ईश्वर के कारिन्दो से व्यवहार करे। सकल्पपूर्वक काम करे और फल पाए और अवसर के पहिये को जजीर से बाध दे। और अबके बाद उसके घूम जाने के डर से मुक्त हो बैठे। एक राजनीतिक विजय किरायो मे वृद्धि, बीमार का स्वस्थ हो जाना,

गए हुए मित्र का लौट आना या कोई अन्य अनुकूल घटना आपके उत्साह को बढा देती है और आप सोचने लगते हैं कि अच्छे दिन आपके सामने है। इसपर विश्वास मत करो। स्वयं आपके अतिरिक्त कोई आपको शान्ति नहीं दे सकता। सिद्धान्तों की विजय के सिवाय कोई चीज़ आपको शान्ति नहीं दे सकती।

संकट की घड़ी

टामस पेन

संकट की घड़ी

ये समय वे हैं जो लोगो की आत्माओ को कसौटी पर कस लेते हैं। ऐसे संकट-काल में मोम के सिपाही और दिखावटी देशभक्त अपने देश की सेवा से पीछे हट जाया करते हैं। लेकिन जो ऐसे समय को भी भेल जाते हैं, वे स्त्रियो और पुरुषो का प्रेम और आभार पाने की योग्यता पा लेते हैं। नरक की तरह ही नृशसता को भी आसानी से जीता नहीं जा सकता। फिर भी यह आश्वासन हमें है कि सघर्ष जितना ही कठोर होगा, विजय भी उतनी ही गौरवपूर्ण होगी। जिसे हम बहुत सस्ते में पा लेते हैं, उसे उतना ही कम सन्मान हम दिया करते हैं। यह तो महगापन ही है, जो हर वस्तु को उसका मूल्य प्रदान करता है। स्वर्ग अपनी चीजों के उचित दाम लगाने जानता है। और सच ही आश्चर्य की बात होगी यदि स्वतन्त्रता जैसे दिव्य पदार्थ के ऊंचे दाम न लगाए जाए। अपनी नृशसता को कार्यान्वित करने के लिए ब्रिटेन के पास एक सेना है और उसने घोषणा की है कि सिर्फ कर लगाने का ही नहीं बल्कि हर प्रकार की जजीरो में हमें जकड़ने का उसे अधिकार है। यदि इस प्रकार बाधा जाना भी गुलामी नहीं है तब तो गुलामी जैसी कोई चीज ही धरती पर नहीं है। वैसा तो कहना तक अधर्म है, क्योंकि उतनी असीमित शक्ति सिर्फ भगवान की ही हो सकती है।

मैं इस बहस में नहीं पड़ूंगा कि प्रायद्वीप की स्वतन्त्रता की घोषणा^१

१ ४ जुलाई १७७६ को स्वीकृत तथा २ अगस्त १७७६ को हस्ताक्षरित अमरीका की स्वतन्त्रता का घोषणा-पत्र।

बहुत शीघ्र कर दी गई अथवा बहुत विलम्ब से की गई। मेरी निजी सीधी-सादी राय यह है कि यदि यह घोषणा आठ महीने पहले की गई होती तो कही अच्छा होता। पिछले जाडो का हमने सही उपयोग नहीं किया और पराधीन अवस्था में रहने हुए हम कर भी नहीं सकते थे। कुछ भी हो, दोष यदि किसीका है तो वह हमारा अपना है। हम अपने सिवाय किसी अन्य के सिर उसे मढ़ नहीं सकते। पर अभी भी बहुत अधिक हानि नहीं पहुंच पाई है। इस पिछले महीने-भर जो कुछ भी 'हो' ^१ करता रहा है उसे जीत कहने के बदले बर्बादी लाना ही कहा जा सकता है। एक वर्ष पहले का जर्सी ^२ लोगो का उत्साह तो उसे शीघ्र ही पीछे धकेल देता। पर समय और थोडा-सा दृढ़ निश्चय इस हानि की जल्द ही भरपाई कर देगा।

किसी भी जीवन्त व्यक्ति में जितना हो सकता है, उतना ही कम अन्धविश्वास मुझमें है। लेकिन मेरी गुप्त राय रही है और अब भी है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर उस जन-जाति को सैनिक-संहार का शिकार नहीं होने दे सकता अथवा नष्ट हो जाने के लिए उसे बेसहारा नहीं छोड़ सकता, जिसने बुद्धि द्वारा खोजे जा सकनेवाले हर उत्तम उपाय से युद्ध की विपत्तियों को टालने का इतनी व्यग्रतापूर्वक, इतनी अधिक बार प्रयत्न किया हो। न ही मैं इतना नास्तिक हू कि यह मान लूं कि भगवान ने विश्व का शासन त्याग दिया है और हमें शैतान की मर्जी पर छोड़ दिया है। मैं वैसा नहीं कर सकता, इसलिए मैं नहीं समझ पाता कि ब्रिटेन का राजा हमारे विरुद्ध ईश्वरीय सहायता का प्रार्थी किन आधारों पर बन सकता है। एक सामान्य हत्यारे, एक डाकू अथवा घर में सेध लगानेवाले के पास भी उस जितना ही माकूल बहाना हो सकता है।

बडा ही विस्मयजनक लगता है कि एक आतंक कभी-कभी कितनी

१ (१७२६-१८०४) अंग्रेजी सेनापति जिसने अमरीकी स्वाधीनता-संग्राम में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व कुछ समय तक सभाला।

२ हडसन नदी-तट पर न्यूयार्क के पास स्थित एक नगर।

तेजी से देश-भर में फैल जाता है। सभी जातियाँ और सभी युग उसके प्रभावाधीन रहे हैं। एक बार, यह सुनकर कि चौड़ी तलीवाली नावों का फ्रासीसी बेडा चढा आ रहा है, ब्रिटेन ऐसे काप उठा था जैसे उसे जूड़ी चढ आई हो। चौदहवीं शताब्दी में एक पूरी अंग्रेज़ी सेना, फ्रांस के राज्य को तहस-नहस कर देने के बाद भी ऐसे पीछे धकेल दी गई थी जैसे कि वह आतक से निर्जीव बन गई हो। और यह वीरतापूर्ण कार्य एक स्त्री जॉन आफ आर्क के सेनापतित्व में एक छोटी-सी टूटी-फूटी सेना ने कर डाला था। हो सकता है यहाँ भी भगवान जैसी किसी महिला को प्रेरित कर दे और वह अपने देशवासियों में प्राण फूक दे और अपने साथी पीड़ितों को विनाश और सहार से बचा ले। फिर भी, कुछ मामलों में आतक का अपना उपयोग भी है। जितनी वह हानि पहुँचाता है उतना ही लाभ भी देता है। उसकी अवधि सदैव बहुत ही छोटी होती है। दिमाग को उसकी आदत बहुत जल्द पड जाती है और स्वभाव पहले की अपेक्षा अधिक सख्त बन जाता है। लेकिन उसका एक विचित्र लाभ यह है कि वह वफादारी और मक्कारी के लिए एक कसौटी का काम देता है। उन वस्तुओं और पुरुषों को वह प्रकाश में ले आता है जो अन्यथा सदा के लिए अनाविष्कृत ही पडे रहते। वास्तव में गुप्त देशद्रोहियों पर उसका वही असर होता है जो एक स्वतः हत्यारे पर काल्पनिक आभासों का होता है। वह मनुष्य के मन में छुपे विचारों को ऊपर ले आता है और उन्हें दुनिया के सामने जनता के बीच रख देता है। अभी पीछे कितने ही दबे-छुपे टोरियो^१ ने अपना सिर बाहर निकाला है। वे अनुतापपूर्वक कोस-कोसकर, उस दिन को महत्त्व प्रदान करेंगे जिस दिन 'हो' ने देलावेयर^२ पर आक्रमण किया था।

मैं सेना के साथ फोर्ट ली^३ में था और उसके साथ पेन्सिलवेनिया की

१ अंग्रेज़ी शासन के पक्षपाती व स्वतन्त्रता के विरोधी अमरीकन।

२. अतलातक तट और देलावेयर की खाड़ी से लगता हुआ राज्य।

३. न्यूयार्क के निकट बर्जन काउन्टी में एक प्राचीन किला।

सीमा तक मैंने भी मार्च किया था। इसलिए उन कितनी ही परिस्थितियों से मैं अच्छी तरह परिचित हूँ जिन्हें एक दूरी पर रहनेवाले लोग या तो बहुत कम जानते हैं या जानते ही नहीं। हमारी स्थिति वहाँ अत्यन्त विपन्न थी। वह जगह नार्थ रीवर और हेकनसेक के बीच भूमि की एक बड़ी ही सकरी पट्टी थी। हमारी शक्ति नगण्य थी। 'हो' जितनी ताकत हमारे विरुद्ध ला सकता था, उसकी चौथाई भी वह नहीं थी। हमारे आमपाम कोई दस्ते ऐसे नहीं थे जो हमारे घिर जाने और सुरक्षा के लिए मुकाबला करने की स्थिति में हमें राहत दे सकने। हमारा गोला-बारूद, हलकी तोपें और सामान का अधिकांश भाग इस डर से हटा दिया गया था कि 'हो' ने जर्सी वालों को चीर डालने की कोशिश की, तो उम दशा में ली का किला हमारे किसी काम नहीं आ पाएगा। हर समझदार आदमी, वह सेना में हो या न हो, इस बात को समझ सकता है कि इस प्रकार के सामरिक किले भिन्न अस्थायी प्रयोजनों के लिए ही बनाए जाते हैं और तभी तक काम में आते हैं जब तक शत्रु उस विशेष लक्ष्य के विरुद्ध अपनी शक्ति का प्रयोग करता रहता है, जिसकी रक्षा के लिए ऐसे किलों का निर्माण किया गया हो। २० नवम्बर की सुबह ली के किले में हमारी स्थिति ओर अवस्था ठीक ऐसी ही थी। तभी एक अधिकारी यह सूचना लेकर पहुँचा कि लगभग सात या आठ मील ऊपर दो सौ नावों में शत्रु आ उतरा है। मेजर जनरल ग्रीन ने, जो दुर्ग की सेना का सेनापतित्व कर रहा था, उसे तत्काल शस्त्र-सज्जित हो जाने का आदेश दे दिया और परम श्रेष्ठ जनरल वाशिंगटन को, जो नाव के मार्ग से छ मील की दूरी पर स्थित हेकनसेक कस्बे में थे, त्वरित सूचना भेज दी। हमारा पहला लक्ष्य था हेकनसेक के उस पुल पर अधिकार कर लेना जो हमसे लगभग छ मील की दूरी पर और शत्रु से तीन मील की दूरी पर हमारे और उसके बीच नदी पर स्थित था। लगभग पौन घंटे

१ (१७३२-१७६६) अमरीकी क्रान्ति में अमरीकी सेनाओं का प्रधान सेनापति। बाद में अमरीका का प्रथम राष्ट्रपति।

में जनरल वाशिंगटन वहाँ पहुँच गया और सेना का नेतृत्व करना हुआ उस पुल की ओर बड़ा ज़िगके लिए मुझे आशा थी कि सघर्ष होगा। पर शत्रुओं ने हम बात को लेकर हमसे उलझना नहीं चाहा और हमारे दस्तों का अधिकतम भाग पुल पर से पार हो गया और बाकी फ़ैरी पर चढ़ गया। कुछ थोड़े-से लोग पुल और फ़ैरी के बीच एक छोटे-से नाले पर स्थित एक मिल के पाम से गुजरे और दलदली ज़मीन पर को होते हुए हेकनसेक कस्बे की ओर बढ़ गए और वही उन्होंने नदी को पार किया। गाड़िया जितना ला सकती थी, उतना सामान हम ले आए। शेष हमारे हाथ से निकल गया। हमारा साधारण लक्ष्य यह था कि दुर्गस्थ सेना को उठा लाया जाए और उसे तब तक चलाते चला जाए जब तक ज़र्सी अथवा पेन्सिलवेनिया के सैनिक दस्ते उसे पुष्ट न कर दे जिससे कि अच्छा मुकाबला किया जा सके। हम नेवार्क में चार दिन ठहरे। कुछ ज़र्सी दस्तों को हमने अपने बाज़ुओं में इकट्ठा किया। यह सूचना मिलने पर कि शत्रु आगे बढ़ रहा है उसका मुकाबला करने के लिए दो बार हम बाहर निकले, यद्यपि हमारी सख्या उससे बहुत कम थी। मेरी तुच्छ राय में 'हो' ने सेनापतित्व की दृष्टि से एक बड़ी गलती की कि उसने अपनी सेना का एक अग्रश अम्बोई में को गुज़ारकर स्टेटन द्वीप से आगे नहीं भेजा। इस प्रकार वह ब्रन्सविक में हमारी सारी रसद पर कब्ज़ा कर सकता था और हमारे पेन्सिलवेनिया में घुस आने को रोक सकता था। लेकिन यदि हम यह मान लें कि नरक की शक्ति सीमित है, तो हमें यह भी मान लेना चाहिए कि उसके कारिन्दे किसी न किसी नियति के नियन्त्रण में रहते हैं।

अपने देलावेयर तक पीछे हट आने का पूरा विवरण देने का प्रयास मैं यहाँ नहीं करूँगा। इस समय इतना ही कहना काफी है कि अफ़सरो और सैनिकों दोनों ने ही बहुत अधिक त्रस्त होने और थक जाने के बावजूद और एक लम्बी दूरी तक पीछे हटने के अनिवार्य परिणामों के रूप में अक्सर विश्राम, बिस्तर और रसद के बिना रहते हुए भी, एक पुरुषोचित और सैनिकोचित उत्साह के साथ यह सब सहा। उनकी सब इच्छाएँ इस एक

बात में केन्द्रित हो गई कि देश उठ खड़ा होगा और शत्रु को पीछे हटा देने में उनकी सहायता करेगा। वाल्टेयर^१ ने कहा है कि राजा विलियम कठिनाइयों और संघर्ष के समय के सिवाय कभी अपने पूरे तेवर पर नहीं दीख पड़ता था। जनरल वाशिंगटन के लिए भी यही बात कही जा सकती है, क्योंकि यह आचरण उसपर पूरा उतरता है। कुछ दिमागों में एक नैसर्गिक दृढ़ता होती है जिसे तुच्छ प्रश्नों से उन्मुक्त नहीं किया जा सकता। लेकिन एक बार खुल पड़ने पर साहस का एक खजाना उनमें से निकल पड़ता है। मैं इसे उन सार्वजनिक गुणों में से एक मानता हूँ जिसे तत्काल ही हम समझ नहीं पाते। ईश्वर ने एक अविच्छिन्न स्वास्थ्य का वरदान उसे दिया है और एक दिमाग दिया है जो चिन्ताओं में ही फल-फूल सकता है।

अपने मामलों की स्थिति पर कुछ मिले-जुले विचार रखकर इस लेख को मैं समाप्त करूँगा और उन्हें मैं निम्नलिखित प्रश्नों के साथ आरम्भ करता हूँ। क्या कारण है कि शत्रु ने न्यू इंग्लैंड के प्रदेशों को छोड़कर इन बीच के प्रदेशों को युद्ध का केन्द्र बनाया है? उत्तर सरल है। न्यू इंग्लैंड टोरियों में आच्छिन्न नहीं है पर हम है। इन लोगों के विरुद्ध आवाज़ उठाने में मैंने कोमलता से काम लिया है और इन्हें इनका खतरा दिखाने में अनगिनत तर्कों का प्रयोग किया है। लेकिन उनकी मूर्खता अथवा उनकी नीचता की वेदी पर एक ससार को बलि दे डालने से काम नहीं चलेगा। वह समय अब आ पहुँचा है, जब उन्हें या हमें अपना भाव-परिवर्तन करना ही होगा अथवा एक या दोनों को ही नष्ट हो जाना होगा। और टोरी है क्या? हे भगवान! क्या है वह? यदि वे शस्त्र उठाने का प्रयत्न करें तो सौ द्विगुणों को लेकर एक हजार टोरियों से भिड़ जाने में भी मुझे डर नहीं लगेगा। हर टोरी कायर है, क्योंकि पराधीन दासतापूर्ण और आत्म-केन्द्रित भय ही टोरीवाद का आधार है और ऐसे प्रभाव के नीचे रहनेवाला व्यक्ति क्रूर भले ही हो, वीर कभी नहीं हो सकता।

लेकिन, इससे पहले कि हमारे बीच एक अमिट विभाजक रेखा खिंच जाए, मामले पर हमें आपस में तर्क-वितर्क कर लेना चाहिए। तुम्हारा आचरण शत्रु को एक निमन्त्रण है फिर भी तुमने हजार में एक में भी, उससे मिल जाने का दिल नहीं है। 'हो' तुम्हारे द्वारा उतना ही प्रवर्चित है जितना कि अमरीकी हित तुम्हारे द्वारा आहत है। 'हो' आशा करता है कि तुम लोग शस्त्र उठाओगे और अपने कन्धों पर बन्दूकें रखकर उसके झंडे के नीचे इकट्ठे हो जाओगे। तुम्हारे विचार तब तक उसके किसी काम के नहीं हैं जब तक तुम व्यक्तिगत रूप में उसे सहयोग न दो, क्योंकि उसे टोरी नहीं, सिपाही चाहिए।

एक बार टोरियो के नीचे सिद्धान्तों के विरुद्ध वैसा ही रोष मैंने अनुभव किया जैसा किसी भी व्यक्ति को स्वभावतः करना चाहिए। अम्ब्रोई में दुकान करनेवाला एक प्रतिष्ठित टोरी अपने द्वार पर खड़ा था। आठ या नौ वर्ष का एक ऐसा सुन्दर बच्चा जैसा मैंने कभी ही देखा होगा, उसकी उगली पकड़े था। जितना उसने उचित समझा उतनी उन्मुक्तता से अपने मन के विचारों को उसने प्रकट किया और पितृ-भावना के विपरीत इस उक्ति के साथ उसने अपनी बात समाप्त की, "मैं शान्ति अपने जीवन-काल में चाहता हूँ।" प्रायद्वीप में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिलेगा जिसे इस बात का पूरा विश्वास न हो कि किसी न किसी समय विच्छेद होगा ही। एक उदार पिता ने कहा होता, "यदि सकट आना ही है तो अच्छा है, मेरे ही जीवन-काल में आ ले जिससे मेरा बच्चा शान्ति से रह सके।" और यह अकेला विचार, यदि इसे ठीक तरह प्रयोग में लाया जाए, तो हर व्यक्ति को कर्तव्य के प्रति जाग्रत कर देने के लिए काफी है। धरती का कोई प्रदेश इतना सुखमय नहीं होगा जितना अमरीका है। कलहपूर्ण दुनिया से दूर वह स्थित है। व्यापार के अतिरिक्त उस दुनिया से उसे कोई भी और मतलब नहीं। व्यक्ति बड़ी सरलता से स्वयं में वर्तमान आवेश और सिद्धान्त के बीच भेद कर सकता है, और जितना मुझे इस बात में विश्वास है कि विश्व का शासन ईश्वर के हाथ में है उतना ही इस बात में

भी है कि जब तक अमरीका विदेशी आधिपत्य में मुक्त नहीं हो जाता तब तक वह कभी खुश नहीं रह सकता। जब तक वह समय नहीं आता तब तक युद्ध अविराम होता रहेगा। और अन्ततः प्रायद्वीप को निजयी होना ही चाहिए क्योंकि स्वतन्त्रता की लपटे भले ही कभी-कभी लहरना बन्द कर दे, पर उसका ईंधन कभी चुक नहीं सकता।

बल-प्रयोग अमरीका कभी नहीं चाहता था, न अब चाहता है। लेकिन शक्ति का उचित प्रयोग वह चाहता है। विवेक एक दिन में नहीं आ जाता और कोई आश्चर्य नहीं कि प्रथम आरम्भ में हम भूल करे। नम्रता की अधिकता के कारण एक सेना खड़ी करने के अनिच्छुक हम थे और हमने एक पुष्ट रक्षक-दल की अस्थायी सुरक्षा के हाथों में अपना प्रयोजन सौंप दिया था। गर्मी-भर के अनुभव ने हमें काफी अधिक सिखा दिया है। फिर भी उतने ही दस्तों से, जबकि उन्हें इकट्ठा किया ही जा रहा था, शत्रु की प्रगति को परिसीमित करने में हम समर्थ हो गये। और ईश्वर को धन्यवाद कि वे फिर इकट्ठे हो रहे हैं। एक आकस्मिक संधर्ष के लिए रक्षक दलों को संसार की सर्वोत्तम सेना मैंने सदा ही माना है। लेकिन एक लम्पे युद्ध के लिए वे ठीक नहीं रहते। सम्भवतः 'हो' इस नगर को लेने का प्रयत्न करेगा। देना-वेयर के इस ओर यदि वह विफल रहा तो वह बर्बाद हो जाएगा और यदि वह सफल रहा तो भी हमारे लक्ष्य को कोई हानि नहीं पहुँचती। हमारी ओर के एक अश के विरुद्ध अपनी ओर का सब कुछ उसने दाव पर लगा दिया है। मान लिया कि वह सफल होता है। तब परिणाम यह होगा कि महाद्वीप को दोनों छोरों से सेनाएँ मध्य राज्यों के अपने पीडित बन्धुओं की सहायता के लिए कूच कर देगी। वह हर कहीं नहीं जा सकता। ऐसा किया जाना असम्भव है। मैं 'हो' को टोरियो का सबसे बड़ा शत्रु मानता हूँ। वह उनके देश में युद्ध को खींच लाया है। वह और अशत स्वयं वे यदि कारण न बने होते तो वे युद्ध से दूर ही रह सकते थे। यदि अब उसे निकाल बाहर किया जा सके, तो एक ईसाई की पूरी आस्था के साथ मैं चाहूँगा कि द्वािग और टोरी का नाम भी आगे कभी उल्लेख में न लाया जाए। लेकिन यदि

टोरी लोग आने के लिए उसे प्रोत्साहित करे अथवा आ जाने पर उसकी सहायता करे तो मैं हृदय से चाहूंगा कि अगले वर्ष हमारी सेनाएँ टोरियो को महाद्वीप से ही निकाल बाहर कर दे और कांग्रेस उनकी जायदादों को जब्त करके उन लोगों को दे दे जिन्होंने शुभ कार्यों में कष्ट सहे हैं। अगले वर्ष एक अकेला सफल युद्ध सब कुछ तय कर देगा। तटस्थ लोगों की सपत्ति जब्त करके अमरीका दो वर्षों तक युद्ध चला सकता है और उन्हें देश-निकाला देकर सुखी बन सकता है। मत कहिए कि यह प्रतिशोध है। इसे उस पीड़ित जाति का मृदु आक्रोश कहना ही अधिक उचित है जिसने और कुछ नहीं, सबकी भलाई का लक्ष्य ही दृष्टि में रखकर एक सदिग्ध-सी प्रतीति होती घटना के लिए अपना सब कुछ दाव पर लगा दिया है। फिर भी सकल्प-प्रेरित पत्थरपन के विरुद्ध बहम करना मूर्खता है। वक्तृता हवा पर असर कर सकती है, शोक-सिक्त भाषा सहानुभूति के आसू खींच ला सकती है, लेकिन पक्षपात के फौलादी कवच में बन्द हृदय पर कोई चीज असर नहीं कर सकती।

इस वर्ग के लोगों को छोड़कर एक मित्र के स्निग्ध उत्साह के साथ मैं उन लोगों की ओर मुड़ता हूँ जो धैर्यपूर्वक खड़े रहे और जो अब भी अन्त तक लड़ने के लिए कृतसकल्प हैं। मैं कुछ को नहीं, सबको, इस राज्य या उस राज्य को नहीं, हर राज्य को सम्बोधन करता हूँ। उठो, हमारी सहायता करो। अपने कंधे इस पहिये से टिका दो। बहुत थोड़ी की जगह, बहुत अधिक शक्ति का प्रयोग करो। कारण कि इतना महान लक्ष्य दाव पर है। भावी सप्ताह को बता दो कि शीतकाल के चरम में, जब आशा और पुण्य के सिवाय कुछ भी बचा नहीं रह सकता था, उस समय भी एक सर्वसामान्य सकट से उत्प्रेरित होकर नगर और देश उसका सामना करने के लिए और उसे पराजित करने के लिए आगे बढ़ा। मत कहो कि हजारों जा चुके हैं, बल्कि अपने दसियों हजारों को भी भोक दो। समय के बोझ को नियति पर मत फेंको, बल्कि अपनी आस्था को अपने कामों से सिद्ध करो जिससे भगवान तुम्हें आशीर्वाद दे सके। कही भी तुम क्यों न रहो,

जीवन में कोई स्तर तुम्हारा क्यों न हो। शुभ या अशुभ फल तुम सब तक पहुँचेगा। दूर के या पास के इस राज्य के और पीछे के राज्यों के जिले, धनी अथवा निर्धन सभी समान रूप से कष्ट महेंगे अथवा आनन्द मनाएंगे। जो हृदय आज कुछ महसूस नहीं करता, वह मृत है। उसके बच्चों का रक्त उस व्यक्ति की कायरता को कोसेगा जो उम समय पीछे हटा जा रहा था, जब थोड़ा-सा प्रयास सब कुछ की रक्षा कर सकता था और उन्हें खुश बना सकता था। मैं उस आदमी से प्यार करता हूँ जो विपत्ति में मुस्करा सकता है, जो कष्टों से शक्ति ले सकता है और मनन के द्वारा वीर बन सकता है। पीछे हटना तो छोटे दिमागों की बात है। लेकिन जिसका हृदय दृढ़ है और जिसकी आत्मा उसके आचरण से सहमत है वह तो अपने सिद्धान्तों का अनुसरण मृत्यु-पर्यन्त करेगा। मेरे तर्क, मेरी तर्क-पद्धति उतनी ही सरल और स्पष्ट है जितनी कि ज्योति-किरण होती है। जहाँ तक मेरी आस्था का प्रश्न है, ससार के सारे खजाने भी एक आक्रामक युद्ध के पक्ष-पोषण के लिए मुझे फुसला नहीं सकते थे, क्योंकि मैं इसे हत्या मानता हूँ। लेकिन यदि कोई चोर मेरे घर में सेध लगा ले, मेरी सम्पत्ति को जला दे और नष्ट कर दे, मुझे अथवा मेरे घर में रहनेवालों को मार दे अथवा मारने की धमकी दे और अपनी निरकुश इच्छा के अधीन हमें हर प्रकार की जजीरों में जकड़ दे, तो क्या मैं यह सब सह लूँगा? मेरे लिए इस बात का क्या महत्त्व कि यह सब करनेवाला व्यक्ति राजा है या साधारण जन, मेरा देशवासी है या मेरे देश का वासी नहीं है? यह सब एक अकेले दुष्ट ने किया है या दुष्टों की एक सेना ने? यदि हम बात की जड़ तक पहुँचे तो इसमें कोई अन्तर हमें नहीं मिलेगा। इसका कोई न्याय-सगत कारण हमें नहीं मिलेगा कि क्यों एक मामले में तो हम दड दे और दूसरे में क्षमा कर दे। लोग मुझे विद्रोही कहते रहे हैं। उनका स्वागत है। मुझे इसकी चिन्ता नहीं है। लेकिन यदि मैं अपनी आत्मा को एक वेश्या का रूप देकर उस व्यक्ति के प्रति भक्ति की शपथ ले लूँ जिसका चरित्र एक पियक्कड़, प्रमादी, दुराग्रही, निष्क्रिय, क्रूर व्यक्ति का चरित्र है तो

मुझे शैतान की दुर्गति प्राप्त हो। उस प्राणी की दया लेने का विचार भी मुझे भयानक प्रतीत होता है जिसे कयामत के दिन चट्टानों और पर्वतों के सामने चीखना-चिल्लाना पड़ेगा कि वे उसे अपनी छाया में ले ले; और अमरीका के अनाथों, विधवाओं और मृतकों के आतक से वह भाग उठेगा।

कुछ ऐसे मामले होते हैं जिन्हें भाषा से परिपक्व नहीं बनाया जा सकता। यह विषय भी ऐसा ही है। कुछ लोग होते हैं जो सामने तने पाप के पूर्ण विस्तार को देख नहीं पाते। वे ऐसी आशाओं से स्वयं को आश्वासित करते रहते हैं कि यदि शत्रु जीत भी गया तो वह दया दिखाएगा। पागलपन तक पहुँची हुई मूर्खता है यह कि दया की आशा उनसे की जाए जिन्होंने न्याय करने से इन्कार कर दिया है। जहाँ विजय ही लक्ष्य होता है, दया भी वहाँ युद्ध की चाल-मात्र ही होती है। लोमड़ी की चालाकी उतनी ही घातक होती है, जितनी कि भेड़िये की हिंस्र-वृत्ति; और हमे दोनों के प्रति समान रूप से सतर्क रहना चाहिए। 'हो' का पहला उद्देश्य है अशत भय दिखाकर और अशत वायदे करके लोगों को डराना अथवा उन्हें प्रलोभन देना कि वे अपने हथियार डाल दें और कृपा ग्रहण करने के लिए तैयार हो जाए। मन्त्रालय ने गेज^१ के लिए भी इसी योजना की सिफारिश की थी। इसीको टोरी लोग शान्ति स्थापित करना कहते हैं। निश्चय ही यह शान्ति समझ की हर पहुँच से परे है। यह शान्ति एक ऐसे भीषणतर विनाश की तात्कालिक अग्रगामिनी होगी जिसके बारे में हमने अभी तक सोचा भी नहीं है। पेन्सिलवेनिया के लोगो, इन बातों पर विचार करो। यदि पीछे के जिले अपने हथियार डाल देंगे तो वे उन आदिवासियों के सहज शिकार बन जाएंगे जो सबके सब शस्त्र-सज्जित हैं। शायद कुछ टोरी इसका कोई अफसोस नहीं मानेंगे। यदि घरेलू जिले अपने हथियार डाल देंगे तो वे उन पीछे के जिलों के रोष के भाजन बन जाएंगे, जिनकी

१. (१७२१-१७८७) 'हो' से पहले अंग्रेजी सेनाओं का सेनापति।

अपनी शक्ति में होगा कि उनका साथ छोड़ देने का दंड उन्हें जैसे चाहे वे दे। और जैसे ही कोई भी राज्य हथियार डालेगा 'हो' की त्रिटनो और हीसियनों की सेना अनिवार्य रूप में उस राज्य के चारों ओर घेरा डाल लेगी, जिससे शेष राज्यों के रोप से उसकी रक्षा की जा सके। पारस्परिक प्रेम की शृंखला में पारस्परिक भय एक प्रमुख जोड़ होता है और जो राज्य इस ठोस बन्धन को तोड़ता है वह विनाश का भागी बनता है। हो सदैव बनकर एक नृशंस विनाश के लिए ही आपको निमन्त्रित कर रहा है। जो लोग यह बात नहीं देख पाते वे या तो कुटिल हैं या मूर्ख।

मैं कल्पना की शक्ति पर निर्भर नहीं कर रहा हूँ। मैं तर्क आपके सामने रख रहा हूँ और सत्य को आपकी आंखों के सामने पेश कर रहा हूँ। वह भी ऐसी भाषा में जो क. ख. ग. के समान स्पष्ट है।

ईश्वर को धन्यवाद, कि मैं डरता नहीं हूँ। भय का कोई वास्तविक कारण मुझे नहीं दीख पड़ता है। मैं अपनी स्थिति को अच्छी तरह जानता हूँ और उससे बाहर निकलने का मार्ग भी देख पाता हूँ। जब हमारी सेना एकत्रित थी, तब 'हो' ने युद्ध करने का साहस नहीं किया। और यह उसके लिए कोई सम्मान की बात नहीं है कि वह व्हाइट-प्लेन्स से नीचे उतर आया और अरक्षित जर्सी लोगो को रौंद डालने के नीचतापूर्ण अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। लेकिन हमारे लिए यह बहुत बड़ी बात है कि मुट्ठी-भर लोगो के साथ लगभग सौ मील तक हम व्यवस्थित रूप में पीछे हट आए, अपना गोला-बारूद, अपनी तोपें और अपनी रसद का अधिकतम भाग हम बचा लाए और चार नदियां हमें पार करनी पड़ी। कोई नहीं कह सकता कि हमारा पीछे हटना हडबडाहट में हुआ, क्योंकि इसे पूरा करने में हमने लगभग तीन सप्ताह लगाए, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों को इकट्ठा होने का समय मिल जाए। दो बार शत्रु का सामना करने के लिए हम वापस बढे और अधेरा होने तक बाहर टिके रहे। भय का कोई चिह्न हमारे शरीर में नहीं देखा गया और यदि कुछ कायर और तटस्थ निवासियों ने प्रदेश-भर में गलत चेतावनियां न फैला दी होती तो जर्सी लोगों

को कभी भी कुचला न जा सकता। एक बार फिर हम इकट्ठे हुए हैं और इकट्ठे हो रहे हैं। महाद्वीप के दोनों छोरों पर हमारी नई सेना में बड़ी तेजी से भर्ती की जा रही है। हम अपने अगले युद्ध को साठ हजार सुशस्त्रित और सुसज्जित सैनिकों के साथ आरम्भ कर सकेंगे। यह है हमारी स्थिति। जो जानना चाहें वे इसे जान लें। सतत उद्यम और साहस से एक शानदार लक्ष्य तक पहुँचने की सम्भावना हमारे पास है। कायरता और समर्पण से विभिन्न प्रकार की बुराइयों की आशंका है—एक उजाड़ देश की; उजड़े हुए नगर, अरक्षित बस्तियों की, बिना आशा की गुलामी की, और हमारे घरों के हीसियनों के लिए बैरको और वेश्यालयों के रूप में परिवर्तित किए जाने की; और एक ऐसी भावी जाति के पालन-पोषण के बोझ की जिसके पिताओं के बारे में हमें सन्देह होगा। इस तसवीर को देखिए और इसपर आसू बहाइए और यदि अब भी एक भी विचारहीन नीच व्यक्ति ऐसा है जो इसे सच नहीं मानता तो उसे इसे भोगने दीजिए और कोई भी उसके लिए विलाप न करे ! दिसम्बर २३, १७७६।



सर्जनात्मकता

जिस रूप में सर्जनात्मक स्फूर्ति हमारे अमरीका में प्रस्फुट है, इस अकादमी और संस्थान के सामने रखे जाने के लिए वह निश्चय ही एक उपयुक्त विषय है, क्योंकि अमरीका में साहित्य और ललित कलाओं की प्रगति के उद्देश्य के प्रति वह आत्मार्पित है। सर्जनात्मक कर्म बहुत अधिक प्राचीन चीज है। हर मानवीय जाति में और मानवमात्र के विकास के हर स्तर पर यह सक्रिय रहा है और अब भी सक्रिय है। फलतः अब इसने बहुत कुछ पुरोहिती का महत्त्व प्राप्त कर लिया है, एक महत्त्व जो धार्मिक अनुभव के तुल्य है। जो सभ्यता सर्जनात्मक कलाकार पैदा नहीं करती, वह या तो पूरी तरह ग्रामीण है, या पूरी तरह मृत। हर परिपक्व जाति अपने अनिवार्य चरित्र के चिह्नों को कलाकृतियों में छोड़ जाने के महत्त्व को महसूस करती है। यदि नहीं, तो जाति-विशेष के जीवन-संकल्प में एक सशक्त उत्प्रेरणा की कमी है।

एक व्यक्ति और राष्ट्र के जीवन में सर्जनात्मकता का ठीक-ठाक क्या अर्थ है? एक बात तो यह कि सर्जनात्मक कर्म व्यक्ति को मान्यता देता है और व्यक्ति को मूल्य प्रदान करता है और उसके माध्यम से उस राष्ट्र को मूल्य देता है जिसका वह व्यक्ति अंग है। सर्जक व्यक्ति अपने गहनतम अनुभव को प्रकट करता है। वह उस अनुभव को संक्षिप्त बनाता है और साधारण कारोबारी दुनिया की अपेक्षा कहीं अधिक पुष्ट गम्भीर स्तर पर अपने साथी के साथ एक सम्बन्ध-शृंखला कायम करता है। कलात्मक अनुभव भावनाओं को साफ करता है। इसके माध्यम से हम जीवन की प्रचंडता और उसकी मूलभूत अदम्यता को प्रभावित करते हैं और इसीके

जरिये हम एक अनिवार्य रूप में अगम्य पदार्थ को कुछ सीमा तक स्थिरता और सौन्दर्य का रूप दे डालने की सफलता के निकटतम पहुँच जाते हैं।

जो व्यक्ति आज की दुनिया में सर्जनात्मक जीवन जीता है, वह अपने बावजूद एक प्रतीक आकृति है। वह कहीं भी रहे, और कुछ भी कहे, अपने निजी विचारों को लेकर वह एक मुक्त पुरुष का स्वरूप है। सर्जक रूप में काम करने के लिए, मुक्त उसे अनुभव करना चाहिए। जितनी दूर तक वह स्वेच्छानुकूल कर्म करेगा उतनी ही दूर तक वह महत्त्वपूर्ण कृतियों का सृजन करेगा। यदि वह उचित समझे तो विरोध करने का और यहाँ तक कि अपने युग की भर्त्सना करने का अधिकार भी उसे मिलना चाहिए। सबसे बढ़कर यह कि गलत राह चलने का अधिकार उसे कभी नहीं छोड़ना चाहिए। सर्जक को सदा अन्तर्वृत्ति-प्रेरित और अपने सवेगों में सहज होना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि वह जितना अपनी सफल उपलब्धियों में सीखे उतना ही अपनी सदोप गणनाओं से भी। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि कलाकार को किसी भी प्रकार के प्रतिबन्ध से मुक्त होना चाहिए। पर कलाकार का अनुशासन एक परिपक्व शासन होता है क्योंकि वह स्वनियोजित होता है और सर्जनात्मक मस्तिष्क के लिए एक स्फूर्ति का काम देता है।

जब सर्जनात्मक लोग इकट्ठे होते हैं तो इन मामलों पर, जिनपर मैं इस समय कुछ कह रहा हूँ, वे बहुत ही कम बोलते हैं। वे उन्हें मान्य मानकर ही ग्रहण करते हैं क्योंकि एक सक्रिय कलाकार के लिए तो वे एकदम सादे 'जीवन-तथ्य' हैं। वास्तव में जिसकी तसवीर मैंने यहाँ खींची है, उस सचेत रूप में अनुशासित कलाकार की अपेक्षा सर्जक एक अधिक स्वयं-स्फूर्त जगत में रहता है। वह गढ़ी जा चुकी, तैयार कृति की मानवीय और सौन्दर्यात्मक उलझनों के प्रति उतना सचेत नहीं होता जितना कि हाथ के काम की अपूर्णताओं के प्रति। पाल वेलेरी कहा करता था, कलाकार कृति को समाप्त कभी नहीं करता, वह बस उसे छोड़ देता है। लेकिन यह ठीक

है कि जब वह उसे छोड़ता है तब इसलिए कि एक अन्य कृति पर नये सिरे से काम आरम्भ करे। इस प्रकार कलाकार निरन्तर एक आत्माविष्कार की स्थिति में रहता है। वह अपनी निजी कृति के मूल्य और उसकी निष्पाद्यता में विश्वास लेकर चलता है। एक मुक्त पुरुष के रूप में वह उस अविचलता और आस्था का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जिसपर अन्य लोग, विशेषकर इस उद्भ्रान्त, आत्मसंशयो से दबी दुनिया के लोग विचार करें तो ठीक होगा।

सर्जको के इस विशिष्ट वर्ग के सदस्यों के लिए शायद ये सब बड़ी ही प्राथमिक बातें हैं। लेकिन मेरे दिमाग में प्रश्न है कि क्या मान लेना ठीक होगा कि हमारे सामान्य साथी नागरिकों के लिए भी ये बातें, 'बचकाना बातें' ही हैं? क्या औसत अमरीकी 'सर्जनात्मकता' इस प्रतीक शब्द में निहित धारणा को दरअसल पकड़ता है? क्या अमरीका के कलाकार स्वयं को अमरीका के दिमाग पर, कहना चाहिए, गम्भीरतम रूप में, मुद्रित करने में सफल हुए हैं? साफ बात है, मुझे इसमें गहरा संशय है। मेरे कुछ मित्र कहते हैं कि सर्जनात्मकता की धारणा को प्रभावित करनेवाली कोई विशिष्ट परिस्थितियाँ हमारे देश में वर्तमान नहीं हैं, कि 'अमरीका में सर्जनात्मकता' मेरा यह विषय ही अर्थहीन है क्योंकि हर कहीं सर्जनात्मकता एक-जैसी ही होती है। लेकिन मेरी विचारणा और मेरा अनुभव मुझे दो बातों का विश्वास दिलाता है। पहली यह कि सर्जनात्मक मानव की धारणा अन्य देशों की अपेक्षा यहाँ एक कम महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। दूसरी यह कि यह विशेष रूप में जरूरी है कि अमरीका के कलाकार हम लोग अपने देशवासियों को साफ-साफ बता दें कि अन्य सभी देशों में सर्जनात्मक व्यक्तित्व की धारणा को कितना मूल्य दिया जाता है।

सर्जनात्मकता के प्रति अमरीकी रुख के स्रोतों को पर्याप्त रूप में समझा जा सकता है। हम एक औपनिवेशिक जाति के उत्तराधिकारी हैं। सांस्कृतिक वैभव को इतने लम्बे समय से हम विदेशों से आयात करते रहे हैं कि अमरीकियों के लिए यह समझ लेना परम्परागत बन गया है कि

कला बाहर मे खरीदकर लाई गई एक चीज होती है । भाग्यवश, इस बात के सकेत प्रकट है कि यह धारणा, उन्नीसवीं शताब्दी की कला-सम्बन्धी अन्य अमरीकी पूर्व-धारणाओं के साथ-साथ धीमे-धीमे शायद सदा के लिए समाप्त हो रही है । यूरोपीय लोग इस काल्पनिक धारणा को बनाए रखने के लिए कृतसंकल्प मालूम पड़ते हैं । जब १९५१ में मैं विदेशों में था, तब संगीत के क्षेत्र में कोई प्रथम श्रेणी की कृति पैदा करने की क्षमता अमरीका में हो सकती है, इस विश्वास के प्रति एक निश्चित अरुचि मैंने साधारण संगीत-प्रेमी में पाई थी । इसकी उपपत्ति यह प्रतीत हुई कि किसी भी देश के औद्योगिक और वैज्ञानिक शक्ति के साथ ही साथ सांस्कृतिक सामर्थ्य के विकास की योग्यताओं को उपलब्ध कर लेना शायद एक अनुचित चीज है । हर अवसर पर मैंने इस बात का सकेत किया कि क्योंकि सिर्फ व्यापारिक और वैज्ञानिक ज्ञान एक सभ्यता को सफल सिद्ध करने के लिए नाकाफी है, इसीलिए यह दुहराना जरूरी हो जाता है कि अमरीका जैसे देश यह भी सिद्ध करे कि वाणिज्य और विज्ञान के क्षेत्र के लोगों को पैदा करने के साथ-साथ मानवता की सांस्कृतिक परम्परा को जारी रख सकनेवाले सर्जनात्मक कलाकारों को पैदा करना भी उनके लिए सम्भव है ।

इंग्लैंड के संगीत-आलोचक विल्फ्रेड मेलर्स ने, इस सन्दर्भ में जो महत्त्वपूर्ण भूमिका अमरीका को अदा करनी चाहिए, उसे नाटकीय ढंग से पेश किया है । वह लिखता है, “एक प्राणवान संगीत की सृष्टि (उसे लिखना चाहिए था, अमरीकी कविता अथवा अमरीकी चित्रकारी) सभ्यता की निरन्तरता से अपृथक् है ।” मैं समझता हूँ एक कम आडम्बरपूर्ण वाक्य में यही बात इस प्रकार कही जा सकती है : एक अनौद्योगिक समाज में और एक सरल वातावरण में एक कलाकृति की सृष्टि तुलनात्मक रूप में समस्या-रहित होती है । इस प्रकार कोई दरिद्र चपरासी, जिसे आधुनिक नागरिक-जीवन ने अभी पथभ्रष्ट नहीं किया है, एक लकड़ी के टुकड़े से कुछ गढ़कर ले आता है । अथवा कपड़े में एक डिजाइन बुन लाता है । तत्पश्चात् कोई

सामने आता है और कहता है, “अरे यह तो कला है। हमें इसे अजायबघर में रख देना चाहिए।” फ्रांस जैसे देश में ऐसी ही एक तुलनीय यद्यपि समानान्तर स्थिति पैदा हो जाती है। सांस्कृतिक उपलब्धियों की एक लम्बी परम्परा वहाँ सदियों से स्थापित रही है। इसलिए आश्चर्य नहीं है कि एक जवान पीढ़ी नई कलाकृतियों की सृष्टि द्वारा उस परम्परा को आगे बढ़ाए। ऐसे वातावरण में सर्जनात्मकता को बहुत अधिक कल्पना की जरूरत नहीं पड़ती। लेकिन एक हमारी जैसी सभ्यता में जहाँ परम्परागत प्रत्यय बहुत कम है और कितनी ही विरोधी प्रेरणाएँ काम कर रही हैं, वहाँ हर पीढ़ी को उद्योगवाद और सर्जनात्मक सक्रियता के सहास्तित्व की सम्भावना की पुष्टि करनी चाहिए। यह ऐसा है जैसे कि हर सर्जक कलाकार को सिर्फ अपने लिए सर्जनात्मक पद्धति का पुनराविष्कार करना चाहिए और तब ऐसे श्रोता खोजने की कोशिश करनी चाहिए, जो उसकी कुछ झलक पाने के लिए पर्याप्त प्रस्तुत हों जिसे वह प्रथम बारी में देना चाह रहा था।

अपने व्यक्तिगत अनुभव की एक निश्चित मात्रा के साथ ही यह मैं कह रहा हूँ; उस ईस्ट रीवर के पार का निवासी होने के नाते, जहाँ मैं ऐसे वातावरण में पला था, जिसे कठिनाई से ही कलात्मक कहा जा सकता है। संगीत और अन्य सम्बन्धित कलाओं की मेरी खोज एक आन्तरिक मजबूरी का नैसर्गिक उन्मीलन भी था। मैं समझता हूँ कि सभी कला-प्रेमियों को सम्पर्क की वैसी अनन्तरता मिलने की आशा नहीं की जा सकती, जैसी एक सक्रिय कलाकार के लिए सहज है। मुझे जो चीज महत्वपूर्ण लगती है वह यह नहीं है कि हमारे सभी नागरिक सामान्य रूप में कला को अथवा हमारे द्वारा निर्मित कला को भी समझें, बल्कि यह है कि वे कला-कृतियों द्वारा प्रस्तावित सस्कारक शक्तियों से पूरी तरह परिचित हो जाएँ—सस्कारक ऐसी शक्तियाँ, जिनकी हमारे इस युग में तात्कालिक आवश्यकता है। मेरा डर यह नहीं है कि अमरीका में कला को कुचल दिया जाएगा, बल्कि यह है कि उसपर इतना काफी ध्यान नहीं दिया जाएगा कि वह अर्थ रख सके।

कर दिया है कि जो कलाकार सरकारी नौकरी में थे, उन्होंने अक्सर ही मूल्यवान काम किया। मेरा विश्वास है, भविष्य इस बात को सिद्ध कर देगा कि सरकार को भी कलाकारों की उतनी ही सख्त जरूरत है जितनी कलाकारों को सरकारी सहयोग की। एक उदाहरण मेरे दिमाग में आ रहा है। अपेक्षाकृत हाल ही में हमारे स्टेट विभाग ने सारे सप्ताह में एक सौ पचास से अधिक सांस्कृतिक केन्द्र स्थापित किए हैं और उनमें अमरीकी, पुस्तकों, संगीत के रागों, फोनोग्राफ रिकार्डों, और चित्रों को वैसे ही रखा है जैसे कि शिक्षा और विज्ञान-सम्बन्धी चीजों को (जहां तक मुझे देखने का अवसर मिला है रोम या तेलअबीव या रियो-दि-जनीरो में ऐसे एक सांस्कृतिक केन्द्र को सक्रिय देखना एक प्रेरणाप्रद दृश्य है। युवक-युवतियों की भीड़ से भरा हुआ कमरा, जिसमें लाग अमरीकी पुस्तकों, संगीत और चित्रों के माध्यम से बौद्धिक अमरीका के सम्पर्क में आ रहे हैं।)। सरकार इन केन्द्रों के लिए आवश्यक सामग्री खरीद लेती है और उसे बाहर बांट देती है। क्या सरकार को यह विश्वास दिला सकने की उम्मीद की तरफ यह एक अगला कदम नहीं है कि क्योंकि जरूरत खरीदे जाने योग्य, तैयार माल की, इसीलिए माल पैदा करने की प्रेरणा के लिए भी कुछ किया जाना आवश्यक है। यह बात कि कलाकार जरूरत की चीजें पैदा कर लेंगे, पूरी तरह एक आकस्मिक संयोग पर नहीं छोड़ दी जा सकती।

मुझे कोई सन्देह नहीं है कि आपमें से कुछ सोच रहे हैं, “कलाओं के नौकरशाही द्वारा नियन्त्रित किए जाने के स्पष्ट खतरों का क्या होगा? क्या ऐसा खतरा उठाया जाए?” व्यक्तिगत रूप से मैं सोचता हूँ कि उठाया जाए। यूरोप और लैटिन अमरीकी देशों का इस सम्बन्ध का अनुभव निश्चय ही कुछ मूल्य रखता है। इन देशों में कलाओं को जो आर्थिक सहायता दी जाती है, वह अक्सर आश्चर्यजनक उदारता से पूर्ण होती है। आर्थिक सकट के युगों में, युद्धों और सरकारों के हिसापूर्ण उलट-फेरो के बीच भी यह दी जाती रही है। एक से अधिक अवसरों पर ललित कलाओं के मंत्रालय के तानाशाही व्यवहार अथवा राज्य-सरक्षित आपेरा हाउस

द्वारा निर्मित एक अकादमीय जडता के प्रति आक्षेप मैंने सुने है। लेकिन विदेशों में किसीको यह कहते मैंने नहीं सुना है कि कलाओं के लिए आर्थिक अनुदान की प्रणाली को, इससे पैदा होनेवाले खतरों के कारण त्याग दिया जाए। बल्कि होता इससे विपरीत है। वे हमें बड़ी अजीब आखों से देखते हैं कि हम अमरीकी कला के बारे में दकियानूमी नीति चलने दे रहे हैं। निश्चय ही प्रजातंत्र में, जहां निर्वाचित सरकार का हर अफसर एक 'सोचा-समझा खतरा' है, हमें कम से कम एक ऐसे प्रिय समाधान की आशा करने पर राजी हो जाना चाहिए, जिसे विदेशों में स्वीकार किया गया है। एक ताना-शाही शासन में कलाकार पर नौकरशाही नियंत्रण एक भीषण चीज है। लेकिन एक प्रजातन्त्र में यह सम्भव होना चाहिए कि कला को सरकारी अनुदानों के माध्यम से एक उदार प्रोत्साहन बिना किन्हीं स्थायी हानिकर परिणामों के दिया जा सके।

यह सब मेरी इस मुख्य धारणा से असम्बद्ध नहीं है कि इस बीसवीं सदी के अमरीका में कलाकार और उसके काम की पर्याप्त गणना नहीं है। लोग अक्सर विधायित सत्ता के रखों का अनुसरण करने में प्रवृत्त हो जाते हैं। अमरीका में सरकार कला के हित में रुचि दिखाना जैसे ही आरम्भ करेगी, हमारे लोग भी कलाकारों में अधिक रुचि प्रकट करने लगेंगे। यह बात हमारे युवकों के संगीत-प्रशिक्षण से सम्बद्ध हमारी शिक्षा-प्रणाली में प्रशसनीय रूप में देखने में आई है। शिक्षकों के रुख में परिवर्तन आने के साथ ही स्कूलों में संगीत की स्थिति एक पीढ़ी में ही बदल गई है। आज हमारे यहां छोटे बच्चों के 'सिम्फनी आरकेस्ट्रा' हैं और सम्मिलित गायन-मंडलियां हैं जो हमारे यूरोपीय साथियों को आश्चर्यचकित कर सकती हैं। यदि कहीं वे उनके बारे में जान सकते हैं। इतना अच्छा गा-बजा लेनेवाले हमारे किशोर वर्ग को, जिन संगीत-सर्जकों की कृतियां वे बजाते हैं उनके प्रति अत्यन्त परम्परागत रुख के सिवाय भिन्न रुख अपनाना भी सिखाया जाता है या नहीं, यह मैं ठीक-ठीक सूचित नहीं कर सकता। यहां एक महत्वपूर्ण सूत्र टूटा हुआ है। यह सूत्र हमारे विशुद्ध रिवाजी सम्मान को सर्जनात्मकता से

सम्बन्धित विचारों की एक सजीव समझ के रूप में बदल डालने की योग्यता रख सकता है। कुछ भी हो, जल्दी या देर में हमारी समझ की इस खाई को न सिर्फ संगीत के बल्कि सभी कलाओं के सन्दर्भ में पाटा जाना चाहिए। पूरे समाज के लिए उपयोगी व्यक्ति के रूप में सर्जनात्मक मानव की वास्तविकता को किसी न किसी तरह पुष्ट किया ही जाना चाहिए। हमारे देश में, सर्जनात्मकता अशत। हमारे सभी लोगों की समझ पर ही निर्भर करती है। जब इसे स्वतन्त्र और उन्मुक्त लोगों की ऐसी सक्रियता मान लिया जाएगा, जो सुन्दर कृतियों के माध्यम से हमारे निजी युग के चिन्तन और उसके आकलन के लिए कृतसंकल्प है, तभी कला अमरीका में अपनी सबसे महत्त्वपूर्ण अवस्था में प्रवेश कर चुकेगी।

एक देहाती सम्पादक की आचार-संहिता

किसी सम्पादक के पास अपने अस्तित्व का एकमात्र औचित्य यही तो है कि उसका पत्र खबरे छापेगा। खबरार चलानेवाले हर व्यक्ति के सामने यह प्रश्न उपरिथत होता है खबर क्या है? इसका फैसला उसे स्वयं ही करना पड़ता है, और एक नियम बना लेने के बाद यथासम्भव सच्चाई के साथ उसका पालन उसे करना चाहिए। जब कोई सम्पादक अपनी आत्मा से खिलवाड़ करना शुरू कर देता है, अपने मित्रों को बचाने और अपने शत्रुओं को दण्ड देने के लिए वह अपने नियम से खींचतान करने लगता है, तब उसका पतन हो जाता है। वह डावाडोल हो उठता है, न उसे लगर मिलता है, और न दिशा।

छोटे या बड़े हर समाज में हर दिन ऐसे मसले आते हैं जिन्हें छापना अरुचिकर होता है। भद्दी घटनाएँ हवा में तैरती रहती हैं। अफवाहें सदा ही सुनी जाती रहती हैं। एक-सौ लोगों के गाँव में कार्यरत सम्पादक भी यदि वह कत्ल किए जाने से बचा रह सका, तो मात्र इन अफवाहों से ही छः कालम के एक दैनिक को हर रात पूरा भर सकता है। इसमें बहुत कुछ झूठ होगा और लगभग सभी कुछ अनुचित होगा। फिर भी, ये मामले कुछ ऐसा रूप लेकर ऊपर आते हैं कि इनकी उपेक्षा नहीं हो पाती। और यही जगह है जहाँ सम्पादक को अपना मन पक्का करना पड़ता है और बिना भय अथवा पक्षपात के अपनी आत्मा का अनुसरण करते हुए आगे बढ़ना पड़ता है। हर न्यायाधीश, हर डाक्टर, हर उपदेशक और जीवन के हर सन्दर्भ के हर व्यक्ति पर ऐसे समय आते हैं। एक सुरक्षित नियम यह है कि अफवाह का कितना भी ऊँचा शोर क्यों न हो, उसकी तब तक उपेक्षा की

जाए, जब तक वह अदालती अभिलेखों का विषय न बन जाए। और उसके बाद उसे पत्र से बाहर न छोड़ा जाए। यदि किसी व्यक्ति को अपने साथी के विरुद्ध शिकायत है कि वह (स्त्री या पुरुष) इतना कायर है कि मामला अदालत में नहीं ले जाता तो बचाव यह कह देने में है कि इस प्रश्न के दो पहलू हैं; और जो सम्पादक इसका विवरण छागता है वह स्वतः उठाकर ही ऐसा करता है। लेकिन दूसरी ओर जब कोई व्यक्ति अपनी शिकायत को अदालत में ले आता है, जब वह उसे लिखत में रख देता है और अपने विरोधी को एक खुले, सार्वजनिक रूप में उत्तर देने का मौका दे देता है तब इस झगड़े की कोई भी सम्पादक उपेक्षा नहीं कर सकता, भले ही इसमें कोई भी क्यो न उलझा हो। और जब कोई मामला अदालत में पहुंच जाता है तब पत्र को चाहिए कि वह हर पक्ष के दावे को छापे, सब पक्षों में न किसीको दोष-मुक्त करे, न किसीको दोष-युक्त; और इस प्रकार अदालत को अपना फैसला करने दे।

‘गजट’ को लगता है, अरुचिकर मामलों से व्यवहार करने का यही उचित तरीका है। कोई ईमानदार सम्पादक प्रवादों और अनुचित विवरणों को अपने पत्र में स्थान देना नहीं चाहता। और किसीको भी ऐसे विवरणों को इस ढंग से नहीं छापना चाहिए कि उन्हें परिवार के बीच जोर से न पड़ा जा सके। इसी रूप में सजोई गई खबर की शालीनता के पक्ष अथवा विपक्ष में गिनती हो सकती है। एक भद्दे विवरण को भी सभाला जा सकता है और उसे पढ़कर पाठक अरुचि अनुभव नहीं करेंगे।

अखबारों के इस कारोबार में जितना लम्बा समय हम बिता लेते हैं, उतनी ही अधिकाधिक ऐसी चीजें हम देखते हैं जिन्हें पत्रों में स्थान नहीं मिलना चाहिए। जिस प्रकार का पत्र दस वर्ष पहले हम छापते थे वैसा आज छापे तो एक मनस्ताप से सफेद पड़ जाए और बीस वर्ष पहले-जैसे ‘गजट’ से इतनी बदबू उठे कि आकाश तक पहुंच जाए। तलाक की खबर अदालती निर्णय के शुद्ध उल्लेख के अतिरिक्त, इस कारोबार में बहुत पहले ही त्याज्य बन गई थी। इसके बाद सम्मान-प्रदर्शनों का नम्बर

आया। सम्मान-प्रदर्शनो के पीछे-पीछे पेटेट दवाइयां क्षेत्र से बाहर कर दी गई। घूमते-फिरते डाक्टरों और बिना पीडा के दात निकालनेवालों के विज्ञापनों को पेटेट दवाइयों के बाद निकाल फेंका गया। नीम हकीमों के बाद, पुलिस अदालतों के प्रथम अपराधियों के नाम, जब तक परि-स्थितिया असाधारण ही न हों, न छापने का निर्णय किया गया। सूची-बाह्य खान-खुदाइयों और गोदामों के विज्ञापनों को प्रथम अपराधियों के बाद समाप्त कर दिया गया। आज से हम उस व्यक्ति का विज्ञापन लेने की मनाही कर रहे हैं जो अपनी पत्नी के बिलों को चुकाने से इन्कार करता है और इस इन्कार को सार्वजनिक दृष्टि में लाना चाहता है। हममे कितने ही वर्षों से उसके प्रति एक भिनभिनाहट पनप रही थी। हम समझते हैं अपने घरेलू झगड़ों को वाणी देने के लिए अखबार उचित स्थान नहीं है। यदि उसकी पत्नी बहुत अधिक पैसा लुटा रही हो तो इस तथ्य को प्रचारित करने के दो बहुत बढिया साधन उसके पास हैं। वह 'लियन काउंटी खुदरा सघ' के मन्त्री को टेलीफोन कर सकता है और मन्त्री क्षुब्ध पति के मन्तव्य की सूचना किसी भी महत्त्व की हर दुकान को दे देगा। अथवा यदि यह उपाय भी विफल हो जाता है तो वह अपनी पत्नी को इतना पीट सकता है कि वह मरते-मरते रह जाए और पत्तियों को पीटनेवालों को हम अधिकतम प्रकाशन देते हैं।

आम स्थिति यह है कि पारिवारिक झगड़ों को अखबारों में स्थान देने के लिए आवश्यक है कि उनपर अदालती निर्णय दिया जा चुका हो। एक मूर्ख पत्नी के गरीब दुष्ट पति का धन हमें नहीं चाहिए। और एक अच्छी पत्नी के कजूस पति के पैसे की भी हमें जरूरत नहीं है। इसलिए आज के बाद अपनी पत्नी के बिलों को चुकाने से इन्कार करनेवाले पति की खबर से दूर रहिएगा।

कोई भी सम्पादक नि स्वार्थ नागरिकता का प्रचार करके ही अपने समाज का निर्माण कर सकता है। धूम-धडाका और बकवाद करनेवाला सम्पादक जो अपने नगर की शान-शौकत के बारे में मोटे-मोटे शीर्षकों के

माध्यम से चीखता है, किसी भी नतीजे तक नहीं पहुँचना। लेकिन वह सम्पादक जो अपने निजी आचार और अपने निजी प्रचार के द्वारा संस्कृत बातों का पक्ष लेता है और निःस्वार्थ नागरिकता को प्रोत्साहित करता है; देने को गौरवपूर्ण समझता है और लेने पर नाक-भौं चढ़ाता है उसका रख सर्जनात्मक है और वह निश्चय ही अपने नगर की सहायता करता है। अधिक लोगों को आकर्षित जायद वह नहीं कर सकेगा। ऐसा भाग्य की मर्जी के अनुकूल ही होगा। लेकिन कस्बे में रहनेवाले लोगों के जीवन को अधिक उत्तम, अधिक सुखी, अधिक उदार और अधिक सुविधापूर्ण वह निश्चय ही बना सकेगा। यह अच्छा है कि दस हजार लोग समान स्तर पर सुखपूर्वक रहे; यह नहीं कि दस हजार लोग, गरीबी और दुःख का जीवन बितानेवाले नब्बे हजार लोगों के श्रम पर फूले और मोटे हों। 'गजट' उस समाज में प्रकाशित किया जाता है जहाँ तेरह हजार लोग रहते हैं जिनमें कोई भिखारी नहीं होता। हर आदमी काम पर लगा होता है। लखपति भी यहाँ कोई नहीं होता। जितने घर होते हैं उतने ही टेली-फोन होते हैं। जितने परिवार होते हैं उतनी ही मोटरे होती हैं। बच्चों की आवश्यकता-जितने स्कूल होते हैं। जितने लोग पढ़ सकें उतनी पुस्तकें पुस्तकालय में होती हैं। एक नागरिक बैंड होता है। लगभग हर घर में स्नानागार होता है। और घरों में अपराध नहीं पनपते। हमारी जेलों के लोग गरीब घरों में पहुँचने के लिए नगर आते हैं लेकिन हमारा कोई समर्थ शरीर व्यक्ति वहाँ नहीं रहता।

यह है वह नगर, जिसके लिए हर अखबार को प्रयास करना चाहिए। शुद्ध स्वार्थ की दृष्टि से भी न्याय के पक्ष में खड़ा होना सम्पादक को लाभ देता है। कस्बे की पूरी आय, जितने समान रूप में विभाजित की जाएगी, उतने ही अधिक लोगों को अधिक धन मिलेगा। वे अधिक अखबार खरीद सकेंगे और विज्ञापन पर अधिक पैसा लगा सकेंगे।

जो सम्पादक अधिक आबादी के लिए चीखता है और आबादी के रूप-प्रकार का ध्यान नहीं रखता, उसे अपने ही कारोबार का ज्ञान नहीं है।

मशीन की कला और उसका शिल्प

फ्रैंक लायड राइट

मशीन की कला और उसका शिल्प

मैं आशा करता हूँ, कोई इस रात, इस यन्त्र-युग की विशिष्ट बुराईयों का एक सामाजिक नुस्खा खोजने यहाँ नहीं आया है। जो ये नये उपादान, औजारों की महान् स्थानापन्न, ये मशीनें आज हमारे पास हैं उनके ही सही इस्तेमाल के बारे में अपनी बात कहने के लिए मैं यहाँ आया हूँ। किसी भी शिल्प में तब तक मितव्ययता नहीं लाई जा सकती जब तक औजारों पर अधिकार न कर लिया जाए। इसी प्रकार, जब तक अमरीकी समाज उन तत्त्वों पर, जिनके माध्यम से वह काम करता है, अधिकार प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक अमरीका में एक योग्य समाज-व्यवस्था की स्थापना नहीं की जा सकती। साथ ही, जब तक इन तत्त्वों को मुट्ठी में नहीं बाँध लिया जाता और जो कुछ भी लोग करे उसमें इन्हें एक सच्चे आदर्श का रूप नहीं दे दिया जाता, तब तक मानव के योग्य अथवा कहने-भर के काबिल भी कोई कला पनप नहीं सकती। यद्यपि ये मूलभूत सत्य अब तक काफी सामान्य बन जाने चाहिए थे, पर एक जाति के रूप में हम उन्हें समझ नहीं पाए हैं और न ही उनके प्रयोग का मार्ग हम खोज पाए हैं। कारीगरों, नागरिकों अथवा कलाकारों के द्वारा प्रयोज्य कच्चे माल की दृष्टि से हम किसी भी राष्ट्र की अपेक्षा अधिक सम्पन्न हैं, लेकिन मात्र युक्ति के रूप में प्रयुक्त यान्त्रिक प्रतिभा से आगे अच्छे कारीगर हम नहीं हैं, न ही सम्पत्ति के प्रति नैमित्तिक अथवा यथाकाम सम्मान से आगे, जितने होने चाहिए, उतने अच्छे नागरिक ही हम हैं; कलाकार तो हम बिल्कुल ही नहीं हैं। एक नहीं, हम सभी अपने इन सम्मोहक, स्वचालित औजारों द्वारा सचेत अथवा अचेत रूप में वशीभूत हैं और औजारों के स्थानापन्न के रूप में उनका प्रयोग

करते हैं। इस उपपत्ति को स्पष्ट करने के लिए मैं आपके सामने वे साक्षिया रखता हूँ जिन्हें मैंने रथापत्य के क्षेत्र में प्राप्त किया है। यह अभी तक वह क्षेत्र है, जहाँ युग की नट्य एक घने, भदे आडम्बर के नीचे धड़कती है; और वह आडम्बर दनना पर्याप्त है (इन्वर जानता है) कि हमारे इस समय-सेवी काल की गलतियों और उसकी सम्भावनाओं का प्रतिनिधित्व कर सकता है।

प्राचीन काल के वास्तुकारों ने अपने निजी जीवन में और जिस समाज में वे रहते थे उसके जीवन में सामान्यतः निहित आत्मा को आलेखों,— उदारतम आलेखों—भवनो के रूप में साकार बना दिया था। उन्होंने इन मूल्यवान् आलेखों को उस समय उपलब्ध, आदिम औजारों से ही निर्मित किया था। और ये आलेख जो कुछ भी आज हमसे कहना चाहते हैं वह यदि पूरी तरह अपठनीय नहीं, तो एकदम महत्त्वहीन तो बन ही जाएगा, यदि एक अन्य और भिन्न अवस्था के लिए उपयुक्त औजारों को इनके ऊपर चलने के लिए मूर्खतापूर्वक मजबूर किया जाएगा। अन्धे रूप में वह काम करने पर उन्हें विवश किया जाएगा जिनके वे योग्य नहीं हैं अथवा जिन्हें वे सिर्फ विकृत ही कर सकते हैं।

इस इस्पात और भाप के युग में सम्यक्ता का सच्चा आलेख लिखने-वाले औजार वे वैज्ञानिक विचार हैं, जिन्हें लोहे, तावे, इस्पात और प्लास्टिक की उन पद्धतियों में सक्रिय बना दिया गया है जो इस युग की विशिष्टता है; और उन सबको हम मशीन ही कहेंगे। इस अर्थ में बिजली का लैम्प एक मशीन है। मानव-निर्मित इन मशीनों में नये-नये उपादान ही वे पदार्थ हैं जो इस युग के भौतिक शरीर का निर्माण करते हैं और इसे पहले के युगों से अलग करते हैं। इन्होंने हमारे युग को ऐसा यन्त्र-युग बना दिया है जिसमें स्वचालित रेल इंजनों अथवा भाप के जहाजों ने वही स्थान ग्रहण कर लिया है जो पहले के इतिहास में कला-कृतियों ने किया था। आज एक शेक्सपियर अथवा एक दान्ते के स्थान पर एक वैज्ञानिक अथवा एक अन्वेषक हमें प्राप्त है। उद्योगपति न सिर्फ राजाओं और

आधिपतियों के, बल्कि संकोच के साथ कहना पड़ता है, महान कलाकारों के भी आधुनिक स्थानापन्न है। फिर भी मानवकृत वातावरण सभी मानवीय आलेखों में सबसे अधिक सच्चा और विशिष्ट है। एक आदमी को निर्माण करने दीजिए और समझिए कि आपने उसे पा लिया है। उसे पूरे रूप में आप भले ही न पा सके, लेकिन जो कुछ आपके सामने है निश्चित रूप से वही वह है। सामान्यतः उसकी रूपरेखा आपको मिल जाएगी। उसमें ऐसे तत्त्व हो सकते हैं जो स्वनिर्मित उसके वर्तमान चरित्र को छेदकर ऊपर उठ जाने के योग्य उसे बना दें। फिर भी बहुत थोड़े लोग होते हैं जिन्हें उनका स्वनिर्मित वातावरण कभी भी झुठला सके। निश्चय ही कोई ऐतिहासिक युग कभी इतना गलत प्रस्तुत नहीं किया गया। अपने भौंडेपन के साथ आज शिकागो वहाँ जिए जानेवाले 'जीवन' की उतनी ही कच्ची अभिव्यक्ति बन गया है जितनी धरती का कोई भी वह केन्द्र बन सकता है जहाँ वैसा जीवन जी लेने अथवा लडकर उसे मिटा देने के लिए लोग निकट आए हैं। मनुष्य एक निर्वाचक सिद्धान्त है। वह जहाँ भी जाता है अपने-जैसी को इकट्ठा कर लेता है। निकट सम्पर्क के द्वारा मानव-अस्तित्व का प्रचण्ड बनाया जाना भी मानवीय आलेख को उसकी पृष्ठभूमि और उसके परिवेश में सुस्पष्ट उभारा जाना है। लेकिन कहीं भी, कैसे भी, हमारे इस युग में समय के सकेतों की यद्यपि कमी नहीं है, लेकिन अभिव्यक्ति में से सौन्दर्य छिन गया है और आलेख यदि तुच्छ नहीं तो अपठ्य जरूर बन गया है। इस या किसी भी विशाल आधुनिक नगर की गलियों में आँखों पर पट्टी बांधकर ही हमें चलना चाहिए, जिससे यह देख पाने में हम विफल रहे कि मशीनी शक्ति और उत्कृष्ट पदार्थों के भव्य स्रोत जिस स्थल पर हमें ले आए हैं, वह पतन है। प्राचीन कला के लिए पवित्र, सभी कला-रूप हमारे लिए वेश्या-रूप बन गए हैं।

जिस रूप में चीजे थीं तथा जिस रूप में उन्हें होना चाहिए और वे हैं, इन दो पक्षों के बीच एक निन्दनीय सघर्षण की साक्षी हमें हर ओर देखने को मिलती है। इस शर्म को, हमारे पक्ष में इस निश्चित दयनीय अज्ञान को

गलती से शानदार उपलब्धि समझ लिया जाता है। जब धन-कुबेर के लिए इलीनास ट्रस्ट भवन अथवा शिकागो नेशनल बैंक जैसा एक पैन्थियन^१ एक या दो रातों में हम बना डालने है, तब अपनी महानता का हमें विश्वास हो उठता है। एक या दो वर्षों में किमी डाकखाने के लिए रोम के स्मारकों का शवकक्ष और मंदिर आदि का एक विशाल समुच्चय पुजीभूत कर देने में हम अपनी प्रतिष्ठा समझते हैं। मिशीगन एवन्यू पर स्थित मिटगुमरी वार्ड एक विलक्षण फ्लोरेन्टाइन महल^२ का रूप प्रस्तुत करता है, जिसके भव्य घंटाघर के नीचे 'कृषक विसातखाना' स्थित है। अन्य जगहों की तरह हमारे यहाँ भी यह सामान्य बात है कि दुकानों के शीशे के पुरोभागों के ऊपर पत्थर के दैत्याकार पैलेडियन आकार^३ लटके दीखें। गाथिक^४ शैली में निर्मित कार्यालय-भवन^५ों के नीचे प्रदर्शन-कक्ष, दफतरो के मध्यभाग पर चढ़ाए गए पार्थेनान^६ अथवा किसी भी प्राचीन बलि-मन्दिर के नमूने—ये हमारे यहाँ के साधारण दृश्य हैं। अमरीकी नगर की हर एक व्यापारिक संस्था किसी न किसी पौराणिक चीज से, अधिक नहीं तो प्रचारात्मक ही सम्बन्ध-सूत्र जोड़कर प्रतिष्ठा प्राप्ति की स्पर्धा में लगी है। यहाँ एक व्यापारिक पुनर्जागरण हो रहा है, जो 'शेर की खाल में गधे' के पुनर्जागरण के समान है। कम से कम इतने के लिए तो कोलम्बिया के विगत मेले के ऋणी हम हैं ही। जब भी अमरीका के स्थापत्य का इतिहास सही-सही लिखा जाएगा तभी १८६३ में प्रदर्शित आधुनिक सभ्यता की यह विजय भावी सतति पर एक बन्धक के रूप में मानी जाएगी और सन्तितियों को,

१. रोम का एक प्राचीन मन्दिर जिसके स्थान पर अब सान्ता मारिया रोटण्डा की चर्च खड़ी है।

२. फ्लोरेन्स, इटली के प्राचीन महल।

३. एण्ड्रिया पैलेडियो (१५१८-१५८०) द्वारा प्रचलित शैली।

४. गाथ जाति की वास्तु-शैली

५. एथन्स का एक प्राचीन मन्दिर।

इसे न सिर्फ़ सूदखोर वल्कि जाली मानकर इसका प्रत्याख्यान करना पड़ेगा ।

हमारे तथाकथित गगनचुम्बी भवनों में, स्थापत्य की (सबसे नई और सबसे प्रसिद्ध विजयो मे) वट्टिया ग्रेनाइट अथवा बेडफोर्ड के पत्थरों को फीडियास^१ और उसके यूनानी गुलामों के इतालवी अनुगामियों की प्रणाली पर काटा गया है । ऐसे तराशी गई शिलाओं को इस्पात की कड़ियों और तख्तों के एक ढाँचे के चारों ओर (यह अन्तर्निहित ढाँचा उसके किसी भी वास्तविक अर्थ को नष्ट कर देता है) ऐसी चालाकी से सजाया जाता है कि निर्मित भवन स्कूल की पुस्तको मे पेलाडियो और विट्रूवियस^२ द्वारा चित्रित स्थापत्य से मेल खाने लगे । अब सगत यह प्रतीत होता है कि इस इतालवी गोटा —पट्टी को मुंडेरो पर से मढ़ना आरम्भ किया जाए और उसे ऊपर से नीचे तक ठीक उसी प्रकार ले आया जाए जिस प्रकार कि नीचे से ऊपर ले जाया जाता है और जैसा करने के लिए कम भाग्यवान इतालवी पहले विवश थे । 'हा शीर्ष' से नीचे की ओर'—यही वास्तविक तरीका अक्सर काम मे लाया जाता है । रोमन अथवा गाथिक महाराब के केन्द्रस्थ पत्थर को अब पहले जमाया जाए—कहना चाहिए लटकाया जाए—और महाराब के कमानेदार पत्थरों को दोनों ओर फसाया जाए अथवा कहिए, केन्द्रीय भाग से उन्हें नीचे की ओर लटकाया जाए । अन्त मे पूरी होकर वह विशुद्ध 'पौराणिक' या 'पुनर्जागरण' काल की किसी शैली की अथवा जो भी रूप डिज़ाइन बनानेवाले की कल्पना को आकर्षित कर ले या उसकी 'धारणाओं' पर ठीक उतर जाए, वैसा ही आकार वह ले लेगी । सम्भवतः कला की शिक्षा मे दोनों को ग्रहण किया जाना चाहिए । 'शिक्षा का केन्द्र,' हमारा शिकागो विश्वविद्यालय सत्य से ठीक इतना ही दूर है । यदि परिवेश विशिष्ट और सकेतपूर्ण है तो सकर व अकादमीय गाथिक शैली में

१. ई० पू० पाचवी सदी का ग्रीक शिल्पकार व निर्माता ।

२. रोम का शिल्पकार एव वास्तुकार (ई०पू० प्रथम शताब्दी) ।

अकित अत्यन्त प्रतिक्रियावादी, विस्मृत और खर्चीने इस दृश्य-चित्रण में क्या मतलब ? लगता है, आक्मफोर्ड के कारण ही उसे 'अकादमीय प्रयोजनों के उपयुक्त' कहकर सामान्यतः स्वीकारा जाता है। लेकिन अमरीकी विश्वविद्यालय, इस यन्त्र-युग में और लोकतन्त्रीय आदर्शोंवाले उस देश में ग्राथिक आकारों के पुराने रूपों के माध्यम में अपनी विजिघ्रता क्या दर्साए ? हमारे अपने ग्रहण से पहले एक सामन्तवादी युग ने, हमारे अपने निजी से एकदम भिन्न औजारों के प्रयोग द्वारा, एकदम भिन्न अवस्थाओं का मुकाबला करने के लिए इन रूपों को ग्रहण किया था। सार्वजनिक पुस्तकालय भी इस 'गर्दभीय पुनर्जागरण' का प्रतीक है। हड्डिया उसी तरह गोश्त के पार उलभी है। कारण कि आन्तरिक भाग की योजना एक कुशल पुस्तकालय समिति ने बनाई थी जबकि एक 'कलावास्तुकार' (यह नाम शिकागो वालों का दिया है, मेरा नहीं) को इसे स्थापत्य ओढ़ाने के लिए वृत्ति पर रखा गया था। बाह्य भाग का मुखौटा समझदारी की कीमत पर भी पौराणिक ढंग का ही बनाया जाना चाहिए। लगभग प्रत्येक अमरीकी नगर में दस में से नौ सार्वजनिक भवन इसी शैली के हैं।

मिशीगन एवन्यू पर एक अन्य आडम्बरपूर्ण भवन हमारी दृष्टि में आता है। इसे इकोले-दे-ब्यू-आर्ट्स द्वारा दिमाग में बँठाए गए तरीको पर ढाला गया है। ये तरीके यूनान-रोम की अकलात्मक, बृहद् रूप में क्रूर, उस सभ्यता के आदर्शों और पद्धतियों पर आधारित हैं जिस सभ्यता ने विधि-शास्त्र के अलावा सभी कुछ बाहर से उधार लिया है। इसका अति-वार्य औजार था, गुलाम। यहाँ, हमारी सभ्यता के शिखर पर अन्य कला-संस्थानों जैसा ही शिकागो आर्ट इन्स्टीट्यूट है। भव्य अर्थहीन मंडप में सिहो—वास्तविक सिहो—के बीच (केमिस ने उन्हें ऐसे इसलिए रखा क्योंकि बायें^१ ने ऐसा ही किया था) कुछ पाषाणी स्त्री-सज्जाओं को रखा

हम पाते हैं। यहा फ्रेन्च^१-निर्मित रिपब्लिक की श्रेष्ठ प्रतिमा हमारे सामने आती है—और वह भी है शाही। शानदार भूमिका की समाप्ति पर हम आगे बढ़ते हैं और उत्कठित विद्यार्थियों को प्लास्टर में ढले प्राचीनताओं के नमूनों के बीच आधा एकड़ अथवा अधिक में बिखरी पुरातत्त्व की सूखी हड्डियों को धैर्यपूर्वक चुनते हुए पाते हैं। ये विद्यार्थी यहा औद्योगिक सफलता के लिए स्वयं को सज्जित कर रहे हैं। अर्थात् दूसरे शब्दों में यहा से बाहर जाने पर जिस यन्त्र-युग में वे रह रहे हैं उसपर कोई मूल्यवान् छाप डालकर अपनी जीविका कमाने का प्रयत्न वे करेंगे। जिस उद्योग के बारे में शून्य से ठीक इतना ही कम वे जान पाएँगे उसके लिए उनका मूलभूत औजार है, मशीन। इस एक एकड़ अथवा अधिक में एक भी अवशेष ऐसा नहीं है जिसका इन विद्यार्थियों से सम्बन्धित चीजों से कोई भी विशिष्ट सम्बन्ध हो। सौभाग्यपूर्ण परिस्थिति एकमात्र यह है कि स्वयं अपने में कम या अधिक सुन्दर चीजें ये हैं और 'एक बार की बात है' का सौन्दर्य इनमें साकार हुआ है। इन अन्ध-श्रद्धा-सम्पन्न चीजों के अध्ययन से अधिक से अधिक प्राचीनता के उस किसी तत्त्व की कल्पना ही ये विद्यार्थी कर सकते हैं जो आधुनिक जरूरतों के लिए उपयुक्त हो। पर इस बीच आधुनिक जरूरतों को तो वे जान नहीं पाएँगे। उनकी चिन्ता करने की अनुमति उन्हें नहीं दी जाएगी। और उनके वर्तमान अध्ययन के विषय, इन पदार्थों के निर्माता, उन प्राचीनों की जरूरत को भी वे उतना ही अल्प जान पाएँगे। जान रस्किन^२ और विलियम मारिस^३ के नाम पर इन नौसिखियों को अपने युग के अनिवार्य औजार से दूर रहना और उससे घृणा करना सिखाया जाता है, क्योंकि ये व्यापारवादी और कला-विरोधी हैं। इस प्रकार, समय बीत जाने पर, उनमें से प्रत्येक इस तुच्छ अकादमीय ज्ञान से सज्जित होकर आगे बढ़ता है और जहा भी यह

१ फ्रांसीसी शिल्पी (१८५०-१९३१)

२. अंग्रेज लेखक, आलोचक व समाज-सुधारक (१७५६-१८३३)

३ अंग्रेज कवि एवं समाज-सुधारक (१८३४-१८९६)

चिपक सके, बाहर से चिपकाए जानेवाले पलस्तर की तरह उसका उपयोग करता है। कितने ही यह बात हृदय में विवश रूप में महसूस भी करते हैं कि विकास अन्तः प्रसूत होना चाहिए। लेकिन हो कैसे ? और मन् १६०१ के इन संयुक्त राज्यों में कला की यही शिक्षा दी जाती है। अब जिसे हम 'शिक्षा' कहते हैं उस सांस्कृतिक प्रयास के परिणामों को देखने के लिए विशाल स्मारकीय पौडियो पर चढ़िए। ये परिणाम प्रदर्शन-गैलरियों में दीवारों पर लटके हुए हैं। आप वहाँ भी, वर्तमान की कीमत पर और जब तक शाप भी मूल्यवान न हो जाए भविष्य के लिए सदिग्ध मूल्यवाले अतीत के रिक्त सम्मान को ही लटका पाएंगे। यहाँ आप सरक्षक अधिकारी की वासना और उसके दम्भ के फलों को देखेंगे; लेकिन अपने निजी युग और पीढ़ी को प्रोत्साहन और संरक्षण देने के नाम पर शर्मनाक अल्पमात्रा ही आपको देखने को मिलेगी। यह ललित कलाओं का मन्दिर है। एक पवित्र स्थान है ! इसे तो हृद्-केन्द्र, एक महान राष्ट्रीय औद्योगिक सक्रियता की भावनात्मक उत्प्रेरणा होना चाहिए था। लेकिन यहाँ हम परम्परा को, प्रगति को उत्तेजित करनेवाली एक प्रेरक शक्ति के रूप में नहीं पाते। पहले से भी अधिक अतीत में हम आज रहते हैं। एक प्राचीन ममी, एक मृत पत्र से अधिक वह अब और कुछ नहीं है। एक 'पुराना नमूना' है, एक नकल का पश्चात्-फल है। यह वह नकल है जिसे मशीनी पुनरुत्पादन के लिए नकल किया जाना है और निर्लज्ज भाव से जिसका तब तक पुनरुत्पादन होता रहना है जब तक इसका पूर्ण नैतिक पतन नहीं हो जाता अथवा पहचान से भी परे यह नहीं पहुँच जाता।

इस हास्यास्पद विफलता से अधिक दुर्भाग्यपूर्ण है, फ्यास्को-अल-फ्रेस्को। उपनगरों के घरों की शृंखला अभी तक इससे भी ज्यादा दासता-पूर्ण है। कोई भी जनप्रिय मार्ग अथवा उपनगर एक बहुभाषी शिविर का रूप ही प्रस्तुत करेगा। सफाई के साथ संरक्षित छोटी-छोटी जमीनों पर पर्याप्त सम्मानित लोगों की यह नाटकीय इच्छा ही वहाँ प्रकट दीखती है कि वे चेटू, मेनरहाऊस, वेनीशियन प्लेस, फ्यूडल कासल और क्वीन एने

काटेज नामधारी मकानों में रहें। उनमें जो पर्याप्त सख्तमिजाज है वे, कतई हमारे अपने बढई-वास्तुकार जनरल ग्रांट गाथिक द्वारा प्रस्तुत उन विकृतियों में रह रहे हैं जिनका उद्देश्य सभी 'मनोरम युगो' को उनके अपने क्षेत्र में पराजित कर देना और सफल होना है। विभिन्नता में भी इस विशिष्ट नीरसता को ही इन सबके भीतर आप पाएंगे और मूल हस्त-शिल्पो की मशीन द्वारा प्रस्तुत नकले देखेंगे। वस्तुतः, जब तक आप गृहपति लोग इतने भाग्यवान न हों कि असाधारण रुचि और अवसर आपको प्राप्त हों, तब तक जो कुछ भी आपके पास होगा उसका अधिकांश दूषित हस्त-शिल्प के यन्त्रकृत नमूने, पुरातन सामग्रियों की ऐसी नकले-भर होंगे जिन्हें मशीन ने और भी अधिक पुरातन बना दिया है और सभी गृहित चीजों में जो सबसे अधिक जुगुप्साजनक है। हर चीज को मोड़ा जाना चाहिए, टकित किया जाना चाहिए, ढाला जाना चाहिए और फिर मोड़ा जाना चाहिए। पूरा का पूरा फैलाव कल्पित कलात्मकता का एक सत्रसित कुविस्तार है। और फर्श के बिछावन ? शायद पूर्वी कालीनो की प्रतिकृतियों को मशीन द्वारा बुना गया है। उनका प्रतिमान और विन्यास यान्त्रिक दृष्टि से पूर्ण है। इससे भी बुरा यह है कि दीवारों पर प्राचीन पदों के मशीन द्वारा छापे अथवा मुद्रित किए गए नकली प्रतिमानों और नकली बुनावोवाली कागजी प्रतिकृतियों को चिपकाया गया है। नकल ही पैरों के नीचे, नकल ही सिर के ऊपर और नकल ही सब ओर। आप 'नकल' में डूब गए हैं। आपका श्रमपूर्वक टकित लकड़ी का काम 'पुरातन' से दूषित है। आपका 'स्वागत कक्ष' श्वेत और स्वर्णिम अनिवार्यतः होना चाहिए, जिसमें कुछ सुनहरी कुर्सियाँ, कारीगरी से निर्मित प्यानों और आपके चारों ओर मूल नकलों की नकलों की मशीन-निर्मित साधारण सस्ती 'बाढ' होनी चाहिए। ओ, गर्वपूर्ण गृहपतियों ! इस प्रकार निकृष्ट ये चीजें क्या रीति और मूल्य से अधिक भी कोई अर्थ आपके लिए रखती हैं ? आधिक्य के स्वामित्व की अनुभूति से अलग क्या इनमें आकार, क्रम और वर्ण-सम्बन्धी कोई अच्छी अहंता आप देखते हैं जो उन प्रयोजनों को पूरा कर सके जिनके लिए इन्हें बनाया

गया है ? क्या कुर्सियाँ बैठने के लिए, मेज़े प्रयोग के लिए; और कोच आरामदेह है ? और क्या ये सब एक-दूसरे के साथ और आपके अपने निजी जीवन के साथ समस्वर होकर एक-दूसरे से सम्बन्धित है ? क्या कितनी ही सज्जाएं और खिडकियों के कोई भी पर्दे उस प्रयोजन को रच भी सिद्ध करते हैं जिसकी मिद्धि की आप आशा करते हैं ? क्या आप उन 'चीजों' में आनन्द ले सकते हैं जो आकर्षक पर्दे में ढकी होकर भी सत्य की अल्पतम अनुभूतियाँ हैं। यदि नहीं तो आप एक रूढ़ि के कैदी हैं, उस रूढ़ि के जो एक पुरातन कला की गतिहीनता की पर्याप्त साक्षी हैं। यहाँ हमें उस भौंडेपन का एक अभिशाप सहने को मिलता है जो पुरातन कला और शिल्प का एक सस्ता स्थानापन्न है और जिसका आपके निजी जीवन अथवा हमारे समय के लिए कोई ठोस अर्थ नहीं है। जिस डिब्बे में आप रहते हैं उसे आप ऐसे सजाते हैं जैसे नीलकंठ अपने घोंसले को सजाता है। इस सबके अर्थ के प्रति अपनी अज्ञानता को मान लेने में आपको शर्म नहीं करनी चाहिए, क्योंकि न सिर्फ आप, बल्कि प्रत्येक ही इस विषय में निराशाजनक रूप में अन्धकार में है। यह सब 'असम्भव' है। नकलो की नकले, प्रतिकृतियों की प्रतिकृतियाँ; सस्ते उपकरण, ठोसपन की कमी और इस तसवीर की आशा के रूप में सादगी के लिए कुछ अन्धी खोजें। बस यही सब है।

क्यों आश्चर्य किया जाए कि कला की उस भव्य स्फूर्ति का क्या बना जिसने गुज़रे ज़माने में उसके परिवेश में बिम्बित मानव की छाया को एक ईश्वरीय पदार्थ बना दिया था। 'यह' है जो उसका रूप बन गया है। सभी अवस्थाओं में हमारे घरों की यह अवस्था सबसे अधिक तिरस्करणीय है, क्योंकि इसकी परोपजीवी स्थिति को स्वच्छन्द विकास का रूप दे डालनेवाली किसी भी कलात्मक चेतना के पुनर्जागरण के श्रीगणेश के लिए, इस देश के घरों की ओर ही हम देखते हैं। सार्वजनिक भवनो में सम्भावित परिवर्तनों से पहले लोगों के घरों में परिवर्तन होगा।

अब एक क्षण के लिए उन्नीसवीं शताब्दी में कला समझे जानेवाले इस नैमित्तिक दृश्य-चित्रण के पीछे झाँकिए। इन सबके नीचे वर्तमान उन

सच्ची अवस्थाओं का अहसास करने की कोशिश कीजिए, जिन्हें संस्कृति के नाम पर आप ढकते और झुठलाते हैं। एक पल के लिए मेरे साथ उस यन्त्र का अध्ययन कीजिए जो इस भ्रष्टता का निर्माण करता है और इस सस्ते और हास्यास्पद निर्माण के द्वारा आपके आलेख को अश्रेयस्कर रूप दे देता है।

यह है वह चीज जिसे मशीन कहते हैं। यह अंगीण विकास के सिद्धांत के विरुद्ध है पर उसकी नकल करती है और आदमी के माध्यम से आदमी की इच्छा-शक्ति को अनवरुद्ध रूप में कार्यान्वित करती है। जैसे-जैसे अपने दैनिक क्रम में हम बढ़ते जाते हैं, हम सब इसके जाल में फसते जाते हैं। इसके पद, जिन्हें सेवाएँ कहा जा सकता है, आधुनिक अस्तित्व की सर्व-साधारण पृष्ठभूमि बन गए हैं; और हा, कहने में दुःख होता है कि बहुत अधिक लोगों के जीवन में तो वे ही पुरोभूमि, मध्य और भविष्य बन गए हैं। अधिक से अधिक हम स्वयं एक विशाल यन्त्र के कुछ सहयोगी अंग पहले ही बन चुके हैं अथवा बन रहे हैं। हमारे साथ कुछ ऐसा घट रहा है जैसे कि हमारे चारों ओर की प्रकृति में और हमारे बावजूद हमारे निजी स्वभाव में चल रहे एक महिम स्फटन सिद्धान्त के द्वारा हम नियन्त्रित किए जा रहे हों। अगर आप देखना चाहें कि यह चीज, जिसे मशीन कहते हैं, सभ्यता के ताने-बाने में किस तरह बुनी जा चुकी है, —यदि दरअसल यह स्वयं इस सभ्यता का ही आधार नहीं बन चुकी है—तो रात धिर जाने पर जब सब कुछ शांत, सरल और सकेतपूर्ण बन गया हो उस समय हमारे नवीनतम गगन-चुम्बी भवन मैसोनिक टेम्पल की छत पर आप चले जाइए। वहाँ आप देख सकेंगे कि भौतिक मानव की यह तस्वीर एकसाथ ही उसकी कीर्ति और उसका आतंक, यह जिसे हम नगर कहते हैं, कैसा है। आपके नीचे दूर-दूर तक यह दैत्य बिखरा है। सिर के बहुत ऊपर एक गतिहीन लबादालटका है। इसकी बदबूदार साँसें हर कहीं झपकती आँखों के अन्तहीन प्रकाश से लाल हो रही हैं। हजारों एकड़ लम्बे काशिक्य ऊतक, अन्धकार में चमकती हुई नाड़ियों और नसों के उलझे हुए जाल में फस गए हैं। एक परिवेष्टित अशुभ

शोर के साथ एक सक्रियता वहा अविराम संचरित हो रही है, जिसकी जरूरतों को यह सब पूरा करती है। यह आश्चर्यजनक ऊनक, अद्भुत रूप में प्रभावी और पूर्ण नसों की एक प्रणाली के साथ बुना है, फिर बुना और परस्पर गुथा है। अपने अंगों की धड़कन को सुनने और जानने के लिए एक नाजुक तन्तु-जाल इसके साथ है जो विवेकपूर्वक स्वचालित वेग वाले स्नायु-जाल और कराडरो को गति देता है। और इस सबमें मानव के अपने जीवन की उत्तेजक बिजली वह रही है। और थम-साध्य स्वाम-प्रश्वास, भनभनाहट, टनटनाहट और शोर—इस दैत्य शक्ति की आवाज, इस आकार की अद्भुतता की घोषणा करती हुई किस प्रकार उठ रही है। पास ही जहाजों के गहरे गलों से डरावने, चेतावनी-भोंपू बज रहे हैं। ये भारी जहाज नीचे जल-मार्ग में प्रवेश पाना चाह रहे हैं। पुल की घटियों की गूजती टनटन इनका उत्तर देती है। एक दूर की चीत्कार निकट आती जाती है जो अधिक अशुभ प्रतीत होती है। भूलते हुए पुल की घटियां सजीव लहरों को आगाह करती हैं। एक जहाज एक निकटतर धमनी को एक क्षण के लिए काट डालता है। विशाल जहाज के शाही ढग से गुजर जाने के एकदम बाद ही वह दुहरा पुल बन्द हो गया है और भाप के झोके के साथ-साथ इस पार लुढ़काए गए खून और धातु के एक हिमस्लाव का स्वागत करने के लिए ठीक समय पर तैयार है। इस्पात की चमकदार छड़ों पर प्रकाश की एक लकीर गरजती हुई रात में घुसती चली गई है। एक हिमस्लाव जो अपनी उड़ान में जादू की पतली पटरियों से बंधा है, जो स्टेशन से स्टेशन की ओर जाते हुए अपनी उद्विग्न घोषणा, अपनी चेतावनी और अपनी सुरक्षा को वफादारी के साथ टकटकाता जाता है।

नजदीक ही, आधी रात की हलचल से प्रज्वलित एक भवन में बेदाग कागजों का एक गठुर मुद्रण-यन्त्र के आश्चर्य में से गुजर रहा है और इस प्रकार उन मानवीय आशाओं, आशकाओं की छाप अपने ऊपर अमिट रूप में ग्रहण कर रहा है जो इस भव्य सक्रियता की नसों में धड़क रही है। यह सब वैसे ही निर्दोष ढग से हो रहा है जैसे मानवीय मस्तिष्क में भरा भूरा

पदार्थ इन्द्रियो की छााप को ग्रहण करता है। ये छाापे सफाई से मुडे हुए, पूर्ण निष्पन्न लाखो अखबारो के रूप मे प्रकट होते है जो अच्छे और बुरे आवेगो को स्पष्ट उत्प्रेरित करते है। ये पारस्परिक सचरण का ऐसा दूरगामी जाल बुनते है कि दूरी इनके सामने नगण्य बन रहती है। धरती के एक कोने मे बैठे व्यक्ति के एक दिन के विचार दूसरे दिन सभी मानवो की दृष्टि मे आ जाते है। पूरी दुनिया के काम इसमे ऐसे झलक उठते है जैसे शीशे मे झलक उठा करते हैं। यह मामूली गट्ठा मुद्रण-यन्त्र की मुट्ठी मे से निरन्तर गुजरता हुआ अद्भुत रूप मे सचेतन बन उठता है।

इस विशाल सक्रियता की धडकन, उद्योगों के हर विभाग मे रात-दिन काम करनेवाले स्वचालित यन्त्रो की शक्ति, जिसके सामने आपके पैरों के नीचे बिखरे दैत्याकार इस्पाती ढाचे की कपकपी एक आतकप्रद प्रत्युत्तर-भर है—यदि यह रोमाचक है तो इस सबके नीचे वर्तमान मानव के प्रति उसकी उर्बर खामोश आज्ञाकारिता का क्या कहना ? यदि सभ्यता के जीवन के लिए ऐसी इस शक्ति को उन्मूलित किया जाना है तो यह सभ्यता पहले से ही नष्ट समझ ली जानी चाहिए। जब तक ये झपकती हुई रोशनिया दलो मे अथवा एक के पीछे एक बुझ नहीं जाती और अन्यो को अन्धकार मे जलने के लिए नहीं छोड देती तब तक इस आश्चर्य पर विचार करने के लिए वहा टिके रहिए। लपटे दब गई है। शोर धीरे-धीरे मर रहा है। बस यहा-वहा एकआध गूज बाकी है। तब अन्धकारपूर्ण लबादा धीरे-धीरे उठाया जाता है और चादनी इस ढाचे के छायापूर्ण मन्द सघटनो को रेखायित कर देती है। अर्ध-ज्योतिष वीथियो के द्वारा यह ढाचा यहा-वहा गहराई के साथ छेक दिया गया है। सन्दूको जैसी नभ-रेखाओ वाले ब्लाकों की परियोजनाओ मे छाया और अन्धकार के बीच प्रतिच्छाया के विशाल धब्बे रहस्यमय ढग से परस्पर मिलते है। पास की झील की चादी की किरणो से उद्दीप्त शान्त सतह से इसकी तुलना की जा सकती है। मैं कहता हूँ, आप वही रहिए और विचार कीजिए कि विशाल मशीन, इस नगर का तन्तु-विन्यास वह ताना है जिसपर उस लोकतन्त्र का बाना और बुनाव बुना जाएगा, जिसकी हम

वाछा करते हैं। देखिए कि कानून की अन्धानुकारिता में वह अणु-अणु करके यहाँ संचित किया गया है। जहाँ तक हमारा सम्बन्ध है यह कानून दिव्य सौर-मण्डल के नियमों से कम आगिक किसी भी प्रकार नहीं है। एक अर्थ में वह सौर-मण्डल भी वस एक आज्ञाकारी मशीन ही है।

भव्य शक्ति ! और युवक वास्तुकार और उसके कलाकार साथियों के सामने यह खड़ी है। कोई अनिरीकृत सुन्दरता इसमें नहीं है। एक वासना-पूर्ण पदार्थवादी दैत्य जिसमें आदर्शवाद का कोई चिन्ह नहीं है, जो उन कपड़ों में भौड़े रूप में लिपटा है जो बहुत पहले ही चिथड़े बन चुके हैं अथवा जिन्हें तिरस्कारपूर्वक एक ओर फेंक दिया गया है और जो छोटे पड़ गए हैं। अपनी निजी याद में हम सब इसके निरकुश विस्तार की कड़वी कीमत पर आतंकित हुए हैं। यह देखकर भय से थर्राए हैं कि लोभ से संचालित यह भारी शक्ति अबोध और विवश लोगों को रौदती हुई निकल गई है। हमने देखा है कि गम्भीर और परिश्रमी लोगों के मुँहों से रोटी छीन ली गई है। सम्मानपूर्ण धधे एक विद्रोह, एक कमजोर हडताल अथवा एक दबी हुई कराह के साथ नष्ट हो गए हैं। इस मशीन ने उन्हें वर्ग से बाहर फेंक दिया है और समाप्त कर दिया है। स्वयं कारीगर इस क्रूर शक्ति को अपना नेमेसिस^१ मानने लगा है। टकराकर स्वयं को टुकड़े-टुकड़े कर डालने-वाली एक भीषण निराशा के साथ वह व्यापार में नियुक्त मशीनों के विरुद्ध सगठित होता है। उधर कलाकार, जिन कक्षों में अभी-अभी हम हो आए हैं, उनमें आनन्दपूर्ण सपने लेता है अथवा अतीत के रास्तों पर अधा होकर चलता है। कलानुभूति की अक्षमता के लिए अपनी ही जाति की भर्त्सना करता है; उन औद्योगिक अवस्थाओं पर बिगड़ता है जो न तो उसे उपयुक्त अवसर प्रदान करती हैं और न ही, जैसा कि वह कहता है, उसे समझ सकती हैं। और, गलत साधनों से प्राप्त ऐयाशियों का दलाल, वह जुड़े हुए हाथ लिए भूखा मर जाता है। 'कला के 'क्रास' पर लटकने-

वाला अनपकारी शहीद ! 'एक-एक करके, दस-दस करके, शीघ्र ही हजार-हजार की सख्या मे हस्तशिल्पी और परोपजीवी कलाकार अनिवार्य नियति के सामने नष्ट हो जाते है, क्योंकि मशीन पर बैठा एक आदमी उतने ही समय मे पाच से पचास तक लोगो का काम कर डालता है । साथ ही कला इस बीच, पुराने तरीको और गलत समझे गए आदर्शो की पवित्रता का सौदा इसी मशीन के माध्यम से उपलब्ध अधिकाधिक नई सम्भावनाओ के बदले कर रही है और ऐसा वह अपमानजनक रूप मे सुन्दरता के नाम पर ही कर रही है ।

जैसाकि विदीर्ण हाथ हर कही साक्षी देते हैं, अमरीकी समाज के पास अपने इस युग का अनिवार्य औजार पूरी धार के साथ वर्तमान है ।

इस अनर्ह शक्ति के शानदार शौर्य को देखिए, इसने अधिक खुश समय की छिन्न-भिन्न लाशो को चारो ओर बिखरा दिया है । हम प्रेत रूप खड्गहरो के बीच रहते हैं, जिनके आकार कभी की सस्कृत ऐयासी के उपकरणो के रूप मे खडे है । साधारण बुद्धि के प्रथम सिद्धान्तो की परवाह न करते हुए परम्परा के सन्देश को, अद्वैतदर्शिता के साथ, मशीनो के सर्वग्रासी जठर मे तब तक भोका जाता रहता है जब तक पुनरुत्पादन घृणास्पद पुनरुत्पादन पाच, दस अथवा नित्यानवे सेट मे नही बिकने लगते; यद्यपि उत्कृष्ट मूल कृतियो ने युगो के श्रम और धैर्यपूर्ण सस्करण की कीमत वसूल की थी । इसे प्रगति समझा जा सकता है, लेकिन तथ्य यह है कि कसाई की छुरी से कटे ये रूप, जिनमे से जीवन पूरी तरह निकल चुका है अब हानिकार परोपजीवी मात्र है । ये सामान्य सौन्दर्य की सच्ची उस प्रत्येक अनुभूति तक को तुच्छ बनाते और झुठला देते है जिसे स्रष्टा ने हमारे लिए हमारे अन्दर स्थापित करना उचित समझा हो । प्रयोजन के लिए उपयुक्तता तथा रूप और प्रयोग के बीच एकस्वरता का विचार हमारे अन्दर से पूरी तरह जा चुका है । इन सब चीजो मे इसका अभाव है, क्योंकि हममे भी इसका इतना दुखद अभाव है । जहा तक अपनी निजी अवस्थाओ का सर्वोत्तम उपयोग करने और उन शर्तो का निषेध करने का विचार है जिनके

अनुसार परम्परा का यह अशोभन अपमान किया जाता है; और इस प्रकार औद्योगिक शक्तियाँ को निम्न नकल वृत्ति द्वारा विनष्ट होने से अथवा दामता ग्रहण करने से बचाने की बात है, मैंने दुःख के साथ पाया है कि यह विचार असामान्य ही है।

और उन कुछेक में, उन कुछ कृपापात्रों में जो कला से निमग्न प्रेम करते हैं, जो अपनी क्षमताओं को उसके प्रति समर्पित करना चाहते हैं जिससे वह जी सके और उन्हें भी जीने दे सके, उनका कोई भी वाछ्य प्रशिक्षण आज भी उस मशीन के प्रति एक विरोध के ही रूप में ही सम्भव है, जिसे वे इस सारी दुर्वृत्तता का स्रष्टा मानते हैं। और भगवान जानता है कि मशीन एक सृष्टि से अधिक कुछ भी नहीं है।

लेकिन, मैं कहता हूँ कि लोभ से अधिकार-च्युत और और अपने स्वाभाविक व्याख्याकार कलाकार द्वारा परित्यक्त मशीन इस दुर्वृत्तता की स्रष्टा नहीं, सिर्फ उसकी निर्मिति है। मैं कहता हूँ, मशीन की बड़ी उदार सम्भावनाएं हैं जिन्हें उसकी इच्छा के विरुद्ध इस पतन की ओर उन्मुख कर दिया गया है। और स्वयं कला ने ही उसे गिराया है। जहां तक मशीन की सच्ची क्षमता का सम्बन्ध है वह स्वयं कलाकार की नपुंसकता की सनकपूर्ण शिकार है। अमरीकी कलाकार क्यों यह महसूस करना नहीं चाहता कि हमारे युग का मानवीय विचार अपने प्राचीन रूप को उतारकर फेंक रहा है। और दूसरा ओढ़ रहा है? क्यों कलाकार यह देख पाने में असमर्थ है कि नये सिरे से सृजन का यह शानदार अवसर है।

लेकिन हमें व्यावहारिक होना चाहिए। हमें अब आगे बढ़कर मशीन के दुरुपयोग अथवा मशीन द्वारा दुराचरण के स्पष्ट दृष्टान्त खोजने चाहिए। मैं ऐसे विशिष्ट दुष्प्रयोग आपको दिखा सकता हूँ जो विचार करने में समर्थ किसी भी दिमाग को यह सुझा दे सकते हैं कि आरम्भ में मशीन एक अद्भुत सरलकर्त्री थी; और वह भी मात्र निषेधात्मक अर्थ में नहीं। अब आइए और मेरे साथ उन दृष्टान्तों को देखिए जो बताते हैं कि ये शिल्प-यन्त्र सृजनात्मक मस्तिष्क के आधुनिक उद्धारक बन सकते हैं। इन्हें हम

अपने अमरीका की सृजन-चेतना के पुनर्जीवक के रूप में ग्रहण कर सकते हैं और वैसे ही जैसे कि एक प्रभावशून्य 'संस्कृति' ऐसे प्रयोग की अनुमति उन्हें दे दे।

सबसे पहले आइए, हम लकड़ी को ही लें। घर बनाने के साधन के रूप में लकड़ी सबसे अधिक उपलब्ध है और इसीलिए स्वभावतः ही सबसे अधिक दुष्प्रयुक्त भी है। विशद मशीनें किसी अन्य प्रयोजन के लिए नहीं बल्कि इसलिए बनाई गई हैं कि प्राचीन हस्त-शिल्प की काष्ठकला-कृतियों की नकल की जा सके। परिणाम ? कोई बढ़िया बढ़ईगीरी नहीं। इनमें से कोई भी तब तक नहीं बेची जा सकती जब तक वैसी ही कोई भीषण अर्थ-हीन पेवन्द उसपर न चिपका दी जाए। इसका यही अर्थ है कि 'कला और शिल्प' ने (दुकानदारी के द्वारा) लोगों के दिमाग में हाथ से बनी विस्तृत खुदाई वाली प्राचीन कुर्सियों को ही अन्तिम आदर्श के रूप में जमा दिया है। ग्राण्ड रेपिड्स द्वारा इस विकृति को दी गई तुच्छ श्रद्धाजलि मात्र ही कला के चेहरे को असाध्य रूप में बिगाड़ देने के लिए काफी है, तकलियों और छोटी आरियों द्वारा की जानेवाली उस जादुई, उलझी हुई बढ़ईगीरी का तो कहना ही क्या है जो अपनी जगमगाती, विलक्षण, विशुद्ध कारीगरी के द्वारा भावुकता की दृष्टि से बारीक कामवाली पुरानी चीजों की भावना को भी पीछे छोड़ जाना चाहती है। लकड़ी की खूबसूरती लकड़ी के निजी गुणों में है। यह बात आश्चर्यजनक लग सकती है। लेकिन ठीक इतनी ही बात देखने के लिए इतनी कल्पना की क्या जरूरत है ? जो प्रयोग उसके गुणों को उभारने में असफल रहते हैं वे उपयोगी नहीं हैं। इसलिए उचित भी नहीं है। अनुचित चीज खूबसूरत नहीं हो सकती।

लकड़ी पर काम करनेवाली मशीन हमें स्वयं बता देती है—और लगता है यह काम अभी तक हमने मशीन पर ही छोड़े रखा है कि कुछ मामूली आकार और गढ़न लकड़ी की सुन्दरता को उभारने और उसकी प्रकृति को कायम रखने के लिए काफी होते हैं। जबकि कुछ अन्य आकार और गढ़न उसकी सुन्दरता को नहीं उभार पाते, उल्टे उसे खराब कर देते

है। लकड़ी की खुदाई का ऐसा काम लकड़ी की उन नफीस सम्भावनाओं को नष्ट कर देनेवाला ही होता है जिन सम्भावनाओं को उस रूप में आज हम पहचानते हैं। अंकाई की सुन्दरता, बढ़िया बनावट और रंग के नाजुक आभासों की सम्भावनाएँ स्वयं लकड़ी में मौजूद हैं, जिन्हें खुदाई नष्ट कर डालती है। लकड़ी के काम में लगी मशीनें दिखा देंगी कि कटाई, आकार देने और सतह चिकनी करने की अपनी असीमित शक्ति और अथक पुनरावृत्तियों के द्वारा उन्होंने काष्ठप्रकृति के सौन्दर्य को उन्मुक्त कर दिया है और बिना अपव्यय के सतह के उपचारों और साफ मजबूत आकारों को सम्भव बना दिया है। 'शेराटन' अथवा शिपनडेल? ऐसी तहों को घोर अपव्यय के बाद ही निर्मित कर पाए थे। मध्ययुगों तक को वैसा सौन्दर्य अज्ञात था। इन मशीनों ने निस्सन्देह ही डिजाइनर को वह तकनीक प्रदान की है जिसके द्वारा वह अपने नक्शों में लकड़ी की सच्ची प्रकृति को मानव की सौन्दर्य-चेतना के साथ एकस्वर करके समझ लेने की योग्यता पा गया है। साथ ही भौतिक आवश्यकताओं को इतनी किफायत के साथ वह पूरा कर सकता है कि लकड़ी का सौन्दर्य हर किमीकी पहुँच में आ जाए। लेकिन मशीनों के फायदों का दुरुपयोग किया जाता है और हर कहीं हम सौन्दर्य-चेतना की हत्या के उत्पात को सहते हैं और पतित हस्तशिल्प से गुज़ारा करते हैं।

अब हम सगतराशों को ले ले। उनकी आरियों, रंदों, वायवी छेनियों और घिसन पट्टियों के लिए अब सम्भव है कि वे दस फीट लम्बी, छः फीट गहरी और दो फीट मोटी शिला को कुछ ही घंटों में एक इंच मोटी चादरों अथवा पट्टियों में काट डालें। इस प्रकार दीवार पर मामूली मढ़ाव के रूप में एक कीमती चीज का इस्तेमाल किया जाना अब सम्भव हो गया है। पत्थर की पट्टियों को घुमा-घुमाकर, मेल बैठकर उनसे बढ़िया नमूने तैयार किए

१. अग्रेज फर्नीचर-निर्माता एवं डिजाइनर (१७५१-१८०६)

२. अग्रेज कैबिनट निर्माता (१७१८-१७७६)

जा सकते हैं। और इस प्रकार शुद्ध पाषाणी रंगों में की गई सैकड़ों फुटों में फैली व्यर्थ की चित्रकारी की आवश्यकता समाप्त हो गई है। पहले भारी व्यय से निर्मित ब्लाको की मोटी दीवारों पर ऐसा अपव्यय किया जाता था। यहां भी स्पष्ट ही एक नये स्थापत्य के द्वारा प्रकृति से सगत, पत्थरों के उस सौन्दर्य को उभारा जा सकता है जो हस्तशिल्प के लिए असम्भव है। लेकिन होता क्या है? कलाकार इस अभ्यास का अनुचित लाभ उठाने की जिद्द करता है। तराशे गए शीशों और आधारों वाले ठोस खम्भों की नकले तैयार करके और किनारों पर पत्थर की पट्टियों को चालाकी के साथ ऐसे जोड़कर कि प्रशिक्षित दृष्टि के सिवाय उसे पकड़ना कठिन हो जाए 'कलाकार' इस प्रयोग का कुटिल लाभ उठाने की हठ करता है। अपने तरीके को वह किसी नई तकनीकी सम्भावना की सुन्दरता का विकास करने के उद्देश्य से नहीं बदलता। नहीं, 'कलाकार' तो बस स्थापत्य के जाली रूप बनाने तथा स्कन्धों और स्तम्भों को अधिकाधिक निर्मित करने की योग्यता-भर रखता है क्योंकि अब वह उन्हें खोखला भी बना सकता है। उसका शिल्प स्वयं उस सस्ते जालसाज से अधिक योग्यता नहीं रखता। जालसाज वस्तुतः वह है भी क्योंकि उसके पौराणिक आकार न सिर्फ पुरातन पद्धति को झूठा बनाते हैं और वर्तमान तरीकों को झुठलाते हैं, बल्कि वे उसकी भावी प्रगति को भी प्रवर्चित कर देते हैं। विश्वसनीय साक्षी के रूप में सार्वजनिक पुस्तकालय अथवा कला-संस्थान, वाशिंगटन के कांग्रेस पुस्तकालय अथवा बोस्टन पुस्तकालय को देखा जा सकता है।

सगतराशी के क्षेत्र में पत्थर के रन्दे ने यह सम्भव बना दिया है कि कौंसी भी वांछित सतह पत्थर पर तैयार की जा सके अथवा किसी चतुर मस्तिष्क द्वारा कल्पित कौंसी भी सुन्दर चित्रकारी उस सतह पर पक्के रंगों में चीती जा सके और यह भी ऐसा किया जाए जैसा पहले हाथ से करना कभी भी सम्भव नहीं था। लेकिन अब किया क्या जा रहा है? हाथ द्वारा की गई दातेदार छिनाई की यथासम्भव सच्ची नकले प्रस्तुत की जा रही हैं, नकले भी विशेषकर लकड़ी के काबिल डिजाइनों की। मीलों लम्बे अर्थ-

हीन किंगनी रद्दो, कगूरो और आधारीय रद्दों की फिजूलियत को उन प्रकार सम्भव बनाया जा रहा है। और हम बीच 'कलाकार' बृहद् शक्ति का उप-हास करता रहा है क्योंकि वह हमनजिल्ल की अपूर्णताओं के 'स्पर्श' की सी अस्थिर नजाकत लाने में विफल रहती है।

यह आदमी शिल्पकार नहीं है, निश्चय ही नहीं है। नहीं तो वह अपने विभागों की गुणाकृति के डिजाइनों में 'पुगतन' विशेषताओं को भी पीछे छोड़ जाता है। ठीक उसी पूर्णता तक पहुँचना वह अपना लक्ष्य बनाना जिससे आज वह डरता है। मशीन की प्रभूत कुशलता के बल पर ऐसे बुद्धिमत्तापूर्ण डिजाइन वह बनाता कि तुलना में हस्तशिल्प अमाध्यरूप में भौड़े लगने लगते। और ऐसा वह कर सकता है। इस मशीन ने 'किताबी शिल्प' को जो भयानक सुविधा प्रदान की है उसका मुकाबला तो स्वयं जस्ती लोहे के द्वारा उसे दी गई सुविधा ही कर सकती है। और यदि असंभव पत्थर की नक्काशी अब भी चाहिए, तो उसके एकड़ के एकड़ हमें आज भी मिल सकते हैं जिनमें हम आधारभूत 'शिल्प' की अन्य विशिष्टताएं भी लुप्त नहीं मिलेंगी। मूल कृतियों की शिल्प और उनकी नफासत से चकित होकर पुरातनों की हाथ की खुदाई की नकल करने की कोशिश भी आप चाहे तो कर सकते हैं। लेकिन यदि वायवी छेनी और बिजली के रंदे को उचित काम देना आप चाहेंगे तो इसका मतलब होगा शैली में परिवर्तन और पत्थर के आधुनिक भवनों के निर्माण में पत्थर के प्रयोग को नियन्त्रित करनेवाले आदर्श के आध्यात्मिक केन्द्र में स्थानान्तरण ले आना।

प्राचीन पदार्थों के वर्ग का, विशेषकर लकड़ी और पत्थर का अध्ययन करने पर आप पाएंगे कि मशीन ने उन सबको ढलनशील उपयोग के योग्य बना दिया है। मशीन स्वयं, आर्थिक उपयोग के उद्देश्य से, इन चीजों में निहित उस गुण को स्थिरतापूर्वक उभार रही है जिसकी, उसके निजी कला-समीकरण को तुष्ट करने के लिए आज जरूरत है। पकाई गई मिट्टी, जिसे हम 'टेराकोटा' कहते हैं, इस 'पद्धति' के लाभ का एक और विशिष्ट दृष्टान्त है। आधुनिक मशीनों ने (और एक पद्धति भी एक मशीन ही है)

सृजानत्मक मस्तिष्क के समक्ष इस पदार्थ को भी उतना ही सम्बेदनाशील बना दिया है जितनी कि एक सूखी प्लेट कैमरे के शीशे के सामने होती है। यदि ठीक तरह इस्तेमाल किया जाए तो यह पदार्थ आश्चर्यजनक रूप में सरल-कारक है। आज कलाकार इस युग की विशिष्ट चीज इस्पाती आकृतियों को सादे रूप में सुन्दर ढलनशील आवेष्टन उढ़ा सकता है, इसके बदले कि पाच या अधिक भिन्न प्रकारों के पदार्थ अव्यवस्थित आकारों और हिस्सों के रूप में पूजीभूत कर दिया जाए उन्हें 'मिलाया' जाए और चित्रमय समझा जाए लेकिन वस्तुतः जो सस्ती सज्जाओं की एक जाति हों, सूर्य जिनकी मजाक उड़ाए और उन्हें सिकोड़ डाले और वायु और वर्षा कबाड़खाने के एक बहुरंगी ढेर में उन्हें अन्ततः रूपान्तरित कर दे। लेकिन सादगी की ये महान सम्भावनाएँ, मशीन का यह उपहार जब वास्तुकार के माध्यम से हम तक पहुँचता है तो हाथ के औजारों से बने ब्लाकों की तुच्छ नकल ही हमें प्राप्त होती है—चौकोर खम्भों के शीर्ष और आधार, गढ़े हुए डाट पत्थर, तराशे गए चाप स्कन्ध जो पुरातनों के वास्तुशिल्प की हाथ से श्रमपूर्वक तैयार की गई पाषाणी फसले हैं।

धातु को ढालने के आधुनिक तरीके भी वे आधुनिक मशीनें हैं जो पूर्णता तक पहुँच रही हैं और अत्यन्त विशद काव्यात्मक मस्तिष्क की चित्रात्मकता को स्थायी बनाने की अबाध क्षमता रखती हैं। ये उस प्रत्येक व्यक्ति को स्थायित्व और प्रतिष्ठा दिला सकती हैं जो अब तक इतालवी लोगो के रिनेसा (पुनर्जागरण) के बेलशजार^१ को लेकर हाथ पर हाथ धरे बैठा है। हा, बिना अतिशयोक्ति यह कहा जा सकता है कि अनगिनत पद्धतियाँ जिनमें कितनी ही नई हैं और कितनी ही अभी पनप ही रही हैं, सहानुभूतिपूर्ण अर्थ-नियोजन की प्रतीक्षा में हैं। उदाहरणार्थ, गालवनो प्लास्टिक और उसके विद्युत भाई-बन्द—भीड़ की भीड़; सस्ती जाली चीजे बनानेवाली, मूल ताबों और धातु की सब प्रकार की पुरा-

१. बेबीलोन के अन्तिम राजा नेब्रोडिनस का पुत्र व सेनापति।

तन चीजों की नकल करनेवाली, जो मन ही मन इन सबकी निन्दा करती है, पर खुलकर इन्हें छोड़ भी नहीं सकती। और एक इलेक्ट्रो-ग्रेजिंग है जिसे इसलिए त्याग दिया गया है क्योंकि शीशे पर इसकी सरल रेखाएँ अत्यन्त प्रखर रूप में प्रकट और नाजुक होती हैं। लगता है, ये सरल रेखाएँ परम्परागत डिजाइनर के स्पर्शाभाव के प्रति उतनी संवेदनशील नहीं हैं। लहराती रेखाएँ और सरल रेखाएँ उसे कठोरतः असुन्दर लगती हैं। उसका कहना है कि “वक्र रेखा ही सुन्दरता की रेखा है।” मानो कि प्रकृति स्वयं न समझ पाती हो कि अपनी निजी ऋजु रेखाओं का वह क्या करे।

मुपरिचित लिथोग्राफ भी नई पुनरुत्पादक लेकिन अनुत्पादक पद्धतियों के एक पूरे प्रदेश का राजा है। प्रत्येक की अपनी व्यक्तिगत विशिष्टताएँ होती हैं और इसलिए अपनी निजी सम्भवनाएँ होती हैं। लिथोग्राफ से विल्स्लर^१ ने जो बनाया है और जर्मन जो उससे विकसित कर रहे हैं, वह देखिए—एक धुन उसकी सम्भावनाओं की परिधि में छोड़ी गई है। लेकिन यह धुन पद्धति के साथ उतनी ही सगत है जितनी कि तितली के पख की चमक पख के साथ होती है। प्रतिष्ठा से गिर जाने के बाद जब तक विल्स्लर ने उसे हाथ में नहीं लिया तब तक यह विशेष मशीन हमारे लिए इतना ही कर सकी कि मुख्यतः प्रचार-प्रयोजनों के लिए चित्रों की कुछ सस्ती नकलें छापा करे। मनुष्यों द्वारा पदार्थों के दुरुपयोग में मशीनों का यही उपयोग किया जाता है। जिनपर हम यहां विचार कर चुके हैं उन सबसे अधिक महत्वपूर्ण वह तत्त्व है जो उद्योगों में प्रवेश कर रहा है और जिसे हम इस्पात कहते हैं। आकार-सम्बन्धी ज़रूरत को, जिसने कभी पार्थेनानो, पेन्थियनो, कैथेड्रलो आदि को आकार दिया था, मशीन अब बड़ी तेज़ी से उसे इस्पात के अथवा उसके समकक्ष अन्य धातु के एक ढाँचे के रूप में बदल रही है। और यह ढाँचा कलाकार शिल्पी के स्पर्श के बिना ही पूर्ण हो जाता है। केलिफोर्निया में अब इस्पात के ढाँचे के आधार पर ‘गाथिक’

गिरजाघर बनाए जा रहे हैं। क्या यह महसूस करना सहज नहीं है कि पुरातन स्थापत्य की जरूरतों को पूरा करनेवाले हजारों तरीकों जो स्थापत्य-कला के रूप में किताबों के माध्यम से हम तक पहुंचे हैं अब मिट चुके हैं और इतिहास बन चुके हैं। उनके भौतिक अस्तित्व का प्रमुख स्रोत बदल चुका है, उनका आध्यात्मिक केन्द्र स्थानान्तरित हो चुका है और एक मृत चेहरे की जड़ आकृतियों के सिवाय कुछ भी बाकी नहीं बचा है। ऐसा है हमारा 'पौराणिक' स्थापत्य !

संस्कृति के नाम पर एक महान अवसर के इस सवेदनशून्य अथवा जड़ दुरुपयोग ने कला अथवा स्थापत्य में साफ और सच्ची सादगी को सदियों से असम्भव बना रखा है, जबकि हम चाहे तो आज सृजनात्मक कला की ऊचाइयों तक पहुंच सकते हैं। ठीक रूप में प्रयुक्त होने पर यही शाप जो मशीन ने हस्तशिल्प के ऊपर आरोपित किया है, कलाकार को तुच्छ रचनामूलक छल के लालच से उन्मुक्त कर सकता है और चीजे जो हैं नहीं और न जो वे हो सकती हैं वैसे ही उन्हें प्रस्तुत करने के एक थका देनेवाले संघर्ष को समाप्त कर सकता है। तब अन्ततः मशीनस्वयं आधुनिक कला-समीकरण की सादी शर्तों को वैसे ही तुष्ट कर सकेगी जैसे शिल्पी के हाथ में थमा मिट्टी का गोला उसकी इच्छा के अधीन काम करता है। और इस प्रकार कला के नाम पर चलनेवाला, एक चेतना-शून्य संस्कृति का सीमाबद्ध छद्म नृत्य सदा के लिए खत्म हो जाएगा।

हा, यद्यपि कलाकार नहीं जानता पर अपने बुद्धिसंगत संकल्प को पूरा करने के लिए आज वह स्वतन्त्र है। ऐसी स्वतन्त्रता रचनामूलक परम्परा को अज्ञात थी। निर्माण की इकाइया विस्तृत कर दी गई हैं। ताल-सुरों को सरल और वायवी बना दिया गया है। अन्तरिक्ष अब अधिक खुला है और उसकी चेतना छोटे या बड़े हर भवन में प्रवेश कर सकती है। रोमनों की पत्थर की महाराब अथवा यूनानियों की पत्थर की कड़ी अब वास्तुकार के मार्ग की रुकावट नहीं बन सकती। तब क्यों वह निर्माण की पुरातन पद्धतियों के व्याकरण-सूत्रों से चिपका रहे, जबकि ये सूत्र आधुनिक प्रयासों में

खोखले झूठ बन गए हैं और वह मर्य भी एक अनिवार्य झूठा बन गया है।

जैसीकि आज की स्थिति है, मशीन कलाकार को विनाश की सीमा तक कमजोर बना चुकी है और शिल्पकार को तो एकदम ही ममयातीत कर चुकी है। कला के आरम्भिक रूप दुर्भ्रमयोग के कारण लगभग नष्ट हो चुके हैं। पूरा विषय ही मात्र दिस्तावा बन चुका है। आनन्दपूर्ण सृजन के स्थान पर हमारे चारों ओर त्रिपैली रुचियाँ और मूर्खतापूर्ण प्रवृत्तियाँ हैं। पुराने प्रेम की छोटी-सी लपट और प्रशसनीय पर दयनीय उत्साह लेकर युवक कलाकार अब भी काम करता जाता है और उच्च उद्देश्यों के साथ दीन शरारतें करता जाता है। यह शायद इसलिए क्योंकि उसका हृदय अपने वैज्ञानिक भाई के मस्तिष्क के साथ सम्पर्क अथवा सहानुभूति नहीं रख सका है और अपने युग की प्रगति में कदम से कदम वह नहीं मिला सका है।

अब हल हाऊस में यह नई कला और शिल्प संस्था बनाने समय हमें यह याद रखना चाहिए कि हर जाति ने अपना काम किया है और इस प्रकार अपने सर्वोत्तम औजारों का इस्तेमाल करते हुए अपने निजी जीवन को अभिव्यक्ति देनेवाली कला का विकास किया है। सर्वोत्तम औजारों का अर्थ है उसकी जानकारी में सर्वाधिक किफायतपूर्ण और प्रभावशाली वे औजार एवं पद्धतियाँ जो मूल्यवान मानव-प्रयास को बचाने में सबसे अधिक सफल रहे हैं। यूनानी सभ्यता का और इसलिए उसकी कला का अनिवार्य औजार था चलसम्पत्ति, गुलाम। हमने इस औजार को त्याग दिया है, और यूनानी कला की ओर लौटने से हम इन्कार कर देंगे यदि गुलामी इस पुनर्जीवन की शर्त हो, और गुलामी किसी न किसी रूप में इसकी शर्त होगी ही।

लेकिन यूनानी कला में दो फूलों को आध्यात्मिक अभिव्यक्ति मिली है। ये हैं एकेन्थस और हनीसकल। मिस्र की कला में भी इसी प्रकार पेपिरस और लोटस (कमल) को हम पाते हैं और जापान में क्राइसेथिमम और कितने ही अन्य फूलों को। अंग्रेजी गुलाब और फ्रांसीसी फ्लूर-दि-लिस को

उचित सम्मान देने के सिवाय पश्चिम की कला ने उस समय के बाद कोई इतनी सहानुभूतिपूर्ण विवृति नहीं की है। और जैसी स्थिति अब है, पश्चिम वैसा अब करेगा भी नहीं। लेकिन किसी स्थानीय पौधे को स्थानीय चरित्र की अभिव्यक्ति बनाकर ग्रहण करना और अनश्वर पाषाण में ढालकर स्थापत्य में उसकी उचित जगह बना देना और ऐसा ठोस महत्त्व को हानि पहुँचाए बिना करना महान कला का एक महान दृश्य है। इसका अर्थ यह है कि यूनानी अथवा मिस्री लोगो ने लोटस और एकेन्थस के गुह्यतम जीवन और चरित्र का उद्घाटन लोटस अथवा एकेन्थस जीवन के रूप में पालिया था। जब अपने सर्वाधिक प्रिय पौधों का उनकी कला में उपयोग किया तब यही सब गुजरा था। यह कल्पनाशील पद्धति सिर्फ सृजनात्मक कलाकार को ही ज्ञात होती है। इसे व्यवस्थीकरण कहते हैं। वास्तव में यह पदार्थ-विशेष का नाटकीकरण है, उसका सबसे सच्चा 'नाटक'। इस साधारण तत्त्व को यदि विशद किया जाए तो एक कलाकार के नाते मुझे प्रतीत होता है कि सम्भ्यीकरण का यह सश्लिष्ट तत्त्व तली में स्वयं कुछ ऐसी ही व्यवस्थीकरण पद्धति है अथवा सफल होने और टिके रहने के लिए उसे ऐसा होना ही चाहिए।

जिस प्रकार यदि कोई कलाकार-शिल्पी किसी प्रिय पुष्प को अपने भवन के किसी स्तम्भ पर पत्थर में ढालकर स्थापित करना चाहता है, तो उसे फूल का व्यवस्थीकरण करना चाहिए, अर्थात् उसके जीवन-सिद्धान्त की रचनाकृति पत्थर के रूप में खोजनी चाहिए जो एक पदार्थ बने। तभी वह एक सौंदर्य-उपादान के रूप में उसका सही इस्तेमाल अपने भवन में कर सकेगा। इस प्रकार शिक्षा को चाहिए कि वह प्राकृतिक मानव को 'सम्भ्य' बनाए। घातक मशीन की इस नई महान शक्ति को समझना हमें सीखना होगा और तब एक मूल्यवान 'व्यवस्थीकरण' साधन के रूप में इसका उपयोग सीखना होगा। लेकिन एक विशाल भवन के निर्माण की तरह ही समाज के निर्माण में भी व्यवस्थीकरण की यौगिक पद्धति खतरनाक होती है, क्योंकि सच्चे कलाकार की प्रेरणा अथवा अन्तर्ज्योति के बिना फूल की सिफत, उसकी प्राणवत्ता खो जाती है और एक सजीव अभिव्यक्ति के स्थान पर बदरग

सूखा छिलका-भर रह जाता है ।

इसलिए, इस व्यवस्थीकरण-पद्धति अथवा सस्कृति की दृष्टि से समाज का काम, भवनों के आकार बनानेवाले वास्तुकार की अपेक्षा अधिक खतरनाक है, क्योंकि पुरातन वास्तुकार की तरह एक पौधे के पत्ते और एक स्थिर पदार्थ के बदले हमारे पास एक चैतन्य मानव है, जिसकी आत्मा तरल है । इसलिए कला के एक ठोस दर्शन के एक आन्तरिक प्रकाश के बिना (अब तो शिक्षा-शास्त्री को भी कलाकार होना चाहिए) मानव-जीवन का बलिदान हो जाएगा और एक उदार सृजनात्मक नागरिक के बदले एक स्वचालित मशीन अथवा मशीन-निर्मित एक मन्दबुद्धि मानव ही समाज को मिलेगा ।

यदि इस क्रम में शिक्षा पूरी तरह विफल हो जाती है, तो मनुष्य आदिम पशुपन की ओर लौट जाता है अथवा विनाश को प्राप्त होता है । समाज का पतन हो जाता है अथवा वाछित आदर्शवादी सर्जक के स्थान पर एक मामूली वस्तुवादी प्राणी ही वह बच रहता है । और ससार को और अधिक 'महान मृत नगरो' का लेखा-जोखा रखना पड़ता है ।

मानवीय प्रयोजनों के लिए नाटकीकृत पुष्प की कलाकार-आकृति की रक्षा के लिए समाजवादी 'समस्वर' निखिल के सामने परमार्थवादी प्रणति के साथ अपनी गर्दन झुका देगा । मानवप्राणी के व्यवस्थीकरण अथवा नाटकीकरण की उसकी कोशिश उस गरीब पाषाण-शिल्पी के प्रयत्न के समान होगी जिसके अनुसार वह अपने प्रिय पौधे को, पत्ते और फूल के सजीव चरित्र से तोड़कर व्यवस्थीकृत करता है । अराजकतावादी उगते हुए फूल को तोड़ लेगा और जिसके लिए वह है, उसके लिए ज्यो का त्यो उसे इस्तेमाल करेगा—अनिवार्य वास्तविकता को छोड़कर ।

वंशानुगत कुलीनतन्त्रवादी ने, शिल्पी द्वारा फूल को जीवन और चरित्र दिए जाने के बाद भाग्यपूर्ण अनुरूपता के कारण उसे निजी प्रयोग में ले आने की अपनी योग्यता से ही अपने अस्तित्व का औचित्य सिद्ध किया है । वह शिल्पी को भी यह वायदा करके उलझाए रखता है कि यदि वह

घोषणा-पत्र और हमारी स्वतन्त्रता की घोषणा वचनबद्ध है। लेकिन, यह स्थान, मुधार के द्वारा उसे इसके योग्य बनाए जाने के लिए उसे नहीं दिया जाएगा, न ही किसी छूट के फलस्वरूप यह उसे मिलेगा, बल्कि प्राप्त साधनों के निजी प्रयोग के माध्यम से ही यह उसका वनेगा। एक नई दुनिया उसे स्वयमेव बनानी चाहिए। व्यक्ति का समय अभी समाप्त नहीं हो पाया है, बल्कि वह तो अभी शुरू होनेवाला है। मशीन स्वतन्त्रता की मृत्यु का लेख नहीं लिख रही है। एक अद्वितीय औजार के रूप में वह तो प्रतीक्षा कर रही है कि मानव एक सही प्रजातन्त्र की नींव रखने में उसका इस्तेमाल करे। तब मशीन एक प्रयोजन के लिए मानवी-श्रम पर विजय पा लेगी और मामूली से मामूली आदमी के जीवन को चौड़ा करने, उसे लंबा, मजबूत और गहरा बनाने का काम अपने ऊपर ले लेगी। जो कला, व्यक्ति के एक योग्य जीवन का आगिक फल है, उसके लिए किन्हीं सीमाओं की कल्पना का साहस नहीं किया जा सकता। यद्यपि यह शक्ति अभी घातक है और भौडी नकलों और जालसाजों की महत्वाकांक्षाओं से बधी है, पर सृजनात्मक कलाकार निश्चय ही इसे अपने हाथ में ले लेगा और स्वतन्त्रता के नाम पर उस घातक शरारत को, जो हमने अब तक की है, तेजी से समाप्त कर देगा।

हमारे जीवन में भौतिकवाद और आदर्शवाद

जार्ज सान्तायन

हमारे जीवन में भौतिकवाद और आदर्शवाद

समान भाषा और परम्पराएं भी इंग्लैंड और अमरीका के अन्य पारिवारिक सम्बन्ध-सूत्रों की तरह ही हैं। जीवन में बड़े सकट उपस्थित होने पर वे उन्हें नजदीक खींचते हैं, लेकिन समय-समय पर वे थोड़ी रगड़ और दोष-दर्शन की स्थिति भी पैदा कर देते हैं। दोनों समाजों की आधारभूमि इतनी समान है कि एक राष्ट्र दूसरे के साथ घनिष्ठता अनुभव करता है और उसकी भाषा को समझने की योग्यता रखता है। और इसीलिए शायद परस्पर पूर्ण आत्मीयता के मार्ग की हर रुकावट पर वह सहज रूप में ही रोष प्रकट करता है। मतभेद, वे असंगतियां मालूम पड़ती हैं जो गलती से अथवा किसीके दोष के कारण बीच में आ टपकी हैं। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे को अपने निजी मापदण्ड से ही नापता है। जैसाकि एकदम अनजान लोगों के बीच होता है, वह यह महसूस नहीं करता कि एक कल्पनापूर्ण प्रयास उसे करना चाहिए और स्वयं को दूसरे के स्थान में रखकर देखना चाहिए।

नैतिकता, आचार और कला के मामलों में तुलनाओं से सिर्फ यही खतरा नहीं है कि वे गुण-स्तर के अनुसार विशेषताओं को व्यवस्थित करके किसीके अहम् को चोट पहुंचा सकती हैं और इस प्रकार द्वेषजनक सिद्ध हो सकती हैं; बल्कि खतरा अधिक यह है कि तुलनाएँ विषय के विवेक को विकृत कर देती हैं। सचाई यह है कि अच्छे गुण सब भिन्न प्रकार के होते हैं और मुक्त जीवन प्राणवत्ता की दृष्टि से भी भिन्न-भिन्न होते हैं। तुलना उन लोगों की युक्ति है जो तुलनीय चीजों के अन्तरंग तक नहीं पहुंच सकते। और कोई दर्शन उससे अधिक स्थूल और अहनिष्ठ नहीं हो सकता जो एक चीज के सार-तत्त्व को किसी दूसरी चीज की अपेक्षा में रखता है।

वास्तव में हर प्राकृतिक वस्तु के केन्द्र में कुछ व्यक्तिगत और अपरिमित होता है, एक बीज होता है जिसमें निजी उद्वेग और आकांक्षा होती हैं जो प्रदत्त वातावरण में स्वयं को यथाम्भव सर्वोत्तम आकार देती हैं। विभिन्नता स्वतन्त्रता का एक परिणाम है और हमारी और आत्माओं की मामूली, लेकिन क्रांतिकारी विषमता स्वतन्त्रता को आवश्यक बनाती है। पाठक के दिमाग में अमरीका और अन्य राष्ट्रों के बीच तुलना की भावना पैदा करने के बदले मैं उसमें अनुरोध करूँगा कि वह अपनेपन को भूल जाए, और अपने लिए या मेरी खानिदर जितनी दूर तक सम्भव हो सके, मेरे साथ स्वयं को अमरीकी जीवन की बाहरी परिस्थितियों में आदर्श रूप में स्थानान्तरित कर ले, जिसमें वह अधिक अच्छे रूप में उसकी आन्तरिक प्रकृति को अनुभव कर सके और देख सके कि अमरीकी व्यक्ति अपने भावों और निर्णयों को किस अनिवार्य ढंग में ढालता है। और तब वह ईमानदारी के साथ उन सब बातों का ठीक वैसा ही विवरण दे, जैसा उसकी नई, अनवरुद्ध स्थिति से उसे दीप्त पड़े।

अमरीकियों के बारे में मैं 'एक वचन' में बोल रहा हूँ मानो कि उत्तर और दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में, दोनों दिशाओं, सभी युगों और विभिन्न जातियों, जीविकाओं और धर्मों के करोड़ों लोग वहाँ वर्तमान न हों। निश्चय ही, जिस एक अमरीकी के बारे में मैं कह रहा हूँ वह काल्पनिक है। लेकिन ऐसे विषय में प्रतीक के रूप में बोलना अनिवार्य हो जाता है और ऐसा साफगोई के साथ करना शायद अच्छा भी है। सभी मानवीय वार्ताओं में, जब वे प्राकृतिक और उपस्थित चीजों पर विचार करने का उपक्रम करती हैं, एक प्रकार की काव्यात्मक असंगति रहती है। व्यावहारिक लोग शायद इसको न देख पाएँ, लेकिन दरअसल मानवीय वार्ता, गूढ़ रूप में प्राकृतिक वर्तमान चीजों को लेकर नहीं, बल्कि आदर्श सार-तत्त्वों, काव्यात्मक अथवा बौद्धिक परिभाषाओं को लेकर ही की जाती है जिनकी, चाहे तो, विचार व्याख्या करें और उन्हें क्रीड़ा का विषय बनाएँ। जब नियति अथवा आवश्यकता हमारा ध्यान इस उपयुक्त आदर्श क्रीड़ा से

हटाकर मोटे तथ्यों और जरूरी समस्याओं की ओर ले जाती है, तब हम अपने क्षीण काव्यात्मक विचारों को उन भयानक विस्फोटक चीजों के प्रतीकों में रूपान्तरित कर लेते हैं। अपनी निजी मोहरवाले कागजी सिक्को अर्थात् दिमाग के कानूनी सिक्को के माध्यम से ही हम ससार की सब हल-चलो और उसके मूल्यों की गणना करने पर बाध्य होते हैं। जिसका मैजिक कर रहा हूँ वह सामान्य अमरीकी इन्हीं प्रतीकों में से एक है, और यदि मैं पांडित्यपूर्वक पुनर्विभाजित वर्गों अथवा आदर्श रूप में सश्लिष्ट और निर्धारित व्यक्तियों के बारे में कुछ कहूँ, तब भी मुझे प्रतीकों में ही बात करनी होगी और इस प्रकार नैतिक इकाइयों की और एक झूठी सादगी की सृष्टि ही मैं कर रहा हूँगा। जैसाकि होता है, इस प्रतीक अमरीकी को तथ्यों के साथ अधिकतम सगत बनाया जा सकता है, क्योंकि यद्यपि अमरीकी व्यक्तियों में भारी विषमताएँ हैं (कुछ अमरीकी काले हैं), फिर भी उनके वातावरण, प्रथाओं, उनके स्वभाव और विचारों में भारी एकरूपता है। वे सभी अपनी किसी न किसी धरती और वंश-परम्परा से टूटे हैं और इकट्ठे एक भवर में डाल दिए गए हैं और, अन्यथा एकदम खाली एक जगह में बिना रुके चक्कर काट रहे हैं। अमरीकी होना स्वयं अपने में लगभग एक नैतिक स्थिति, एक शिक्षा और सम्भावना है। इसलिए एक अकेली आदर्श कल्पना-सृष्टि, हर अमरीकी चारित्रिक दृष्टि से जो है, उसके बहुलाश को, अधिकतर अमरीकियों के लगभग सम्पूर्ण सामाजिक दृष्टिकोण को और राजनीतिक निर्णयों को अपने में भर लेती है।

नई दुनिया की खोज ने यूरोप के निवासियों पर एक प्रकार का चुनाव आरोपित किया। नीग्रो लोगों के सिवाय आकर बसे सभी लोग स्वेच्छया निर्वासित थे। जो भाग्यवान् थे, जिनकी जड़ें गहरी थीं और जो सुस्त थे, वे ही लोग घरों में रह गए। दुर्द्धर्ष अन्तः प्रेरणा अथवा असन्तोषों ने उन्हें अपनी सीमाओं के पार आकर्षित किया। इस प्रकार अमरीकी सबसे अधिक साहसी है अथवा सबसे अधिक साहसी यूरोपियनों का वंशज है। उसके खून में है कि वह, यद्यपि शायद बौद्धिक दृष्टि से नहीं, पर सामाजिक

दृष्टि से एक क्रांतिकारी हो। जो कुछ अतीत में हुआ है, विशेषकर सुदूर अतीत में, वह उसे न सिर्फ अप्रामाणिक बल्कि अप्रासंगिक और जीर्ण-शीर्ण लगता है। अतीत के बारे में ज़रा-सा भी सोचना उसे समय का दुखद दुरुपयोग प्रतीत होता है। लेकिन भविष्य के प्रति उसका उत्साह गहन है। किसी मन्तव्य अथवा प्रयोग की सिफारिश करने के लिए इससे अधिक निर्णायक तरीका वह सोच भी नहीं सकता कि वह कहे कि यह वह चीज़ है जसे हर व्यक्तित्व कल ग्रहण करनेवाला है। जिसे वह मान्यता दे रहा है, उसके लिए ऐसी प्रत्याशा अथवा जिसकी वह आशा करता है उसकी मान्यता, ये ही उसके आशावाद का सृजन करती हैं। अग्रसरता के लिए यह एक आवश्यक आस्था है।

वास्तव में ऐसा स्वभाव सिर्फ एक उत्तराधिकार के द्वारा किसी राष्ट्र में कायम नहीं रखा जा सकता। उत्तराधिकार इस बात के लिए बदनाम है कि वह एक जाति के औसत को जीवित रखने का प्रयत्न करता है और पुरखों की अनुरूपता के लिए यथावसर कितनी ही चालें खेलता है। जो चीज़ इस स्वभाव को सुरक्षित रखती है और इसे राष्ट्रीय रूप दे देती है, वह है सामाजिक सक्रामकता अथवा दबाव। यह एक चीज़ है जो लोकतन्त्रों में अत्यधिक शक्तिशाली होती है। भाग्यहीन अमरीकी, जो परम्परावादी के रूप में पैदा हुआ है अथवा जो काव्यात्मक सूक्ष्मता, पवित्र पलायन अथवा आनन्दपूर्ण उत्तेजनाओं की ओर आकर्षित हो गया है, उसके कानों में भी कार्य को निश्चित कुशलता, विकास, उद्यम, सुधार और सम्पन्नता का शोर ठूस-ठूसकर भर दिया जाता है। हर द्वार इस दिशा में खुला है और दूसरी में बन्द है। इसलिए या तो वह अपनी भावनाओं को समेटता है और एक कोने में छुप जाता है (ऐसे एक अकेले अपरूप आदर्शवादी को सुदूर जगहों में कभी-कभी देखा जा सकता है) अथवा वह आक्सफोर्ड^१ या फ्लोरेन्स^२ या मांटमाट्रै^३

१. इंग्लैंड का शिक्षा-केन्द्र।

२. इटली का नगर।

३. फ्रांस का एक स्थान।

की ओर, अपनी आत्मा की रक्षा के लिए अथवा सम्भवतः उसकी रक्षा न करने के लिए, भाग लेता है।

अग्रसर व्यक्ति का आशावाद सिर्फ अपने और अपने भविष्य की कल्पना तक ही सीमित नहीं रहता। यहाँ से तो वह आरम्भ करता है और अपने अन्दर आश्वस्त सुरक्षित और प्रफुल्ल महसूस करके वह अपने चारों ओर की हर चीज़ और हर व्यक्ति पर अत्यन्त कृपापूर्ण, सस्मित दृष्टि डालता है। व्यक्तिवाद, रूपेण और आत्मविश्वास के बारे में यह माना जाता है कि ये गुण स्वार्थी और भावशून्य होते हैं। लेकिन मेरी आशंका है कि यह एक पूर्वाग्रह है। मैं समझता हूँ, निर्भरता, असुरक्षा और आपसी ठेल-पेल ही है जो हमारे शान्त और समूहप्रिय भ्रातृत्व को विषैला बना देते हैं। तथा लोगों के स्नेह से, कल्पनापूर्ण, भावपूर्ण माग जब निराश हो जाती है—और निराश उसे जल्द ही हो भी जाना चाहिए—तब वह बदमज़गी और अन्ततः एक कमीनेपन को जन्म देती है। यदि मानवीय उदारतारूपी दूध का बर्तन स्थिर, ठंडा और अलग है और उसकी डाट को अधिक बार खोला नहीं जाता तो दूध के खट्टा हो जाने की सम्भावना कम रहती है। अमरीकी अपने स्नेह-सम्बन्धों में आवेशयुक्त, बहुत कम गम्भीर और सदा ही उदार होता है। यदि किसी व्यक्ति के हृदय की गहराइयों में भाँकने का अवसर मुझे दिया जाए और तली में सद्भाव मुझे न मिले, तो बिना किसी हिचक के मैं कह सकता हूँ कि तुम अमरीकी नहीं हो। लेकिन, क्योंकि अमरीकी व्यक्तिवादी होता है इसलिए उसका सद्भाव बेतकल्लुफ नहीं होता। उसकी अन्तर्वृत्ति हर एक का भला सोचने की होती है, हर एक का भला चाहने की होती है; लेकिन ऐसा एक अनगढ़ साथीपन के उत्साह में वह करता है और हर व्यक्ति से आशा करता है कि वह अपने सहारे खड़ा हो और बारी आने पर सहायक भी सिद्ध हो। जब अपने पड़ोसी को एक अवसर वह देता है तो सोचता है कि उसने उसके लिए काफी कर दिया है। लेकिन वह अनुभव करता है कि ऐसा करना उसका चरम कर्तव्य था। एक दुलारप्रिय समाजवाद को अमरीका में भरने के लिए काफी ठोका-पीटी की जरूरत होगी।

जिस प्रकार आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता में बढ़ाव सकता है, उसी प्रकार आशावाद, कृपालुता और सद्भावना हर चीज पर नट्टू होने की आदत का रूप ले लेती है। एक अच्छे अमरीकी के लिए बहुत-से विषय पवित्र हैं, सेक्स पवित्र है, स्त्रियाँ पवित्र हैं, बच्चे पवित्र हैं, कारोबार पवित्र है, अमरीका पवित्र है, विशाल आवास-गृह और कालिज के क्लब पवित्र है। यह भावना उस सद्बिचार में से पनपती है जिसे इन चीजों के बारे में वह रखना चाहता है और यह भावना उसे बनाए रखने में योग देती है। यदि वह इन सब चीजों को पवित्र न माने तो कभी कभी सन्देह कर सकता है कि ये पूर्णरूपेण अच्छी हैं भी या नहीं। ठीक इसी प्रकार का आदर्शवाद तब परिस्थितियों में पड़ी उन अकेली महिलाओं का भी होता है जो भद्दी चीजों में भी सौन्दर्य की आत्मा को देख सकती हैं और पूरी तरह खुश दीखती हैं कि उनके पुराने कुत्ते की आँखें इतनी करुण हैं उनका पादरी ऐसा अच्छा वक्ता है, तीन सूरजमुखी के फूलोंवाला उनका बगीचा इतना सुहाना है, उनके दिवंगत मित्र कितने अनुरक्त थे और उनके दूर के सम्बन्धी इतने धनी हैं।

अब अमरीका की विशाल रिक्तता पर विचार कीजिए। न सिर्फ आदिम भौतिक रिक्तता जो कुछ प्रदेशों में अब भी अवशिष्ट है; न सिर्फ प्रमुख प्राकृतिक विशिष्टताओं के बीच महाद्वीपीय दूरी; बल्कि किसी भी बस्ती की नैतिक रिक्तता। वहाँ लोग ही नहीं, घर भी सरलतापूर्वक संचल हैं; और कोई भी वही ही नहीं रहता जहाँ वह पैदा हुआ था, और उसीमें विश्वास नहीं रखता जो उसे सिखाया गया था। यह नहीं कि इन अवरोधों को अमरीकी ने क्रोध में आकर बाहर फेंक दिया है। हुआ यह है कि जैसे-जैसे वह बढ़ा है, ये उसके हाथ से खिसक गए हैं। विशाल खाली प्रदेश, आत्मा और शरीर दोनों को एक प्रकार की स्वच्छन्दता प्रदान करते हैं। आप जहाँ भी चाहें अपना तम्बू तान लें अथवा जब कभी भी कुछ बनाने का फैसला आप करें वह आपकी निजी योजना के अनुसार ही होगा। आपके पास कमरा है, ताजी सामग्री है, कुछ माडल हैं; और आलोचक बिलकुल

नहीं है। आप अपने निजी अनुभव पर विश्वास कर सकते हैं, न सिर्फ इसलिए कि आपको करना ही चाहिए, बल्कि इसलिए कि ऐसा आप सुरक्षा-पूर्वक और सम्पन्नतापूर्वक कर सकते हैं। जो शक्तियाँ भाग्य का निर्माण करती हैं वे अभी इतनी उलझी नहीं हैं कि व्यक्ति को उनकी खोज करनी पड़े। आपकी विच्छिन्न हो सकनेवाली स्थिति आपको धन के बारे में खर्चीला और सानन्द प्रयोगप्रिय बना देती है। यदि सब कुछ भी खो जाए तब भी वह बहुत थोड़ा ही होता है, क्योंकि आपका अपनापन पूरी तरह सुरक्षित बना रहता है। साथ ही पहल करनेवाली आपकी चरम शक्ति आपको विचित्र स्थितियों का मुकाबला करने और मौलिक बनने का अनुभव कराती है। वह आपको अत्यन्त कुशल व्यवस्था करनी सिखाती है। इस प्रकार आपका जीवन और मस्तिष्क रूखा और सीधा बन जाएगा और उसमें सजावटी बातें बहुत कम रह जाएंगी। आपके कामों में हर चीज दृढ़ और हठीली होगी और आप समझ नहीं पाएंगे कि किसी अन्तर्प्रेरणा अथवा प्रथा की वेदी पर थोड़ा भी बलिदान शिष्टता के नाम पर क्यों किया जाए। ललित कलाएँ आपको अकादमीय विलास प्रतीत होगी जो ग्रीक और संस्कृत की तरह बस स्त्रियों का ही मनोरंजन करने में सक्षम होगी। यद्यपि मानव-प्रयोजनों में आप उदारता की भूरि-भूरि प्रशंसा करेंगे, पर यह स्वीकार नहीं करेंगे कि इन प्रयोजनों के कार्यान्वयन को उद्योग-धन्धे के पिवाय कुछ और भी कहा जा सकता है। दुर्भाग्य से ललित कलाओं का सार यह है कि यह कार्यान्वयन उदार भी होना चाहिए और अपने में आनन्दपूर्ण भी। इस प्रकार ललित कलाएँ अपने स्पष्ट कारोबारी उद्देश्यों में उतनी हानि नहीं उठाती (क्योंकि तब तो ये व्यावहारिक कार्य और एक प्रकार का व्यापार बन जाएंगी) जितनी उस प्रकीर्ण सौन्दर्य के क्षेत्र में, जो स्वभाव से ही कलाकारों के सभी मानवीय कर्मों की विशिष्टता बन जाता है। तब उपलब्धि-योग्य मशिलष्ट विस्तार से अधिक उस सादगी को पसन्द किया जाएगा जो ऐसी चीज है जिसमें विश्राम लिया जा सकता है। आचरणों को कुछ हानि पहुँचेगी। वाणी में भयकर विकार आ जाएगा।

जहाँ तक अमरीकी का सम्बन्ध है, पदार्थ पर नूतन अभिमान का आग्रह और फलो को इकट्ठा करने का उत्साह उसे रगीन विलास-भागों में चक्कर खाने से रोके रखता है। उपायो को सक्षिप्त होना चाहिए और प्रतीकों को सिर्फ प्रतीक। यदि उसकी पत्नी विलास-सामग्रिया चाहती है तो निश्चय ही यह सब उसे मिले और यदि स्वयं उसमें भी कुछ विकृतियाँ हैं तो उनको भी भोजन दिया जा सकता है। लेकिन इन सबको इन्हीं शीर्षकों के नीचे उसकी बहियों में दर्ज किया ही जाना चाहिए।

साथ ही अमरीकी कल्पनाशील भी है। क्योंकि जहाँ जीवन प्रखर होता है, वहाँ कल्पना भी तीव्र होती है। यदि वह कल्पनाशील न होता तो भविष्य में इतना अधिक न जीता। लेकिन उसकी कल्पना व्यावहारिक है और भविष्य, जिसको वह वाणी देती है, तात्कालिक है। उसके अनुभव को ज्ञात, स्पष्टतम, एवं सख्या, माप, युक्ति, अर्थव्यवस्था और गति की दृष्टि से कम से कम भ्रामक रूपों में वह काम करती है। वह एक आदर्शवादी है जो पदार्थ पर काम कर रहा है। वह चीजों की भौतिक क्षमताओं को समझता है और इस प्रकार वह आविष्कारों में सफल, सुधारों में परम्परावादी और सकट-काल में तत्पर है। जीवन-भर, रेल के चल देने पर ही कूदकर वह चढ़ता रहा है और उसके रुक जाने से पहले ही बाहर कूद जाता है। कभी एक बार भी वह पीछे नहीं छूटता अथवा टांग नहीं तुड़ा बैठता। भौतिक शक्तियों से उसके सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार में एक उत्साह है जो बहुत दूर तक उसके चरित्र की उस अनुदारता का निषेध करता है जो अन्यथा उसमें उत्पन्न हो सकती है। अच्छा कारीगर अपने कलात्मक मन्तव्य को, स्वयं में और वस्तुओं में वर्तमान उस क्षमता से कठिनाई से ही अलग करता है जो उस मन्तव्य को पूरा करने की ओर उन्मुख है। फलतः उसके आदर्श चेतवनी और भविष्यवाणियों के रूप में ढल जाते हैं और उसकी अध्ययन-प्रसूत भविष्यवाणियाँ अक्सर सच सिद्ध होती हैं। इसी प्रकार अमरीकी के प्रसन्न कारीगरों जैसे आदर्श भी सही सिद्ध होते हैं। एक गरीब लड़का पहले शायद शिक्षा का सपना लेता है और

शिक्षा अथवा कम से कम एक प्रमाणपत्र वह प्राप्त कर लेता है। तब वह धनी बनने का सपना लेता है और वह धनी बन जाता है। सिर्फ उसकी आशका से भी अधिक धीमे और मन्द रूप में ऐसा हो पाता है। अब वह अपनी रेबेका से विवाह करने का सपना लेता है और यदि वह उसके बदले लियाह से भी शादी कर लेता है तब भी अन्ततः लियाह में ही वह अपनी रेबेका को देखने लगता है। वह एक विशाल, उफनते, प्रगतिवादी समाज की गति को तेज करने और उसे आगे बढ़ाने में सहायता देने का सपना लेता है। और वैसा वह वास्तव में करता भी है। प्रकृति से इतने कसकर चिपके आदर्शों की पूर्ति लगभग निश्चित होती है। अमरीकी एक विशिष्ट आत्मविश्वास और कुशलता की अनुभूति से दीप्त दीखता है और अनुभव करता है कि ईश्वर और प्रकृति उसके साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

फलतः, अमरीकी का आदर्शवाद उसकी वर्तमान सतुष्टि तथा भविष्य-सम्बन्धी वास्तविक सभावनाओं के साथ हाथ में हाथ मिलाकर चलता है। वह एक क्रान्तिकारी नहीं है। उसका विश्वास है कि वह पहले से ही एक ठीक मार्ग पर चल रहा है और उत्कृष्ट नियति की ओर बढ़ रहा है। इसके विपरीत क्रान्तिकारियों का आदर्शवाद असन्तोष पर आधारित होता है और उसे व्यक्त भी करता है। जो कुछ वर्तमान है वह उन्हें अविचारपूर्ण आकस्मिकताओं और बुरी आदतों का एक भद्दा घुटमेल प्रतीत होता है। वे भविष्य को विवेक पर आधारित करना चाहते हैं और उसे अपने सभी नीति-वचनों का पारदर्शी प्रारूप बना देना चाहते हैं। उनका सारा उत्साह वास्तविक से और (यदि वे सिर्फ जानते तो) सम्भव से कुछ क्रान्तिकारी रूप में अलग होता है। यह आदर्शरूप में सरल होता है। वे इससे प्रेम करते हैं और इसमें विश्वास रखते हैं, क्योंकि उनकी प्रकृति इसके लिए तरसती है। वे सोचते हैं कि जीवन के सभी अंगों को नष्ट करके उसे मुक्त किया जा सकेगा। इस प्रकार आशा के क्षेत्र में वे आत्यन्तिक आदर्शवादी हैं। लेकिन, जैसेकि कवि और कलाकार होते हैं, अनुभूति और स्मृति के क्षेत्र में वे ऐसे बिलकुल भी नहीं हैं। सम्य जीवन के वातावरण में वे किरणों

की वक्रता और हर प्रकार की मुगन्धि को नजरन्दाज कर जाते हैं। इस प्रकार वास्तविक चीजों की अपनी पकड़ में वे अनगढ़ वस्तुवादी बन जाते हैं और नैतिक जगत् का उनका अज्ञान और अनुभव, जब तक दुर्भाग्य-वश ही वह उन्हें न मिला हो, शिक्षा क्षेत्र में उनकी अमामर्थ्य की ओर संकेत करता है। अब, शिक्षा में उनकी अमामर्थ्य, जब विशद आंतरिक शक्ति के साथ मिल जाती है, तो आदर्शवाद की एक जड़ बन जाती है। यह है जिसे अनुभूति के क्षेत्र में, जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं उसके स्थान पर, वस्तुएं जो वस्तुतः हो सकती हैं उसकी, निरन्तर स्थापना का दंड हमें दिया है। यह है जिसने, जहां तक इसका विस्तार है वहां तक प्रागनुभव रूप में सोचने का दुर्भाग्य हमें प्रदान किया है। यही है जो, जिसे हम अच्छा कहते हैं उसकी वीरतापूर्ण, असंस्करणीय माधना के पीछे हमें लगाए रखती है, अर्थात् अपनी प्रकृति की मांगों को पूरा करने में हम लगे रहते हैं, भले ही भाग्य ने उसके लिए कितने भी कम साधन क्यों न जुटाए हों। लेकिन क्रान्तिकारियों में अतीत और वर्तमान को प्रभावित करनेवाली दूर-दृष्टि की कमी एक महत्त्वपूर्ण विशिष्टता के साथ उनके भविष्य-सम्बन्धी आदर्शवाद को दूषित कर देती है। यह भविष्य के उनके सपनों को असाध्य बना देती है, क्योंकि मानवप्राणियों में (यह बात अन्य पशुओं के बारे में शायद सत्य न हो, क्योंकि उनका पूर्वगठन अधिक पूर्णता से हो चुकता है) प्रसंगानुकूल ठोस विचारणा के लिए अनुभव बहुत जरूरी है। हमारी आदिम अन्तर्वृत्तियां भी तब तक अन्धी बनी रहती हैं, जब तक वे उस अवसर से टकरा नहीं जातीं जिसे उनकी अपेक्षा और प्रथम आशिक तृप्तियों के बाद उन्हें काफी परिवर्तित अथवा अस्त-व्यस्त किया जा सकता है। इसलिए जो व्यक्ति निजी अनुभव को आदर्श नहीं मानता, बल्कि प्रागनुभव को प्रमुखता देता है, वह सच्ची भविष्यवाणी करने में अक्षम रहता है। जब वह स्वप्न देखता है तो प्रलाप करता है। वह आलोचना अधिक करता है, सहायता कम। इसके विपरीत अमरीकी आदर्शवाद, यदि सहायक नहीं है, तो कुछ नहीं है। यदि व्यावहारिक

रूपान्तरण के प्रति उन्मुख नहीं है तो कुछ भी नहीं है। जब अमरीकी उद्विग्न होता है तो इसलिए कि जो कुछ भी निरर्थक और अप्रासंगिक है, भले ही वह आदर्शवाद हो या जडवाद, वह उसे क्षुब्ध बनाता है; क्योंकि वह उन सुपरिणामों को विफल कर देता है जो, वह जानता है, अधिक सरलता से प्राप्त किए जा सकते थे।

अमरीकी आश्चर्यजनक रूप में सजीव है। अक्सर जब उसकी प्राण-वत्ता एक उपयुक्त मार्ग नहीं पाती तो वह सतह पर विक्षुब्ध नजर आने लगता है। सदा ही वह एक आकस्मिक भाप बड़ी जोरदार आवाज के साथ छोड़ता नजर आता है। फिर भी उसकी शक्ति बनावटी नहीं होती, अन्दर से प्रेरित होती है और एक चुम्बक की सूई की तरह सवेदनशील और तत्पर होती है। वह जिज्ञासु है और निजी प्रेरणावश स्वयं से जो भी प्रश्न वह करे, उनके उत्तर देने के लिए वह तैयार है। लेकिन यदि आप, जो विषय उसके निजी सहज जीवन को प्रभावित नहीं करते, उनको लेकर कुछ उप-देश उसमें उडेलने का प्रयत्न करे, तो विरोध और विस्मरण की अत्यन्त असाधारण शक्तियाँ भी वह प्रकट कर सकता है। इस प्रकार कुछ दिशाओं में अद्भुत रूप में कुशल और अन्यो में आश्चर्यजनक रूप में मन्द वह अक्सर ही दीख पड़ता है। मानवीय ज्ञान के दुःखपूर्ण बोझ को वह अगम्भीर रूप में ग्रहण करता प्रतीत होता है। एक शब्द में यह है कि वह अभी जवान है।

यह अनुभूति कि अमरीकी जवान है, हम सभीकी है। क्या अर्थ है इसका ? उसके देश को भी उतने ही बुजुर्ग मिले हैं, जितने किसी भी अन्य को। आदम से अथवा डार्विन के किसी आदम-प्रतियोगी से उसका वशानु-क्रम, उसके यूरोपीय भाइयों की अपेक्षा छोटा नहीं हो सकता। उसके विचार सदा बहुत ताजे भी नहीं पाए जाते। विसी-पिटी रूढ़ नैतिकता और धर्म के अश अत्यन्त भद्र और प्राचीन राजनीतिक जनश्रुतियों में घुल-मिलकर, सूक्तिमय बनकर उसमें ऐसे रहते हैं जैसे एक बच्चे के दिमाग में रहा करते हैं। इन सबको वह एक निस्सन्दिग्ध परिचितता के साथ इस तरह लिए घूम सकता है कि इनसे उसका विवेक प्रभावित नहीं होता। परम्परागत भाव-

नाओ को इस प्रकार पृथक् और अनालोचित रखना स्वयं अपने में जवानी का एक चिह्न है। एक अच्छा युवक उन विषयों के प्रति स्वभाव से ही सावधान और समर्पित रहता है जिन्हें उसके अनुभव ने अभी परखा नहीं है। राजनीति, विवाह अथवा साहित्य से सम्बन्धित पूर्व-मन्तव्य अमरीका में अपेक्षया बहुत कम है। यह सब स्त्रियों के लिए छोड़ दिया जाता है कि वे इनपर विवाद करें और आम तौर से निन्दा करें। पुरुष अपने काम में व्यस्त रहते हैं। जो भी पुरातन उसके अधिक सामान्य विचारों में पाया जाता है उसके बावजूद अमरीकी निरपवाद रूप में जवान है। ऐसा मैं दो कारणों से कहता हूँ। एक यह कि वह प्रमुखतः अपने तत्कालीन वातावरण में व्यस्त रहता है और दूसरे यह कि उसके प्रति उसकी प्रतिक्रियाएं अन्तर्-प्रेरित, सहज तथा जीवन्तता और आत्मविश्वास से पूर्ण होती हैं। उसके विचार अभी लम्बे नहीं खिंचे हैं। उसका सकल्प अभी टूटा या बदला नहीं है। वर्तमान क्षण, अन्य बातों की तरह शायद इसमें भी, एक बड़ा परिवर्तन उसमें लक्षित करें। वह शायद अब वयस्कता तक पहुँच रहा है और जो मैं कह रहा हूँ वह आज उसपर कठिनाई से ही लागू होगा। और, हो सकता है, कल बिलकुल ही लागू न हो। जैसा मैंने उसे जाना है वैसा ही मैं कह रहा हूँ। आगे कितनी भी नैतिक शक्ति उसमें क्यों न संचित हो जाए, उसे उसकी जवानी में जान लेने का खेद मुझे नहीं है। जवानी भले ही थोड़ी उद्दाम हो, उसका आकर्षण प्राकृतिक उत्प्रेरणाओं के निकट रहने में है; उस पवित्र, प्रजनन सिद्धान्त की एक अधिक तत्पर और अधिक स्पष्ट आज्ञाकारिता में है जो शरीर उसके अंगों को आकार देने के बाद, यदि पाप अथवा आवश्यकता के दबाव में उन्हें विकृत अथवा रुद्ध वह न बना दें, तो सदा ही उनकी हलचलों का निर्देशन करता है। आयु की अर्निवार्य पत के नीचे भी आत्मा हमेशा जवान रहती है और जहाँ भी वह उस पत को तोड़ देने में समर्थ हो जाती है वही एक कोमल हरियाली के रूप में फूट उठती है। हम सभी वैसा ही एक युवक-हृदय रखते हैं जैसा अधिकांश यौवनपूर्ण अमरीकी रखते हैं। लेकिन उनके सन्दर्भ में बीज एक कुआरी घरती में पड़ा है, जहाँ वह अधिक

साहसपूर्वक और जगल के दैत्यों के प्रति कम सम्मान प्रदर्शित करते हुए पनप सकता है। जब लोगो का सजीव प्राकृतिक यौवन स्वत्वों और उत्तराधिकारो से लद जाता है तो वे बूढ़े दीख पड़ने लगते हैं और उन बहुत-सी चीजो के प्रति वे सचेत हो उठते हैं जिन्हे उन्होंने खो दिया है या जो उनके हाथो से निकल गई है। अमरीकी उनके प्रति सचेत नहीं है।

अमरीका मे अस्तित्व के बारे में एक अनकही आशावादी धारणा है कि अस्तित्व जितना अधिक हो उतना ही अच्छा है। एक निरात्म आलोचक कह सकता है कि मात्रा सिर्फ एक भौतिक वर्ग है जिससे किसी श्रेष्ठता का बोध नहीं होता। बस, अधिक से अधिक शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के अवसरो की प्रचुरता ही प्रकट होती है। फिर भी उत्कृष्ट और भूखी होने के कारण युवक आत्मा अस्तित्व को प्रागनुभवपूर्वक शुभ करके ही देखती है। उसके जीने की अन्तर्प्रेरणा यह आस्था सूचित करती है कि जिन अधिकांश चीजो को वह ग्रहण कर सकती है, देख सकती है अथवा जिनका रूप ले सकती है, वे उपयोगी ही है। फलतः मात्रा के लिए आग्रह, विशालता के प्रति बचकाने आनन्द और विस्मय से बड़ी एक चीज है। जल का भारीपन देखकर मछियारे को जो आनन्द मिलता है यह वैसा ही है, क्योंकि उसके लाभो को मछियारा गृहीत मान सकता है। ऐसा आशावाद रोचक है। प्रकृति यह सहन नहीं कर सकती कि हम बहुत अधिक हिसाबीपन अथवा अक्लमन्दी से आरम्भ करे। वह परिणामो से पहले ही, हमारे कार्यों को एक आनन्द से युक्त करके हमें प्रोत्साहित करती है और अक्सर इस आनन्द की मात्रा परिणामों से अधिक होती है। मच्छीमार मछली खाने से अधिक उसको पकड़ने में रस लेता है और अक्सर काटे में मछली फसने की प्रतीक्षा में वह अपना खाना तक भूल जाता है। अग्रसर व्यक्ति को स्वयं को तैयारियों में लगाना चाहिए। उसे भविष्य के लिए श्रम करना चाहिए। यह स्वयं उसके लिए स्वास्थ्य और कर्तव्यनिष्ठता की बात होगी कि वह अपने काम से काम की खातिर प्यार करे। साथ ही, जब तक उसकी सभी सक्रियताओं में एक अन्तिम प्रयोजन का सन्दर्भ प्रकट न हो जाए तब तक एक

ऐसा सजीव स्वचालित यन्त्र बन जाने का खतरा उसे बना रहता है जो अपने यान्त्रिक जडत्व में व्यर्थ और कलकपूर्ण होता है। कार्य के प्रति आदर्शवाद जीवन के प्रति एक तीव्र भौतिकवाद को ढक सकता है। मनुष्य, यदि वह एक बौद्धिक प्राणी है, तो गिर्फ रोटी के सहारे, अथवा सिर्फ एक श्रमिक बनकर ही नहीं जी सकता। एक ऐसी आदर्श समस्या को दृष्टि में रखकर ही उसे खाना और श्रम करना चाहिए, जो उसके पूरे जीवन को आच्छादित कर ले; जो तभी प्राप्ति की जा सकती है जब वे इकट्ठे चले अथवा एक आदर्श समस्या समान रूप में उनके सामने हो। नहीं तो, भले ही उसका तकनीकी दर्शन इसे आदर्शवाद कहे, पर नैतिक रूप में तो वह भौतिकवादी ही होगा। वह यान्त्रिक प्रयोगों और शक्तियों के लिए ही चीजों को और स्वयं अपने को मान्यता देता है। इन्द्रियवादी, कलाकार, और आनन्दवादी तक इससे अधिक विवेकी हैं, क्योंकि उनका आदर्शवाद भले ही उच्छृंखल और भ्रष्ट हो, वे एक आदर्श को प्राप्त कर लेते हैं और सिर्फ जीवन-सौन्दर्य की दृष्टि से ही चीजों को महत्त्व देते हैं; भले ही ये सन्दर्भ नैतिक, यद्यपि पलायनवादी होते हैं। मनो-वेग, जब सक्रियता के संकेत के रूप में हम इसे नहीं लेते बल्कि जो कुछ यह निश्चिततः हमारे सामने लाता है उसे बाध लेते हैं और उसका अध्ययन करते हैं, तब एक आदर्श, एक वर्ण, आकार अथवा ध्वनि को वह उद्घाटित करता है। और इन उपस्थितियों पर इनकी भौतिक विशिष्टता का विचार न करते हुए निर्भर करना एक सौन्दर्यमय अथवा स्वप्नपूर्ण आदर्शवाद है। इस आदर्शवाद से पदार्थ के ज्ञान की ओर बढ़ना एक भारी बौद्धिक प्रगति है। यह विश्व पर अपना प्रभुत्व जमा लेती है, क्योंकि व्यावहारिक कलाओं में, अधिक गहराई और शक्ति स्वयं में लेकर दिमाग एक विशाल-तर उद्देश्य के साथ जुड़ जाता है। इसीसे लोग अनुभव करते हैं और कहते हैं कि पदार्थ-जगत् वास्तविक है और आदर्श का जगत् नहीं है। पदार्थ-जगत् निश्चय ही वास्तविक है, क्योंकि जो दार्शनिक पदार्थ के अस्तित्व का निषेध करते हैं, वे उन आलोचकों की तरह हैं जो होमर के अस्तित्व से इन्कार

करते हैं। यदि कोई होमर कभी नहीं हुआ तो कितने ही अन्य कवि तो हुए हैं जो उससे कम होमरवत् नहीं थे। यदि पदार्थ अस्तित्व नहीं रखता तो अन्य चीजों का एक सघटन तो है, जो ठीक उतना ही पदार्थवादी है। लेकिन यदि पदार्थ-जगत् की तीव्र वास्तविकता कुछ आध्यात्मिक फलों को सामने नहीं लाती, तो भी वह हमारी दृष्टि में एक भयानक व्यर्थता अथवा एक आतकपूर्ण गह्वर पैदा होने से नहीं रोक सकती। वास्तव में यह आध्यात्मिक परिणाम प्रस्तुत करती है, नहीं तो हम यहाँ इसमें दोष निकालते और अपने आदर्शों को इसके विरुद्ध खड़ा करते न मिलते। प्रकृति पदार्थपूर्ण है, पर पदार्थवादी नहीं है। यह जीवन में फलित होती है और सब प्रकार के उष्ण सवेगों और जड़ सौन्दर्यों को जन्म देती है। और जिस प्रकार प्रकृति की यान्त्रिक यातना और उथल-पुथल से सहानुभूति, उसके आध्यात्मिक परिणामों से पृथक् एक नैतिक भौतिकवाद है उसी प्रकार इन परिणामों की निरन्तर अनुभूति और अनुरक्ति नैतिक आदर्शवाद है—अभौतिक वस्तुओं और समस्वरताओं की उपस्थिति में एक खुशी है जैसी कि स्नेह, कल्पना, धर्म और सौन्दर्य के सभी रूपों में हम अनुभव करते हैं।

अमरीकी के जीवन की परिस्थितियों ने उसे इधर नैतिक भौतिकवाद के क्षेत्र में खींच लिया है, क्योंकि भौतिक पदार्थों के साथ अपने सम्बन्धों में वह कठिनाई से ही उन ऐन्द्रिक पक्षों का आनन्द लेने के लिए रुक पाता है जो आदर्श हैं, न ही वह उनके अन्तिम उपयोगों की ओर बढ़ सकता है जो उतने ही आदर्श हैं। कवि के विपरीत वह व्यावहारिक है और प्रकट दार्शनिक अथवा सत के विपरीत वह सांसारिक है। उसके इस भौतिकवाद की सबसे उल्लेखनीय अभिव्यक्ति आमतौर से सर्वशक्तिमान डालर के प्रति उसके प्रेम में मानी जाती है। लेकिन यह एक विदेशी और अविवेकपूर्ण दृष्टिकोण है। अमरीकी धन की बातें करता है क्योंकि धन सफलता, बुद्धि और शक्ति का प्रतीक और मापदण्ड है जो उसे प्राप्त है। लेकिन जहाँ तक स्वयं धन का सम्बन्ध है, वह इसे कमाता है, खो देता है, खर्च कर देता है और बड़े हलके भाव से दे डालता है। मेरे विचार में उसके भौतिकवाद

की प्रखरतम अभिव्यक्ति है मात्रा के साथ उसका अनोखा लगाव । उदाहरण के लिए यदि आप नियागरा प्रपात देखने जाएं तो यह सुनने की आशा आप कर सकते हैं कि कितने घनफुट अथवा मैट्रिक टन पानी प्रति-पल इस महाप्रपात द्वारा नीचे गिरता है; कितने नगर और कस्बे (उनके निवासियों की सख्या के साथ) इससे प्रकाश और पावर की बिजली प्राप्त करते हैं, और उन अन्य उद्योगों का वार्षिक मूल्य जिन्हें इन्हीं साधनों से, बिना संसार के सबसे बड़े आश्चर्य को प्रकटत रिक्त किए अथवा बिना विदेशी यात्रियों के आगमन में रुकावट पैदा किए भली प्रकार चलाया जा सकता है । जब मैं निकटवर्ती कस्बे बफेलो में पहुंचा तो यही कुछ सुनने की आशा मैंने की थी । लेकिन मुझे धोखा हुआ । इसके बदले जो चीज सबसे पहले मैंने सुनी, वह थी कि बफेलो में संसार के किसी भी नगर से अधिक मीलों लम्बी तारकोल की पटरिया हैं । मात्रा पर यह जोर सिर्फ कारोबारी लोगो में ही नहीं है । एक बार एक सत्र के आरम्भ के फौरन बाद ही हारवर्ड कालिज के प्रधान मुझे संयोगवश मिल गए । उन्होंने पूछा, मेरी कक्षाएं कैसी चल रही हैं । जब मैंने उत्तर दिया कि मैं समझता हूँ वे ठीक चल रही हैं और मेरे विद्यार्थी उत्सुक और बुद्धिमान प्रतीत होते हैं, तो उन्होंने मुझे ऐसे टोका जैसे मैं उनका समय खराब करने जा रहा हूँ । उन्होंने कहा, “मेरा मतलब था कि तुम्हारी कक्षाओं में विद्यार्थियों की सख्या कितनी है ?”

मैं समझता हूँ, हम देख सकते हैं कि इस मात्रा-प्रेम का अक्सर एक खामोश सांभोदार होता है । वह है गुण के प्रति सशय । लोकतन्त्रीय विवेक किसी भी उस चीज से भागता है जिसमें से विशेषाधिकार की गन्ध आती है और इस डर से कि कहीं किसी उद्देश्य अथवा व्यक्ति के लिए किसी निकृष्ट विशेषाधिकार को मान्यता वह न दे दे, वह जहां तक सम्भव हो सकता है सभी चीजों को मात्रा के समान ‘हर’ तक ले आता है । संख्या झूठ नहीं बोल सकती, लेकिन यदि दर्शन के आदर्श सौन्दर्य की, ऐंगलो-सैक्सन सौन्दर्य से तुलना करने की बात आ जाए तो कौन निर्णय करे ? सभी

अध्ययन अच्छे है। फिर विश्वविद्यालय किसलिए है? लेकिन उन्हीको सबसे अधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए जो अधिकतम विद्यार्थियों को आकर्षित करते हैं। प्रधान का प्रश्न इसीका सूचक है। लोकतन्त्रीय आस्था गुण के प्रति अपने सशय से प्रेरित होकर शिक्षा की डोरियों को विद्यार्थी के ऊपर फेक देती है—वैसे ही जैसे डान क्विग्नोट^१ ने राचिनान्ते के ऊपर रास फेक दी थी—और उसकी दिव्य अन्तर्वृत्ति को आदेश देती है कि वह अपना मार्ग स्वयं चुन ले।

अमरीकी को अभी कर्म की परीक्षाओं का मुकाबला करना नहीं पड़ा है। गृहयुद्ध जैसे महान सकटों पर विजय पा लेना उसने सीख लिया है, और अब क्योंकि एक दूसरे महान सकट पर भी उसने विजय पा ली है, इसलिए यह सम्भव है कि वह, जैसाकि दूसरे मामले में उसने किया था, भौतिक उद्योग और सम्पन्नता मे प्रकटत पूरी तरह डूब जाए। लेकिन यदि कोई गम्भीर और असाध्य संकट उसपर आ टूटा तब उसका रुख क्या होगा? तभी हम यह खोज सकेंगे कि उसके चरित्र की जड़ मे भौतिकवाद है या आदर्शवाद। इस बीच उसका कार्य-व्यस्त मस्तिष्क अवकाश के बिना नहीं रहता। वह व्यंग्य की काफी मोटी तह जमाता है, यहा तक कि बात-चीत की सतह पर भी। व्यंग्य नैतिक उन्मुक्ति का ही एक रूप है। वह प्राकृतिक दृश्यों से प्रेम करता है, वह मानव-मात्र से प्रेम करता है; और ज्ञान से प्रेम करता है। और कम से कम सगीत मे एक ऐसी कला उसे मिली है जिसमे वह अकृत्रिम आनन्द लेता है। सगीत और प्राकृतिक दृश्य, व्यंग्य और उदारता मे आदर्श को शायद जटिल अकादमीय आदर्शों और व्यस्त धर्मों की अपेक्षा वह अधिक सच्चे रूप में स्पर्श करता है; क्योंकि यह आश्चर्यजनक ही है कि अमरीका में धर्म तक (क्या इंग्लैंड मे ऐसा होना सम्भव है?) सभाओ, भवन-निर्माण-राशियों, स्कूलों, दानों, क्लबों और पिकनिको के रूप मे व्यक्त होता है। सादा बनने के लिए गरीब

१ स्पेनी लेखक सरवान्ते की पुस्तक 'डान क्विग्नोट' का प्रधान पात्र।

होना; कम पैदा करना जिसमें उपज अधिक चुनीदा और सुन्दर हो सके और हमपर अनावश्यक कर्तव्यों और व्यर्थ सम्पत्तियों का बोझ कम डाल सके—यह एक ऐसा आदर्श है जो अमरीकी दिमाग में गाठ नहीं बाध पाता। फिर भी लगता है, यहाँ-वहाँ एक आह, व्यापार और कर्कश समाज के निरन्तर दुःस्वप्नों पर एक शिकायत मैं सुनता हूँ। ऐसी आकाक्षाओं की विशिष्ट साक्षी, जनप्रिय धर्म के वे नये रूप देते हैं जो परम्परा के संस्करण-मात्र नहीं हैं, जो मिट्टी से पैदा हुए हैं जैसेकि पुनर्जीवनवाद, अध्यात्मवाद, क्रिश्चियन विज्ञान और नूतन विचारणा। हम इनके अथवा अन्य स्रोतों के माध्यम से किसी अन्तरिक्षीय अथवा आन्तरिक शक्ति को, जो अभी तक मानव के अधीन नहीं बन सकी है (और इसमें कुछ भी अविश्वसनीय नहीं है), खोज सके या नहीं, हम निश्चय ही जीवन की सामान्य पद्धति में से संघर्षण को और अपव्यय को रोकने का प्रयत्न कर सकते हैं। हम अस्वस्थ गुत्तियों को कम कर सकते हैं; दबी हुई अन्तर्वृत्तियों को मुक्त कर सकते हैं; आत्मा की सिलवटों को खोल सकते हैं और सादगी, मधुरता और शान्ति के पथ पर स्वयं को चला सकते हैं। ये धार्मिक आन्दोलन उस शरीरवादी अर्थ-व्यवस्था और स्वास्थ्य की दिशा में प्रयास हैं। यद्यपि ये पूरी तरह प्राकृत हैं, इनमें कोई बड़ी प्रेरणाएं नहीं हैं, लोगों को एक अत्यन्त ग्रामीण और नीरस जागतिक अस्तित्व से उठाने की भावना नहीं है, फिर भी उस सामान्य स्तर पर शारीरिक और नैतिक स्वास्थ्य की सम्भावना को वे देखते हैं और उसका अनुसरण करते हैं। यही सच्ची नैतिकता है। जीवन अथवा मस्तिष्क की विभिन्न प्रकार की गरिमाएं, विभिन्न पशुओं की विशिष्टताओं की तरह ही सापेक्ष हैं। अभद्र व्यक्ति केवल एक श्रेणी को और उसकी कल्पना में इसे पूरी तरह चित्रित करनेवाले प्राणियों को ही समाहित करता है, अथवा वह उनसे ईर्ष्या करता है और घृणा करता है। और यह भी ठीक उतना ही हीन और क्रूर है। इसके विपरीत सन्तफ्रांसिस^१

१. ईसाई धर्म का एक महान सन्त प्रचारक।

अथवा डिकन्स^१ जैसे जीवन के उत्कृष्ट प्रेमी जानते हैं कि मिट्टी के हर ढेले से, उसकी स्थिति अथवा सामर्थ्य कुछ भी क्यों न हो, आत्मा के लिए प्रसन्नता और पूर्णता प्राप्त की जा सकती है। कार्य अथवा प्रगति अथवा क्रान्ति की चीख-पुकारो के माध्यम से नरक की आग की धमकियों जैसे धक्के आगे किसीको भी नहीं दिए जाने चाहिए। यदि व्यक्ति की अपनी आत्मा ही मुक्त नहीं है तो पूरे ससार को मुक्त कराने से उसे क्या लाभ ? नैतिक स्वतन्त्रता एक कृत्रिम अवस्था नहीं है क्योंकि हृदय और इन्द्रिया दोनों की ही सिर्फ एक भाषा है, आदर्श। जो कुछ भी जरूरी है वह यह है कि जीवन का आनन्द लेने के लिए जीवन के बीच हम रुके और अपने हृदयों को उन वस्तुओं तक ऊपर उठाए जो अपने में विशुद्ध पदार्थ हैं, जिससे एक बार उन्हें पा लेना और प्यार कर लेना, चाहे कुछ भी अन्य हम इकट्ठा करते रहे, एक ऐसी खुशी बन जाए जिसे दूषित न किया जा सके। इस प्राकृतिक आदर्शवाद का यह अर्थ नहीं कि हम अपदार्थ हैं। अर्थ सिर्फ यही है कि हम सजीव हैं और सच्चे रूप में जीवन्त हैं। जब इन्द्रियां प्रखर होती हैं जैसीकि अमरीकी की है, तो वे आधी मुक्त होती हैं। वे स्वयं अपने में एक आनन्द होती हैं। और जब उसकी ही तरह हृदय उष्ण और न्यायपूर्ण होने के लिए उत्कृष्ट होता है तब उसकी आदर्श नियति में कठिनाई से ही सन्देह किया जा सकता है। तब उसे सदा ही पम्प करने और चलाने की जरूरत नहीं रहती। समय और उसकी निजी प्रेरणाएं उसे पख प्रदान कर देती हैं।

पुराने ज़माने की पुनर्जागरण-सभाएं

अपने आरम्भिक दिनों के बाद पुनर्जागरण-सभाओं में बहुत-से परिवर्तन आए हैं। एक समय था जब जान वेल्जी^१ के अनुयायी 'चीखनेवाले मैथो-डिस्ट' कहलाते थे, क्योंकि धार्मिक प्रबोधनों का उत्तर वे स्वरपूर्ण ढंग से दिया करते थे।

जब मैं लडका था तब भी, 'आमीन' की चीत्कारों को उठाने के लिए कुछ प्रचारक नियत उक्तियों पर निर्भर किया करते थे और जो धर्मोपदेशक छत को हिला नहीं पाता था उसे अगले वर्ष दुबारा नहीं बुलाया जाता था। प्राचीन पुनर्जागरणवादी सहज प्रोत्साहन को पसन्द करते थे। आज यदि किसी उपदेशक की सभा में उसके वाचन के बीच-बीच लोग चिल्ला-चिल्लाकर अपनी सहमति प्रकट करने लगे तो वह घबरा उठेगा।

मुझे एक वृद्ध मैथोडिस्ट बिशप की याद है, जिसने युद्ध-पूर्व की एक धर्म-सभा को पिघलाने के लिए डेढ़ घंटा तक प्रयास किया। उसने अपनी सभी तरकीबें आजमाई, लेकिन पत्थर की सी जड़ता कायम रही। अन्त में उत्तेजित होकर अपने वाचन को उसने रोका और पूछा, "ये जो मैं वहां नीचे देख रहा हूँ, गजे सिर है या कब्र के पत्थर है?"

किसीने उत्तर नहीं दिया।

बीथी में पड़ी सीट पर बैठे एक आदमी की ओर इशारा करते हुए वह बोला, "अरे भाई, क्या आवाज है तुम्हारे पास?"

१. १७२६ में आक्सफोर्ड में बनी मैथोडिस्ट क्लब का संस्थापक और इस धार्मिक आन्दोलन का नेता (१७०३-१७६१)।

आदमी ने हामी भरी, पर बोला नहीं ।

“भले आदमी, तब, उसका इस्तेमाल करो; इस्तेमाल करो ।” बिशप ने आग्रह किया, “भगवान कैसे जानेगा कि तुम ईसाई हो, यदि उसके गौरव का तुम जोर-ओर से बग्वान नहीं करोगे ।”

उसका श्रोता बस थोड़ा-सा अस्थिर दीख पड़ा ।

“भगवान के गुण गाओ ।” बिशप चिल्लाया । इस बात की भी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई । दीथी की ओर उसने फिर इशारा किया ।

“क्या तुम कह सकते हो, भगवान की जय ?”

“क्यों नहीं, निश्चय ही ।”

“तब कहो, भले आदमी, बोलो ।”

आदमी ने वैसा कह दिया ।

बिशप गरज उठा, “तुम तो फुसफुसा रहे हो । क्या बस यही तुम भगवान के बारे में सोचते हो ? क्या तुम चिल्ला नहीं सकते ? लो, अब मेरे साथ बोलो, ‘भगवान की जय !’ ”

इस बार एक मद्धिम गूज उठी ।

“पहले से अच्छा है । अब चिल्लाकर बोलो, अधिक जोर से ।”

आदमी चिल्लाया ।

“जिहोवा की जय ।” बिशप चिल्लाया, “इस कक्ष में बैठा हर आदमी अब मेरे पीछे बोले और ज़रा अपने फेफड़ों पर जोर दे । जिहोवा की जय ।”

प्रतिक्रिया दबी-दबी थी, पर थी उत्साहजनक ।

“यह है जोश । दुबारा पूरी ताकत से बोलिए, ‘जिहोवा की जय !’ ”

“जिहोवा की जय !” उत्तर मिला ।

“अब मेरे पीछे-पीछे बोलिए, ‘भगवान की जय !’ ”

“भगवान की जय !”

“अब एक बार फिर, ‘आमीन !’ ”

“आमीन !” इस बार उत्तर बहुत धड़के का था ।

बिशप ने अपना माथा पोछा और मुस्कराया । “अब बढिया रहा ।” वह बोला, “मैं तो एक क्षण के लिए डर गया था कि मैं नास्तिकों के सामने बोल रहा हूं ।”

‘इण्डियना मैथोडिज्म’^१ के आरम्भिक दिनों के एक सर्किट धर्मोपदेशक की एक कहानी बताई जाती है । उसने वन-प्रदेश के अपने श्रोताओं को अनुताप के लिए प्रबोधित करने में दो ठोस घंटे खर्च किए । वेदी पर बुलाए जाने पर सिर्फ कुछ दीन स्त्रिया ही सामने आईं । विश्वास की इस कमी से क्रुद्ध होकर प्रचारक ने अपनी जलती आखें पूरे गिरजे पर डाली और चिल्लाया, “मुझे गहराई से महसूस हो रहा है कि मेरे यहा दुबारा आने से पहले ही इस सभा का कोई युवक या युवती नरक की गलियो घिसट रही होगी ।” अनुत्पत्तों की पक्ति तेज़ी से भर गई ।

मैथोडिज्म की पुनर्जागरण-पद्धति में परिवर्तन लाने के लिए फादर^२ भी, किसी भी अन्य व्यक्ति जितना ही जिम्मेदार था । वह अच्छा बनने के लिए किसीको भी इस आधार पर प्रबोधित नहीं करता था कि कहीं उसे नरक में न जलना पड़े; बल्कि वह ईसा मसीह के मार्ग को इतना आकर्षक बनाकर रखता था कि सभा स्वयं उसका अनुसरण करने के लिए उत्सुक हो उठती थी ।

अपने नियमित उपदेशों में फादर आम तौर पर न्यू टेस्टामेंट का कोई पाठ चुनता था । ऐसा, जिसमें ईसाई जीवन-पद्धति का रोमांचक अनुभव हो । पुनर्जागरण के बीच फादर इसी मार्ग पर चला करता था । वैसे अपने पादरी-जीवन के आरम्भ में वह उन ग्रामवासियों के उद्बोधन के लिए एक वृत्ति-भोगी उपदेशक ले आया करता था, जो अपने पिताओं की तरह सिर्फ नरकाग्नि के भय से ही प्रेरित हो पाते थे । यह समय वह था जब मुफ्त ज़मीन और आदिम वासियों की हत्या की भौतिक उत्तेजना का मुकाबला

१. इण्डियना मे मैथोडिस्ट आन्दोलन ।

२. पादरी-विशेष, जिसका यहां उल्लेख किया गया है ।

करने के लिए नरक की आग की ज़रूरत पड़ती थी ।

पुनर्जागरण-सम्मेलन की पहली रात में फादर की नीति सदा एक-सी ही रहती थी । वह चर्च की अपनी नियमित सभा में बोलता था । क्रिया और उपेक्षा दोनों से सम्बन्धित उन सभी पापों को, जिनसे उसकी जनता ग्रस्त हो सकती थी, वह चित्रमय रूप में याद करता था ।

मानवीय अस्थिरताओं, आवश्यकताओं और कामनाओं की उसकी समझ इतनी गहरी थी कि उसके द्वारा दिया गया हर उपदेश व्यक्तिगत बन जाता था । वह कभी किसी वास्तविक मामले का उल्लेख नहीं करता था । लेकिन सभा में बहुतों का विचार रहता था कि वह वैसा करता था और जब वह वाचन कर रहा होता था, तो लोग लुके-छिपे चारों ओर देखते थे और यह जानने का प्रयत्न करते थे कि पादरी के अतिरिक्त और कितने लोगों ने उनके गुप्त पापों को पहचान लिया है । कभी-कभी एक ही उक्ति को आधा दर्जन सदस्य व्यक्तिगत रूप में ले लेते थे और अनुताप के लिए आगे आते थे ।

“जिस तरीके से वे उभककर ताका करते थे कि उनके गुप्त भेद को जाननेवाले कुछ अन्य उनके पीछे बैठे हैं या नहीं, उससे मैं बता पाता था कि मैं किसको चोट कर गया हूँ ।” वर्षों बाद फादर ने सकेत दिया था, “और कभी-कभी सदस्य नाराज़ हो जाते थे और यह मानकर कि मेरा उपदेश सीधा उन्हें लक्ष्य करता है, वे आते ही नहीं थे ।”

नये उपासना-गृह में हुई पहली पुनर्जागरण-सभा में फादर ने एक वार्षिक नवीकरण की आवश्यकता पर बल दिया था । यह उसने ठीक वैसे ही किया जैसे गृहपति अपने घर को पुनर्व्यवस्थित करता है और व्यापारी तालिका बनाता है । तब बीच में ही उसने अपने ग्रामीण श्रोताओं पर चोट की ।

सस्नेह मेज़ पर झुकते हुए उसने पूछा, “आपमें कितने हैं जो एक पड़ोसी के प्रति अनुदार बने हैं, अथवा जिन्होंने एक झगड़े का फैसला नहीं किया है ? जितने हैं जिन्होंने अपने बच्चों की धार्मिक शिक्षा की उपेक्षा की है,

क्योंकि रविवासरय शाला में पहुँचने के लिए समय पर उठने में आपने सुस्ती दिखाई है। क्या किसी प्रतियोगी व्यापारी के लिए आपके मन में शिकायत है? क्या आपने अपने नौकरों से अथवा वेतनभोगी लडकी से बहुत अधिक काम लिया है? क्या आप ईसा मसीह की वेदी पर एक पवित्र हृदय लेकर आ सकते हैं? अथवा क्या आपकी आत्मा में छोटे-छोटे पापों की इतनी भीड़ हो गई है कि वहाँ मसीहा के लिए कोई स्थान नहीं बचा है?”

यहाँ अपने सन्देश को वह उस भजन-मंडली के स्वर में डूब जाने देता था, जो पुनर्जागरणों के लिए सदा ही श्रेष्ठ रूप में तैयार की जाती थी। वह धीमे-धीमे गाती—

जैसा भी मैं हूँ
बिना किसी भी एक उपाय के;
सिवाय इसके कि तूने अपना खून
मेरे लिए बहाया है;
और तू मुझे
अपने पास बुला रहा है !
ओ भगवान के मेमने,
मैं आ रहा हूँ, मैं आ रहा हूँ !

फादर ने अपना हाथ ऊँचा उठाया। गाना रुक गया। लेकिन बाजा उसी भजन की धुन बजाता रहा। इसके एकदम बाद फादर ने बोलना आरम्भ किया, “इस रात शायद यहाँ कोई ऐसा नहीं है जो उस तरह जीवन बिताने का प्रयत्न नहीं कर रहा है जिस तरह के जीवन की ईसा मसीह हमसे आशा करता है। लेकिन हम मानव हैं, और पाप हमने किए हैं। हे स्वामी, हमें क्षमा करना।”

पद-निवृत्त पादरियों के कोने से तेज़ आवाज़ आई, “आमीन।”

इस प्रतिक्रिया का स्वागत करते हुए फादर ने अपनी आवाज़ को थोड़ा

उचा उठाया, “इस रात शायद कोई यहा ऐसा नहीं है जो ईसा मसीह को अपने हृदय की गहराई में आने देना नहीं चाहता। हे ईश्वर, हमारे हृदयों को उन्मुक्त करो।”

फिर कई दिशाओं में ‘आमीन’ का स्वर आया।

फादर अपने मंच से वेदी के जंगले के पाम पहुंच गया।

“जो लोग सचार्ज से ईसा मसीह का अनुगमन करना चाहते हैं, मैं उनसे आग्रह करता हूँ कि वे यहा इस वेदी पर मेरे साथ खड़े हों। ईश्वर को और अपने पड़ोसियों को जान लेने दो कि आप दोनता-पूर्वक अपने पापों का प्रायश्चित्त कर रहे हैं और ईसाइयत के अनुकूल जीवन बिताना आप हृदय से चाहते हैं। आइए।”

भजन-मंडली ने फिर भजन गाया :

ठीक जैसा मैं हूँ, मैं अपनी आत्मा को
एक काले धब्बे से मुक्त करने की प्रतीक्षा नहीं कर रहा हूँ।
जिसका खून हर धब्बे को धो सकता है
हे, ईश्वर के मेमने, मैं तेरे पास आता हूँ, आता हूँ।

कोई नहीं हिला। लेकिन फादर जानता था कि ऐसी आत्मस्वीकृति में कितने साहस की जरूरत होती है। उसे कोई जल्दी नहीं थी।

उसने बात आगे बढ़ाई, “हम यहा एक नये उपासना-गृह में इकट्ठे हैं। हमारे सामने पूरा वर्ष पड़ा है जो हमारी आस्था की परीक्षा लेगा। हे ईश्वर, हमें साहस दो।”

“आमीन।”

“हमें पहले की अपेक्षा अधिक बड़ी आस्था, अधिक बड़े प्रेम की जरूरत पड़ेगी। हे ईश्वर, हमें वह दो।”

“आमीन, आमीन !”

पादरी की आवाज़ के जादू और भजन के बार-बार गाए जाने के प्रभाव के नीचे सभा थोड़ी अस्थिर हो उठी थी।

फादर वेदी के सामने इधर से उधर आया-गया । तब दुबारा बोला :

“मुझे एक व्यक्ति की याद है जिसने एक बार मुझसे कहा था, ‘भाई स्पेन्स, मुझे रक्षित क्यों किया जाए ? मैं तो पहले से ही रक्षित हूँ ।’ मैंने उत्तर दिया था, ‘भाई, पुनर्जागरण से व्यक्ति उन पापों से छूट जाता है जो उसने किए हैं । लेकिन बहुत-से आदमी सोचते हैं कि क्योंकि वे एक बार रक्षित हो चुके हैं, इसलिए अब वे कोई गलती नहीं कर सकते । और इस प्रकार उत्साहित होकर वे नये पाप करते हैं ।’ मुझे कोई सन्देह नहीं कि इस रात आपसे भी बहुतों का विश्वास है कि क्योंकि आप पहले रक्षित हो चुके हैं, इसलिए आपपर भगवत्कृपा सदा ही बनी रहेगी । यह सच नहीं है । मुक्ति का नवीकरण होना ही चाहिए । आपको नये सिरे से अपने हृदयों को स्वच्छ बनाना चाहिए । आपके पादरी को स्वयं जरूरत है कि वह अपना हृदय स्वच्छ करे । मैं अपनी कमजोरी स्वीकार करता हूँ । कौन है जो मेरा साथ देगा ?”

फादर अनुतापको के जगले पर झुक गया । भजन फिर गाया जाने लगा । तीन निवृत्त प्रचारक भी सामने आए और अपने पादरी के बराबर झुक गए । शक्ति-संग्रह कर चर्च के कुछ सदस्य अपनी जगहों से उठ आए । शीघ्र ही बीस या उससे अधिक जन वहां झुके हुए थे ।

तब अतिथि प्रचारक, भजन-मण्डली का निर्देशन बन्द करके मंच पर चला आया । उस वर्ष वह विल्सन कीलर था । वह एक प्रसिद्ध उद्बोधक था जो अपनी पत्नी को एक वादक के रूप में और अपने बेटे को गायक और तुरही-वादक के रूप में लाया था ।

“मेरे पास आओ,” उसने कोमलता से आरम्भ किया, “तुम सब जो थके हो और भारी बोझ से दबे हो, मैं तुम्हें आराम दूंगा । आपने कितनी बार ये शब्द सुने हैं ? फिर भी कितनी बार वास्तविक रूप में आप ईसा मसीह के पास आए हैं ? आपसे कितनों को अपने दिव्य पिता पर इतना गर्व है कि आप अपनी ईसाई आस्था को पुनर्नव करने की अपनी इच्छा की सार्व-जनिक घोषणा करेंगे ? क्या आप आएंगे ?”

लोग आए। बाजा बजता रहा। फादर उठे और बारी-बारी में हर अनुतापक के कानों में कुछ शब्द फुमफुमाने लगे। श्री कीलर ने अपना उद्बोधन जारी रखा।

“इस रात यहाँ कितने ही ऐसे लोग हो सकते हैं जिन्होंने ईसाई जीवन जीने का मद्दा ही प्रयत्न किया है, लेकिन कभी अपने ईसाईपन की सार्वजनिक घोषणा नहीं की है। कितनी बार हमने ये शब्द सुने हैं, ‘मैं अभी तैयार नहीं हूँ। थोड़ा ठहरिए।’ पिछले वर्ष जब मैं मिशिगन में था, तो एक सुन्दर युवती माँ हमारी कितनी ही सभाओं में आई। लेकिन कभी भी आगे वह नहीं आती थी। ‘मैं अभी तैयार नहीं हूँ,’ वह कहा करती थी। इस वर्ष मैं उसके नगर लौटा और उसके बारे में पूछ-ताछ की। वह मर चुकी थी। मुझे गहरी चोट पहुँची। उसने कितनी ही बार कहा था, ‘मैं अभी तैयार नहीं हूँ,’ और अब कितनी देर हो चुकी है। हम नहीं जानते कब हमारी बारी आ जाए। मैं ही अगला व्यक्ति हूँ। तुम अगले हो। ईश्वर करे हम सब तैयार रहे। आइए, ईश्वर का हाथ आपके सिर पर है। यह काम अभी कीजिए। अभी कीजिए, जिससे आपके हृदय को शान्ति मिल सके। ज़तान को अपनी आत्मा के साथ सघर्ष मत करने दीजिए। उसे बाहर धकेल दीजिए और ईसा के पास आइए। आइए और देखिए कि ईश्वर को अपने हृदय में रखने से जीवन कितना शान्त बन जाता है। इसे टालिए मत। मत कहिए कि आप तैयार नहीं हैं।”

लोग आए।

भजन-मंडली ने दूसरे कई भजन गाए: ‘युगों की चट्टान’, ‘आश्चर्यजनक कृपा, कितनी मधुर थी वह आवाज़ जिसने मुझ जैसे नीच की रक्षा की’, ‘ओ कैलवरी के मेमने, मेरा विश्वास तेरी ही आस लगाए है’ और ‘हे ईसा मसीह, मैंने अन्त तक तेरी सेवा करने का व्रत लिया है।’

फादर और श्री कीलर एक-एक करके उद्बोधन देते थे और अपने निजी अनुभवों से से छोटी-छोटी घटनाएँ, सीधी-सादी भावनात्मक अपीलें, जो हर प्रकार के पापी को छू सकती थी, बताते जाते थे। आधे घंटे में

जब सभी चर्च के भक्त अपनी आस्था का पुनर्नवीकरण कर चुकते, तब फादर एक हृदयस्पर्शी प्रार्थना के साथ सभा को भग कर देते थे। इसमें वे ईश्वर से प्रार्थना किया करते थे कि वे उन सभीके सिरो पर अपना हाथ रखें जिन्हें मुक्ति की जरूरत है। तब वे अनुतापकों को एक अतिरिक्त प्रार्थना के लिए थोड़ा और रोक लिया करते थे और तीन निवृत्त प्रचारक ध्यान रखा करते थे कि सब अनुतापक अपने नाम-पते और यदि वे किसी चर्च से सम्बद्ध है तो उसका नाम एक कार्ड पर भर दे।

पहली रात में चर्च के नियमित सदस्यों की आस्था के पुनर्नवीकरण के सिवाय कभी-कभी ही कुछ अधिक हो पाता था। अन्य लोग बस इक्के-दुक्के ही पकड़ में आते थे। प्रथम रात्रि में रक्षित किए गए व्यक्तियों का एक प्रेरणादायक दल के रूप में फादर उपयोग करता था। ये लोग अगली सभाओं में श्रोताओं के बीच घूमा करते थे। इस कारण मंच पर बुलाए जाने के समय पूरे सभा-भवन में छोटे-छोटे दृश्य देखने को मिल जाते थे।

श्रीमती वेल्श का सीमा के मामले पर अपने पड़ोसी से झगड़ा था; लेकिन मैथोडिस्टों के एक-दूसरे पर मुकदमा न चलाने के अनुशासन के कारण वह उसपर दावा नहीं कर सकती थी। एक रात चुपचाप वह उस विरोधी की बगल में जा बैठी। उसके गले में उसने अपनी बाहे डाल दी। दोनों एक मिनट तक चुपचाप रोते रहे। तब श्रीमती वेल्श अपने पड़ोसी को जगले की ओर ले गईं और उसके साथ उसपर झुक गईं।

श्री कैम्ब्रिज सप्ताहों से एक ग्रामीण से नाराज था, क्योंकि उसने उसके एक प्रतियोगी से एक प्यानों खरीद लिया था। वह अपने विरोधी के पास गया और उससे हाथ मिलाया। दोनों ने क्षण-भर बातचीत की और तब वे जगले की ओर चले गए।

एक रात श्रीमती बेकर ने उस जवान स्त्री को अकेले बैठे देखा जिसने एक बार स्त्रियों के वस्त्रों की उसकी दुकान पर नौकरी के लिए आवेदन किया था। श्रीमती बेकर उसके पास गईं।

“तुम श्रीमती सालवरसन हो ? है न ?”

उमने सिर हिलाया ।

“क्या मैं तुम्हारी सहायता कर सकती हूँ ?” श्रीमती बेकर फुमफुसाई, “यदि तुम मुझे बता दो कि तुम्हें क्या कष्ट है, तो शायद मैं तुम्हारी सहायता कर सकूँ।”

वेदी पर बार-बार बुलाए जाने और सगीन के प्रभाव के कारण श्रीमती सालवरसन एक आत्यन्तिक भावनात्मक स्थिति तक आ पहुँची थी। वह बुरी तरह रो उठी, “मैं अब और नहीं चला सकती।” वह मुबक उठी, “रात के बाद रात मैं यहाँ आती रही हूँ। लेकिन उसका कोई लाभ नहीं होता। मैं घर पर छोटे अपने दो भूखे बच्चों के बारे में सोचती रहती हूँ। जितना ये लोग कहते हैं, यदि ईश्वर उतना ही दयानु है, तो क्यों वह मेरे बच्चों को भूखा मरने से नहीं बचा लेता ?”

श्रीमती बेकर ने अपनी बाँहें उसके गले में डालनी चाहीं। लेकिन श्रीमती सालवरसन पीछे हट गई।

“मैंने काम ढूँढने की बुरी तरह कोशिश की है,” उसने कहा, “लेकिन मेरी किसीको भी जरूरत नहीं।”

“क्या तुम्हारे पति नहीं है ?” श्रीमती बेकर ने पूछा।

श्रीमती सालवरसन ने सिर हिलाया, “एक वर्ष हुआ, उनकी मृत्यु हो गई। और उन्होंने छोड़ा भी कुछ नहीं।”

श्रीमती बेकर की आँखों में आसू भर आए।

“ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।” उसने कहा, “मैं स्वयं एक विधवा हूँ और मेरे पास बहुत थोड़ा है। लेकिन तुम्हारा स्वागत है कि तुम उसमें हिस्सा बटाओ। मैं तुम्हारे लिए काम ढूँढ लूँगी।”

एक क्षण बाद श्रीमती बेकर श्रीमती सालवरसन को वेदी की ओर ले जा रही थी।

एक रात सभा-भवन की लकड़ी की छत पर वर्षा हथौड़े की तरह पड़ रही थी और कितनी ही खाली पड़ी सीटें उससे गूँज रही थी। मेजर कूपर ने सभा में एक हलके-से परिचित चेहरे को देखा। उसने अन्ततः उसे

रियूबन राइट के रूप में पहचान लिया। राइट कभी नियमित रूप से चर्च आया करता था। पर अब एकदम दीख नहीं पड़ता था। मेजर गलियारे में को झुककर चला, और उसकी सीट पर उसकी बराबर में जा बैठा।

“कुछ समय से मैंने तुम्हें देखा नहीं है।”

“मैं यहाँ था नहीं।” रियूबन राइट ने भौ चढ़ाकर उत्तर दिया।

“क्या नगर से बाहर गए थे?”

“नहीं।”

“क्या बीमार थे?”

“मुझे अकेला बैठा रहने दो।” राइट बोल उठा।

मेजर लम्बे समय तक चुपचाप बैठा रहा। वेदी पर पुकार आरम्भ हो गई। सगीत भर उठा। श्री कीलर का पुत्र अपनी तुरही पर मन्द स्वर में एक पुराना भजन गा रहा था, “ईसा मसीह आज स्नेहपूर्वक पुकार रहा है। हे पापी, तुम्हें पुकार रहा है। घर वापस आ।”

इसने राइट को छुआ। “लम्बे समय से यह मैंने नहीं सुना है।” उसने कहा।

मेजर ने हामी भरी।

“मैं भी ठीक यही सोच रहा था।”

“क्या तुम्हें याद है,” राइट ने पूछा, “वेस्ली कार्मिशेल रविवासीय स्कूल में इसे अपने कार्नेट पर कैसे गाया करता था?”

“हा, वह गाया करता था।” मेजर ने स्मरण किया, “क्यों, यह बात पन्द्रह वर्ष पहले की होगी?”

“हा,” राइट ने उत्तर दिया, “लम्बा समय बीत गया।”

“लेकिन उसका सगीत दुबारा सुनना अच्छा रहेगा,” मेजर ने कहा, “क्या हम इसी इतवार को उसे बुला सकते हैं? यदि हम उसे बुला लें तो क्या तुम आओगे?”

राइट हिचकिचाया, “चर्च मुझसे आगे निकल चुकी है। उसे अब मेरी कोई जरूरत नहीं रही है।”

मेजर को अब याद आया। आठ साल पहले जब भजन-मंडली को दुबारा संगठित किया गया था, तब राइट ने चर्च में आना छोड़ दिया था। लोगों ने कहा था कि राइट की आवाज खराब हो चुकी है। मेजर की आंखों में सहानुभूति की एक लौ लहक उठी।

“उन्हें अब मेरी भी जरूरत नहीं है।” उसने तन्मत्तापूर्वक कहा, “रविवार की प्रार्थना में आने के सिवाय मैं अब अधिक कुछ नहीं कर सकता। वहां अकेला बैठा-बैठा मैं बड़ा ही अकेलापन महसूस करता हूँ। अगले इतवार को तुम क्यों नहीं आ जाते और मेरा साथ देते? इससे मुझे सहायता मिलेगी। हो सकता है हम बूढ़े लोगों का एक बाइबिल-वर्ग चला सकें और तुम उसमें शिक्षा दिया करो। मुझे याद है, तुम धर्मलेखों पर बड़ा ही सुन्दर प्रवचन दिया करते थे।”

रियूबन राइट ने पहली बार मेजर की ओर देखा, “तुम सोचते हो, ऐसा किया जा सकता है?”

“क्यों नहीं,” मेजर ने कहा, “हमारे जैसे और भी हमारे होंगे जो अब पुराने पड़ चुके हैं।”

“विधवा जार्डन है जो अलबर्ट के मरने के बाद गिरजे में नहीं आई है।” राइट ने कहा, “फिर हैरी ग्रे है। तुम्हें उसकी याद होगी।”

“और लिजी कार्सन है,” मेजर ने आगे कहा, “लिजी कार्सन के साथ क्या कुछ बीत गया है?”

“हमें पता लगाना चाहिए।” राइट ने प्रस्ताव किया।

“आओ देखें।”

इस बार राइट था, जिसने मेजर का हाथ अपने हाथ में लिया।

“तुम जानते हो,” उसने कहा, “मैं वर्षों से चाह रहा था कि अपने चर्च में मैं वापस लौट आऊँ। मुझे उसकी याद आती थी।”

एक क्षण बाद वे दोनों एकसाथ गलियारे में को चले जा रहे थे। उनके चेहरे देखकर फादर ने जान लिया कि कुछ असाधारण दोनों के बीच गुजरा है। और उसने उन्हें अपना विशेष आशीर्वाद प्रदान किया।

एक और बरसात की रात एकदम भिन्न एक दृश्य उपस्थित हुआ। फारेस्टर रास बराबर के दरवाजे से अन्दर घुसा और अपना गीला कोट उसने उस आखिरी खम्भे पर लटका दिया जो वेदी को थामे हुए था। कोने में अधेरा था, क्योंकि गैस के लैपों को, जहाँ तक सम्भव हो सका था, सभा-कक्ष के बीच में केन्द्रित कर दिया गया था। उपदेश के बाद सदा की भाँति फादर ने अनुतापको को जगले पर इकट्ठा कर लिया और प्रार्थना के बाद उन्हें उनके स्थानों पर वापस भेज दिया। सदा की भाँति उसने स्वस्ति-वाचन से पहले जगले पर इधर-उधर दृष्टिपात किया, क्योंकि कभी-कभी कोई पापी हर अन्य के लौट जाने के बाद भी अपने किसी विशेष भारी पाप से सघर्ष करता हुआ वही प्रार्थनारत अटका रह जाता था। इस रात द्वार के साथ के धुधले कोने में फादर ने देखा कि एक कोट में सिकुड़ी, भुकी एक आकृति खड़ी है, जिसने सिर को इतना झुका लिया है कि वह दीख ही नहीं पाता।

फादर ने शान्ति के साथ सभा से कहना आरम्भ किया, “वेदी पर अब भी एक व्यक्ति है। यदि उसकी आत्मा पर एक दुःखद बोझ है, तो उसे हमारी सहायता की जरूरत है। आओ, हम चुपचाप प्रार्थना करें जिससे वह अपनी आस्था को फिर से पा ले।”

बाजे ने एक भजन की एक पक्ति धीरे से बजाई।

“आमीन !” फादर ने कहा। लेकिन अनुतापक नहीं उठा।

फादर ने एक पल प्रतीक्षा की। तब पापी पर दया करने के लिए सस्वर प्रार्थना की। तब भी उसने कोई उत्तर नहीं दिया। फादर ने फिर प्रतीक्षा की। और एक स्पष्ट सकेत दिया, “शान्ति के साथ जाओ !” उसने कहा, “और ईश्वर तुम्हारे साथ जाएंगे !”

तब भी कुछ नहीं हुआ।

यह सोचकर कि शायद व्यक्ति बेहोश हो गया है, फादर उस धुधले कोने तक गया जो एक कन्धा-सा प्रतीत होता था। उसपर फादर ने अपना हाथ रखा और देखा कि वह तो अलगनी है।

यह है न्यूयार्क

ई० बी० व्हाइट

यह है न्यूयार्क

किसी भी व्यक्ति को अकेलेपन और एकान्त का उपहार न्यूयार्क दे सकता है, यदि ऐसे अजीब इनाम की कामना उसे हो। यही वह उपहार है जिसके लिए आबादी का एक पर्याप्त बड़ा भाग इस नगर की प्राचीरों के भीतर बसता है। मानहट्टन^१ के निवासी बड़ी सीमा तक अजनबी हैं, जो कहीं-कहीं से अपने डेरे-डंडे उखाड़कर, एक आश्रय, एक तुष्टि अथवा एक बड़ी या छोटी 'थाली' की खोज में नगर चले आए हैं। ऐसा सन्दिग्ध उपहार देने की सामर्थ्य न्यूयार्क का एक रहस्यपूर्ण गुण है। यह व्यक्ति को नष्ट भी कर सकता है और उसे सफल भी बना सकता है। और यह बहुत कुछ भाग्य पर निर्भर करता है। किसीको भी तब तक न्यूयार्क नहीं आना चाहिए जब तक वह किस्मतवाला बनने के लिए राजी न हो।

न्यूयार्क, कला और वाणिज्य और खेल-कूद और धर्म और मनोरंजन और वित्त, इन सबका संश्लेष है और वह तलवारबाज धर्म-प्रचारक, सवाददाता, अभिनेता, व्यापारी और दुकानदार को एक अकेले ठोस घेरे में लाकर खड़ा कर देता है। अपने कोट के कालर पर लम्बे अतीत की अनिवार्य गन्ध वह लिए रहता है। फलतः, इस न्यूयार्क में आप कहीं भी क्यों न बैठें, महान क्षणों, ऊँचे कारनामों, अनूठे लोगो, घटनाओं और कार्यों के स्पन्दन को आप अनुभव करेंगे। इस पल, नगर के बीचोबीच, एक हवाई पट्टी के मध्य में स्थित एक होटल के दमघोट कमरे में नब्बे डिग्री की गर्मी

१ मानहट्टन—हडसन नदी के मुहाने पर स्थित द्वीप जिसपर न्यूयार्क का एक भाग बसा है।

में बैठा हू। हवा न कमरे के अन्दर आती है, न उममे बाहर जाती है। फिर भी गुरुदम आसपास के वातावरण के प्रभाव मुझपर अजीब रूप में पड़ रहे हैं। रुडाल्फ वेल्फिन्टिनो के शव को राजकीय सम्मान के साथ जहा रखा गया था वहां से बाईस ब्लाक दूर; जहां नथन हेल्^१ को मृत्यु-दण्ड दिया गया था वहां से आठ ब्लाक दूर। प्रकाशक के उस दफ्तर से पांच ब्लाक दूर जहां अर्नेस्ट हेमिंग्वे^२ ने मार्क्स ईस्टमैन^३ की नाक तोड़ डाली थी, जहां बैठकर वाल्ट व्हिटमैन^४, वुडलिन ईगल के लिए सम्पादकीयों को पसीने की तरह बहाया करता था, वहां से चार मील दूर, जिस गली में विला केथर^५ तब रहती थी जब वह नेब्रास्का के बारे में पुस्तकें लिखने के लिए न्यूयार्क आई थी, उससे चौतीस ब्लाक दूर; जहां मार्सलीन^६, हिप्पोड्रोम के मंच पर मसखरे का काम किया करता था, वहां से एक ब्लाक दूर, जहां जनता की आखों के सामने ही इतिहासज्ञ जोगाउड^७ ने एक रेडियो को ठोकर मारकर चूर-चूर कर डाला था, उस जगह से छत्तीस ब्लाक दूर; जहां हैरी था ने स्टेनफोर्ड व्हाइट^८ को गोली मार दी थी, वहां से तेरह ब्लाक दूर; जहां मेट्रोपालिटन ऑपेरा में मैं दरबान का काम किया करता था, वहां से पांच ब्लाक दूर और जहां ब्लेरेन्स डे(बडा)^९ एपीफेनी के गिरजाघर में पाप-

१. स्वातन्त्र्य-युद्ध में ब्रिटिश सेनाओं में अमरीकी जामूस, जिसे अंग्रेजों ने फासी दे दी थी (१७५५-१७७६)।

२. प्रसिद्ध अमरीकी उपन्यासकार (१८६८-१९६१)।

३. मार्क्सवादी आलोचक।

४. महान कवि, लेखक व विचारक (१८१६-१८६२)।

५. उपन्यासकार (१८७६-१९४७)।

६. एक अभिनेता।

७. एक समालोचक।

८. प्रसिद्ध शिल्पकार व भवन-निर्माता, जिसकी हैरी था ने हत्या कर दी थी।

९. आत्मकथाकार व व्यंग्यकार (१८७४-१९३५)।

मुक्त किया गया था, वहा से बारह ब्लाक दूर, मैं इस समय बैठा हू। मैं इस सूची को अनन्त रूप में लम्बा कर सकता हूँ। और इस कारण, हो सकता है, मैं इस समय उसी कमरे में बैठा हू जिसमें कितने ही उदात्त और किसी न किसी रूप में स्मरणीय चरित्र बैठे होंगे। और इनमें बहुत-से तो हवा से शून्य गर्म अपराह्णों में अकेले, एकान्त, बाहर के वातावरण की निजी अनुभूति से लबालब यहा जमे होंगे।

कुछ ही मिनट पहले जब मैं भोजन करने के लिए नीचे गया था तो मैंने देखा था कि (लगभग अठारह इंच परे दीवार से लगा) मुझसे ठीक आगे जो व्यक्ति बैठा था, वह था फ्रेड स्टोन। सम्बन्ध और विच्छेद दोनों में यही अठारह इंच का फासला न्यूयार्क अपने निवासियों को प्रदान करता है। फ्रेड स्टोन से मेरा सम्बन्ध बस इतना ही था कि इस सदी के आरम्भ के आसपास 'दि विजर्ड आफ ओज' में मैंने उसे देखा था। लेकिन 'ओज' के इस व्यक्ति की निकटता पा लेने के कारण हमारा वेटर भी समान स्फूर्ति अनुभव कर रहा था। जब श्री स्टोन कमरे से चले गए तो वेटर ने मुझे बताया कि जब मैं (अर्थात् वेटर) जवान था और इस देश में बस आया ही था तो अंग्रेजी का एक भी शब्द समझने से पूर्व अपनी प्रेयसी को थियेटर में पहली बार 'दि विजर्ड आफ ओज' में ले गया था। यह एक बहुत ही बढ़िया शो रहा था। वेटर याद कर रहा था,—“एक तिनको का आदमी, एक टीन का आदमी ! शानदार !” (और इस समय भी वह बस अठारह इंच दूर ही था।) “श्री स्टोन खाना बड़े ही दिल से खाते हैं।” वेटर विचार-पूर्वक कह रहा था। वह सन्तुष्ट था कि 'ओज' से अपने इस सम्बन्ध-सूत्र के कारण नियति में एक मामूली-सा हिस्सा उसने लिया है।

न्यूयार्क एकान्तता के वरदान को, योगदान की उत्तेजना के साथ एकरूप कर देता है और अधिकांश घनी बस्तियों की अपेक्षा कहीं अधिक बेहतर सफलता के साथ व्यक्ति को (यदि वह चाहता है और लगभग हर व्यक्ति ऐसा चाहता है और इसकी जरूरत समझता है) वह उन विशाल, उग्र और विचित्र घटनाओं से अलग काट देता है जो हर क्षण गुजर रही हैं। जब से

मैं यहा इस सडादयुक्त हवाई पट्टी मे बैठा हू, बहुत सारी, बहुत कुछ कर्दम-युक्त घटनाएं नगर में घटी है। ईर्या मे पागल होकर एक आदमी ने अपनी पत्नी को गोली चलाकर मार डाला। अपने ब्लाक मे बाहर यह घटना कोई हलचल पैदा नहीं कर सकी और पत्रों मे भी डमका मामूली-सा ही जिक्र हो पाया। मैं घटनास्थल पर नहीं पहुंचा। मेरे यहा आने के बाद ससार का सबसे बडा हवाई प्रदर्शन नगर में हुआ। मैं नहीं गया। और अस्सी लाख नगर-निवासियो मे से अधिकतर नहीं गए। वैसे लोगो ने बताया कि वहा बहुत अधिक भीड थी। पश्चिम की ओर जानेवाले दो-चार व्यापारिक जहाजो के सिवाय जो उड़ने के लिए इस हवाई पट्टी का उपयोग आदतन करते है मैंने तो किसी जहाज की गूज तक नहीं सुनी। उत्तरी अतलान्तक के विशालतम समुद्री जहाज आए और चले गए। मैंने उन्हें नहीं देखा और अन्य अधिकांश न्यूयार्कवासियों ने भी उन्हें नहीं देखा। मुझे बताया गया है कि यह ससार का सबसे बडा बन्दरगाह है। छः सौ पचास मील का जलीय विस्तार इसके सामने पड़ता है और अनेकानेक विजातीय देशों से जहाज यहां आते रहते हैं, लेकिन यहां पहुंचने के बाद पिछली से पिछली रात जब ज्वार उतर रहा था और मैं ब्रुकलिन ब्रिज को पार कर रहा था, तब ईस्ट रीवर से बाहर सरकती हुई एक छोटी-सी नाव मात्र ही मैंने देखी थी। वैसे एक बार आधी रात के समय 'क्वीन मेरी' की सीटी भी मैंने सुनी थी और प्रयाण और कामना और वियोग का पूरा इतिहास इस एक आवाज में सिमट उठा था। लायन्स^१ का सम्मेलन हो रहा है पर मैंने एक भी लायन नहीं देखा है। मेरे एक मित्र ने एक देखा था और मुझे उसके बारे मे बताया था। (वह लगड़ा था और एक स्पेनी नृत्य-भूषा पहने था) गेदबाजी और घुड़सवारी के मैदानो मे खेलों के बेहद शानदार दृश्य उपस्थित किए गए। न मैंने किसी गेदबाज को देखा, न ही रेस के घोडे को। गवर्नर नगर में आया। मैंने सायरनो को चीखते सुना। लेकिन बस इतना ही, क्योंकि

१. क्लबो की अन्तराष्ट्रीय संस्था, जिसका उद्देश्य भ्रातृत्व बढ़ाना है।

वह अठारह इंची फासला फिर वर्तमान रहा । एक आदमी छज्जे से गिरकर मर गया । मैंने इस दुखद घटना में कोई रुचि नहीं ली । ये इंच फिर बहुत बड़े कारण बन बैठे ।

ये सब बातें मैं सिर्फ यह दिखाने के लिए कह रहा हूँ कि न्यूयार्क का निर्माण ऐसे अजीब ढंग से हुआ है कि चाहे कोई भी चीज क्यों न आ जाए, (एक हजार फुट लम्बा जहाज पूर्व से या बीस हजार लोगो का सम्मेलन पश्चिम से), यहां के निवासियों पर अपना कोई भी असर डाले बिना वह यही खप जाता है । अर्थात् हर घटना ऐच्छिक है और यहां का निवासी इस सुखद स्थिति में है कि वह अपने लिए दर्शनीय दृश्य चुन सके और इस प्रकार अपनी आत्मा को पुष्ट बना सके । छोटे और बड़े अधिकांश विश्व-नगरों में व्यक्ति को ऐसा चुनाव कहीं नहीं मिल पाता । उसे जैसे लायनों के सामने फेंक दिया जाता है । लायन अभिभूत कर लेते हैं और घटना अनिवार्य बन जाती है । कोई छज्जा गिरता है और वह हर नागरिक के और नगर के हर अन्तिम व्यक्ति के सिर पर आघात करता है । कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि जो घटना हर न्यूयार्कवासी के सिर पर चोट करती है, वह है सिर्फ सत पेट्रिक दिवस की वार्षिक परेड, जो काफी प्रभावशाली होती है । आयरिश जाति एक सख्त जाति है और वह घुल-मिलकर लुप्त नहीं हो सकती । यहाँ पाँच लाख निवासी आयरिश हैं और पुलिसवाले उनके घर-घर में हैं ।

न्यूयार्क का यह गुण जो अपने निवासियों को जीवन से काट डालता है, शायद व्यक्तियों के रूप में उन्हें कमजोर ही बनाता है । उस समाज में रहना शायद अधिक स्वास्थ्यप्रद होता है जहाँ किसी छज्जे के गिरने के धमाके को आप महसूस करते हैं; जहाँ जब गवर्नर गुजरता है तो आप कम से कम किसी न किसी तरह उसका टोप तो देख ही लेते हैं ।

न्यूयार्क का बचाव इस बारे में मैं नहीं करूँगा । यहाँ बसनेवाले बहुत-से लोग सम्भवतः सिर्फ पलायन के लिए ही यहाँ बसते हैं, वास्तविकता का सामना करने के लिए नहीं । लेकिन इसका अर्थ कुछ भी क्यों न हो, एक

अलम्य उपहार यह अवस्था है, और मेरा विश्वास है कि न्यूयार्कवालों की सृजनात्मक क्षमताओं पर हमका गुणात्मक प्रभाव पड़ा है, क्योंकि अंततः बड़े और छाट ध्यान बटानेवाले कार्यों की उपेक्षा का नाम ही सृजन है।

यद्यपि न्यूयार्क अस्मर, भारी ओपनिपन अथवा सम्बन्ध-विच्छेद की अनुभूति प्रदान करता है, पर मूल जयवा गाधनविहीन वह कभी-कभी ही प्रतीत होता है। आप सदा यह अनुभव करते हैं कि अपने घर को दम ब्लाक इधर उधर ले जाकर अथवा अपनी सभाति को पांच टावर घटाकर एक पुनरुज्जीवन का अनुभव आप कर सकते हैं। बहुत-से लोग, जिनमें प्रेरणा की वारतविक उन्मुक्तता नहीं होती, वे आत्मिक पूर्णता एवं उत्साह को कायम रखने के लिए नगर की विज्ञान विभिन्नताओं और उत्तेजना-स्रोतों पर निर्भर करते हैं। ग्राम्य प्रदेशों में आकस्मिक पुनरुज्जीवन के मौके बहुत थोड़े रहते हैं—मौसम में बदल या डाक में कुछ आ जाना। लेकिन न्यूयार्क में ऐसे मौके अतन्त्र हैं। मेरा विचार है, यद्यपि बहुत-से लोग यहाँ उत्साह के एक आधिपत्य के कारण ही आते हैं (जो उनके अपने छोटे कर्त्तव्य को छोड़ आने का कारण बना) लेकिन कुछ लोग उत्साह की कमी के कारण भी यहाँ रहते हैं। उन्हें न्यूयार्क में एक मुद्रा मिल जाती है अथवा एक सरल विकल्प मिल जाता है।

मोटे रूप में, न्यूयार्क तीन है। पहला न्यूयार्क उस स्त्री या पुरुष का है जो यहाँ पैदा हुआ है, जो नगर को ज्यो का त्यो ग्रहण करता है और उसके आकार और उसकी तुमुलता को स्वाभाविक और अनिवार्य मानकर स्वीकार करता है। दूसरा न्यूयार्क मौसमी लोगों का है। टिड्डियो की तरह ये लोग नगर पर प्रतिदिन छाते हैं और हर रात चले जाते हैं। तीसरा न्यूयार्क उन लोगों का है जो पैदा कहीं और हुए हैं और किसी चीज की खोज में न्यूयार्क चले आए हैं। इन तीन कापते नगरों में सबसे महान है अंतिम, जो अंतिम गन्तव्य है, जो एक लक्ष्य है। यही तीसरा नगर न्यूयार्क की तेजस्वी प्रकृति, उसकी काव्यात्मक चेष्टाओं, कलाओं के प्रति उसकी निष्ठा

और उसकी अतुलनीय उपलब्धियों का कारण है। मौसमी लोग नगर को तूफानी लहरों की बेचैनी प्रदान करते हैं। मूल निवासी इसे ठोसपन और निरन्तरता देते हैं। लेकिन आकर बस गए लोग ही हैं जो इसमें कामोद्वेग भरते हैं। चाहे कोई किसान इटली से आया हो और यहाँ की एक गन्दी बस्ती में उसने छोटी-सी पसारी की दुकान खोल ली हो, चाहे पड़ोसियों की अपमानजनक नजरों से बचने के लिए कोई जवान लड़की मिसीसिपी के एक छोटे-से कस्बे से यहाँ चली आई हो, या कोई लड़का अपने सूटकेस में एक पाडुलिपि और हृदय में एक पीड़ा लेकर कान बेल्ट से यहाँ आ उतरा हो, उससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। प्रत्येक ही पहले-पहले प्यार की तीव्र उत्तेजना के साथ न्यूयार्क को भेटता है। प्रत्येक ही न्यूयार्क को एक साहसिक की ताजी आखों से अपने में समो लेता है। और हर एक इतनी उष्णता और प्रकाश अपने में से पैदा करता है कि कनसालिडेटेड एडिसन कम्पनी हीन बन जाए।

मौसमी आदमी सबसे अजीब चीज है। यह उपनगर में रहता है, जिसमें अपनी निजी अनिवार्य प्राणवृत्ता नहीं होती। उपनगर तो दिन-भर के श्रम के बाद नींद के लिए एक घोंसला-भर ही होता है। नगण्य अवसरों के सिवाय मेमरोनेक या लिटिलनेक या टीनेक में रहनेवाला और न्यूयार्क में काम करनेवाला व्यक्ति नगर के बारे में रेलों और बसों के चलने और पहुँचने के समयों के और जल्दी से भोजन कर पाने की जगहों के सिवाय और कुछ भी नहीं जान पाता। वह अपनी मेज से बंधा रहता है। किसी सांझ के समय मस्ती से घूमते हुए, पार्क में बेल्वेडर टावर पर वह कभी नहीं जा पहुँचा है और ठीक सरोवर के जल में से उठती हुई प्राचीरों को, समुद्र-तट पर भीनिकाए पकड़ते लड़कों को, चट्टानों की कगारों पर लापरवाही से लेटी लड़कियों को उसने नहीं देखा है। न्यूयार्क में, कोई चीज अचानक ही कभी उस घुमक्कड़ की राह में नहीं आ पड़ी है। क्योंकि दो रेलों के बीच उसे कभी समय ही नहीं मिला। उसने तो मानहट्टन के भोले में जाल डाला है और सिक्के खोद निकाले हैं। लेकिन मानहट्टन की सांसों को कभी नहीं

सुना है। कभी उसकी सुबहों में जागा नहीं है और उसकी रातों में सोने के लिए कभी यहा रुक नहीं गया है। लगभग चार लाख स्त्री-पुरुष हर सुबह ट्यूबों और सुरगों के मुखों से धमकते हुए इस द्वीप पर आते हैं। इनमें से बहुतों ने सार्वजनिक पुस्तकालय के पठन-कक्ष की विशाल सरमराती बलूती खामोशी में, जहा किसी पुराने जल-पट्टिये की तरह किताबें उठानेवाला यत्र किताबों को टोकरियों में ओकता रहता है, कोई तन्द्रालस अपराह्न यहा नहीं गुजारा है। वे वेस्टचेस्टर^१ और जर्सी^२ की अपनी भट्टियों की देखभाल करते हैं, पर उन्होंने बावरी^३ की भट्टियों को, जाडे की रातों में ज़ीरो डिग्री की सर्दियों में, तेल के ड्रमों में जलनेवाली आगों को नहीं देखा है। शायद वे नगर के वित्तीय भाग में काम करते हों, पर उन्होंने राकफेलर केन्द्र^४ के घने बगीचों को वसन्त की एक सुहानी सुबह में हवा के साथ लहराते डेफोडिलो और अगूरी हायसिन्थों, भोजवृक्षों और फलंगों को कभी नहीं देखा है। अथवा शायद वे मध्यनगर के किसी दफ्तर में काम करते हों, और पूरा वर्ष बीत जाने पर भी समुद्र की प्राचीर से गवर्नर्स आयलैंड को वे नहीं देख पाए हैं। मौसमी निवासी बेहद लम्बी यात्रा के बाद मर जाता है लेकिन फिर भी उसे पर्यटक नहीं कहा जा सकता। घूसों के गाव में घूसों का घुसना-निकलना जितना भ्रान्त होता है, उसके आगमन और बहिर्गमन उससे कहीं अधिक भ्रान्त होते हैं और ईस्ट रीवर की तली में कीचड़ में दफनाए जाने पर भी वह शान्तिपूर्वक ब्रिज खेलता रहता है। पिछले साल अकेली लाग आयलैंड रेलरोड ने चार करोड़ मौसमी आगन्तुकों को ढोया लेकिन इनमें अधिकांश वही लोग थे जो बार-बार आ-जा रहे थे।

न्यूयार्क का भूखण्ड ऐसा है कि कभी-कभी यहा का मूल निवासी मौसमी आगन्तुकों की अपेक्षा अधिक ही सफर कर जाता है। निचले प्रदेश ईस्ट साइड में, चेरी स्ट्रीट से ऊपर नगर में स्थित एक मकान तक पहुँचने के लिए इविंग बर्लिन को कुल तीन या चार मील लम्बी एक गली में से होकर

गुजरना पड़ता था। पर यह इतना लम्बा लगता था जैसे पूरी दुनिया के ही तीन चक्कर काट लिए गए हों।

एक कविता थोड़ी जगह में अधिक भाव भर लेती है और उन्हें सगीत-मय भी बना देती है। इस प्रकार उसके अर्थ बहुत गम्भीर बन जाते हैं। नगर भी एक कविता की तरह ही है। इसमें भी एक छोटे-से द्वीप में सब प्रकार की ज़िन्दगियों, जातियों और नस्लों को ठूस-ठूसकर भर दिया गया है और सगीत और आन्तरिक यंत्रों की संगत से उन्हें युक्त कर दिया गया है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह मानहट्टन द्वीप धरती पर मानवों की सबसे घनी बस्ती है। यह वह कविता है जिसका जादू यहाँ के लाखों स्थायी निवासी समझ तो लेते हैं, लेकिन जिसका पूरा अर्थ सदा ही भ्रमपूर्ण रहेगा। सबसे लम्बे और सबसे शानदार दफ्तरों की ठोकरो में सबसे भद्दी गन्दी बस्तियाँ पड़ी हैं। रिवर साइड चर्च^१ में निहित अभिजात रहस्य, हाल्लेम^२ के तात्रिक आकर्षणों से सिर्फ कुछ ही ब्लाक दूर है। बड़े-बड़े श्रेष्ठि-कुमार अपनी लिमूसिन कारों में वाल स्ट्रीट^३ की ओर जाते हुए ईस्ट रीवर ड्राइव^४ से आगे जिप्सी राजाओं से कुछ सौ गज़ों की दूरी से ही गुज़रते हैं। लेकिन श्रेष्ठि-कुमार नहीं जान पाते कि वे राजाओं के पास से गुज़र रहे हैं; कारण, कि राजा लोग अभी उठे भी नहीं हैं। कुमारों की अपेक्षा वे अधिक फुसंत का जीवन व्यतीत करते हैं और अधिक जमकर शराब पीते हैं।

न्यूयार्क पेरिस जैसा नहीं है। वह लन्दन जैसा भी नहीं है। स्पोकेन^५ का साठ गुणा कर दे, अथवा डिट्रायट^६ का चार गुणा, तब भी ये उस जैसे नहीं ठहरते। अपनी सब अजीब बातों के बावजूद यह सबसे शानदार शहर है। मन्दी के भीषणतम क्षणों में ससार के सबसे ऊँचे बिन्दु को छू लेने का साहस इसने किया है। एम्पायर स्टेट भवन^७ आकाश में बारह सौ पचास फुट

१-४ न्यूयार्क के विभिन्न भाग।

५-६ दो प्रसिद्ध नगर।

७ ससार का सबसे ऊँचा भवन, जिसमें एक सौ दो मजिले हैं।

ऊंचा उठ गया, वह भी ऐसे समय जब छ छ का नया निर्माण भी पागल-पन ही कहलाता। (इस भवन का एक खूटानुमा शिखर है जिससे कभी कोई विमान नहीं बाधा गया है। उसमें एक आदमी नौकर है जो फुरसत के समय फ्लशो को साफ करता है। एक बार कोहरे में एक विमान इससे टकरा गया था। बिजली तो इसपर अमर्याद बार गिरी है। इतने निराश व्यक्ति इसपर से कूदकर मरे हैं कि पैदल लाग जब फिफथ एवेन्यू और चौतीसवी स्ट्रीट से गुजरते हैं तो अत प्रेरणावश ही अपने कदमों को तेज कर लेते हैं।)

मानहट्टन को विवश होकर ही आकाश की ओर फैलना पड़ा है, क्योंकि फैलने के लिए कोई भी और दिशा इसे नहीं मिल सकी। किसी भी अन्य बात की अपेक्षा यह एक कारण, इसके शारीरिक उत्कर्ष के लिए अधिक जिम्मेदार है। राष्ट्र की दृष्टि में इसका वही स्थान है जो गिरजाघर के सफेद शिखर का गाव की दृष्टि में होता है। यह महत्वाकांक्षा और आस्था का प्रकट प्रतीक है। यह सफेद कलगी है जो कहती है कि रास्ता ऊपर है। ग्रीष्मकालीन यात्री हैल गेट ब्रिज पर झूलता है और कबूतरों के घोंसलों के ऊपर से तथा बर्वांस के पृष्ठ आगनों के पाम में बहती हुई अपनी निद्रालीन कार की खिडकी से वह दक्षिण-पश्चिम की ओर देखता है, जहां प्रातः कालीन प्रकाश पहली बार मध्यनगर के इस्पाती शिखरों से टकराता है। और वह नगर के निस्सन्दिग्ध ऊर्ध्व उठान को देखता है—ऊपर को उठती हुई विशाल दीवारें और मीनारें, उठता हुआ धुआ, गर्मी, जो अभी नहीं उठ रही है, जागते हुए लाखों लोगों की ऊर्ध्वमुखी आशाएं और आकांक्षाएं, तथा यह शक्तिशाली भाला, जो आकाश पर गहरी चोट करता है।

आश्चर्य ही है कि न्यूयार्क काम भी करता है। पूरी बात ही अविश्वसनीय है। जब भी यहां के निवासी अपने दांतों पर ब्रुश करते हैं तो कैट्सकिल्स और वेस्टचेस्टर की पहाड़ियों से लाखों गैलन पानी खिंच जाता है। मानहट्टन का कोई युवक जब ब्रुकलिन-स्थित अपनी प्रेमिका को पत्र लिखता है तो यह प्रेम-सूचना गैसीय नली के माध्यम से पफ्—इस प्रकार छोड़ी जाती है। टेलीफोन के तारों का भू-गर्भस्थ जाल, पावर की लाइनें,

भाप की नलिया, गैस की नलिया और मल के पाइप—ये सब पर्याप्त कारण है कि इस द्वीप को देवनाओं और भीगुरो की कृपा पर छोड़ दिया जाए। जब भी सड़क की पटरी में कोई दरार पड़ जाती है तो शोर-शराबा मचानेवाले सर्जन अविश्वसनीय रूप में उलझी हुई किसी ग्रन्थि को उघाड़कर प्रदर्शित कर देते हैं। न्यूयार्क को तो बहुत समय पहले ही आतक अथवा अग्नि अथवा उपद्रव अथवा अपनी ही सचरण-प्रणाली के किमी महत्त्वपूर्ण माध्यम के कट जाने अथवा किसी गहरे पेचदार शार्ट सर्किट के कारण स्वयं को अधिकारतः नष्ट कर डालना चाहिए था। बहुत समय पहले ही, किसी असम्भव मार्गविरोध के समय रास्तों पर असाध्य शोर और गुराहिट नगर ने अनुभव की होनी चाहिए थी। जब कुछ दिनों के लिए भोजन के स्रोत विफल हो गए थे तो इसे भूख से नष्ट हो जाना चाहिए था। इसकी गदी बस्तियों से शुरू होनेवाली अथवा जहाजों के चूहों द्वारा लाई जानेवाली प्लेग से इसका सहार हो जाना चाहिए था। जो समुद्र हर ओर से इसे चाटता रहता है, उसके द्वारा यह डुबा दिया जाना चाहिए था। जर्सी से हर कुछ दिन के बाद घिर आनेवाले धुएँ के बादलों के डरावने लबादे से लाखों कोठरियों में रहनेवाले मजदूरों के प्राण घुट जाने चाहिए थे। जब यह धुआँ आता है तो दोपहर के समय ही रात हो जाती है; बड़े बड़े दफ्तरों में काम रुक जाता है, आदमी त्रस्त होकर राह टटोलते हैं और ऐसा लगता है कि मसार का अन्त आ गया है। अगस्त की गर्मी को इसके सिर पर चढ़ जाना चाहिए था, जिससे इसका दिमाग बौखला उठता।

भीड़ का उन्माद एक भीषण शक्ति होती है। फिर भी लगता है, न्यूयार्कवाले बड़े ही मामूली फासले से, सदा ही इससे बच जाते हैं। बिना किसी आतक के वे बन्द गलियों में बैठते हैं और किसी भाग्यपूर्ण हाज़िर-जवाबी के द्वारा भयपूर्ण स्थितियों से स्वयं को बाहर निकाल लेते हैं। वे अव्यवस्था और भीड़भाड़ का मुकाबला धैर्य और सहिष्णुता के साथ करते हैं। किसी न किसी तरह सदा ही उनसे पार हो जाते हैं। हर सुविधा

नाकाफी है अस्पतालों, स्कूलों और खेल के मैदानों में बेहद भीड़ है। राज-मार्गों पर यातायात भीषण गति से आ-जा रहा है। जिन मार्गों और पुलों का सुधार नहीं हुआ है, उनपर गत्यवरोध है। न काफी हवा है, न काफी रोशनी। सामान्यतया, या तो बहुत ज्यादा गर्मी होती है, या बहुत ही थोड़ी। लेकिन यह नगर इन गतरो और अपने नागरिकों को एक पूरक विटामिन की भारी खुराक देकर इन कमियों को पूरा कर देता है। वह विटामिन है किसी अद्वितीय विश्व-नगर, शक्तिशाली और अतुलनीय किसी चीज से सम्बन्धित होने की अनुभूति।

किसी भी परदेसी के लिए न्यूयार्क छोटी-छोटी कितनी ही उलझने, असुविधाएं और निराशाएं प्रस्तुत कर सकता है और अक्सर करता है। वेटर की बात न समझ पाना, शराब के सस्ते अड्डे और एक मित्रतापूर्ण मधुशाला में फर्क न कर सकना, एक अबोध प्रश्न पूछ लेने पर बस-चालक द्वारा झिड़क दिया जाना, गली के शोर-शराबे से जब सोने का कमरा भर रहा हो तब रात-भर सो न पाना, आदि। यात्री, विशेषकर गर्मी के दिनों में न्यूयार्क आते हैं। वे स्वतन्त्रता की देवी की मूर्ति के चारों ओर घिरे रहते हैं (नगर के निवासी यहां पैर तक नहीं रखते) वे आटोमेट पर चढ़ाई करते हैं, रेडियो स्टेशन देखने जाते हैं; सेट पेड्रिक के गिरजाघर जाते हैं; और दुकानों में भाकते हैं। अधिकतर, उनका समय अच्छा ही बीतता है। लेकिन न्यूयार्क में कभी-कभी कुछ दम्पती, जो स्पष्ट ही बाहरवाले हैं, शायद नवविवाहित भी हैं, ऐसे मिल जाते हैं जिनका भ्रम टूट गया है और जिनका चमकदार सपना बिखर गया है। यह जगह उन्हें बड़ी भारी पड़ रही है। किसी सस्ते रेस्तरा में बिना एक भी शब्द बोले खाने पर बैठे, और घुलते वे नज़र आते हैं।

न्यूयार्क का एक संश्लिष्ट रेखा-चित्र जिसका अक्सर उल्लेख किया जाता है, इस प्रकार है - "यह एक शानदार जगह है, लेकिन यहां रहने से मुझे नफरत है।" मेरा एक विचार है कि गावों और छोटे के कस्बों के लोग, जिन्हें बराबर-बराबर रहने के पड़ोसीपन, मित्रभाव और सुविधा की

आदत पड़ी होती है, शायद नहीं जानते कि न्यूयार्क भी पडोसीपन की प्रणाली का अनुसरण जीवन में करता है। नगर दसियों-हजारों छोटी-छोटी पडोसी इकाइयों का एक शब्दशः संगठन है। बड़े-बड़े जिले और बड़ी-बड़ी इकाइया निस्सन्देह वहा है; जैसे, चेल्सिया और मरे हिल और ग्रामर्सी (ये रिहायशी इकाइया है), हार्लेम (एक जातीय इकाई), ग्रीन-विच गाव (कला और अन्य विषयों के प्रति समर्पित इकाई), रेडियो सिटी (एक व्यापारिक बस्ती), पीटर कूपर विलेज (एक आवासीय इकाई), मैडिकल सेंटर (एक रोगीय इकाई)। और ऐसे कितने ही अन्य विभाग हैं जिनकी अपनी-अपनी खास विशेषताएँ हैं। लेकिन न्यूयार्क के बारे में एक अजीब चीज यह है कि हर विशाल भौगोलिक इकाई अनगिनत छोटे-छोटे पडोसों से मिलकर बनती है। हर पडोस वास्तव में आत्मनिर्भर होता है। आम तौर पर यह दो या तीन ब्लॉकों से अधिक लम्बा और कुछ ब्लॉकों से अधिक चौड़ा नहीं होता। हर इलाका शहर के अन्दर एक शहर और उसके अन्दर एक शहर है। इस प्रकार न्यूयार्क में कहीं भी आप क्यों न रहे, एक या दो ब्लॉकों के भीतर ही आपको एक पसारी की दुकान, नाई की दुकान, समाचार पढ़ने की जगह, जूतेवाले का खोखा, बर्फ, कोयले और लकड़ी की टाल (यहाँ रास्ता चलते चलते बाहर लगे एक पैड पर आप अपने आर्डर लिख जाते हैं), एक ड्राईक्लीनर, एक धोबी, एक बढ़िया भोजनालय, (बियर और मैडविच किसी भी समय आपके घर दिए जा सकते हैं), एक फूलों की दुकान, अर्थी उठानेवालों की बैठक, सिनेमाघर, रेडियो मरम्मत की जगह, पान-गृह, मद्यपान-गृह, लोहे की चीजों की दुकान, शराबघर और जूतेवाले की दुकान। न्यूयार्क के अधिकांश रिहायशी विभागों में हर एक या दो ब्लॉकों के बीच एक छोटी प्रमुख सड़क होती है। हर व्यक्ति जब प्रातः अपने काम के लिए चलता है तो दो सौ गज जाने से पहले ही लगभग आधे दर्जन काम वह पूरे कर चुकता है। अखबार खरीदता है, सोल लगने के लिए जूता डाल देता है, सिगरेट का डिब्बा ले लेता है, आर्डर दे जाता है कि गिहस्की की एक बोतल विपरीत दिशा में स्थित

उसके घर भेज दी जाए, जिससे घर लौटने पर उसके काम आ सके। लकड़ी की टाल के अदृश्य सचालकों के लिए सूचना छोड़ जाता है और ड्राई-क्लीनर को बता जाता है कि एक पेट उठा लानी है। आठ घंटे बाद घर लौटते समय वह 'पुसी विलो' का एक गुच्छा, एक मज्दा बल्ब, एक पेय, एक पालिश खरीद लेता है और ये सब चीजें बस से उतरकर अपने कमरे तक पहुंचने के बीच ही उसे मिल जाती हैं। हर ऐसा पड़ोस इतना पूर्ण होता है और पड़ोसपन की भावना इतनी प्रबल होती है कि कितने ही न्यूयार्कवासी एक गांव से भी छोटे एक इलाके की सीमाओं में अपना पूरा जीवन काट देते हैं। अपने कोने से दो ब्लाक भी परे व्यक्ति चला जाए तो जैसे वह पराई जगह पहुंच गया है और जब तक वह वापस नहीं आ जाता तब तक वह बेचैनी महसूस करता है।

पड़ोस की इन सीमा-रेखाओं के प्रति दुकानदार विशेष रूप से सचेत होते हैं। मेरी एक स्त्री मित्र अभी हाल ही में एक मकान से लगभग तीन ब्लाक परे एक दूसरे मकान में चली गई। जाने के अगले दिन जब वह अपने उस पसारी के यहा पहुंची, जिसके यहा से वह बरसों से सौदा लेती रही थी, तो दुकानदार उसे देखकर भावावेश से भर उठा। आसू उसकी आखों में छलक आए। वह कहने लगा, "अब तो आप दूर चली गई है। मुझे डर है, आगे अब आपसे मिलना नहीं हो सकेगा।" उसके लिए तीन ब्लाक अर्थात् लगभग सात सौ पचास फुट परे जाना ही दूर चले जाना था।

इस लेख को लिखते क्षण मैं, न्यूयार्क के एक क्षेत्रीय व्यक्ति की तरह नहीं, बल्कि कुछ दिनों के लिए ग्राम्य प्रदेश से आए एक चलते-फिरते यानी घुमक्कड़ व्यक्ति के रूप में ही यहा रह रहा हूँ। न्यूयार्क की पुनः परीक्षा करने के लिए और एकान्तता के उपहार और अकेलेपन के हीरक को पुनः प्राप्त करने के लिए गर्मियाँ एक बहुत बढिया अवसर हैं। गर्मियों में यात्रियों के अतिरिक्त सिर्फ पक्के निवासी और प्रामाणिक व्यक्ति ही नगर में रह जाते हैं। सामयिक और रंग-बिरंगे निवासी यहा-वहा नहीं दीख पड़ते। बस असली 'माल' ही बच रहता है। नगर में बहुत कुछ एक आरामदेह

वातावरण नज़र आता है और व्यक्ति तहमद बाधकर लेट सकता है और हाफता हुआ यादे ताजी कर सकता है ।

मैं याद करता रहा हूँ, एक युवक के रूप में बड़े लोगों के साथ उसी नगर में रहने में कैसा अनुभव हुआ करता है । जब मैं पहली बार न्यूयार्क पहुँचा तो मेरे व्यक्तिगत आदर्श थे लगभग एक दर्जन वे स्तम्भ-लेखक और आलोचक और कवि जिनके नाम पत्रों में नियमित रूप से छपा करते थे । मैं जैसे एक हलके स्थिर ज्वर से तपा करता था कि मैं डान माक्विंस^१, हेवुडब्राउन^२, क्रिस्टोफर मार्ले^३, फ्रैक्लिन पी० आदम्स^४, राबर्ट सी० बेचली^५, फ्रैंक मुलीवन^६, डारोथी पार्कर^७, अलेग्ज़ेंडर वुल्काट^८, रिग लार्डनर^९ और स्टिफन विन्सेंट वेनेट^{१०} के साथ उसी द्वीप पर रह रहा हूँ । मैं चैम्बर्स स्ट्रीट और ब्राडवे के कोने के आसपास घूमता रहता था और सोचता रहता था, 'कहीं इसी भवन में वह टाइपराइटर है जिसपर रात के समय महाराज-दार तिलचट्टा कूदा करता है ।' उस समय न्यूयार्क ने कठिनाई से ही कोई जीविका मुझे दी थी । लेकिन वह मेरा गुजारा-भर करता रहा । मैं छठी और सातवीं गली के बीच तेरहवीं स्ट्रीट वेस्ट में स्थित उस घर के पास से, जहाँ एफ० पी० ए० रहा करता था, तेजी से गुजर जाया करता था । लगा करता था जैसे मेरे पैरों के नीचे ब्लाक उसी तरह काप रहा है जैसे जब रेल जब ग्रांड सेण्ट्रल से चलती है, तो पार्क एवेन्यू काप उठता है । इन बड़ों की समीपता से उत्पन्न उत्तेजना एक जारी रहनेवाली चीज़ है । नगर सदा ही जीवनारम्भ करनेवाले युवक उपासको—युवक अभिनेताओं, महत्वाकांक्षी कवियों, नर्तकियों, चित्रकारों, सवाददाताओं और गायकों—से भरा रहता है । जीवित रहने के लिए प्रत्येक अपनी निजी किस्म की उत्तेजना पर निर्भर करता है । प्रत्येक, आदर्श पुरुषों के अपने निजी घरे को सामने रखता है ।

१-१० उन्नीसवीं सदी के मध्य से बीसवीं सदी के मध्य तक हुए अमरीका के प्रसिद्ध पत्रकार एवं आलोचक-लेखक ।

न्यूयार्क न सिर्फ एक निरन्तर उत्तेजना प्रदान करता है, बल्कि एक निरन्तर वर्तमान दृश्य भी प्रस्तुत करता है। मैं चारो ओर घूमता हूँ, इस दृश्य को बार-बार परखता हूँ, और आशा करता हूँ कि कभी इसे कागज पर उतार सकूँगा। शनिवार है। अपराह्न का अन्त समीप है। मैं वेस्ट अड्डताली-सवी गली में मुड़ जाता हूँ। ढोल और सेक्सोफोन वादन-गृहो की खिड़कियों से सगीत-शिक्षा के उदासीन स्वर आ रहे हैं और ऐसे लगते हैं जैसे ग्रीष्म के सुनसान खेतों में से कीड़ों की भयानक भनभनाहट फूट रही हो। कार्ट थियेटर अपने अपराह्न दर्शकों को उगल रहा है। अचानक ही एक फेरीवाले गायक की मजबूत आवाज़ से समूचा ब्लाक भर उठता है। श्रोताओं की खोज में वह पास आता है। एक विशाल प्रसन्नमुख नीग्रो बढ़िया आपेरा की धुनें उड़ाता हुआ, अपने सिर को सीधा पीछे की ओर झुकाए, घाटी को अविच्छिन्न सगीत से भर रहा है। वह अपनी एकमात्र सम्पत्ति के रूप में बस एक लम्बी छड़ी लिए है। साफ, पर बहुत हलके वस्त्र पहने हैं—ढीला पाजामा, धारीदार सूती कपड़े की जाकट, जिसकी जेब से किताब उभक रही है।

कला-प्रदर्शन का यह एक आदर्श अवसर है। दर्शक कार्ट से निकल रहे हैं, जहाँ उन्होंने 'दि रेस्पेक्टफुल प्रास्टीचूट' (सम्मानित वारांगना) देखी है और जातीय सम्बन्धों के बारे में अभी-अभी एक शिक्षा ग्रहण की है। और यथासम्भव तेज़ी से काली जाति की दशा सुधारने की मन स्थिति में वे हैं। सिक्के (अधिकतर क्वार्टर) गली में बज उठते हैं और कुछ ही मिनटों का सगीत लगभग आठ डालरों से एक नीग्रो की दशा को सुधार जाता है। यदि हर बार वह एक ही शो देता रहे तो ठीक इससे ही उसकी जीविका चल जाती है। लोग कहा करते हैं कि न्यूयार्क अवसरों का नगर है। यहाँ तक कि कुछ ही मिनट बाद घुड़सवार पुलिसवाला तक अपने टट्टू पर टप-टप आकर गिरे हुए चांदी के सिक्के के लिए ध्यानपूर्वक नाली का मुआयना ऐसे करता है जैसे कोई चिड़िया गिरे दाने को खोजती है।

सात बज रहे हैं और खाने की बात दिमाग में लेकर मैं ईस्ट तिरे-पनवी गली में कभी के एक शराबघर को फिर से परखता हूँ। एक हलकी-

सी भीड़, गर्मी की रात में पखो की सनसन, जिसे छोटी सी 'बार' पर जब-तब हिलाई जानेवाली बोतल ही भग करती है। यहा अधेरा है। (क्योंकि मद्यपान के नियम बदल गए हैं इसलिए मालिक अपना बिजली का बिल क्यों बढ़ाए) कितना अधेरा है। कितना सुहाना है। भित्ति-चित्रों में अकित इतालवी भीलों के दृश्य कितने अद्भुत रूप में सुन्दर हैं। शायद मालिक के भतीजे ने ही इनको बनाया होगा। मालिक शराब स्वयं मिलाता है। शीतल मुक्ति के लिए पखे सगीतमय प्रार्थना करते हैं। अगले कक्ष से रेडियो अधिकारियों की बातचीत सुन पड़ रही है। हरे सलाद में से लहसुन की हलकी-सी गंध आ रही है। मेरे पीछे से (फिर वही अठारह इंच) एक युवक एक बुद्धिवादी लड़की को मनाने की कोशिश कर रहा है कि वह आकर उसके साथ रहे और उसकी प्रेमिका बने। वह बहुत सतर्क है पर वह अत्यन्त औचित्यपूर्ण है, और इस बात का ध्यान रख रहा है कि वह जल्द-बाजी न कर जाए। वह अनुभव करता है कि बौद्धिक सग और यौन-भाव का समुच्चय ही है जो एक-दूसरे को वे दे सकते हैं। 'बार' के ऊपर लगे शीशे में से मैं उनका दूसरी बार पीना देख सकता हूँ। तब युवक को पुरुषों के कक्ष में चला जाना है और लड़की को महिलाओं के कक्ष में। और जब वे लौटेंगे तब तर्क अपना बल खो चुका होगा। और पखा फिर मेरा ध्यान खींच लेता है। गर्मी है। आरामदेह हवा है। बढ़िया, छोटी, अवैध कितनी ही जगहों में कितने ही बढ़िया सक्षिप्त भोजनों की स्मृति, प्रेम के अपने मूल स्वर के साथ उभर आती है। खिड़की की आवाज़ होती है और 'जिन' शराब को देखकर दवाई का सक्षिप्त भ्रम होता है।

एक अन्य गर्म रात में सेण्ट्रल पार्क में 'माल' पर स्थित गोल्डमैन बैंड नृत्यशाला पर आ रुकता हूँ। बैंड के मंच के सामने बेचों पर पखे की तरह बिखरे बैठे लोग ध्यानपूर्ण, प्रशंसापूर्ण मुद्रा में हैं। पेड़ों में रात की हवा सरसराती है। पत्तों में जीवन पैदा कर देती है। उन्हें वाणी दे देती है। बिजली की रोशनिया नीचे की ओर से उठकर हरी शाखाओं को चमचमा देती है, और एक नई भाषा उन्हें दे डालती है। ऊपर सिर पर एक विमान

सोता हुआ-सा गुजरता है। उसकी भागती हुई रोशनिया भपभपा रही है। ठीक मेरे सामने बेच पर अपनी प्रेयसी के गले में बाहे डाले एक लड़का बैठा है। उन्हें एक-दूसरे पर गर्व है और वे सगीत में खोए हैं। कार्नेट बजाने-वाला, एकाकी-वादन के लिए आगे बढ़ता है और आरम्भ करता है, “बस मेरी खातिर अपनी आंखों से ही शराब पियो...” खुली गर्म रात में बिगुल स्तम्भित करने जैसा शुद्ध और जादुई लगता है। तब नार्थ रीवर से एक दूसरे बिगुल का एकाकी वादन शुरू होता है। ‘क्वीन मेरी’ अपनी इच्छाओं की घोषणा कर रही है। वह बाजे पर नहीं बैठी है। वह बहुत कुछ बेसुरी है। बैंड बाजे का ढोलची जरा भी डगमगाता नहीं। दोनों बिगुल जंगली ढग से उलझ पड़ते हैं। लेकिन प्रेम की शपथ के बीच यात्रा की सूचना दिए जाने को दोनों में कोई भी बुरा नहीं मानता। ‘मेरी’ सुबकिया भरती है, “मैं जा रही हूँ।” ढोलची आगे भरता है, “मैं अपने इसके माध्यम से शपथ लेता हूँ।” तारकोल के रास्तों पर घूमनेवाले इधर-उधर घूम रहे हैं। इस सगीतमय वातावरण का ध्यान रखते हुए वे लिहाज वरतते हैं। लोग ठीक तरह हरकत में हैं। जंगल से परे गर्म घास में छायाएँ सर्पिल गति से रेग रही हैं। ‘माल’ की ओर आती हुई लड़कियों के घघरो में हवा भरकर उन्हें फुला देती है। उनके उघड़े कन्धे रोशनी में चमक उठते हैं। “मेरी खातिर सिर्फ अपनी आंखों से पियो।” यह एक जादुई अवसर है और सब कुछ स्वच्छन्द है।

गर्मियों के सप्ताहान्तों में नगर खाली हो जाता है। एक शनिवार के अपराह्न में मैं अपने दफ्तर जाता हूँ। किसी फोन की घंटी नहीं बजती। ‘अन्दर’ वाली भूखी टोकरियों में कोई कागज नहीं डालता। कोई कागजों को नहीं उलटता-पलटता। यह जैसे मृतको का भवन है। एक समय है, जब सब कुछ रुक गया है। पूरा नगर परित्यक्त कोठरियों से भरा है। मानो वह एक जेल है जिसे प्रभावी ढग से तोड़ डाला गया है। जब-तब भवन के किसी कोने में लिपट बुलाने के लिए रात की घंटी बजती है। जैसेकि वह आग लगने की विशेष सूचना की घंटी हो। गर्मियों में शनिवार के दिन

दफ्तर अकेलेपन की खाई बन जाता है। मैं खिड़की पर खड़ा होता हूँ और सड़क के पार दफ्तरों के छत्ते पर छत्ते देखता हूँ। मैं याद करता हूँ कि जाड़ो की सध्या में जब हर चीज़ अपने पूरे जोश पर होती है, हर कक्ष में रोशनी है, तब चीज़ें कैसी लगती हैं। तब लगता है, जैसे किसी 'मूक नाट्य' में कठपुतलियाँ कागज़ों को टटोल रही हों (लेकिन आप उनकी सरसराहट को नहीं सुनते)। आप उन्हें फोन उठाते देखते हैं, (लेकिन आप फोन की घण्टी नहीं सुनते)। कागज़ के टुकड़ों को लाने ले जानेवाले बहुत-से लोगों की शोर रहित लगातार हलचल को देखते हैं। न्यूयार्क दस्तावेज़ों का गढ़ है। वह कलकत्ता के सम्पर्क में है। रीक जाविक^१ के सम्पर्क में है। और हमेशा ही किसी न किसी चीज़ से मन को भुलाता रहता है।

लफायते के कैफे में नियमित रूप से बैठनेवाले बैठे हैं और बातें कर रहे हैं। सब कुछ व्यस्त है, पर शान्तिपूर्ण है। शराब की चुस्की लेता हुआ मैं पश्चिमी खिड़कियों में से बाहर मैनुफैक्चरर्स ट्रस्ट कम्पनी और नाइथ स्ट्रीट के उत्तरी हिस्से की लाल ईंटों की दीवारों की ओर घूरता हूँ और देखता हूँ कि जैसे-जैसे रोशनी डूब रही है, लाल धीमे-धीमे बैजनी बनता जाता है। ईंटों के भवन दिन के अन्त में अपना रंग दिया करते हैं। वैसे ही जैसे लाल गुलाब मुर्झाकर नीलाभ बन जाता है। यह कैफे एक पवित्र स्थान है। वेटर आयु-रहित है और वे कभी नहीं बदलते। कुछ भी तो आधुनिक नहीं बना है। उसके यात्रा-पोस्टर में 'नाट्रे डेम' खड़ी है। कॉफी तेज़ है और चिकोरी से भरी है, और अच्छी है।

बावरी में 'एल' के नीचे से रात के समय आप गुज़रें तो एक प्रकार की जड़ अपराध-भावना का अनुभव आपको होगा। एक सिक्के के लिए कोई आपको छुएगा। सिक्का डालने की कोशिश आप करेंगे, पर हाथ को नहीं छुएंगे, क्योंकि हाथ गन्दा है। नजर को बचाने की कोशिश आप करेंगे क्योंकि नजर दोष मढ़ रही है। यह व्यक्तिगत सकट इतना नहीं है, जितना सामान्य

है। हल न किए गए मानवीय कण्टो और गरीबी और मद्यपान की बीमारी की बढ़ी हुई स्थितियों का जड आतक। गर्मी की किसी भी रात में धुत्त लोग खुले में सोते हैं। पटरी एक मुफ्त बिस्तर है। खटमल भी वहां नहीं है। पैदल लोग स्थिर आकृतियों की बराबर से या उनके ऊपर से या उनका चक्कर लगाकर चलते हैं जैसेकि वे किसी युद्ध के मैदान में मृतको के बीच चल रहे हों। बैंक के दरवाजों में, सीढ़ियों पर आवारा लोग सोए पड़े हैं। हर सोनेवाले के सिर पर सन्तरी के रूप में वह खाली बोतल खड़ी है जिसमें से उसने अपनी मुक्ति प्राप्त की है। उसकी बांह के खोखले में एक कागज का थैला ठुसा है जिसमें उसकी चीज़ें हैं। दृश्य-दर्शक बस का बकवादी कण्डक्टर अपने यात्रियों को बताता है यह 'प्रवचित आत्माओं की गली' है। लेकिन बावरी अपने को वचित नहीं समझती। वह अपनी विशिष्ट समस्या का हल अपने निजी तरीके से खोजती है। शराब बनाने की भट्टियां यहां बहुत हैं। जुएखाने बहुत हैं। उपेक्षा बहुत है। और सदा ही क्रम के अन्त में है, बेली-वू^१।

एक या दो ब्लाक पूर्व में हट जाइए और वातावरण तीखे रूप में बदल जाएगा। गन्दी बस्तियों में गरीबी है, भद्दे घर हैं, लेकिन साथ ही पारिवारिक जीवन की एक आश्वासक गम्भीरता और हिफाजत भी वहां है। रिर्विंग-टन के साथ-साथ मैं पूर्व की ओर बढ़ता हूँ। सब कुछ खुश है, गन्दा है और भीड़ से भरा है। छोटी-छोटी दुकानें पटरी तक फैल आई हैं और गुज़रने-वाले के लिए सामान्य से सिर्फ आधी जगह ही छोड़ रही है। आवरण-रहित बल्बों की खरी रोशनी में तरबूज और स्त्रियों के पेटीकोट चमक रहे हैं। परिवार ऊपर के गर्म कमरों से भागकर पटरियों पर आराम कर रहे हैं। सन्तरो की पेटियों पर बैठे हैं। सिगरेट पी रहे हैं। और ढीले होकर आराम कर रहे हैं। विशाल लोवर ईस्ट साइड की यह रात्रिकालीन उपवन-सभा है। कुल मिलाकर, ग्राम्य परिस्थितियों में हरे भूमि-खंडों पर चमकदार

कैनवास की आरामकुर्सियों पर लेटे लोगों की अपेक्षा गर्मियों के मौसम के ये दल अधिक अनुकूल प्रतीत होते हैं। उष्ण मास और लुग्दी बने फलों और नाली की मक्खियों की भिनभिनाती गन्दगी और खाना पकाने से यहाँ बहुत गिलगिज़ा हो गया है।

लेविस के कोने पर तारों के पीछे खेल के मैदान में एक खुला नृत्य चल रहा है। यह एक प्रकार का पड़ोस का मामला है। शायद यह अपराधवृत्ति रोकने का एक तरीका है। स्त्रियाँ अपने बच्चों की बगिचों को नाचने-वालों के बीच से लाती ले जाती हैं जैसे कि दिखा रही हों कि नृत्य अंत में कहा जा पहुँचता है। सिर के ऊपर एक रस्ती पर पैटे और ब्रा टगे हैं जैसे— कि किसी नृत्य-संगीत के विशाल कक्ष को सजाने के लिए झुंडे टगे हों। संगीत रुकता है और एक खूबसूरत इतालवी लड़की अपने थैले में से ब्रुश निकालती है और गली के लैप के नीचे खड़ी होकर अपने लम्बे नीले-काले बालों को तब तक ब्रुश करती है जब तक वे चमकने नहीं लगते। अपनी गाड़ी में से पुलिसवाला धुब्ध भाव से यह सब देखता है।

दी कनसालिडेटेड एडिसन कम्पनी कहती है कि न्यूयार्क के पाँच जिलों में अस्सी लाख लोग रहते हैं और कम्पनी उन सबको जानने की स्थिति में है। जैसा कि हर घनी बस्ती में होता है, लगभग सभी जातियों, सभी धर्मों और सभी राष्ट्रों के लोगों का प्रतिनिधित्व वहाँ है। जनसंख्या के अंक बदलते रहते हैं। जितनी देर में आप उन्हें अलग-अलग करे उतनी ही देर में वे बदल जाते हैं। यही कहना ठीक है कि न्यूयार्क के अस्सी लाख लोगों में लगभग बीस लाख यहूदी हैं। मोटे रूप में चार में एक। इन बीस लाख यहूदियों में स्पष्ट ही बहुत सारे राष्ट्रों के लोग सम्मिलित हैं, जैसे कि रूसी, जर्मन, पोल, रूमानियन, आस्ट्रियन, आदि। एक लम्बी सूची है। विशालतर न्यूयार्क की नागरिक लीग ने यह अनुमान लगाया है कि न्यूयार्क में लगभग सात लाख नीग्रो हैं। इनमें लगभग पाँच लाख एक सौ दसवीं स्ट्रीट से उत्तर की ओर फैले हार्लेम प्रदेश में रहते हैं। पिछले कुछ वर्षों में नीग्रो आबादी बहुत तेज़ी से बढ़ी है, लेकिन न्यूयार्क में जितने नीग्रो

१९४० में थे, अब उसके आधे हैं। न्यूयार्क में लगभग २,३०,००० प्यूटो-रीकन लोग रहते हैं। लगभग पाच लाख आयरिश हैं और पाच लाख जर्मन। नौ लाख रूसी, डेढ़ लाख अंग्रेज, चार लाख पोल और बड़ी संख्या में फिन, चेक, स्वीडनवासी, डेन, नोर्वेवासी, लेटवियावाले, बेलजियमवासी, वेल्श और ग्रीक लोग रहते हैं; यहां तक कि डच भी हैं जो बहुत समय पहले से यहां रह रहे हैं। यह कहना बहुत कठिन है कि कितने चीनी यहां हैं। औपचारिक रूप में बारह हजार हैं। लेकिन इतने ही और चीनी न्यू-यार्क में गैर-कानूनी रूप से रहते हैं और जनसंख्या करने वालों से बचते रहते हैं।

अनेकों जातियों, विश्वासों और राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करनेवाले इन लाखों विदेशी लोगों के परस्पर संघर्षण और घुलने-मिलने के कारण न्यूयार्क एक-विश्व के दृश्य की स्थायी प्रदर्शनी बन गया है। न्यूयार्क के नागरिक न सिर्फ आदत से, बल्कि जरूरत के कारण सहनशील हैं। नगर को सहिष्णु बनना पड़ता है। नहीं तो घृणा, द्वेष और विरोध के रेडियो-सक्रिय बादलों से इसका विस्फोट हो जाए। यदि लोग सक्षिप्त रूप में भी विश्व-नागरिक-सम्बन्धों की व्यवस्था को भंग कर दें तो नगर फट जाए और इसके टुकड़े पतंग से भी ऊंचे उड़ जाएं। हर जातीय समस्या न्यूयार्क में सुलगती रहती है। लेकिन देखने की चीज समस्या नहीं है बल्कि न भग होनेवाला युद्ध-विराम है। हार्लेम अपने में एक शहर है। और शहर होते हुए हार्लेम पृथक्करण का प्रतीक है। फिर भी न्यूयार्क के नीग्रो लोगों के जीवन में जिम-क्रोवाद^१ के प्रकट तत्त्वों की कमी है। नीग्रो श्वेतों के साथ समानता के स्तर पर ट्रामों और बसों में चढ़ते हैं, लेकिन होटलों और रेस्तराओं में वही समानता उन्हें अभी नहीं मिल सकी है। जीविका की दृष्टि से नीग्रो लोग थियेटर, संगीत, कला और साहित्य में अच्छे चलते हैं, लेकिन कितने ही जीविका-क्षेत्रों में गति कठिन है। जिम-क्रो सिद्धान्त रिहायश

के नियमों और प्रथाओं में विशेष रूप से पाया जाता है। निजी मकानों के मालिक नीग्रो लोगों को कानूनन दूर रख सकते हैं और रखते हैं। हाल के ही एक नागरिक अध्यादेश के अनुसार, किराये के लिए निर्मित भवनों को, जिनमें सरकारी पैसा लगा है या जिन्हें किसी कर की छूट प्राप्त है, जाति, वर्ण या धर्म का विचार किए बिना किराये के लिए स्वीकार किया जाना चाहिए।

एक न्यूयार्कवाले के लिए नगर परिवर्तनशून्य और परिवर्तनशील दोनों हैं। कितने ही विषयों में पच्चीस वर्ष पहले की तरह यह न दीखता है, न अनुभव होता है। उन्नत रेल-पथों को उखाड़ दिया गया है। बस सिर्फ थर्ड एवेन्यू में वे रह गए हैं। कोई भी पुराना व्यक्ति सिक्सथ में जेफरसन मार्केट जेल के पास से गुजरते हुए रेल की लाइन, उसकी आवाज़, उसकी चिन्ती-दार छाया, उसके छोटे-छोटे हवादार स्टेशनों और उसके कम्प की कमी को महसूस करता है। ब्राडवे भी सूरत-शकल में बदल गया है। अपने मुखर चमकदार मुखौटे के पीछे इसका ढांचा स्पष्ट ही ककाल जैसा हुआ करता था। लेकिन अब साइनबोर्ड इतने विशाल हैं कि भवन, दुकान और होटल नियोन रोशनियो, अक्षरो और जमी हुई फिरनी की आकृतियों के पीछे बहुत दूर तक गायब हो गए हैं। ब्राडवे, जैसे वह फिरनी वाली गली है जिसे कोई ढांचा साधे हुए नहीं है। ग्रीनविच विलेज में प्रकाश बहुत क्षीण है। बड़े-बड़े मकान स्ववेयर की सीमा के साथ-साथ बन गए हैं और 'बारो' में शीशे जड़े हैं और 'क्रोम' लगे हैं। लेकिन विलेज में अभी तक, कवित्व, मैक्सिको के शीशे, पीटे हुए पीतल, कपड़ों के छापे, विह्स्की की बोतलों से बने हुए लैम्प, ताज़ी यादों के आधार पर लिखे गए प्रथम उपन्यास अपने चिह्न सुरक्षित बनाए हुए हैं। पुराने विलेज में पतली गलिया हैं, चूहों से भरे एक कमरेवाले किराये के घर हैं जो उन लोगों की अस्थिर कामनाओं की पूर्ति करते हैं जिनके दिल जवान हैं और खुश हैं।

ग्रैंड सेण्ट्रल अपने अतिरिक्त आयामात्मक प्रचार-प्रदर्शनों के कारण और एक यात्री-दलाल के तरीके अपनाने की प्रवृत्ति के कारण भोपू-घर बन गया

है। मैं एक समय ग्रैंड सेण्ट्रल टर्मिनल में कुछ दिन रहा था (इसमें सब सुविधाएँ प्राप्त हैं और मेरे पास ठहरने के लिए और कोई जगह थी नहीं)। इसका विशाल 'हाल' न्यूयार्क का एक अधिक प्रेरणाप्रद अतरंग स्थल तब तक मुझे लगता रहा जब तक लेस्टेक्स और कोकाकोला मेरे दिमाग में नहीं घुस आए।

पूरे नगर में बड़े भवन पतनोन्मुख हैं। रीवर साइड पर हडसन के सामने स्थित 'स्वाब भवन' टूट चुका है। फिफथ एवेन्यू में 'गाउल्ड का भवन' अब एक पुरानी चीजों की दुकान बन गया है। मैडिसन एवेन्यू का 'मार्गन भवन' एक गिरजाघर का प्रबन्ध-कार्यालय बन गया है। जो कभी 'फैहनस्टाक भवन' था वह अब 'रैण्डम भवन' है। धनी लोग आजकल इन घरों में नहीं रहते। वे विशाल प्रकोष्ठोंवाले भवनों में रहते हैं और गली से सैकड़ों फीट ऊँचे अपने पिछवाड़ों पर पेड बोते हैं।

पहले की अपेक्षा अब कम समाचारपत्र हैं। इसके लिए स्वर्गीय फ्रैंक मन्सी^१ को धन्यवाद दिया जाना चाहिए। 'ग्लोब', 'मेल', 'हेरेल्ड' की कमी व्यक्ति महसूस करता है और कितने ही न्यूयार्कवालों के लिए तो जब से 'वर्ल्ड' बन्द हुआ है, जीवन दुबारा वैसा बन ही नहीं सका है।

पुलिसवाले रबड़ के जूते पहने, छड़ी घुमाते ब्लाको के चारों ओर अब नहीं घूमते; बल्कि रेडियोयुक्त कारों में चढ़कर खोज लगाते हैं। भूगर्भ रेलों की सवारी में दस सेंट लगते हैं और सीटें भुस के रंग की पीली होने के बदले गहरी हरी होती हैं। लम्बे समय तक विचार करने के स्थान पर लोग सैलूनो में जाकर घटित घटनाओं को टेलीविजन पर देखते हैं। यह सब बहुत धबरा देनेवाला है। यहाँ तक कि परेडे भी कुछ बदल गई हैं। मानहट्टन में निकले पिछले सैनिक जलूस में भारी टैंकों की भयानक और अशुभ घडघड़ाहट ने नगर को भर दिया था।

गन्दी बस्तियों का स्थान धीमे-धीमे शानदार भवनों की योजनाएँ लेती

जा रही हैं। ये भवन आकार में ऊँचे, प्रयोजन में उदात्त और किराये में कम हैं। कुछ दर्जन ऐसे नये भवन यहाँ-वहाँ बिखरे हैं। प्रत्येक अपने में एक नगर है (ब्रान्सस्थित इनमें से एक में बारह हजार परिवार रहते हैं)। अब तक प्रयोग में न लाया गया आकाश लोगो को गली से बहुत ऊँचे उठा ले जाता है और उनकी स्वास्थ्य-पद्धति को सिक्काबन्द बना देता है, और सन्तरो की पेटी को छोड़ कुछ और जगह बैठने के लिए उन्हें दे देता है। संधीय वित्त, राज्य का धन, नागरिक धन और निजी धन इन योजनाओं में प्रयुक्त हुआ है। इनमें से कुछ के पीछे बैंक और बीमा कम्पनियाँ हैं। यान्त्रिकों ने इन भवनों को आधार पर थोड़ा-सा झुका दिया है, जिससे अधिक प्रकाश इन्हे मिल सके। इनमें से कुछ में किराये आठ डालर प्रति कमरे जितने कम हैं। हजारों नई इकाइयों की अभी जरूरत है और उनका निर्माण भी अततः हो ही जाएगा। लेकिन न्यूयार्क कभी भी अपनी गति को पूरी तरह पकड़ नहीं पाता। उसका सन्तुलन कभी स्थिर नहीं रहता। मौसम के दिनों में आबादी बहुत बढ़ जाती है। चट्टानों पर नये घर खड़े हो जाते हैं। खराब दिन आते हैं तो आबादी बिखर जाती है। विशाल कक्ष भी खाली हो जाते हैं। मकान-मालिक सूख जाता है और मर जाता है।

जबसे न्यूयार्क को मैं जानता हूँ, पिछले वर्षों में उसने अपने उत्साह और स्वभाव को बदला है। अब तनाव अधिक है और उत्तेजना बढ़ी है। आप कितने ही स्थानों पर कितने ही रूपों में इसका सामना करते हैं। आधुनिक जीवन की सामान्य कुठाँह यहाँ बहुगुणित हो गई है और फैल गई है। नगर के उस पार तक की एक अकेली यात्रा इतनी चिड़चिड़ाहट और इतना क्षोभ ड्राइवर को प्रदान कर देती है कि वह विवेक की सीमा को तोड़ डाले—रोशिनियाँ जो सदा ही इतनी जल्दी-जल्दी बदलती रहती हैं; यात्री जो दरवाज़े को धमाके के साथ बन्द करता है, ट्रक जो एकमात्र खुली जगह को रोककर अड़ गया है; सिक्का जो फिसलकर फर्श पर जा पड़ा है; प्रश्न जिसे गलत समय पर पूछा गया है। तनाव और अधिक है और गति भी

और अधिक है। टैक्सियां दस वर्ष पहले की अपेक्षा अधिक तेज दौड़ती हैं। और तेज उस समय भी वे दौड़ती थीं। गाड़ीवान पहले जोश के साथ हाका करते थे, पर अब तो वे अन्तिम छोर तक पहुंचने के लिए कभी-कभी उन्मत्तता के साथ हाकते हैं। नगर की ओर आनेवाली वेस्ट साइड हाइवे पर मोटरवाला जैसे एक समाधि में डूब जाता है। यह एक प्रकार का अनिवार्य गति-ज्वर होता है। पीछे से लोग उसे ठेलते हैं। दोनों ओर से स्थान बुरक दिया जाता है। वह ऐसा लगता है जैसे पानी की धारा में एक छोटी-सी छिपटी हो।

नगर कभी इतना बेआराम, इतनी भीड़भाड़ से भरा, इतना तनावपूर्ण नहीं रहा। धन प्रभूत है और न्यूयार्क ने अवसरो का स्वागत किया है। रेस्तराओ में घुस पाना कठिन है। व्यापारी लोग श्रैफ्ट के लच के लिए चुपचाप पक्ति में ऐसे खड़े होते हैं जैसे आवारा लोग सूप लेने के लिए लाइनों में खड़े हुआ करते थे। (सम्पन्नता भी भोजन के लिए लगनेवाली पक्तियों का गरीबी की तरह ही सृजन करती है) मानहट्टन में लच के समय को आधा घण्टा पहले, अर्थात् बारह या साढ़े बारह बजे तक खिसका लिया गया है, इस आशा में कि पूरी भीड़ को भोजन दिया जा सके। मेज़ छोड़ते समय प्रत्येक ही पहले की अपेक्षा अधिक खाली प्रतीत होता है। मकानों पर 'खाली नहीं है' की पट्टियां टगी हैं। फिफ्थ एवेन्यू की बसों में, जहां कभी मूल्य देकर रहनेवाले हर अतिथि के लिए सीट निश्चित रहा करती थी अब केवल खड़े होने भर को जगह मिलती है। पुरानी दुमजिली बसे गायब हो रही हैं। लोग अब सिर्फ मजे के लिए इनपर नहीं चढ़ते।

निश्चित दिनों के निश्चित घंटों में खाली टैक्सी पा लेना एकदम असम्भव हो जाता है और उनके लिए काफी भाग-दौड़ करनी पड़ती है। आप हैडिल पकड़कर दरवाज़ा खोलते हैं और देखते हैं कि कोई और नागरिक दूसरी ओर से आकर घुस रहा है। द्वारपाल टैक्सियों के लिए सीटियां बजा-बजाकर पैसा कमा लेते हैं और कुछ द्वारपाल तो किसी द्वार से सम्बद्ध नहीं होते। वे सिर्फ गलियों में घूमते हैं और जैसे ही लोगों को देखते हैं,

उनके लिए टैक्सियों के दरवाजे खोलते हैं। कम व्यस्तता के दिनों से तुलना करे तो नगर बेआराम और असुविधाजनक है। लेकिन न्यूयार्कवाले स्वभावतः ही आराम और सुविधा के पीछे नहीं भागते। अगर वे ऐसा करते तो जाकर कहीं और रहते।

न्यूयार्क में एक सबसे ठोस परिवर्तन आया है, जिसके बारे में लोग कहते-सुनते नहीं पर वह सबके दिमागों में है। अपने लम्बे इतिहास में पहली बार नगर विनाश का लक्ष्य बना है। हंसों के भुण्ड से अनधिक जहाजों की एक अकेली उड़ान इस द्वीप की कल्पना को ज़रा-सी देर में नष्ट कर सकती है, इसके स्तम्भों को जला सकती है; पुलों को चरमरा सकती है; भूगर्भ के रास्तों को प्राणघातक कक्षों में बदल सकती है, लाखों को स्वाहा कर सकती है। नश्वरता की सूचना अब न्यूयार्क के जीवन का अंग बन गई है। सिर के ऊपर जैट विमानों की आवाज में, ताज़े समाचारपत्र के काले शीर्षकों में यही सूचना रहती है।

नगरों के सभी निवासियों को सर्वनाश के इस दुर्दमनीय तथ्य के साथ जीना है। न्यूयार्क में यह तथ्य कुछ अधिक सकेन्द्रित है क्योंकि नगर स्वयं अत्यन्त सघन है और सभी लक्ष्यों में न्यूयार्क को एक निश्चित, स्पष्ट प्राथमिकता प्राप्त है। जो भी पथभ्रष्ट स्वप्नद्रष्टा उन बिजलियों को गिराएगा उसीके दिमाग में न्यूयार्क के प्रति एक स्थिर अनिवार्य आकर्षण होगा।

पहले ऐसा था कि स्वतन्त्रता की देवी की मूर्ति वह प्रतीक थी जो न्यूयार्क को उद्घोषित करती थी और ससार के सामने उसे पेश करती थी। आज मृत्यु स्वतन्त्रता की हिस्सेदार बन गई है। टर्टल-बे के कसाईघर को गिराकर ईस्ट रीवर के साथ-साथ जैसेकि जहाजों की पैंशाचिक उड़ान की स्पर्द्धा में सयुक्त राष्ट्र के स्थायी कार्यालय का निर्माण कुछ लोग कर रहे हैं। यह सबसे बड़ी भवन-निर्माण योजना है। इस प्रयास में न्यूयार्क एक और आन्तरिक नगर का निर्माण कर रहा है। इस बार सारी सरकारें इसमें आश्रय लेगी और यह उस गन्दी बस्ती को साफ करेगा जिसे युद्ध

कहते हैं। न्यूयार्क राजधानी नहीं है। वह राष्ट्रीय राजधानी अथवा किसी राज्य की राजधानी भी नहीं है। पर इस प्रकार वह ससार की राजधानी बनने की दिशा में बढ़ रहा है। जैसाकि शिल्पकारों ने सोचा है, ये भवन सिगार के डिब्बों की शक्ल के होंगे। रास्ता फर्स्ट एवेन्यू के नीचे एक नई गुफा में को होकर बहेगा। सैतालीसवीं गली को चौड़ा कर दिया जाएगा। और यदि मेरा अनुमान किसी काम का है तो रात बीतने पर ट्रक प्रकट होंगे और चोरी-चोरी उन लम्बे पेड़ों को बो जाएंगे, जिनकी जड़ें नगर की आतों के साथ घुल-मिल जाएंगी। नगर, एक बार फिर कोई भी चिह्न प्रदर्शित किए बिना, आगुन्तकों के एक सम्मेलन को अपने में समो लेगा। संयुक्त राष्ट्र की उपेक्षा करने की अपनी समर्थता यह पहले ही दिखा चुका है। पिछले कुछ वर्षों में बहुत सारे प्रतिनिधि नगर में यहां-वहां घूमते रहे हैं और नागरिकों ने कठिनाई से ही उनके कोटों और काले हम्बर्स हैटों की झलक की परवाह की है।

यह जाति, यह संहारक विमानों और सघर्षरत मानवीय संसद् के मध्य खड़ी जाति सभी के दिमागों में अटकी है। अतः यह नगर निखिल विश्व के सकट और उसके सामान्य हल दोनों को ही पूरी तरह प्रदर्शित कर देता है। इस्पात और पत्थर से बनी यह भूल-भुलैया तत्काल ही अहिंसा और जातीय भ्रातृत्व का एक पूर्ण लक्ष्य भी है और पूर्ण प्रदर्शन भी। यह विशाल लक्ष्य जो आकाश को छू रहा है, संहारक विमानों से बीच मार्ग में ही भेट कर रहा है; जो सभी जातियों और सभी राष्ट्रों का घर है; हर बात का केन्द्र-स्थल है और उस विचार-विमर्श की भूमि है जिसके फल-स्वरूप विमानों को रोका जाना है और उनके उद्देश्यों का पूर्वानुमान किया जाना है।

इस नई 'मानव नगरी' से एक या दो ब्लाक पश्चिम में टर्टल-बे में ही एक पुराना बेंत का वृक्ष है जो एक अतरंग बगीचे की अध्यक्षता करता है। यह एक टूटा फूटा पेड़ है। लम्बे कष्ट इसने सहे हैं। बहुत अधिक इस-पर चढ़ा गया है। तारों से बांधकर इसको थामा गया है। लेकिन जो

जानते हैं उनका यह प्रिय है । एक तरह से यह नगर का प्रतीक है । कठिनाइयों के बीच जीना, मुसीबतों के बावजूद बढ़ना, ककरीट के बीच एक सरस पौधा जिस तक सूर्य स्थिरतापूर्वक पहुंच सकता है । आजकल जब भी मैं इसे देखता हूँ और विमानों की क्रूर छाया का अनुभव करता हूँ तो मैं सोचता हूँ, “इसकी रक्षा होनी ही चाहिए, इस विशेष चीज की, इसी एक पेड़ की !” यदि यह नष्ट हो जाएगा तो सब कुछ नष्ट हो जाएगा, यह नगर, यह कुटिल और अद्भुत निर्माण भी । इसकी ओर न देखना मृत्यु के समान होगा ।

यह पुरानी पीढ़ी

‘अतलान्तक’ के लेखों में को लगातार छन-छनकर आते हुए पुरानी पीढ़ी के सावधान जवाबों और उसकी विचारशील आत्मस्वीकृतियों को पढ़कर मेरा आश्चर्य बढ़ता ही जाता है। मुझे इसमें लहजे का एक बढ़ता कड़ापन, धारणा की एक निश्चित दृढ़ता तक दीख पड़ती है, जिसका अर्थ शायद यह है कि नई पीढ़ी ने अपने आत्मविश्वास, पुरानी परम्पराओं और नैतिकताओं के प्रति अपने असम्मान, कुछ नूतन और चमत्कार के प्रति अपनी लगन से प्रेरित होकर जो आरोप पुरानी पीढ़ी पर लगाए गए थे उनके मुकाबले में एक सगठित प्रयास हाथ में लिया गया है। आत्मा की जिन पहली हलकी कचोटों को पुरानी पीढ़ी ने महसूस किया होगा, अब उनका स्थान नये उप-देशों ने ले लिया है। स्पष्ट ही एक व्यग्रता दीख पड़ती है कि यह बात लिखत में आ जाए कि वे अपनी दुनिया से पूरी तरह सन्तुष्ट हैं और अब इस बात के इच्छुक हैं कि उनके बेटे-बेटियाँ उन विशिष्ट आकर्षणों को नये रूप में सीखें जिनमें उन्होंने अपना जीवन बिताया था। समाज सेवा और समाज-सुधार की पुकार पर जो पैर डगमगा गए थे वे अब फिर एक बार धीमे-धीमे जम रहे हैं और थोड़ा भेपते हुए अपनी कुछ-कुछ बाकी वेश-भूषा में यह पीढ़ी प्रोटेस्टेंट धर्म की शाश्वत सत्यता और न्यू इंग्लैंड की परम्परागत नैतिकता में अपनी आस्था की दुबारा घोषणा कर रही है।

लोगों को आत्म-चेत बना दिया जाना और अपने आदर्शों की आधार-भूमि की परीक्षा करने पर विवश कर दिया जाना सदा ही एक उत्साहप्रद चिह्न होता है। यह मांग कि सन्देहवादियों के सामने वे उन आदर्शों को साफ-साफ प्रस्तुत करें, सदा ही स्पष्टता की ओर ले जानेवाली होती है।

जब पुरानी पीढ़ी बचाव के लिए विवश कर ही दी गई है तो सबसे पहले उसे यह खोजना चाहिए कि उसकी आस्थाएँ हैं क्या और तब उन्हें विश्वसनीय रूप में प्रस्तुत करने के लिए उनके सर्वोत्तम तथ्यों को सवार लेना चाहिए। ससार में सदा ही बहुत सारी चीज़ें ऐसी रहती हैं जिनपर प्रश्न-चिह्न नहीं लगाया गया है और किसी भी व्यक्ति अथवा वर्ग के लिए अपने पूर्वाग्रहों के कारणों की खोज में व्याकुल रहना एक ऐसा स्वस्थ व्यायाम है जिसे दोनों में प्रत्येक के लिए आवश्यक समझा जा सकता है। यह ठीक है कि ये कारण पश्चाद्वर्ती हीले-हवालो से अधिक, यानी पूर्वाग्रहों के कारणों के स्थान पर उनके पक्ष-पोषण और समर्थन से अधिक कठिनाई से ही कुछ अन्य होंगे। स्वयं कारण इससे अधिक कुछ, बहुत ही कम बार होता है। महत्वपूर्ण मुद्दा तो यह है कि व्यक्ति कारण खोजने की आवश्यकता को अनुभव करे। यह बात सदा ही यह सूचित किया करती है कि कोई चीज़ फिसलकर टूटनी शुरू हो गई है, कि दुनिया अब उतनी सुरक्षित नहीं रही है जितनी कभी थी; कि प्रकट सत्य अब उतने प्रकट नहीं रहे हैं; कि दुनिया में प्रश्न-चिह्न की भीड़ लगनी आरम्भ हो गई है।

इस पुरानी पीढ़ी की आज की इस नई पीढ़ी के विरुद्ध प्रधान शिकायत यही तो है कि एक सामाजिक आन्दोलन, धार्मिक नास्तिकता, आनुमानिक व्यक्तिवाद, आर्थिक बेचैनी उसमें वर्तमान है, और यह सब उसे परेशान बनाता है। जब आपने समझ लिया कि प्रौढ़ होना प्राणों का जीवन के साथ समझौता कर लेने की प्रक्रिया का ही नाम है, तब कुछ छोकरोँ का सामने आना और विश्व में वर्तमान असंगत चीज़ों की ओर संकेत करना हड़बड़ाहट पैदा करनेवाला बन जाता है। ठीक, मानो आपने यह गुप्त समझौता कर लिया है कि अमुक चीज़ें अस्तित्व नहीं रखती, तब किसीका कर्कश स्वरो में यह चीखना कि वे अत्यन्त वास्तविक हैं, विशिष्ट हैं, बड़ा ही क्लेशकर बन जाता है। जब काफी संघर्ष के और एक समझौते के बाद अपनी दुनिया को चारों ओर से आपने ढक डाला है, तब एक ऐसी आघी काउठना जो पूरे ढाँचे को उड़ा देने का आतंक पैदा करे, हतोत्साहक

प्रतीत हुआ करता है। अधिकतर चालू लेखों में विरोध का ऐसा ही निश्चिन्त स्वर बहता दीख पड़ता है। ये सशयवादी प्रोफेसर जो हमारी जवानी की आस्थाओं को डगमगाए देते हैं; ये बुद्धिवादी जो सामाजिक न्याय के नाम पर हर एक के दाल-भात में मूसरचन्द बनते हैं, ये आन्दोलनकारी जो राजनीतिक और सामाजिक भ्रष्टाचार के बड़े-बड़े ढेरों के सामने से पर्दा हटाए देते हैं; ये निष्ठुर वैज्ञानिक जो हमारे कितने ही मौनों का रहस्य खोल देने को तैयार हैं—क्यों ये हमें बख्श नहीं देते ? क्या इन्हें नहीं दीखता कि ईश्वर अपने स्वर्ग में उपस्थित है और ससार ठीक-ठाक चल रहा है ?

२

अब, इस इतना अधिक विरोध करनेवाली पुरानी पीढ़ी को मैं पहचानता हूँ। जब से मुझमें यह विस्मय जगना शुरू हुआ कि क्या सब सम्भव विश्वों में जितने सर्वोत्तम हैं उनमें सब कुछ उत्तमता के लिए ही है, तब से यानी पिछले पन्द्रह वर्षों से मैं पुरानी पीढ़ी के साथ रहा हूँ। उसने मुझे शिक्षित किया है, उसके साथ बढ़कर मैं बड़ा हुआ हूँ। मुझसे अधिक विनम्र शिष्य किसी भी पीढ़ी को शायद ही कभी मिला होगा। जो कुछ उन्होंने मुझे सिखाया था उसमें, मैं देखता हूँ, वे आज तक भी आस्था रखते हैं; कम से कम बहुत-से वे तो रखते ही हैं जो शत्रु-पक्ष में नहीं मिल गए हैं अथवा जिन्हें आज के सैनिकवादी युवकों ने अपनी गिरफ्त में नहीं ले लिया है अथवा, जैसा कि अधिक सगत प्रतीत होता है, ठीक आस्था वे रखते ही नहीं, बल्कि चाहते हैं कि उनके अपने तर्क उन्हें आत्मविश्वस्त करे। सम्भावना यह है कि जब हम पूरे दिल से एक चीज में वास्तविक विश्वास रखते हैं तब हम उसे सगत ठहराने की कोशिश नहीं करते। सगत-सिद्ध करना सिर्फ तभी होता है जब हम सन्देह करना आरम्भ कर देते हैं।

इस पुरानी पीढ़ी से मेरा मतलब, अपने उद्योगी अथवा काम-काजी

जीवन को जिन्होंने आरम्भ ही किया है, बीस और तीस के बीच के उन युवक-युवतियों के माता-पिताओं से है। स्पष्ट है कि सुविधा-सम्पन्न अथवा पर्याप्त सुविधा-सम्पन्न अमरीकी मध्य श्रेणी से मेरा प्रयोजन है। अब इस पुरानी पीढी का एक धर्म, एक अध्यात्म, एक नीति-शास्त्र और एक राज-नीतिक और सामाजिक दर्शन था जिसने वर्तमान पीढी के प्रकट होने तक व्यवहारतः निरकुश राज्य किया। इसने कम से कम कभी ज़रूरत नहीं समझी कि अपने को सगत सिद्ध किया जाए। आज की तरह कभी एक सीधी चुनौती इसे नहीं मिली। इस पीढी को और अधिक दूरी तक ठीक-ठीक समझने के लिए हमें इसके रूढ़ वातावरण में, यानी एक छोटे कस्बे या शहर में इसे परखना चाहिए, जहाँ गिरजाघरों और परिवारों की सस्थाओं के चतुर्दिक् यह एकत्र है। यदि कोई समाज है जिसे 'अमरीकन' कहा जा सकता है तो वह यही है। इसका मनोविज्ञान अमरीकी मनोविज्ञान है और इसकी आत्मा अमरीका की आत्मा है।

इस पुरानी पीढी का, जिसे पिछले पन्द्रह वर्षों से मैंने अच्छी तरह जाना-बूझा है, एक धर्म है जो कुल मिलाकर उतना ही मधुर और सरल है जितना निर्मित किया जाना सम्भव है। यद्यपि इसके सदस्य उन्हीं कठोर और अक्खड़ पुराने प्यूरिटनों के वंशज हैं जो शैतान से मल्लयुद्ध किया करते थे और अपनी दुनिया से वह सब नोच फेंका करते थे जो ईश्वर की दुर्घर्ष सेवा से उन्हें डगमगा देने का षड्यन्त्र करे, तो भी एक लम्बे उपक्रम के द्वारा जीवन के प्राचीन दर्शन में से सभी अपकर्षक प्रवृत्तियों को खींच-कर निकाल फेंकने में ये सफल हो सके हैं। यह कहना कि पुरानी पीढी रूढ़ियों और अन्धविश्वासों में आस्था रखती है, अन्याय होगा। अधिक सही यह कहना होगा कि वह उनमें अनास्था नहीं रखती। वह आस्था के स्थायित्व की एक प्रकार की गारंटी के रूप में उन्हें बनाए रखती है, पर बहुत कुछ कठोरतापूर्वक वह उन्हें अकेला छोड़ देती है। आधुनिक ज्ञान के प्रकाश में उनकी पुनर्व्यख्या करने का दुर्बल-सा प्रयास भी वह नहीं करती। वे बेकार हैं, पर ज़रूरी हैं।

समर्थक भीड़ वह पेश करता है) —और आधुनिक समाज की सभी बुराइयों के लिए उसका वही प्रयोगसिद्ध वैयक्तिक गुणोवाला पुराना समाधान, वही रामबाण नुसखा ! जातीय, वर्गीय और आर्थिक विषमताओं की दीवारों को तोड़ने के बारे में एक शब्द भी वह नहीं कहता, सिर्फ यही कहता है कि उन्हें कूदकर पार कर लिया जाए। सुविधाओं की प्राचीरों को सम करने की अथवा ऊँचे अवसरों का निर्माण करने की जोरदार आवाज़ वह कभी नहीं उठाता। सिर्फ एक अपील करता है कि स्वर्ग की दीवारों पर से दान-दाता हाथ आगे बढ़ाए जाएं; अथवा कम भाग्यवान लोगों को कृपापूर्ण सरक्षण दिए जाए; अथवा सबसे चमत्कारक यह है कि सर्वस्व-त्याग की एक सनक में अपने जीवन और वैभव का उत्सर्ग कर दिया जाए। यह नहीं कि एक ऐसा औद्योगिक सगठन बनाया जाए जिसमें बेईमानी बेमानी बन जाए। उल्टे काम-काजी दुनिया के विरुद्ध एक काल्पनिक आदर्शवादी ईमानदारी की घोषणा ही वह करता है। दूसरे शब्दों में, पुरानी पीढ़ी भलमनसाहत के गुण से मिलनेवाले सभी सुख-आरामों को भोगने में विश्वास रखती है और साथ ही एक द्वेषपूर्ण समाज में रहने के लाभों को भी सुरक्षित बना लेना चाहती है।

यदि कोई विशिष्टता है जो पुरानी पीढ़ी को सबसे अलग करती है तो वह है इस बात में विश्वास कि सामाजिक बुराइयों को वैयक्तिक गुणों के द्वारा दूर किया जा सकता है। उसके उच्चतम नैतिक आदर्श है बलिदान और सेवा। लेकिन पुरानी पीढ़ी कभी यह नहीं परख सकी कि ये आदर्श कितने घोर स्वार्थी हैं। और स्वार्थी भी इस शब्द के व्यापकतम अर्थ के साथ। इनका भाव हमेशा यही रहता है, “मैं तुम्हारे लिए आत्मबलिदान कर रहा हूँ।” “मैं तुम्हारी सेवा कर रहा हूँ।” —यह नहीं कि, “हम एक ऐसे आदर्श के लिए अविराम श्रम करने में सहयोगी बनना चाहते हैं जिससे हम सब स्वतन्त्र हो सकें और हममें से कोई भी न सेवा करे, न सेवा कराए।” बलिदान और सेवा के ये आदर्श एकदम स्वार्थपूर्ण हैं, क्योंकि ये कर्ता के सन्तोष और उसके नैतिक सघटन को ही गिनती में लेते हैं। ये

उसके ही नैतिक मूल्य को बढ़ाते हैं। लेकिन जिस व्यक्ति की सेवा की जा रही है अथवा जिसके लिए बलिदान दिया जा रहा है उसके बारे में नहीं सोचते। उस व्यक्ति के बारे में क्या है, जिसकी भलाई की जा रही है? यदि बलिदान और सेवा के भाव किसी भी अर्थ में परमार्थवादी हैं तो प्राप्त-कर्ता की नैतिक उन्नति ही उनका वांछित लक्ष्य होना चाहिए। लेकिन क्या यह नहीं कहा जा सकता कि बलिदान और सेवा के हर कृत्य के कर्ता को मिले व्यक्तिगत पुण्य-लाभ की टक्कर में अनुगृहीत व्यक्ति के हिस्से एक समतोल मानसिक हीन भाव ही आता है। क्या इस तथ्य को सार्वभौम रूप में हम तब मान्यता नहीं देते जब इस हीन भाव के प्रति सचेत न रहनेवाले व्यक्ति को परोपजीवी और ऐसी हीनता की भावना में अक्षम व्यक्ति को भिखारी कहकर हम पुकारते हैं। वास्तव में विद्यालय, पुस्तकालय, आदि मुक्त उपहार ही ऐसे हैं जो व्यक्तिपरक नहीं हैं अथवा सामाजिक हैं और जिन्हें हम कृतज्ञतापूर्वक और प्रसन्नता के साथ स्वीकार कर सकते हैं। असल में किसी भी दान-संस्था के ऐसे उपचार व्यक्तिपरक और सहज काम-काजी होते हैं। इसीलिए गरीब उन्हें स्वेच्छापूर्वक, बिना किसी नैतिक हीन भाव के ग्रहण कर सकते हैं।

कर्तव्य का आदर्श भी समान रूप से आलोच्य है। पुरानी पीढ़ी के विरुद्ध नई पीढ़ी की बड़ी शिकायत सामाजिक सम्बन्धों की इस रूढ़ता से ही सम्बन्ध रखती है, क्योंकि नये लोग इसीमें स्वयं को उत्पन्न पाते हैं। दुनिया दिशाबद्ध सवेगों से भरी प्रतीत होता है। व्यक्ति से आशा की जाती है कि वह 'असहज' बनने का खतरा मोल लेकर भी अपनी बुआ अथवा अपने दादा को एक सुनिश्चित ढंग से प्यार करे। व्यक्ति भावना के बहुत कुछ एक मात्रापरक माप की वृत्ति ग्रहण कर लेता है। शायद पारिवारिक जीवन की सबसे बड़ी दुर्घटना व्यर्थ में नष्ट वह शक्ति है जिसे एक कर्तव्य-प्रेमी व्यक्ति इन कृत्रिम मार्गों को खुला रखने और सही मात्रा में इनकी धारा प्रवाहित रखने में खर्च करता है। ठीक यही है जो नई पीढ़ी के विद्रोह को सर्वाधिक अचूक बनाकर जन्म देता है। यह आज्ञा सुनना कि व्यक्ति

इस या उस व्यक्ति से प्रेम करे अथवा वफादारी के बारे में वे सब बातें सुनना जो पुरानी पीढी इस विषय में कहा करती है जैसेकि वफादारी उस चीज़ में अनुरक्ति रखने में ही है जिसमें व्यक्ति अब कोई विश्वास नहीं रखता—यही है जो पागलपन और विद्रोह की उन ताकतों को तत्काल उन्मुक्त कर देता है जो आध्यात्मिक शिक्षकों और मार्ग-दर्शकों को आज बौखलाए दे रही है। कर्तव्य और उत्तरादायित्व के ये सूखे जलमार्ग हैं जिनमें भावना का सजीव जल अब नहीं बहता और जिन्हें नष्ट कर डालना ही नई पीढी का आदर्श है। वह भावनात्मक जलमार्गों के ऐसे जाल को स्वीकार नहीं करेगी जो लबालब भरे नहीं हैं, ऐसे कर्तव्यों को नहीं मानेगी जो साथ ही प्रेमपूर्ण भी नहीं हैं।

लेकिन जब वे प्रेमपूर्ण बन जाते हैं, तब कर्तव्य आगे अधिक अर्थपूर्ण नहीं रहता। बलिदान और सेवा की तरह ही कर्तव्य से भी सदा लोगों के व्यक्तिगत सम्बन्धों का भाव ही सूचित हुआ करता है। आप किसी व्यक्ति अथवा किसी वस्तु के प्रति ही तो अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। एक असमानता की ध्वनि उसमें आ ही जाती है। जो व्यक्ति अपने प्रति कर्तव्य-पालन कराता है, आप नैतिक रूप में उससे बड़े बन जाते हैं। यदि कर्तव्य सद्भाव और स्वेच्छा से प्रेरित नहीं है तो वह नैतिक रूप में घृणास्पद अथवा अधिक से अधिक बेहतर यह है कि एक अनिवार्य दोष बन रहता है। यानी ससार के साथ किए जानेवाले उन समझौतों में से एक बन जाता है जिन्हें ससार से पार जाने के लिए करना ही पड़ता है। लेकिन सद्भावशून्य कर्तव्य-पालन हमारी वर्तमान असमान स्थिति के साथ एक समझौता है। और कर्तव्य को पुण्य के स्तर तक ऊँचा उठाना इस असमानता की स्थिति को सदा-सदा के लिए एक पावन पद प्रदान कर देता है।

इन शब्दों को साथ मिलाकर नये सामाजिक प्रजातन्त्र से एक छलपूर्ण सन्धि करने का प्रयास किया है। सेवा के आदर्श के पदों के पीछे उसने सामाजिक कार्यों के गौरव को हथियाने की कोशिश की है और वह स्वयं अपने को और ससार को यह विश्वास दिलाने में लगभग सफल भी हुई है की उसकी ईसाई धर्म-वृत्ति में यह आदर्श सदा से ही वर्तमान रहा है। वफादार लोगो से अनुरोध किया जाता है कि वे अपनी सक्रियता को विस्तृत करें। समझा यह जाता है कि अधिक से अधिक व्यक्तियों के साथ भलाई करने से आप सामाजिक बनते हैं। लेकिन, एक स्वतन्त्र रूप में सहयोग करनेवाले और आजादी से पारस्परिक आदान-प्रदान करनेवाले समस्तर व्यक्तियों के समाज का अर्थ देनेवाले 'सामाजिक प्रजातन्त्र' और 'सेवा' को साथ-साथ रखना एक पारिभाषिक विरोध पैदा करना है, क्योंकि जब आप लोगो की सेवा करते हैं या उनके साथ भलाई करते हैं, तो इस प्रकार स्वयं को उनसे असमान बना लेते हैं। आप लोकतान्त्रिक आदर्श का अपमान करते हैं। यदि सेवा बाध्यतापूर्ण है तो वह निम्नकोटि की होती है और आप छोटे बन जाते हैं। यदि वह स्वैच्छिक है तो आपको बड़ा दर्जा मिल जाता है। कुछ भी हो अन्तर सिर्फ अकादमीय ही है। ईसाइयत की पूरी योजना ही मूल्यों की अलट-पलट के द्वारा असमानता के दोषों के निदान का एक चालाक, पर असफल प्रयत्न है। गुलाम दासतापूर्वक नहीं प्रसन्नतापूर्वक सेवा करता है। अर्थात् वह अपने स्वामी को अपना दास बना डालता है। इसीलिए भले ईसाई लोग इस विचारको कभी भूल नहीं पाते कि समाजवाद का अर्थ एक वर्ग की दूसरे पर विजय-मात्र है। आज मजदूर नीचे है, पूजीपति ऊपर है। कल मजदूर ऊपर होगा और पूजीपति नीचे होगा। शक्तिशाली को उसके पद से नीचे खींच लाना और जो निम्नस्तर के हैं उन्हें ऊंचा उठाना ही वह उच्चतम ऊंचाई है जिस तक ईसाई नीति-शास्त्र कभी भी पहुँच पाया है। एक अधिक ऊँची आचार-नीति को, लोकतन्त्रीय नीति को पहचानने में पुरानी पीढ़ी की विफलता ही सब मुसीबतों की जड़ है।

बदनाम विक्टोरियन युग ने, जिसकी यह पुरानी पीढ़ी अभी तक मन ही मन इतनी प्रशंसक है, ईसाई आचार-शास्त्र में निहित व्यक्तिवाद को खूब बढ़ाया है। उसने एक आचार-सहिता भी तैयार की है। यदि नई पीढ़ी ने विद्रोह न किया होता तो उस सहिता ने आधुनिक समाज के सभी नैतिक जाति-भेदों और विषमताओं को सदा के लिए एक आध्यात्मिक सरक्षण दे डाला होता। इस अत्युक्तिपूर्ण आचार-शास्त्र की प्रतिष्ठा जिस प्रोटेस्टेण्ट चर्च में हुई, वह इस नैतिक भ्रष्टाचार की आज भारी कीमत अदा कर रही है। तेजी से कम होती इसकी सदस्य-संख्या यह प्रकट करती है कि मानवीय प्रकृति व्यक्तिगत रूप में संरक्षित किए जाने से एक अकाट्य विरोध रखती है। लोगों का व्यक्तियों के रूप में नहीं, बिलवेड सम्प्रदाय (प्रिय सम्प्रदाय) के सदस्यों के रूप में उद्धार करनेवाला कैथोलिक चर्च फल-फूल रहा है। जब कोई कैथोलिकवाद के द्वारा अनुगृहीत होता है तब वह लोकतन्त्रवादी बन जाता है न कि एक अध्यात्मवादी कपटाचारी, जोकि वह कालविनवाद के माध्यम से बनता है। पुरानी पीढ़ी कभी भी उस उत्कृष्ट वफादारी को नहीं समझ सकती जिसे समाज के प्रति वफादारी कहा जाता है। यह वफादारी कितनी भी विरोधाभासपूर्ण क्यों न प्रतीत हो, एक सच्चे सामाजिक व्यक्तित्व का पोषण उसी अनुपात में यह किया करती है जिसमें व्यक्तिवादी वृत्ति कम होती जाती है। प्रोटेस्टेण्ट चर्च एक डिवाइन मास्टर (दिव्य स्वामी) के व्यक्तिगत आदर्श के प्रति अपनी रूढ़ अनुरक्ति के माध्यम से यही सकेतित करती है कि एक समाजवादी लोकतन्त्र के आदर्शों और नीति-धर्मों से तथा बिलवेड सम्प्रदाय (प्रिय सम्प्रदाय) के अन्तर्गत जिए गए जीवन से वह आज भी कितनी दूर है।

आत्मसम्मान की वृत्ति व्यक्तित्व की वह नींव है जिसकी सुरक्षार्थ ही इस व्यक्तिवादी दर्शन का सावधानीपूर्वक निर्माण किया गया है। ईसाइयत के पुण्य धर्म उन युगों से प्रचलित है जब आज की अपेक्षा नैतिक दृष्टि से खिन्न लोगों की संख्या बहुत बहुत अधिक थी। जो ये पुण्य कर्तव्य ठोस

रूप में बचे रहे हैं, इसके लिए मात्र यही तथ्य जिम्मेदार हो सकता है कि किसी वर्ग-विशेष की नैतिक प्रतिष्ठा के लिए ये मूल्यवान् थे। कर्तव्य, सेवा और बलिदान पर जोर देकर हमारी पुरानी पीढ़ी हमें साफ-साफ बताए दे रही है कि ये स्वार्थ क्या थे। मैं पुरानी पीढ़ी पर जान-बूझकर यह आरोप लगाता हूँ कि उसने एक सुरक्षात्मक कार्यवाही के रूप में इन आदर्शों को संरक्षित किया है और इन्हें बहुत अधिक मजबूत बनाया है। नीतियाँ सदा ही परिस्थिति-विशेष से उत्पन्न होती हैं। वे मानवीय सम्बन्धों के उस एक निश्चित संघटन को व्यक्त करती हैं जिसे कोई वर्ग या गुट बचाए रखना चाहता है। एक नीति-सहिता अथवा आदर्शों का एक समुच्चय सदा ही एक प्रकट सामाजिक गौरव का अप्रकट आध्यात्मिक चिह्न होता है। विषमताओं और परम्पराओं की उस दुनिया में, जिसमें अधिकतम आराम और सम्पन्नता के साथ पुरानी पीढ़ी रह रही है, यथास्थिति बनाए रखने की कोशिश में वह परिवार, चर्च और विद्यालय आदि की अपनी सभी समस्याओं के माध्यम से नई पीढ़ी पर उन्हीं छलपूर्ण आदर्शों की छाप अंकित करना चाहती है जो उसकी स्थिति को सुरक्षित करेंगे। ये पुराने कर्तव्य, जिनके विरुद्ध नई पीढ़ी फिलहाल भी छापामार हमले कर रही है, वे सीधे-सादे नैतिक समर्थन हैं जिनके द्वारा पुरानी पीढ़ी अपनी सामाजिक स्थिति को पुष्टबन्दी कर रही है।

इस प्रकार उन्हीं प्राकृतिक अवरोधों और पूर्वाग्रहों को एक आध्यात्मिक सगति दी जाती है जिनके कारण हमारे पूर्वज एक उन्मुक्त रूप में प्रवहमान प्रजातन्त्र से कट गए हैं। साथ ही इस प्रकार एक उन्मुक्त शान के साथ उनपर अवरोधों को फलाग जाने और आत्मसमर्पण कर देने के बहुत कुछ एक ऐन्द्रिक विलास की सुविधा भी हमारे पूर्वजों को मिल जाती है। लेकिन कीमत तो चुकानी पड़ती है। जिस समाजवादी दर्शन के अनुसार, लाभ, एक वर्ग के दूसरे पर स्थित आर्थिक अधिकार के द्वारा वेतनों में से ही खींचा माना जाता है, उसी प्रकार पुरानी पीढ़ी के पुण्यों को उन अन्य वर्गों के पुण्यों में से ही खींचा जा सकता है जो नैतिक अथवा व्यक्तिगत दृष्टि-

कोण से कम सुविधा-सम्पन्न है। उनका फूला हुआ आत्मसम्मान दूसरों की ही कीमत पर टिकता है।

पुरानी पीढ़ी में उस किस्म के आदमी को कैसे हम पहचान पाएं जिसने अपने पूरे जीवन-भर भलाई के काम किए हो। इनके सहारे उसका व्यक्तित्व किस तरह पनपा है ! अपनी आत्मा की हर दरार में नैतिक शक्ति को कैसे वह अनवरत सगृहीत करता रहा है ! उसकी अच्छाई उसके लिए पुष्टि-दायक बन गई है। स्वयं न महसूस करते हुए भी दूसरे लोगों की जरूरतों और उनके अवसादों की हवा ही वह अपनी सासों में भरता रहा है। उन लोगों के क्षतिपूर्क दुर्भाग्य अथवा पापों की अनुपस्थिति में उसकी अच्छाई कुम्हलाकर सूख जाती और मर जाती। यदि अच्छे लोग ससार को समान रूप से स्वस्थ, साहसी, मुदर और सम्पन्न बनाने में व्यग्रतापूर्वक जुट जाएं तो उनके धन्धे का क्षेत्र लगातार सीमित होता जाएगा और अन्ततः समाप्त हो जाएगा। वे जो इस लक्ष्य को मूलतः दृष्टि में रखनेवाले सभी दर्शनो और आन्दोलनों का इतनी कड़ाई से विरोध करते हैं, यह उस भीषण और ईर्ष्या-दग्ध अहवाद का ही विश्वसनीय प्रमाण है जो उनके युक्तिसंगत-से लगनेवाले परमार्थवादी उत्साह को प्राण देता है। व्यक्ति को सन्देह होने लगता है कि पुरानी पीढ़ी अपने धन्धे को समाप्त होने देना नहीं चाहती। जिन आधारों पर हमारी विशेषताएं टिकी हैं उन्हें नष्ट कर देने के लिए एक प्रकार की विरक्तिपूर्ण भलमनसाहत का सहारा वह लेती है।

तब, यदि मैं पुरानी पीढ़ी के आचार-प्रधान दर्शन का इस आधार पर विरोध करता हूँ कि वह बहुत अधिक व्यक्तिवादी है और परमार्थवाद के मुखौटे के पीछे बहुत अधिक अहवादी है, तो मैं उसकी सामान्य बुद्धिशीलता पर यह आरोप लगाता हूँ कि वह पर्याप्त व्यक्तिनिष्ठ नहीं है। बौद्धिक दृष्टि से पुरानी पीढ़ी एक अत्यन्त स्थावर जीवन जीती प्रतीत होती है। हो सकता है उसका जीवन बहुत ऊँचाइयों पर जिया गया हो, या ये आत्माएं यातनाओं और महिमाओं को भोग चुकी हो, लेकिन इस सापेक्ष तथ्य के निरपेक्ष प्रमाण सामान्यतः बहुत ही कम मौजूद हैं। यदि

अनुभूति का अनुसरण करनेवाली अन्तःप्रज्ञा ने ईश्वर, आत्मा, परिवार आदि, आदि से सम्बन्ध रखनेवाले सभी तथ्यों की जाच-परख कर ली है—यहां मैं इस पीढ़ी के एक घोरतम सरक्षक को ही उद्धृत कर रहा हूँ—तो यह जाच-परख इसीलिए की गई प्रतीत होती है कि उलझनों को तेज़ी से सुलझाया जा सके और उन्हें भुलाया जा सके। निश्चय ही, जीवन की गूढ़-तर समस्याओं में पुरानी पीढ़ी कठिनाई से ही रुचि रखती है। वह मृत्यु के बारे में कभी कुछ नहीं कहती। उसका उल्लेख भी उसे अस्थिर कर देता है। यौन समस्याओं के इशारे पर भी वह आंतकित हो उठती है। लगता है, जितना सम्भव हो सके उतने वस्तुनिष्ठ स्तर पर जीवन को बनाए रखने के लिए वह कृतसंकल्प है। लोगों के उद्देश्यों और उनकी भावनाओं के प्रति उसमें कोई उत्सुकता नहीं है। लगता है, मनोवैज्ञानिक दृष्टि की उसमें अनोखी कमी है। जब वह बातें करती है तो कार्यों और प्रभावों की बस गिनती करती है, उनके अर्थ वह कठिनाई से ही लगाना चाहती है। मानव-प्राणियों को पुष्ट क्षमता से पूर्ण व्यक्तियों के अथवा आत्यन्तिक रूप में रोचक सामाजिक मुद्दों के रूप में समझने के बदले (जैसा कि मेरा विश्वास है, नई पीढ़ी करती है) पुरानी पीढ़ी उन्हें भौतिक पदार्थों के एक चलते-फिरते समूह के रूप में ही समझना अधिकाधिक चाहती है।

लगता है, पुरानी पीढ़ी अब सामान्यीकरण विलकुल नहीं करती, यद्यपि इस बात के पूरे प्रमाण हैं कि कभी इसने बड़ी अधिकता के साथ सामान्यीकरण किया था। बात यह है कि इसका ससार अब रूढ़ और निर्धारित हो चुका है। लोग अच्छे हैं और अपराधी हैं, और गरीब हैं; और वे लोग हैं जिन्हें बढ़िया कहा जाता है और साधारण भी है। ससार पहले से ही विभाजित है (मुझे निश्चय हो चुका है कि सच्चे दार्शनिक व्यक्तियों द्वारा किया हुआ सामान्यीकरण बड़ा ही तरल और अस्थायी होता है। वह किया नहीं गया कि दिमाग ने उसकी अपूर्णता को देख नहीं लिया और उसे भंग कर देना पड़ा। एक नया परिवर्तन लाया गया लेकिन उसे भी बदला गया और और नया क्रम स्थापित किया गया। इस प्रकार दार्शनिक लगातार

सोचता ही रहता है और उसकी दुनिया एक बड़ी ही अनिश्चित चीज़ बन जाती है। लेकिन कम से कम रूढ़ बनने का खतरा वह नहीं उठाता और अधिकतम अनुभवों के प्रति उसकी आखें खुली रहती है।

अक्सर इस तथ्य ने मुझे प्रभावित किया है कि पुरानी पीढ़ी की सोचने की शक्ति थक चुकी है। अपनी बुद्धि की दुकान का द्वार जैसे उसने बन्द कर दिया है और वह आराम करने के लिए घर चली गई है। हो सकता है ऐसा इसलिए हो कि उसने इतना अधिक दुःख भेला है कि वह दुःख के बारे में बातें करना नहीं चाहती, अथवा इतना अधिक प्यार किया है कि प्रेम की व्याख्या करने से वह उकताती है, अथवा भाग्य की इतनी क्रूर चोटे उसने सही है कि भाग्य के बारे में कुछ कहने में उसे रुचि नहीं रही है। हो सकता है उसकी लौ इसीलिए झुकी हुई हो क्योंकि वह बहुत तेजी से जल चुकी है। लेकिन नई पीढ़ी में कितने लोग ऐसे हैं जो इस ढंग की व्याख्याओं की, यदि पुरानी पीढ़ी उन्हें प्रस्तुत करने को तैयार हो, तो उत्कंठापूर्वक कामना करेंगे। और वह अनुभव, जिसकी समय-समय पर व्याख्याएं करनी पड़ती हैं, कितना कम सगत लगता है। उत्साह, विचारों की लालसा, ऐन्द्रिकता, धार्मिक जोश—ये सब तीखे हथियार जिनसे नई पीढ़ी ससार पर आक्रमण करती है, पुरानी पीढ़ी को बस अस्थिर ही बना पाते हैं। जीवन के साथ समझौता करने की प्रवृत्ति ने स्वयं जीवन को ही नष्ट कर डाला है।

जब मैं पुरानी पीढ़ी को अपने दैनिक धन्धों पर, व्यापार, गिरजाघर अथवा पारिवारिक कामों के लिए जाते देखता हूं तो यह अनुभव किए बिना मैं नहीं रह सकता कि इसका प्रभाव बड़ा ही खतरनाक है। यह अपनी संस्थाओं को समय के विशालतर आयामों के अनुरूप विस्तृत करने में स्पष्ट ही विफल हो चुकी है। गिरजाघर सुविधा-सम्पन्न मध्यवर्गीय परिवारों का एक निजी क्लब बन गया है। उससे अलग सम्बन्धों, नीवों अथवा सिद्धान्तों से शून्य लोगों की एक पचमेल भीड़ किसी भी आध्यात्मिक प्रेरणा के बिना ही पनप रही है। गांव से बदलकर कस्बा और उससे

एक औद्योगिक केन्द्र बन जाता है। पर गिरजाधर और स्कूल अपनी काल-प्रतिष्ठित निरीह हलचलों में डूबे रहते हैं। संसार फैलता है; समाज विस्तृत होता है, विकट सकट प्रकट होते हैं; पर पुरानी पीढ़ी उदार नहीं बनती। यदि वह बनती भी है तो यह उदारता हमारी आवश्यकताओं के अनुपात में काफी नहीं होती। पुरानी पीढ़ी अभी तक नई समस्याओं के लिए पुराने विचारों का ही प्रयोग करती है। कैसी भी नई शराब उसे क्यों न मिले, वह उसे पुरानी बोतलों में ही भर लेना चाहती है।

अमरीका की पुरानी पीढ़ी में वैसे नेता कहा है जो अपनी तेजस्वी आस्था और बुद्धि के द्वारा आदर्शवादी युवकों की एक बिखरी हुई सख्या को उसी प्रकार अपने चारों ओर इकट्ठा कर ले जैसेकि बर्गसन^१ और बाररे^२, और जौरे^३ ने फ्रांस में किया है। कुछ वर्ष पहले विशेषाधिकार-विरोधी एक युद्ध के कुछ मोर्चाबन्द योद्धाओं के नेतृत्व में लोकतन्त्र के लिए एक प्रगतिशील आन्दोलन की सम्भावनाएँ सामने आई थीं। लेकिन पुरानी पीढ़ी इस प्रयास से कितनी जल्द उकता गई ! उस चमचमाती सेना और उसके नेता का आज क्या बाकी बचा है ? क्या नई पीढ़ी को उसके सकेत की अनन्तकाल तक प्रतीक्षा करनी होगी ?

स्पष्ट है कि वह प्रतीक्षा नहीं करेगी। अपने आदर्शों और क्रान्तिकारी दृष्टिकोणों को कार्यरूप देने के विशाल बोझ को, उसे, उसी प्रकार पूर्ण मनोयोग और सफलतापूर्वक अपने कंधों पर उठाना होगा जिस प्रकार हमारे पड़दादाओं ने अपने आदर्शों को व्यवहार-रूप दिया था और उस जीवन-दर्शन को निर्धारित किया था जिसमें पुरानी पीढ़ी आज तक कैद है। कहीं हम क्लान्त, आत्मतुष्ट और टालमटोल करनेवाले न बन जाए—यह गहरा डर ही रूढ़ता को रोकने का सर्वोत्तम उपाय बनना

१. फ्रान्सीसी दार्शनिक (१८५६-१९४१)।

२. फ्रान्सीसी उपन्यासकार (१८६२-१९२३)।

३. फ्रान्सीसी समाजवादी (१८५६-१९१४)।

चाहिए । हमें कभी इस चमत्कार की आशा नहीं करनी चाहिए कि जैसे हमसे पुरानी पीढी ने हमें दबाया और विच्छिन्न किया है, उसी प्रकार अपनी 'नई पीढी' को उदार, प्रसन्न और विशुद्ध बनाने का कर्तव्य भी हमारे ही हिस्से में आया है ।

अवकाश

इविन एडमैन

अवकाश

किसी सभ्यता के बढियापन की सर्वोत्तम कसौटी है उसके अवकाश का उत्तम उपयोग। किसी राष्ट्र के नागरिकों को आवश्यकता के समय जो कुछ करना पड़ता है वह नहीं, बल्कि जो कुछ वे तब करते हैं जब अपनी इच्छा से कुछ कर सकते हैं—यही एक जाति की जीवनी-शक्ति का माप-दण्ड है। आनन्द के लिए जिन वस्तुओं और कौतुकों के प्रति व्यक्ति सहज रूप में उन्मुख होता है, उनका अध्ययन करके कोई भी उसके बारे में बहुत कुछ बता सकता है। यही बात एक जाति के बारे में भी कही जा सकती है। मैक्सिम गोर्की ने कोनी द्वीप देखने के बाद एक बड़ी अर्थपूर्ण बात कही थी, “जो लोग खुशी प्राप्त करने यहाँ आते हैं, कितना दुःखी उन्हें होना चाहिए।” अमरीकी सभ्यता की जो सबसे गम्भीर आलोचना की जाती है वह यह नहीं है कि उसकी सक्रियता सिक्काबन्द है और उसका वाणिज्य सबको अपने में डुबा लेनेवाला है, बल्कि यह कि उसके मनोरंजन यन्त्रवत् है और उसका अवकाश दासतापूर्ण है। बात यह नहीं कि हमारे पास समय नहीं है। अमरीकनों की लगातार बढ़ती हुई सख्या को जितना अधिकाधिक खाली समय सुलभ है उसे देखकर विदेशी पर्यवेक्षक बार-बार आश्चर्य प्रकट करते हैं। हमारे पास समय की नहीं, अवकाश की कमी है।

अवकाश वास्तव में सिर्फ घड़ी की सुइयों का नहीं, मनोभाव और वातावरण का विषय अधिक है। वह एक क्रमबद्ध घटना नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक स्थिति है। वह व्यक्ति का अपनी निजी उमंगों से भरकर बिना जल्दबाजी किए आनन्दपूर्वक जीना है। अवकाश हमारे जीवन में आए उन विरामों से मिलकर बनता है जिनमें उत्तेजना और विश्रान्ति का

मिश्रण हमारी अनुभूति का विषय बन जाता है। वास्तविक अवकाश तत्काल ही हमें एक जीवन्तता और शान्ति की अनुभूति प्रदान करता है। यह उन क्षणों से निर्मित होता है, जो अपने में इतने स्पष्ट और सुखकर होते हैं कि व्यक्ति उनका शाश्वत बन जाना चाहने लगता है।

ऐसे अनुभवों के सर्वोत्तम रूपाभास और स्मृतियाँ कम से कम घूमे-फिरे अमरीकनों को तो विदेशों से मिल जाएगी। किसीके लिए यह, ससेक्स अथवा सरी मे घास के किसी मैदान में चाय पीते हुए हुई प्रासंगिक बातचीत की एक भावपूर्ण याद होगी। अन्य के लिए यह पेरिस के किसी राजमार्ग पर खुले में पड़ी मेज़ पर बैठकर काफी और शराब पीते हुए गप-शप करने वाले दो मित्रों की मूरत होगी। कोई अन्य किसी इतालवी चौक की सैर को अथवा लन्दन की किसी क्लब में बीती सन्ध्या की प्रतिष्ठित शान्ति को याद करेगा।

यह बात नहीं कि अवकाश की विशिष्टता रखनेवाले उन क्षणों को, जो शायद अमरीकी वातावरण से लगभग निष्कासित-से प्रतीत होते हैं, घरेलू जीवन में नहीं पाया जा सकता। कितने ही मध्य-आयु के अमरीकन, सामाजिक और कारोबारी अथवा जीविका-सम्बन्धी जिम्मेदारियों की भीड़ के बीच भी किसी ऐसे अमूल्य अवसर को स्मृति में ला सकते हैं जो अपनी स्वर्णिम निःशुल्क असम्बद्धता को ध्यान में रखते हुए काल के क्षेत्र से नहीं, बल्कि शाश्वतता की निश्चिन्त दीर्घता से लिया गया प्रतीत होगा। दोपहर बाद किसी पुस्तकालय की पुस्तकों में निरुद्देश्य मन बहलाना अथवा समय या गन्तव्य स्थल का विचार किए बिना किसी अपरिचित ग्रामीण सड़क के शान्त घुमावों में खो जाना। व्यक्ति उन बातचीतों को याद कर सकता है जो रात्रि के भोजन के बाद हौले से शुरू हो गईं और धुएं के छल्लों के साथ चक्कर खाती हुई अप्रत्याशित गहनताओं और व्यग्रताओं में तब तक उतरती चली गईं जब तक अनजाने ही आधी रात से अधिक समय नहीं बीत गया। अविश्वसनीय रूप में सुदूर, किसी एक वर्ष की एक बात याद आ सकती है, जब व्यक्ति एक पत्र लिखता चला गया, लिखता

चला गया, जैसेकि स्याही, कागज और विचार कभी भी समाप्त नहीं होंगे ।

लेकिन अमरीकनो के लिए यह शब्द 'अवकाश' विशिष्टतः पुरानी दुनिया के सम्बन्धों का संकेत देता है । अशत ऐसा इसलिए है क्योंकि कुछ अमरीकनो ने वही उसे सर्वोत्तम रूप में पाया था । स्वदेश के अपने सामान्य धन्धों के दबावों और उनकी विवशताओं से कटकर, आज्ञादी से एक अवकाशप्राप्त परम्परा की शान-शौकत में तब वे जा पहुँचे थे । लेकिन यूरोपियन और हमारी अपनी परम्पराओं के बीच इस मुकाबले के नीचे एक गूढ़तर कारण निहित है । यूरोप में अवकाश के विशिष्ट रूप का आधार अशत तो अवकाशप्राप्त वर्ग की लम्बी परम्परा की विरासत है और अशत है उन लोगों का धैर्य जिनमें युग की समझ है और जो नवीन की ओर भागने और जल्दबाजी के साथ सम्भव का निर्माण करने की इच्छा से आक्रान्त नहीं है । मूलतः, और प्रेरणा की दृष्टि से, अशत अग्रसर हमारी अपनी सम्यता में अवकाशप्राप्त वर्ग की अपेक्षा एक श्रमिक वर्ग की परम्परा अधिक निहित है । व्यस्तता का प्रभाव और वातावरण हमारे जीवन को उस समय भी नियन्त्रित करता है जब हम काम में लगे नहीं होते । व्यस्त रहना हमारा एक आरम्भिक गुण बन गया है और हमारे खेलों को भी एक प्रकार की व्यस्तता का रूप धरकर ही अपना स्थान बनाना पड़ता है ।

काफी वर्ष हुए प्रोफ़ेसर वेबलन ने अपने 'अवकाशप्राप्त वर्ग का सिद्धान्त' में यह बताने का प्रयत्न किया था कि एक अवकाशप्राप्त वर्ग की परम्पराओं और उसके हितों ने किस प्रकार हमारी रुचियों और नीतियों को निर्मित किया है । पर हमारी सम्यता में तो अवकाश की उपयोगिता को हमारी कार्य-सम्बन्धी परम्पराओं ने ही निर्धारित किया है । इस विचारणा को लेकर एक काफी बड़ा ग्रन्थ लिखा जा सकता है । एक अनिवार्यत औद्योगिक, अनिवार्यत कारोबारी सम्यता की नैतिकता को और आदर्शों को हम अपने खेलों में भी ले आते हैं । वस्तुओं और कार्यों में, सिर्फ़ उन्हें ही दृष्टि में भरकर शान्त और उन्मुक्त भाव में डूब रहना ही अवकाश है और

यह हमें सदा ही स्त्रियोचित और विदेशी लगा है। अवकाश को हम आराम के लिए, उन्मुक्ति के लिए, पलायन के लिए, शिक्षा के लिए, उद्बोधन अथवा प्रगति के लिए चाहते हैं। वे क्षण जो स्वयं अपने में अच्छे हैं, हमें कुछ अनैतिक से लगते हैं। ससार में शायद कोई अन्य देश ऐसा नहीं है जहाँ निष्क्रियता एक घोर पाप मानी जाती हो।

इसलिए हमारे लिए अवकाश आत्मसुधार की दिशा में एक उत्तेजक सुख से भरा पलायन बन गया है। रात्रि-क्लबों और सस्कृति की रूपा-कृतियों के बीच हम भूलते रहते हैं। हममें प्रत्येक ही कभी न कभी सकल्प-पूर्वक आनन्दित किसी न किसी दल में शामिल हुआ ही होगा। उसने देखा होगा कि सामान्यतया शान्त और समझदार लोग कैसे चाहपूर्वक शोर-शराबा और बेहूदा आचरण करने लगते हैं। उसने देखा होगा कि स्त्री-पुरुष जो अलग में बड़े ही आनन्दपूर्ण और मनोरंजक थे, कैसे शोर मचा-मचाकर कुलाचे भरते हैं, भद्दी बातें चीख-चीखकर कहते हैं और 'युग के बड़े-बूढ़े बच्चों' की तरह व्यवहार करते हैं। उस व्यक्ति की पीड़ा यह अनुभव करके बढ़ गई होगी कि ये लोग जो भी ऊल-जलूल कर रहे थे, उसके प्रति इनमें कोई भी विशेष उत्साह नहीं था। जितना वे दरअसल चाहते हैं उससे अधिक शराब उन्होंने पी और उबकाई लानेवाली ऐसी बेहूदगियां बकी, जिनसे वे स्वयं घृणा करते हैं।

इसी प्रकार प्रत्येक ने ही खाने पर अथवा उसके बाद लोगों के एक दल को फैशन की पुस्तको, नाटको और विचारों के बारे में बातें करते हुए अनिवार्य उकताहट के साथ सुना होगा। सहजोद्रेक, जो किसी भी सच्चे आध्यात्मिक जीवन का सार तत्त्व है, बातचीत में से भी और खिडकी में से भी तब उड़ भागता है जब सस्कृत आचरण सुनियोजित बन जाता है। हम ऐसे भारीपन के साथ गम्भीर बनने का आचरण करते हैं जैसेकि हमने बेहूदा बनना तय कर लिया हो। मूर्खता और मौत के मातम के बीच कोई मध्य मार्ग हमने बनाया ही नहीं है।

एक बढ़ते जाते मशीनी जीवन के दबाव से भागकर उत्तेजना अथवा

क्षुद्रता मे जब-तब फूट पड़ने के विषय पर अभी बहुत कुछ कहा जाना है । कम से कम इतना उसके पक्ष में कहा जा सकता है कि वह उस दुनिया का नैसर्गिक, शायद जरूरी सहारा है, जिसके अत्यन्त व्यस्त दिन अन्यथा असह्य बन जाऐगे । जो कठोर और निकुचित जीवन हम बिताते हैं, उसपर यह शायद एक दु खपूर्ण टिप्पणी है कि हमें शान्ति के लिए अस्वाभाविक और सारहीन मार्ग खोजने पड़ते हैं । लेकिन ऐसी सामान्य दिनचर्याओवाली दुनिया में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि हम अक्सर सारहीन जलसो के ऊल-जलूल शोर में अपने को डुबा देते हैं, चित्रपट की भद्दी करुणाओ और उल्लासो मे लोट-पोट होते हैं अथवा बेतुकी पहेलियो और नीरस खेलों की निरन्तर सनक के सम्मोहित शिकार बन जाते हैं । पर रस अथवा संगीत से रहित सगीतमय सुखान्त नाटको मे और मानवता अथवा विचारो से शून्य सान्ध्य बातचीतो मे हमारे बिचन जाने को क्षमा किया जा सकता है । आज का नागरिक अपने समय के फीके अनुत्तेजक दबाव से इतना तग है कि वह स्वय इसका अनुमान नहीं कर सकता । स्वाभाविक है कि वह जब-तब उस अवसर की लालसा करता है जब वह क्षुद्र, उत्तरदायित्वहीन और बेहूदा बन सके ।

लेकिन हमारी स्थिति का उपहास इस तथ्य मे निहित है कि जब भी हम क्षुद्रता अथवा मूर्खता मे पलायन की कोशिश करते हैं, तभी इसे भी एक गम्भीर और सिक्काबन्द धन्धा बना लेते हैं । एक गम्भीर सम्यता में जब-तब का पागलपन क्षम्य है । लेकिन पागलपन को गम्भीरता के साथ दिन-चर्या बना लेना एक करुण, लगभग भयावह चीज है । अर्ध-मदोन्मत्त उल्लास, जो आज के अधिक सम्मानित सामाजिक जीवन का एक अनुषंग बन गया है, एक विषादपूर्ण सकल्पित धन्धा है । शराब और विलास से पूर्ण नैशोत्सव एक सामाजिक बाध्यता बन गए हैं । अपव्यय ने थके हुए, मलीन और अनुल्लसित लोगो के लिए एक नुसखे का रूप ले लिया है । कोई नया खेल खेलना अथवा कोई नया मज्जा लेना वैसे ही एक सामाजिक मजबूरी है जैसे कोई नई पुस्तक पढना अथवा एक चालू कालर अथवा हैट पहनना ।

कितने ही 'बढिया' लोग मौकों पर नियमित ढंग से हलके, मूर्ख अथवा पागल बन जाते हैं। यह ऐसा है जैसे कि अमरीकी लोग जब चाहते हैं तब कुशल बने बिना नहीं रह पाते और उसी पूर्णता और तनावपूर्ण शक्ति के साथ वे प्रफुल्ल अथवा हलके अथवा उन्मत्त भी बन लेते हैं जिससे कोई काराबोर अथवा गगनचुम्बी भवन खड़ा करते हैं।

हमारी इस गम्भीर कुशलता के सिवाय अन्य कारण भी है जो स्वयं को मनोरंजित करने के हमारे प्रयासों को नीरस सिक्काबन्द साधारणताओं में बदल देते हैं। जो शक्तियाँ हमारी आवश्यकताओं को पूरा करनेवाले बड़े उद्योगों में नियुक्त हैं, वही हमें मनोरंजन प्रदान करनेवाले बड़े कारोबारों में लगी हैं। व्यक्ति चाहे तो रेडियो की सम्भावनाओं का सुन्दर सगीत एवं विशिष्ट विचारों के सार्वभौमीकरण का आकर्षक ढंग से चित्र कर सकता है। वह चाहे तो चलचित्रों की सम्भावित उच्चकला के बारे में बातें कर सकता है और फोनोग्राफ की नई यान्त्रिक पूर्णताओं पर विस्मय प्रकट कर सकता है और यह सब वह करेगा ही। पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि अपने सर्वोत्तम रूप में भी ये सब हैं तो यन्त्र ही। हमारे अवकाश को ये एक सिक्काबन्द औसत मनोरंजन की निश्चेष्ट उपलब्धि में बदल देते हैं। व्यक्तिगत जीवन के उस सहज अहसास का एक अंश भी ये प्रदान नहीं करते, जो अवकाशप्रद आराम और उत्तेजना का एक अंश है। यह जानकर सुख नहीं मिलता कि हमारा अवकाश शेष लोगों के जीवन के वर्ण अथवा उसकी वर्णहीनता को ग्रहण कर रहा है, कि कामों की तरह ही खेलों में भी हम रुढ़ सिक्के बनते जा रहे हैं। औद्योगिक क्रान्ति का सबसे गम्भीर आध्यात्मिक खतरा यही है कि न सिर्फ चीजों को बल्कि चेतना को भी वह यान्त्रिक और औद्योगिक बनाने की ओर प्रवृत्त है।

जब कोई व्यक्ति अवकाश में होता है तब हम कहना चाहते हैं कि वह आत्मरूप बनने के लिए मुक्त है। लेकिन यदि उसकी मुक्ति यही है कि वह निर्धारित नियमों के अनुसार स्वयं को कुशलतापूर्वक मनोरंजित करे अथवा सिक्काबन्द मनोरंजनों के निश्चेष्ट उपभोग के लिए स्वयं को अनु-

शासित करे, तो यह सब मुक्त होना नहीं है।

लेकिन अवकाश जहां एक दिशा में परम्परागत मनोरंजन और रूढ़ क्षुद्रताओं की ओर बढ़ गया है वहां दूसरी दिशा में वह एक प्रकार के श्रेष्ठ अतिरिक्त कार्य का रूप ग्रहण कर गया है। सबसे नया इस्तेमाल जो अवकाश का हमने किया है, वह है उसे लाभदायक बनाना। उसकी लाभ-प्रदता जो यही मानी जा सकती थी कि वह स्वयं अपने में एक चीज है, अब एक नियमबद्ध आत्मसुधार का साधन बनने की उसकी सम्भावनाओं में बदल गई है। पत्रों द्वारा शिक्षा, ज्ञान की रूपरेखाएं, शिक्षा के गुटके आदि कितने ही सूत्र हैं जो सदा नि स्वार्थ न रहकर हमें यह सिखाने की कोशिश करते रहते हैं कि यदि हम अपने मुक्त क्षणों का उपयोग करना चाहे तो उनका क्या उपयोग करें। सुरापान थोड़ा कम करें और ब्रिज का खेल भी थोड़ा कम खेलें और लीजिए हम पूरी पश्चिमी सस्कृति के उत्तराधिकारी अथवा दर्शन में या फ्रांसीसी भाषा में कुशल बन सकते हैं। हमारे जीवन के अवकाश-क्षणों को ज्ञान-प्राप्ति में लगाने के लिए जो कारण प्रस्तुत किए जाते हैं उनमें एक रहस्योद्घाटक अयथार्थता रहती है। यह नहीं कि ज्ञान हमें धार्मिक स्थिर और पूर्ण बना देगा, कि वह हमारी कल्पना को पख लगा देगा अथवा हमारे जीवन को एक विशालतर, स्पष्टतर और मधुरतर आयाम प्रदान कर देगा, बल्कि यह कि ज्ञान अथवा उसका ऊपरी छिलका-भर हमें सफल या सम्मानित बनाएगा, कि बीनी हुई फ्रांसीसी भाषा की हलकी-सी पर्त हमारे रक्त का पता दे देगी अथवा दार्शनिकों के नामों की सूची हमारी बौद्धिक जिज्ञासा का प्रमाण प्रस्तुत करेगी। अपनी देसी अमरीकी सस्कृति के खोखलेपन की इससे अधिक साफ सूचना पाना बहुत कठिन है कि किस अविचारपूर्ण भुक्खड़पन के साथ अमरीकी लोग विशिष्ट ज्ञान के गुटका-सस्करणों को गटकते हैं। इसका यह अर्थ दूर-दूर भी नहीं कि हममें ज्ञान के प्रति प्रेम पैदा हो गया है। इसका यही मतलब है कि हमने अपने अवकाश के समय को ज्ञान-प्राप्ति की सक्षिप्त राहें खोजने के द्रुत धन्धे में लगा दिया है। ये रूपरेखाएं सस्कृति को और वाणिज्य को एक

दक्षता प्रदान करने के मार्ग-भर ही है। इनका सार तत्त्व यह कथन ही है कि लीजिए यह है सम्पूर्ण दर्शन अथवा इतिहास अथवा साहित्य, उन लोगों के लिए जिनमें, उनमें से किसी एक के किसी एक कोने को भी निःस्वार्थ आनन्द के साथ खोजने का धैर्य या सहानुभूति नहीं है। सबसे बुरी बात यह हुई है कि इन्होंने अवकाश-क्षणों से उनकी कल्याणदायक शक्ति, यह भाव छीन लिया है कि हम कोई आकर्षक काम सिर्फ काम के अपने आकर्षण के लिए कर रहे हैं।

हमारे बीच कुलीन निराशावादी है जिनका विश्वास है कि खाली समय के उत्तम सहज उपयोग के अर्थों में, अवकाश, अमरीका में लगातार असम्भव बनता जा रहा है। वे पहले कही गई अथवा समान रूप से कष्टकर अन्य सामाजिक आदतों का हवाला देते हैं। सुचालित मोटरो की सर्व-व्यापकता न सिर्फ शब्दशः गति के लिए एक प्रलोभन है, बल्कि आध्यात्मिक मामलों में भी गति के प्रतीक के रूप में टिकी रह गई है। किसी भी काम में, यहां तक कि सत्य की खोज में भी यदि उत्तेजना है तो वह तेज भागने की ही हो सकती है। यही कारण है कि वे हठपूर्वक कहा करते हैं कि यदि कोई देश है जहां विचार इतनी तेजी से जनप्रिय बन जाते हैं, तो वह अमरीका है, और कोई अन्य देश ऐसा नहीं है जहां अर्धगृहीत विचार इतनी शीघ्रता से बासी पड़ जाते हैं और भुला दिए जाते हैं। कोई भी पुस्तक एक महीने के लिए अथवा अधिक से अधिक एक मौसम के लिए ही पुस्तक रहती है। तेजी से पढ़ी जानेवाली जेबी पुस्तकों के लिए लोग बड़ी पुस्तकों का शपथपूर्वक त्याग कर देते हैं और उनकी आलोचनाओं के लिए उनका भी, तथा अलोचनाओं का उन उद्धरणों के सामने उत्सर्ग कर देते हैं जो सकलनात्मक पत्रिकाओं में मिल जाते हैं।

इसकी ओर फिर संकेत किया जाता है और सगत रूप में किया जाता है कि भौतिक विलास-सामग्रियों और भौतिक दिल-बहलावों का बढ़ना प्राणों को उस समग्रता में बाधक है, मात्र जिसमें अवकाश का अस्तित्व सम्भव हो सकता है। गम्भीरता और समग्रता को टेलीफोन से उतना ही

खतरा है जितना गत शताब्दी के किसी भी एक अकेले आविष्कार से हो सकता है। रेडियो, सिनेमाओ और मोटरो की निरन्तर प्रवचना और शोर के कारण सन्ध्याओ में लम्बे शान्त-अवसरों की प्राप्ति लगभग असम्भव बन गई है। एक स्वप्नमय मानसिक तरंग में कल्पना का आरम्भ होता है। दिवास्वप्नों में ध्यान जागता है। हमारे समकालीन नागरिक-संसार में व्यक्ति को वह अवसर लगभग कभी नहीं मिल सकता जब वह उस अर्ध-तन्द्रिल निस्सगता को प्राप्त कर ले जिसमें तरंग और दिवास्वप्न का आरम्भ होता है। हम इतने अधिक जाग्रत् रखे जाते हैं कि वास्तव में शान्त और विचारमग्न कभी हो ही नहीं पाते। अन्त में उस देश में जहाँ सीमाहीन अवसरों की चमक-दमक अब भी वर्तमान है, प्रथम स्थान पाने की लालसा उस स्वच्छन्दता और निस्सगता को लगभग असम्भव बना देती है जो एक अन्त प्रेरणा का अनुगमन स्वयं उसके स्वप्नदायी आनन्द के लिए करने की छूट दे दे।

गति की इच्छा, विलास-साधनों की लालसा और प्रथम स्थान की कामना—ये तीन वस्तुतः अवकाश के घातक शत्रु हैं। अमरीकी जीवन की वर्तमान गति-विधि में इन्हें क्रान्तिकारी रूप में वशीभूत कर पाने की सम्भावना अधिक नहीं है। लेकिन हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन आने के पूर्व-लक्षण मौजूद हैं और ये हमारे आचरण में क्रान्तिकारी हेर-फेर के सूचक हैं।

निरन्तर बहुसंख्यक अमरीकनो में एक शान्त और त्वराहीन जीवन की भूख के प्रमाण अधिकाधिक बढ़ रहे हैं। कोई भी टेलीफोन अथवा मोटर को समाप्त नहीं कर सकता, न ही करेगा। एक काल-भ्रमात्मक स्वर्ग के लिए आगे भरने का कोई लाभ नहीं। बीसवीं सदी के न्यूयार्क के जीवन को अठारहवीं सदी के केण्ट-स्थित मठ की शान्ति में बदल देना असम्भव है। एक पश्चिमी विश्व नगर के शीतकालीन शोर और हलचल में कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता कि वह एक पूर्वीय उष्ण कटि-बन्धीय द्वीप की कालशून्य निस्सगता में रह रहा है।

लेकिन हमारी कठिनाई का एक अंश हमारी परिस्थितियों की असम्भवता में नहीं, बल्कि हमारे अन्धेपन में निहित है। यदि अपने जीवन में शान्त अवसरो की कीमत को हम एक बार फिर पहचान ले, तो उन्हें प्राप्त करने का मार्ग हम खोज ही सकते हैं। न्यूयार्क अथवा शिकागो में भी ऐसे अवसर, तथा भीड़ में भी अकेलापन पाया जा सकता है। थोरो की तरह एकाकीपन की साधना के लिए उजाड़ जंगल में अथवा बुद्ध की तरह समाधि लगाने के लिए रेगिस्तान में जाने की जरूरत नहीं है। नगर के एक कमरे में भी शान्ति मिल सकती है, यदि कोई उसे पाने के लिए किसी एक सन्ध्या समय घर पर ही ठहरे। घर पर भी स्वयं अपने मन के भीतर निर्वाण को प्राप्त किया जा सकता है।

अतः, अवकाश की कमी आध्यात्मिक गठन की कमी है। हम सग-साथ की तरफ भागते हैं, भले ही वह कितना भी नीरस क्यों न हो; क्योंकि अकेलेपन में और भी अधिक नीरसता का डर हमें खाता है। हम शारीरिक और आत्मिक दोनों दृष्टियों से भीषणतम गति के साथ खडबडाते दौड़ते हैं क्योंकि हमें डर लगता है कि धीमा पड़ने पर एक शुष्कता और व्यर्थता का अनुभव हम करेंगे। काफी सख्या में लोग इस स्थिति के प्रति अचानक सचेत और अपने प्रति ईमानदार बनने जा रहे हैं और उन्होंने अहसास करना शुरू कर दिया है कि यदि व्यक्ति को अपने निजी साधनों में विश्वास हो जाए तो काफी अवकाश वह प्राप्त कर पा सकता है। व्यक्ति को एक सिक्का-बन्द आनन्द देनेवाली सामाजिक सन्ध्याओं की दैनंदिन व्यस्तता में अपने जीवन के खरपचे उड़ा डालने की जरूरत नहीं है। अमरीकनो द्वारा एकान्त की फिर से खोज की जा रही है और इस पुनरान्वेषण के साथ कितनी ही अन्य आनन्दप्रद चीजें भी प्राप्त हो रही हैं कुछ भी न करने का यहाँ तक, कि बात भी न करने का अवसर, और उस अन्तराल में एक कल्पना के पीछे भागने का अथवा एक सपने के चिन्तन का अवसर। कितने ही अच्छे नागरिक, यदि किसी सन्ध्या में अकेले रहने का एक भी मौका पा लें तो पहली बार उन्हें अपने चरित्र के विशिष्ट गुणों का, रुचि और स्वाद की उन

सीमा-रेखाओं का अहसास हो जाए जो उन्हें एक व्यक्तित्व और साथ ही एक कर्मचारी और करदाता बनाती है। ऐसे एक मध्यावकाश में व्यक्ति किसी उस शौक को चीन्ह सकता है जो उसके लिए सृजनात्मक कौशल का स्थानापन्न बन जाए। वह भले ही चित्र न बना सके, लिख न सके अथवा कविता न कर सके, पर शायद वह कुछ ऐसा सीख सके जिसे वह निश्चय ही स्वयमेव कर सके और जिसे विश्वासपूर्वक अपना निजी बना सके।

लेकिन अवकाश के स्वर्णिम युग में, रिनैसा के त्रुले और शानदार समाज में अथवा अग्रेजी ग्रामीण घरों में स्पष्ट है कि स्त्री-पुरुष अन्य लोगों की प्रेरणाओं से दूर अपनी ही आत्माओं में जाकर नहीं छुप जाते थे। निश्चय ही अच्छी बातचीत अवकाश के आनन्द का सबसे स्फूर्तिदायक साधन है। और अच्छी बातचीत गम्भीरता और भौंडेपन के बीच की एक चीज़ है। कुछ समय से अमरीका में हमें, 'विषयो' पर गम्भीरता और योजना-पूर्वक बातचीत करने के और वह बकवास करते फिरने के बीच, जिसे बातचीत के सिवाय कुछ भी कहा जा सकता है, एक चीज़ चुननी पड़ रही है। मैं समझता हूँ हम बातचीत करने के, सामान्य मानवीय विषयों पर दिमागों और मिज़ाजों की एक हलकी सहज क्रीड़ा के, रस को प्राप्त करना फिर से सीख रहे हैं। हम उस बातचीत से थोड़ा थक चले हैं जो पूरी एकदम प्रखर और चमचमाती-सी होती है। हम उस बातचीत से भी थक गए हैं जो ऐसी लगती है जैसे कि वह किसी साहित्य-गोष्ठी के कार्यक्रम का फालतू स्राव हो। हम फिर से सीख रहे हैं कि दिमागों और मिज़ाजों का मिलन मानव-समाज का एक मधुरतम और रोचकतम सुफल है। इसकी अपनी नूतनताएं और उत्तेजनाएँ होती हैं जो मोटर, रेडियो और ब्रिज से कम नहीं होती।

लेकिन ये अन्तिम तीन अवकाश के शुद्ध स्वर्ण के रूप में अपना विशेष निजी मूल्य रखते हैं। यहाँ तक कि गति के पागलपन में भी किंचित् कविता मौजूद है। किसी चादनी रात में एक ग्रामीण सड़क पर जिसने तेज़ दौड़ लगाई हो वही गति की सहजता और स्वच्छन्दता में छुपी शुद्ध काव्यात्मक अपील से इन्कार नहीं कर सकता। जैसा कि पहले कभी सम्भव नहीं था,

मोटर ने एक अधिक शान्तिपूर्ण किस्म के अवकाश को सम्भव बना दिया है। मोटर, हरियाली और एकान्त की सीधी पहुँच में नगरवासी को ले आई है। इसने उन्हें अनिच्छुक संन्यासियों का पड़ोसी बना दिया है। अपने भौड़े संगीत की चीख-पुकार के बावजूद रेडियो लावों लोगो को, पहले अप्राप्य संगीत-सौन्दर्य के घेरे में खींच लाया है। वह बीथोवन को उन किसानों और उन खोलीवालो के पास ले गया है जिन्हें कारनेगी हाल तक कभी भी खींचकर नहीं ले जाया जा सकता था। सुसंस्कृत नीतिवादी के सशय के विषय ब्रिज का भी अपना निजी पक्ष मौजूद है। यह दिमाग के लिए एक बटाव है और हानिरहित साहसिक क्रीडा है और इसके पास अपने भक्तों के लिए आश्चर्य, सघर्ष और विस्मय के निजी वरदान है। यदि ये चीजें अन्ततः बातचीत की अपेक्षा कम रोचक हैं तो इसीलिए क्योंकि हम पराधीन मशीने होने के बदले सामाजिक मस्तिष्क हैं।

पर्याप्त विरोधाभास की बात है कि अवकाश के प्रति हमारे कुशल अर्घ्य में एक अविश्वसनीय रूमानीपन है। हम किसी आरम्भिक उन्नीसवीं सदी के जर्मन कवि की तरह आनन्द के नील पुष्प को पर्वतों के उस पार ही खोजने के लिए सदा पागल रहते हैं। यही कारण है कि हम अपनी श्रम-शून्यता को उतना आनन्ददायक नहीं समझ पाते जितनी कि वह है। हम उसे उस प्रसन्नता का साधन मात्र बनाने की कोशिश करते हैं जो हमारे लिए शायद वह लाए। हमारी परिधि में पूर्ण ज्ञान को अथवा हमारी गोदी में खूब सारे धन को शायद वह ले आए। इसी कारण तो हम ज्ञान की रूप-रेखाओं और सफलता-प्राप्ति के तरीकों की तरफ मुड़े हैं। लेकिन यहाँ भी स्वर में एक परिवर्तन लक्षणीय है।

प्रत्येक जानता है कि ऐसे लोग हैं जिन्होंने यह आश्चर्यजनक और आनन्दप्रद खोज की है कि यदि शीघ्रता से सर्वज्ञ बन जाना नहीं तो कम से कम ज्ञान के अथवा किसी छोटी-सी शिल्पकारी अथवा कला के नन्हे-से क्षेत्र में धैर्यपूर्वक कुशल बनना जरूर सम्भव है। मानवता के पूरे अस्पष्ट इतिहास को जानना न सरल है, न विशेष रूप से सुखकर; लेकिन अमरीकी इतिहास

के एक काल अथवा एक दशाब्द को अथवा एक आदमी की कहानी को अथवा एक आन्दोलन को खुशी-खुशी जान लेना सम्भव है। सिर्फ कोई अस्सी वर्षीय प्रतिभा ही पूरे समकालीन साहित्य पर अधिकार कर सकती है। लेकिन कोई भी व्यक्ति पद्य अथवा गद्य में एक छोटी-सी पगडंडी बना सकता है। एक लेखक एक शैली, एक विचार को—भले ही वह ट्रोलोप हो अथवा सानेट, ह्वेलिंग अथवा बैलेट—अपना निजी बना सकता है। हर व्यक्ति के लिए कलाकार बनना सम्भव नहीं है। लेकिन लगभग प्रत्येक ही चित्र खीचना या मॉडल बनाना, कोई बाजा बजाना या बगीचा लगाना सीख सकता है। सर्वज्ञ लोग जैसे इंग्लैंड में नहीं मिलते, वैसे ही अमरीका में भी नहीं मिलते। हर गली में कलाकार नहीं रहते। लेकिन हजारों दम्भशून्य वकील अथवा कारोबारी लोग ऐसे हैं जिन्होंने ज्ञान अथवा विचार के किसी परिचित अल्प क्षेत्र को अपना निजी बना लिया है अथवा एक मामूली छोटी-सी हॉबी को अपनाना सीख लिया है।

हम अमरीका के भविष्य के बारे में बहुत सी बातें कर सकते हैं और उसके भाग्य को, उसके शैक्षिक, आर्थिक अथवा राजनीतिक उलट-फेरो को अको में नाप सकते हैं। लेकिन हमारे देश का भविष्य जितना अन्य बातों में निहित है, लगभग उतना ही उसके अवकाश के उपयोग की किस्म में भी है।

तब क्या हम हमेशा मूर्खताओं में और अपने आराम के क्षणों का उपयोग करने के गम्भीर प्रयासों में अदला-बदली करते रहेंगे? अरस्तू की तरह हमारे लिए भी एक स्वर्णिम मध्य मार्ग बनना चाहिए। हमें आज दिन भी सीख लेना चाहिए कि कैसे हम इतनी पर्याप्त शान्ति प्राप्त कर सकें, जिसमें अपने निजी तरीके के अनुसार हम सोच सकें और सपने ले सकें। हमें सीखना चाहिए कि हम हुडदग किए बिना इकट्ठे हो सकें और खुशी मना सकें। हमें अपने कला-प्रेम को खोए बिना कला अथवा विचार अथवा विज्ञान के किसी छोटे-से प्रदेश में कुशल बनना सीख लेना चाहिए। हमें समय को नष्ट करने के बदले उसे जीने के लिए समय निकालना चाहिए।

यदि हम ऐसा करते हैं तो हम सीख सकेंगे कि आध्यात्मिक जीवन का असल अर्थ क्या होता है। क्योंकि अनुभव के उन क्षणों से अधिक इसका कोई अर्थ नहीं, जब हम स्वयं जीने के लिए जीवन की कुछ उन्मुक्त चमक पा सकें, हसी अथवा तर्क अथवा प्रेम की एक सुन्दर, सहज लहक को अनुभव कर सकें।

संघ और उसका नया संविधान

एलेग्जेंडर हैमिल्टन

संघ और उसका नया संविधान

वर्तमान सघीय शासन की अकुशलता के एक अद्वितीय अनुभव के बाद संयुक्त राज्य अमरीका के लिए एक नये संविधान पर विचार करने के लिए आपको निमन्त्रित किया गया है। विषय अपना महत्त्व स्वयं बता रहा है। इसके परिणामों में कम नहीं, स्वयं संघ का अस्तित्व जिनसे संघ बना है, उन हिस्सों की सुरक्षा व उनका कल्याण, और बहुत-सी बातों में ससार के सबसे अधिक रोचक साम्राज्य का भविष्य—इतना सब शामिल है। बार-बार यह बात कही गई है कि इस देश के लोगों के हिस्से में ही यह जिम्मेदारी आई प्रतीत होती है कि वे ही अपने आचरण और उदाहरण के द्वारा इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न का निर्णय करें कि मानव-समाज चिन्तन और चुनाव के माध्यम से अच्छी सरकार स्थापित करने की योग्यता दरअसल रखता है या नहीं। अथवा क्या सदा के लिए यही उसका भाग्य है कि अपनी राजनीतिक सघटनाओं के लिए संयोग और बल-प्रयोग पर ही वह निर्भर करे। यदि इस बात में कोई भी सचाई है तो जिस सकट काल तक हम पहुँच चुके हैं, इसे उचित ही वह अवसर माना जा सकता है जब इस विषय का निर्णय किया ही जाना है। इस प्रकार यदि हम अपनी भूमिका का गलत चुनाव कर बैठेंगे तो यह बात, मानव-मात्र का सामान्य दुर्भाग्य समझी जाएगी।

यह धारणा विश्व-बन्धुत्व की प्रेरणाओं को देश-भक्ति के प्रलोभनों के साथ एकनिष्ठ कर देगी और उस व्यग्रता को तीव्र कर देगी जो सभी विचारशील सज्जनों को प्रस्तुत प्रसंग में अनुभव करनी चाहिए। यदि हमारा चुनाव, हमारे उन सच्चे हितों के एक न्यायसंगत अनुमान से प्रेरित

हो सके, जिन्हे जनहित से असम्बद्ध विचारणाएं सकुल और पक्षपातपूर्ण न बना सके, तो यह एक बड़ी ही खुशी की बात होगी। लेकिन इस बात की उग्रतर कामना ही की जा सकती है, गम्भीर आशा नहीं। हमारे विचार-विमर्श के लिए प्रस्तुत यह योजना कितने ही विशिष्ट हितो को प्रभावित करती है, कितनी ही स्थानीय सस्थाओं को नया रूप देती है। इस विचार-विमर्श में, इसकी क्षमताओं से असम्बद्ध विभिन्न दृष्टिकोणों को और सत्य की खोज में कम उपयोगी विभिन्न खयालों, उद्वेगों और पूर्वाग्रहों को हम नहीं गिनेंगे।

इस नये सविधान को जिन दुर्द्धर्षतम रुकावटों का सामना करना पड़ेगा, उनमें, जिन्हे तत्काल पहचाना जा सकता है, ये हैं हर राज्य में वर्तमान उस एक खास वर्ग का प्रकट स्वार्थ जो हर प्रकार के उन्नत परिवर्तनों का विरोध करेगा जो राज्य की सस्थाओं में उसे प्राप्त उसके पद-लाभों, उसकी शक्ति और उसके वेतनों को न्यून बनाते हैं, एक दूसरे वर्ग की विकृत महत्वाकांक्षा, जो या तो अपने प्रदेश की अव्यवस्थाओं का लाभ उठाकर अपने को उन्नत बनाने की आशा करता है अथवा साम्राज्य के कुछ आशिक सघों में बाटे जाने में अपने भविष्य का वह उत्कर्ष देखता है जो एक केन्द्रीय प्रशासन के नीचे सघटित सघ में उसे प्राप्त नहीं हो सकता।

कुछ भी हो इस ढंग की विचारणाओं तक सीमित रहना मेरी इच्छा नहीं है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि किन्हीं भी लोगों के विरोध को (सिर्फ इसलिए कि उनकी स्थितियाँ उन्हें सशय का विषय बना सकती हैं) अविवेकपूर्वक स्वार्थपूर्ण अथवा महत्वाकांक्षापूर्ण बता देना अनुदारता है। निष्पक्ष होकर सोचे तो हमें मानना होगा कि ऐसे लोग भी उत्कृष्ट मनोकामनाओं से प्रेरित हो सकते हैं और इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता कि बहुत-सा विरोध जो अब तक सामने आया है अथवा आगे प्रकट होगा, उन स्रोतों से उत्पन्न है जो यदि सम्मानित नहीं तो कम से कम निर्दोष अवश्य हैं, जो पूर्वकल्पित ईर्ष्याओं और आशकाओं से पथभ्रष्ट दिमागों

की निर्दोष गलतियाँ हैं। निर्णय को गलत और भुका देनेवाले कारण वास्तव में इतने असंख्य और इतने शक्तिशाली होते हैं कि बहुत-से अवसरो पर समाज के लिए प्रथम महत्त्व के प्रश्नों तक को लेकर पक्ष और विपक्ष में दोनों ओर ही समझदार और अच्छे लोगों को अडा हम पाते हैं। यदि उचित रूप में सोचें तो यह परिस्थिति उन लोगों को उदारता का पाठ पढ़ाती है जो किसी भी विवाद में अपने ठीक तरफ होने के बारे में सदा ही बहुत आश्वस्त रहा करते हैं। विचार करने पर इस विषय में सतर्क रहने का एक और भी कारण हमें दीख पड़ता है। सदा ही यह विश्वास नहीं किया जा सकता कि सत्य का समर्थन करनेवाले व्यक्ति अपने विरोधियों की अपेक्षा शुद्धतर सिद्धान्तों से प्रेरित थे। महत्त्वाकांक्षा, लोलुपता, व्यक्तिगत शत्रुता, दलगत विरोध और कितने ही अन्य उद्देश्य, जो इन सबकी अपेक्षा अधिक प्रशंसनीय नहीं होते, किसी भी मुद्दे के सही पक्ष के समर्थकों को भी उतना ही प्रभावित कर सकते हैं जितना कि उसके विरोधियों को। उदार बनने के लिए यदि ऐसे आकर्षण भी वर्तमान न हों तो उस असहिष्णुता को, जो सभी कालों में राजनीतिक दलों की खास विशेषता रही है, जितना गलत समझा जा सकेगा उतना और किसीको भी नहीं समझा जा सकता। धर्म की तरह ही राजनीति में भी तलवार और अत्याचार के जोर पर मत-परिवर्तन कराने का लक्ष्य लेकर चलना समान रूप से बेहूदा है। दोनों क्षेत्रों में उत्पन्न नास्तिकता को बल-प्रयोग के द्वारा कठिनाई से ही समाप्त किया जा सकता है।

इन भावनाओं को अत्यधिक न्याय-संगत बनने दिया जाएगा, फिर भी इस बात के पर्याप्त संकेत हमें पहले ही मिल चुके हैं कि पूर्व के सभी महान राष्ट्रीय विवादों की तरह ही इसमें भी ठीक ऐसा ही होगा। रोष और द्वेष से पूर्ण भावनाओं की लहर को मानो मुक्त कर दिया जाएगा। विरोधी दलों के आचरण की जाच से हम इस निर्णय पर पहुँचने को बाध्य होंगे कि अपने विचारों की न्यायसंगतता को प्रमाणित करने की तथा अपने भाषणों के शोर और अपनी कटूक्तियों के कड़वेपन से अपने पक्ष-पोषकों

की सख्या बढाने की पारस्परिक आशा वे करेगे। शक्ति और कुशलता प्राप्त करने के लिए सरकार के उदात्त उत्साह को निरकुश बल प्राप्त करने की वासना से उत्पन्न बताया जाएगा और इसे स्वतन्त्रता के सिद्धान्तो के विरुद्ध घोषित किया जाएगा। जनता के अधिकारो पर सकट के प्रति अति सावधान सतर्कता को, जो आम तौर से हृदय का नही मस्तिष्क का दोष होती है, एक मामूली बहाने और जोड़-तोड़ के रूप मे अर्थात् जन-हित की कीमत पर जनप्रियता प्राप्त करने के लिए एक बासी चारे के रूप मे पेश किया जाएगा। एक ओर तो यह भुला दिया जाएगा कि ईर्ष्या प्रेम की सामान्य सहगामिनी है और स्वतन्त्रता के उदात्त उत्साह के लिए एक सकीर्ण अनुदार अविश्वास से आक्रान्त होना बहुत सहज है। दूसरी ओर समान रूप से यह भी भुला दिया जाएगा कि स्वतन्त्रता की सुरक्षा के लिए सरकार की शक्ति अनिवार्य है, कि एक पुष्ट और पूर्णविगत निर्णय की विचारणा मे उसके हितो की उपेक्षा नहीं की जा सकती, और यह भी कि सरकार को मजबूत और कुशल बनाने के तथारूपित निषेधक उत्साह की अपेक्षा जनता के अधिकारो के लिए व्यग्रता की चटकदार नकाब के पीछे से एक खतरनाक महत्वाकांक्षा कही अधिक भाका करती है। इतिहास हमे बताएगा कि पहली के बदले दूसरी प्रवृत्ति निरकुशता की स्थापना की ओर एक अधिक निश्चित कदम बन जाती है। जिन लोगो ने गणतन्त्रो की स्वच्छन्दता को उलटा है उनमें अविकतम सख्या उन लोगो की है जिन्होने अपना जीवन जनता की चापलूसी से आरम्भ किया था और जन-नायक से शुरू करके निरकुश शासक वे बन बैठे।

अपने पिछले विचारो मे, मेरे साथी नागरिको, मेरी दृष्टि इस बात की ओर रही है कि किसी भी दिशा के क्यो न हो उन प्रयासो के प्रति मै आपको सतर्क कर दू जो आपके कल्याण के इस चरम क्षण मे, सत्य की साक्षी से भिन्न अन्य स्रोतो से आकर आपके निर्णय को प्रभावित करेगे। साथ ही, निस्सन्देह ही, मेरे विचारों को साधारण रूप मे समझकर भी आपने जान लिया होगा कि जिस स्रोत से वे आ रहे है, वे नये सविधान के प्रति अमित्रतापूर्ण

नहीं है। मेरे देशवासियों, यह बात सही है कि ध्यानपूर्वक विचार करने के बाद मेरी स्पष्ट धारणा बन गई है कि आपका हित उसे स्वीकार कर लेने में ही निहित है। मेरा विश्वास है कि आपकी स्वतन्त्रता, आपकी प्रतिष्ठा और आपकी प्रसन्नता के लिए यही सबसे सुरक्षित मार्ग है। जो भाव मैं महसूस नहीं करता, उन्हें मैं नहीं कहता। जब मैंने एक फैसला कर लिया है, तब विचारणा के एक दिखावे से आपका दिल बहलावा मैं नहीं करूंगा। अपनी मान्यताओं को आपके सामने मैं स्पष्ट रूप से स्वीकार करता हूँ। जिन कारणों पर वे आधारित हैं उन्हें भी आपके सामने खुले रूप में मैं रखूंगा। स्वस्थ मनोकामनाओं की चेतना अस्पष्टता से नफरत किया करती है। खैर, इस बात को लेकर उपदेश की बहुत-सी बातें मैं नहीं कहूंगा। मेरे उद्देश्य, मेरे हृदय-कोष में ही सुरक्षित रहने चाहिए। मेरे तर्क सबके सामने प्रकट होंगे और सब उनकी जांच कर सकेंगे। उन्हें कम से कम उस उत्साह के साथ सामने रखा जाएगा जो सत्य के स्रोत का अपमान नहीं करेगा।

लेखों की एक शृंखला में मैं निम्नलिखित रोचक विषयों पर विचार करना चाहता हूँ—आपकी राजनीतिक सम्पन्नता के लिए सघ का उपयोग—वर्तमान राज्य-संगठन का उस सघ की सुरक्षा करने में अयोग्य होना—इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक सरकार की आवश्यकता जो प्रस्तावित सरकार जितनी ही शक्ति-सम्पन्न हो—प्रस्तावित संविधान का एक सघीय सरकार के सच्चे सिद्धान्तों के साथ एकरूप होना—आपके अपने राज्य-संविधान के साथ इसकी साधर्म्यता और अन्त में इस ढंग की सरकारों की सुरक्षा, स्वतन्त्रता और सम्पत्ति की सुरक्षा में इसके स्वीकार किए जाने से मिलनेवाला अतिरिक्त योगदान।

इस विचारण के बीच मैं उन सब आपत्तियों का एक सन्तोषजनक उत्तर देने का प्रयत्न करूंगा जो शायद सामने आएंगी और जो आपका ध्यान आकर्षित करने की योग्यता रखती प्रतीत होगी।

सघ की उपयोगिता को सिद्ध करने के लिए तर्क उपस्थित करना व्यर्थ ही ससंभ्रा जा सकता है, क्योंकि यह मुद्दा हर राज्य की जनता के अधि-

काश भाग के हृदय पर निस्सन्देह गहरा अंकित है और यह कल्पना की जा सकती है कि इसका कोई विरोधी नहीं है। लेकिन तथ्य यह है कि नये संविधान के विरोधियों के निजी क्षेत्रों में अभी से यह फुसफुसाहट सुनी जाती है कि किसी भी सामान्य शासन-पद्धति के लिए तेरह राज्यों का विस्तार बहुत ही बड़ा है और यह जरूरी है कि पूरे देश के सुदूरस्थ हिस्सों को अलग-अलग सगठनों में बांधकर चला जाए। पूरी सम्भावना है कि इस सिद्धान्त को धीरे-धीरे तब तक प्रचारित किया जाएगा जब तक इसके इतने काफी समर्थक नहीं हो जाते कि इसे खुले रूप में मान्यता दी जा सके। जो लोग विषय को एक विशाल रूप में देखने की योग्यता रखते हैं, उनके लिए इससे अधिक स्पष्ट कोई बात नहीं हो सकती कि नये संविधान की स्वीकृति के स्थान पर दूसरा रास्ता है सगठन को खड़-खड़ कर देना। इसलिए संघ के लाभों की, और संघ के बिखर जाने पर जिन सम्भावित खतरों और निश्चित बुराइयों से हर राज्य आक्रान्त होगा उनकी, परीक्षा से आरम्भ करना ही अधिक उपयोगी होगा। अतः यही मेरे अगले वक्तव्य का विषय बनेगा।

हास्य की साधना

फ्रैंक मूर कॉल्बी

जैसे उसके अपने पास कोई बहुत ही स्पष्ट तथ्य पेश करने को है। इस हास्य विषय पर होनेवाले सभी वाद-विवादों की तरह यह विवाद भी बड़ा उग्र था और इसके अन्त में भी मुक्केबाज़ी की आवाज़ें सुनने को मिली।

अब दुनिया में यह एक सामान्यतम बात है कि लोग हास्यवृत्ति की अनुपस्थिति को घातक दोष कहते सुने जाते हैं। कैसा भी जड़ मूर्ख कोई क्यों न हो, इतना तो वह भी आपसे कह डालेगा। पर यह एक घोर असत्य है और असीम हानि पहुंचाता है। ठीक है कि हास-परिहास के बिना जीवन वैसा ही है जैसा वह टांगों के बिना है। अधूरेपन की एक अनुभूति आपका पीछा करती रहती है और जहां आपके मित्र जाते हैं वहां आप नहीं जा पाते। बहुत कुछ एक बोझ आप बन जाते हैं। लेकिन वास्तव में एकमात्र घातक बात तो यह है कि इस वृत्ति के न होने पर भी आप ठिठोली करने का ढोंग करे। कुछ लोग होते हैं जिन्हें प्रकृति ने मां की गोद से लेकर चिता तक संजीदा बने रहने के लिए ही बनाया होता है। वे वैसा ही बने रहने के लिए मजबूर हैं। जब तक वे अपने प्रति सच्चे रहते हैं, किसीके भी बढ़िया साथी बन सकते हैं। लेकिन अपने सही क्षेत्र से बाहर निकलते ही वे भयानक बन जाते हैं। गम्भीरता सापेक्षतः एक वरदान है और जो व्यक्ति इसे लेकर पैदा हुआ है उसे इससे बाहर खींचे जाने के लिए कभी भी प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए।

विनोदप्रियता की हमने इतनी प्रशंसा की है कि एक आडम्बरपूर्ण मत ही चला डाला है। बहुत-से लोग हैं जो सोचते हैं कि उन्हें इसकी शान बढ़ानी ही चाहिए जबकि अपने अन्तरतम में वे इससे घृणा करते हैं। भूठी विनोदप्रियता भीषणतम सामाजिक पाप है, साथ ही यह अत्यधिक सामान्य भी है। जिन लोगों की प्रकृति में विनोदप्रियता का अल्पतम अंश भी नहीं है वे भी घटो उसकी स्तुति करते हैं। राज्यद्रोह, हत्या, लूटपाट, बनावटी दात और नकली बालों के अस्तित्व को लोग स्वीकार लेते हैं। कितने हैं जो अपने में विनोदप्रियता की कमी को मान लेंगे। जो साहस किसी व्यक्ति से ऐसी आत्मस्वीकृति करा सकता है, वह उसकी हर कमी

की भरपाई कर सकता है ।

हास्य की परिभाषा करने के पागल प्रयासों का कोई लाभ नहीं होगा । हाँ, लोग इसके प्रति क्या रुख अपनाएँ, यह निर्धारित करने का कुछ लाभ हो सकता है । पहला नियम यह है कि पीछा करने पर मजाक को पकड़ा नहीं जा सकता । यह एक ऐसी मूल्यवान चीज़ है जिसके लिए हठ करना किसी भी व्यक्ति के लिए उपयोगी नहीं है । यदि बस इसे सीखा जा सकता तो इस सत्सार से एक अत्यन्त विषादपूर्ण और घृणिततम उद्यम को निष्कासित किया जा सकता ।

इसलिए चाहे कोई स्त्री हो या पुरुष, साप्ताहिक पत्र हो या मैगज़ीन का विभाग, इस क्षेत्र में इच्छापूर्ण प्रयास करने के बारे में सर्वोत्तम सलाह यही है, कि ऐसा एकदम न किया जाए ।

लोकतंत्र के उपयुक्त शिक्षा

जब हम विद्यार्थी के कन्धो पर इन लोकतन्त्रीय कर्तव्यों का भार रखते हैं तब साथ ही साथ लोकतन्त्रीय सिद्धान्तों से उसे प्रेरित करना भी हमें भूल नहीं जाना चाहिए। उसे सिखाया जाना चाहिए कि लोकतन्त्र को छोड़ स्थायी स्वतन्त्रता और कही नहीं मिल सकती और अन्य सभी विज्ञानों की तरह प्रशासन की प्रकृति भी प्रगतिशील है। यूरोप में यह विज्ञान जिन ज्वालो में जकड़ा रहा है, सौभाग्य से अमरीका में वे ढीली पड़ गई हैं। यहाँ यह विज्ञान खोजबीन और सुधार के लिए उन्मुक्त है। जहाँ दर्शन ने अपनी खोजों के द्वारा एक हजार प्राकृतिक बुराइयों से हमारी रक्षा की है, वहाँ खेद की बात है कि प्रशासन अपेक्षाकृत मन्दी चाल से उसके पीछे बढ़ा है। विधान की सर्वोत्तम पद्धतियों तक में आज भी जो बहुत-से दोष वर्तमान हैं यदि सिर्फ उन्हें ही गिनाया जाए तो यह मानवीय प्रतिभा का असम्मान करना ही होगा। हम प्रतिदिन देखते हैं कि विशिष्ट रासायनिक प्रयोगों से नश्वर प्रकृतिवाले पदार्थ को भी टिकाऊ बना लिया जाता है। मेरी धारणा है कि इसी शक्ति को इस ढंग से संयुक्त करना सम्भव है कि इससे न सिर्फ खुशी बढे, बल्कि इतिहास अथवा मानव-जाति के सामान्य मतों द्वारा परि-सीमित कार्यकाल से कहीं अधिक अवधि, लोकतन्त्रीय प्रणाली की सरकारों को काम करने के लिए मिल जाए।

धार्मिक, नैतिक और राजनीतिक शिक्षा को अपने युवकों के दिमागों पर अधिक प्रभावपूर्ण बना सकने के लिए आवश्यक है कि उनके शरीरों को शारीरिक समय के अधीन रखा जाए। उनकी अध्ययनशील और बैठकी जीवन-पद्धति की असुविधाओं को समाप्त करने के लिए आवश्यक है कि वे

मिताहारी बने और प्रमुखतया शोरबे, दूध और सब्जियों का ही सेवन करें। युवको के मनो पर लाभदायक प्रभाव डालने की दृष्टि से स्पार्टा के काले शोरबे और स्काटलैंड के जौ के शोरबे की एकसमान प्रशंसा की गई है। उन्हें मद्यपान से बचना चाहिए। अध्ययन के बीच-बीच, वर्ष के व्यस्त दिनों में कभी-कभी देहातो में अपने हाथ से काम करने का अभ्यास भी उन्हें करना चाहिए। कम निद्रा, खामोशी, यदा-कदा एकान्त और सफाई—इन सब नियमों को भी उन्हें ग्रहण करना चाहिए और सवेदना, स्वभाव, अनुकरण और संसर्ग—मानवीय आचरण के इन महान सिद्धान्तों के समुचित निर्देशन का भी अधिकतम लाभ उन्हें उठाना चाहिए।

इन शारीरिक कारणों का युवको की बुद्धि और उनके सिद्धान्तों और नैतिक आचरणों पर भी शक्तिशाली प्रभाव पड़ेगा।

जो खोज-बीन की गई है उससे यह स्पष्ट हो जाता है और मेरी यह धारणा है कि मनुष्यों को लोकतन्त्रीय मशीनों में रूपान्तरित करना सम्भव है। यदि हम उनसे आशा रखते हैं कि वे राज्य सरकार के इस विशाल यन्त्र में अपनी भूमिका पूरी तरह निभाएं, तो वैसा हमें करना ही पड़ेगा। लोकतन्त्र जनता की इच्छा को घुरी मानकर नहीं घूम रहा है, वह राजतन्त्र अथवा कुलीनतन्त्र से दूषित है। इससे पहले कि प्रशासन में नियमितता और एकसूत्रता लाई जा सके, तन्त्र और लोक को शिक्षा के द्वारा एक-दूसरे के योग्य बना देना अनिवार्य है।

जिन सिद्धान्तों को राज्य के सभी स्कूलों में समान रूप से लागू किया जाना चाहिए, उनका निर्देश करने के बाद अब मैं, जिसे सामान्यतः एक उदार अथवा ज्ञान-प्रचुर लोकतन्त्रीय शिक्षा कहते हैं, उसे चलाने के तरीके के बारे में अपने कुछ विचार रखूंगा।

अपने युवको को अपनी अमरीकी भाषा समुचित और प्रांजल रूप में लिखने और पढ़ने की शिक्षा देने के लिए जितना भी प्रयत्न किया जाए थोड़ा है। एथेन्सवासियों के साहित्य का एक ठोस भाग यूनानी भाषा के अध्ययन से निर्मित था। यही बात उनकी इतनी ज्यादा कृतियों के उत्कृष्ट,

विशुद्ध और अमर होने का कारण है। हमारे जो युवक कानून, भौतिक विज्ञान अथवा धर्मशास्त्र के कार्यक्षेत्रों में जा रहे हैं, उनके लिए अपनी भाषा के पूर्ण ज्ञान के लाभ इतने स्पष्ट हैं कि उनके उल्लेख की जरूरत नहीं है। लेकिन जिस राज्य को यह गौरव प्राप्त है कि अमरीका का महानतम व्यापारिक नगर उसमें है, मैं चाहता हूँ कि वह ऐसे युवकों से पूर्ण बने जो हिसाब-किताब के धन्धे को अपनाएँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि इनमें से बहुत सारे हमारे कालिजों में शिक्षा ग्रहण करें। वह समय गुज़र चुका है जब व्यापार का धन्धा अपनानेवाले युवक के लिए कालिज की शिक्षा अनावश्यक मानी जाती थी। मैं समझता हूँ कि किसी भी अन्य धन्धे में इतनी सामर्थ्य नहीं है कि वह शिक्षा से, इस धन्धे की तुलना में अधिक गुण ग्रहण कर सके। इसी प्रकार, फ्रांसीसी और जर्मन भाषाएँ भी हमारे कालिजों में ध्यानपूर्वक पढ़ाई जानी चाहिए। सभी विषयों पर इन भाषाओं में बहुत सारी लाभदायक पुस्तकें हैं। ये भाषाएँ इतनी महत्त्वपूर्ण और आवश्यक हैं कि जो युवक उनमें बोल नहीं सकता अथवा उनसे अनुवाद नहीं कर सकता, उसे कभी भी उपाधि नहीं दी जानी चाहिए।

हमारे अमरीकी कालिजों में आमतौर पर जो कला-विज्ञान पढ़ाए जाते हैं उनके साथ-साथ, मेरी इच्छा है कि, इतिहास और कालक्रम-विज्ञान पर भी एक नियमित पाठ्यक्रम चालू किया जाए। प्रशासन-विज्ञान को, चाहे उसका सम्बन्ध सविधान से हो या कानून से, तथ्यों के ध्यानपूर्वक किए गए चुनाव के द्वारा ही आगे बढ़ाया जा सकता है; और तथ्य इतिहास में ही मुख्य रूप से पाए जाते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि हमारे युवकों को प्राचीन लोकतन्त्रों के इतिहास और यूरोप के विभिन्न राज्यों में स्वतन्त्रता और निरंकुश शासन के प्रगति-क्रम की शिक्षा दी जानी चाहिए। साथ ही मैं चाहता हूँ कि वाणिज्य के मूल और उसकी वर्तमान अवस्था से सम्बन्धित अनेक तथ्यों और वित्त की प्रकृति और उसके सिद्धान्तों को एक ऐसी प्रणाली में बाधा जाना चाहिए जो युवकों की समझ में आ सके और उन्हें प्रिय लग सके। यदि हम समझते हैं कि हमारे इस विश्व-नगर का वाणिज्य

राज्य के वैभव का राजमार्ग है, तो इसका अध्ययन एक युवक की शिक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण बन जाता है। लेकिन जब मैं लोकतन्त्रीय शिक्षा-संस्थानों में उसके अध्ययन की सिफारिश करता हूँ, तब मैं उसे कहीं अधिक ऊँची रोशनी में लेता हूँ। मैं उसे भूमि के परम्परागत एकाधिकारों के प्रभाव के विरुद्ध सर्वोत्तम सुरक्षा मानता हूँ और इसलिए कुलीन तन्त्र के विरुद्ध सबसे सुनिश्चित बचाव समझता हूँ। उसके प्रभावों को मैं, मानव-जाति के मानवीकरण के प्रयासों में धर्म के बाद, दूसरा स्थान देता हूँ। और अन्त में उसे मैं एक ऐसे साधन के रूप में देखता हूँ जो सत्ता के विभिन्न राष्ट्रों को आपसी ज़रूरतों और ज़िम्मेदारियों के बन्धनों से बांधकर एक कर देगा।

फिर, आपके युवकों को राष्ट्रीय सम्पन्नता और स्वतन्त्रता को बढ़ावा देनेवाले सभी साधनों की भी शिक्षा दी जानी चाहिए, चाहे उन साधनों का सम्बन्ध कृषि के सुधार से हो या उत्पादन से या अन्तर्देशीय नौकानयन से। उन्हें विधान बनाने के सामान्य सिद्धान्तों की शिक्षा भी दी जानी चाहिए— राजस्व अथवा जीवन, स्वतन्त्रता या सम्पत्ति की सुरक्षा से सम्बन्धित सभी प्रकार के विधानों की। उन्हें निर्देश दिया जाना चाहिए कि वे बीच-बीच में अदालतों में जाएँ। वहाँ उन्हें गवाहों से प्रश्नोत्तरो द्वारा सत्य का खोजा जाना देखकर अपने विचारों को क्रमबद्ध करने और उनकी परस्पर तुलना करने की आदत डालने के सर्वोत्तम अवसर मिलेंगे। वहाँ उन्हें देश के कानून का निर्वचन सुनने को मिलेगा और वकीलों की अपनी विशेषता—तरह-तरह की भाषण-प्रणालियों का लाभ भी प्राप्त होगा। मैं एक युवक के, कानून की अदालतों के निर्णयों को कभी-कभी सुनने जाने को, इतना महत्त्वपूर्ण मानता हूँ कि हमारे कालिज सिर्फ़ ज़िला केन्द्रों में ही स्थापित किए जाएँ।

लेकिन आगे, संयुक्त राज्य अमेरिका से अपने सम्बन्ध की प्रकृति का विचार करते हुए यह भी आवश्यक होगा कि हमारे विद्यार्थी हमारी राष्ट्रीय सरकार के सभी विशेषाधिकारों से परिचित हो जाएँ। उन्हें सन्धियों की प्रकृति और उनके प्रकारों की शिक्षा दी जानी चाहिए। राजदूतों के विभिन्न प्रकारों की शक्तियों और उनके कर्तव्यों के अन्तर से भी उन्हें

परिचित होना चाहिए। उन्हें सिखाया जाना चाहिए कि व्यक्तियों व राज्यों के दायित्व कहां समान हैं और कहा उनमें अन्तर है। संक्षेप में उन्हें उन कानूनों और रूपों का सामान्य ज्ञान होना चाहिए जो धरती के शासकों को एक करते हैं या उन्हें एक-दूसरे से अलग करते हैं।

मैं क्षमा चाहता हूँ कि लोकतन्त्र में स्त्रियों के लिए उचित एक पृथक् और विशिष्ट शिक्षा-प्रणाली के विषय पर कुछ भी कहने में मैंने इतनी देर लगा दी। मेरी धारणा है कि उनका युवकों के लिए बननेवाली हमारी शिक्षा-योजनाओं से तालमेल रहना चाहिए, नहीं तो कोई भी कानून उन्हें उपयोगी और प्रभावशाली नहीं बना सकेगा। स्त्रियों को, इस प्रयोजन से, योग्य बनाने के लिए आवश्यक है कि न सिर्फ उन्हें स्त्रियोचित शिक्षा की आम शाखाओं की ही शिक्षा दी जाए, बल्कि स्वतन्त्रता और प्रशासन के सिद्धान्त भी उन्हें सिखाए जाए। देशभक्ति के दायित्व भी उन्हें बताया जाए। जीवन के कठोरतम प्रयासों में पुरुषों के विचारों और आचरणों को बहुधा स्त्रियाँ ही नियमित किया करती हैं। एक वीर पुरुष द्वारा खतरे झेलने और देशभक्त द्वारा पसीना बहाने का प्रमुख पारितोषिक स्त्रियों की प्रशंसा ही हुआ करता है। इसके अतिरिक्त बच्चों के दिमागों पर पड़नेवाले प्रथम प्रभाव स्त्रियों से ही प्राप्त होते हैं। इसलिए एक लोकतन्त्र के लिए यह बड़े ही महत्त्व की बात है कि स्त्रियाँ स्वतन्त्रता और प्रशासन के महान विषयों पर न्यायसंगत रूप में सोचें।

हर कस्बे अथवा सौ परिवारों वाले हर गाँव में स्वतन्त्र स्कूलों की स्थापना की जानी चाहिए। इन स्कूलों में बच्चों को अंग्रेजी और जर्मन भाषाएँ पढ़ना और लिखना तथा गणित सिखाया जाना चाहिए। जिन बच्चों के माता-पिता उन्हें घर से दूर भेजने का खर्च उठा सकते हैं और उनकी शिक्षा का विस्तार कर सकते हैं उन्हें इन स्वतन्त्र स्कूलों से कालिजों में भेज दिया जाना चाहिए।

इस योजना से पूरे राज्य को एक शिक्षा-प्रणाली में बाँधा जा सकेगा। समय आने पर विश्वविद्यालय कालिजों के लिए और कालिज स्वतन्त्र

स्कूलों के लिए शिक्षक प्रदान कर सकेंगे, और बदले में स्वतन्त्र स्कूल कालिजो को और विश्वविद्यालयों को स्कालर, विद्यार्थी और शिष्य प्रदान कर सकेंगे। व्याकरण, वक्तृता और दर्शन की समान प्रणालियाँ राज्य के हर भाग में पढाई जाएंगी और इस प्रकार पेन्सिलवेनिया की साहित्यिक विशिष्टताएँ एक महान और समान रूप से प्रबुद्ध परिवार का निर्माण करेंगी।

लेकिन इन साहित्य-संस्थाओं के खर्च को हम किस प्रकार उठाएं? मेरा उत्तर है कि ये संस्थाएँ हमारे करो को घटा देंगी। ये वित्त-व्यवस्था के महान कार्य में हमें प्रबुद्ध बना देंगी। ये कृषि-लाभों को बढ़ाकर और वस्तु-निर्माण में वृद्धि करके सरकार का खर्च उठाने की राज्य की योग्यता को बढ़ाना हमें सिखाएगी। ये हमें अन्तर्देशीय नौकानयन के लाभों और उनमें किए गए आधुनिक सुधारों की शिक्षा देंगी। ये अतीत युगों के अनुभवों और मूर्खताओं को हमारे सामने उद्घाटित करके हमें प्रशासन में किए जानेवाले जल्दबाजी के और खर्चों पर प्रयोगों से बचा लेंगी। इस तरह ये हमारे करो और ऋणों को बढ़ा देने के बदले हमें दोनों को घटाने और अदा करने के सच्चे रहस्य का ज्ञान देंगी।

लेकिन क्या अनाथों, अविवाहितों और सन्तानहीन व्यक्तियों की जायदादों पर कर लगाकर उन स्कूलों का खर्च चलाया जाए जिनसे ऐसे लोग कोई लाभ नहीं उठा सकते? इस ऐतराज के पहले अंश का उत्तर मैं 'हाँ' में देता हूँ। बाद के अंश की सत्यता से मैं इन्कार करता हूँ। समाज का हर सदस्य राज्य-भर में गुणों के और ज्ञान के विस्तार में रुचि रखता है। मैं और भी आगे बढ़कर यह कहूँगा कि व्यक्तियों की सच्ची बचत इसी-में है कि वे इन पब्लिक स्कूलों का व्यय उठाएं। अविवाहित व्यक्ति कुछ समय में इस कर की बदौलत बचत कर सकेंगे, क्योंकि उनके लिए अपने दरवाजों पर कम कुड़ी-ताले लगाकर सो पाने की स्थिति पैदा हो जाएगी। अनाथों की जायदादों को भी इससे समय आने पर लाभ पहुँचेगा, क्योंकि वे सिद्धान्तहीन और निठल्ले लड़कों की लूट-खसोट से बची रहेंगी। और

घनी माता-पिताओं के वच्चे बुरी सगति में पड़कर फिज़ूलखर्चों की ओर नहीं ढुल सकेंगे। हमारे युवकों को जब आज की अपेक्षा अधिक अच्छी शिक्षा मिलेगी तो हमें थोड़े कठघरों, थोड़ी टिकटियों और छोटी जेलों की ज़रूरत पड़ेगी और उनका रोज़मर्रा का खर्च बहुत घट जाएगा। मेरा विश्वास है, यह सिद्ध किया जा सकता है कि अधिकांश ज़िलों में प्रतिवर्ष अपराधियों को बन्द रखने, उनपर मुकदमा चलाने और उन्हें दंड देने पर जितना खर्च होता है वह, सभी ज़िलों के लिए जितने स्कूल आवश्यक है, उन सबपर होनेवाले व्यय से कहीं अधिक होगा। अपराधियों की आत्म-स्वीकृतियाँ अक्सर बताती हैं कि उनके पाप और दंड आरम्भिक जीवन में उचित शिक्षा की कमी के ही घातक परिणाम रहे हैं।

—बेंजामिन रश

पब्लिक स्कूलों की स्थापना की एक योजना, १७८६

हमारी लोकरीतियां

अमरीकी लोक-ज्ञान उतना ही पार्थिव है जितने कि एक मिसूरीवासी द्वारा अपने साथी नागरिक के लिए कहे गए ये शब्द : “उसे ? वह तो ऐसा खसीस है कि कद्दू के एक बीज के लिए एक चूहे का पीछा नरक तक कर सकता है।” वह इतना असंस्कृत है, जितना कि अगूठे से आखें निकालने में व्यस्त नहर-नाविकों का एक जोड़ा हो सकता है। और इतना सरल है, जितनी कि टेनेसी की पहाड़ियों से आई एक लोरी। वह कोन्सटोगा गाड़ी जितना मजबूत है और ‘बाप’ गानेवाले संगीतजों की अपभाषा जितना अभावुक।

अमरीका का लोक-ज्ञान बोस्टन, सेवेना, मोबाइल से चला एक बाद-बानी जहाज है (“...भाप के इंजन द्वारा हमारी रोजी लूट लिए जाने से पहले”) और बादबान की रस्सी खींचनेवालों का सम्मिलित गीत है

और नाश्ते में भला हमने क्या खाया था ?

खीचो लड़को खीचो !

दक्षिण-पश्चिम को जानेवाले एक पुराने जहाज का दाहिना हिस्सा,
खीचो लड़को, जोशीले लड़को, खीचो।

वह गर्मी, धूल, मिट्टी और तूफान के बीच टेक्सास से दूर उत्तर में मोन्टाना की ओर जानेवाले घुमावदार मार्ग पर बढ़ते रेवड का पुछल्ला है। वह अमरीका का भोजन है—सेम के भुने बीज, चाउडर बिस्कुट, मक्का की केक पर मेपल की चटनी, घुआ देकर भूनी गई रानें, हश पपीज, ब्रन्स-विक की खिचड़ी। वह है देश-परिवर्तन करता रहनेवाला मजदूर और पुरुष के साथ नाचनेवाला नर्तक और आवारों की बोली—गोन्दोला नाव,

जहाजी अफसर, भोपडी, तेज चाल का सकेत देनेवाला लाल चिह्न, रेल का तेज गति का सिगनल, 'तेज दौड़ो' खेल ।

लोक-ज्ञान न्यू मैक्सिको का कच्ची ईटो का घर है, कन्सास और नेब्रास्का सीमा की चौकोर भुग्गी है, वर्जीनिया का लट्ठे और गारे से बना केबिन है । वह न्यू इंग्लैंड के परस्पर जुड़े खलिहानों और घरों के समान है । वह बच्चों के गीतों और खेलों जैसा है—चट्टान पर बतख, लोमड़ी और बतख, कनस्तर में ठोकर मारो, आदि—और वह मेसाचूसेट्स का एक जवान का कसरती है :

“हाऊ मच वुड वुड ए वुडचक चक इफ ए वुडचक कुड चक वुड ? ए वुडचक वुड चक एज मच वुड एज ए वुडचक कुड, इफ ए वुडचक कुड चक वुड ।

(एक सुअर कितनी लकड़ी फेंक सकता है, यदि कहीं एक सुअर लकड़ी फेंक सकता । एक सुअर उतनी ही लकड़ी फेंकेगा जितनी वह फेंक सकता यदि कहीं सुअर लकड़ी फेंक सकता ।) ”

एक अन्य, उत्तरी केरोलिना का नमूना इस प्रकार है .

शी सेल्स सी शेल्स,
ब्लैक बग्स ब्लड,
शोट सूप, एड शीप सूप ।
(वह समुद्री घोघे बेचती है,
काले खटमल का खून,
घेठे का सूप भेड का सूप ।)

लोक-ज्ञान में का, हाथ से तराशा हुआ, भीगा मछली से बना डुबन-रोक है और व्याभिग का दाग लगानेवाला लोहा है, ऊटाह का सूखी घास का ढेर है और केण्टकी में रेल लाइन पर लगा बाड़ा है । वह रेल के सैलून के धूम्रपान-कक्ष में कही गई एक अश्लील कहानी है और क्रैप का खेल खेलने-वालों का शोर है—क्रैप के खेल में आठ का अक फेंकना, नन्ही फोबे,

साप की आंखें, रेल के डिब्बे, कठिन रास्ता। वह जूक नामक नृत्य में सहज कदमों के साथ मिलकर कूदना है और सामने के मंच पर रखा बैजो, गिटार और तानपूरा है।

वह अलबामा और ब्रान्स की बोली है और हमारे देश की प्रादेशिक नफासत है, “यदि कोई चीज़ है जो एक मेनवासी का मन अन्दर तक खराब कर देती है, तो वह है उत्तरी वरमाउण्ट।” वह एक निश्चित वक्तव्य है, “किसीको अधिकार नहीं है कि वह किसीके पिछवाड़े के आंगन में कोई चीज़ न फेंके।” वह है अमरीका के नाम—हैल फार सारटीन क्रीक, जवर्ड बीफ बटे, दि स्टिकिंग वाटर, स्मिथ्स कारनर्स; मज़ाकिया नाम—चौथी जुलाई का मफ़ी, स्लाटिंग एनी, बगहाउस मैकेब, रैट-ट्रैप पकिन्स और फोर डे जैक।

लोक-ज्ञान है, किसान द्वारा बादलों का अध्ययन किया जाना और एरिज़ोना में एक चट्टानी खनिक का कब्रिस्तान में धरती को करवट लेते सुनना। वह है गठिया से बचने के लिए तांबा पहनना, एक भूत, रात में कुत्ते का भौकना, परिवार की बाइबिल में कुछ लिख छोड़ना, एक चार पत्तों वाली तिपतिया। अमरीकी लोक ज्ञान वह सब परम्परागत ज्ञान है और हम लोगों की जीवन-प्रणाली है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आई है।

लोक-ज्ञान में लोक-वास्तुकला, शिल्प और कला, लोक-उद्योग (लकड़ी काटना और मछली पकड़ना और खेती); लोक-बोली और भाषा, लोक-साहित्य (लम्बी कथाएं, कहावते, छन्द); लोक-नृत्य, लोक-संगीत और गीत; लोक-इतिहास (स्थानीय आख्यान, बूढ़ों की स्मृतियां), लोक-दवाइयां और ऋतु विषयक बातें; लोक-कानून (पश्चिमी विधान, सतर्क समितियां, पचायते); और लोक-विश्वास और रीतियां (लकड़ी पर खटखट करना, हाथ हिलाना और चार जुलाई की पिकनिकें)—ये सब शामिल हैं। वह दादी मोज़ेज़, बर्ल आइव्स और पाल बनियन से बहुत अधिक बढकर है।

लोक-ज्ञान की प्रमुख कसौटी वह तरीका है जिससे वह एक-दूसरे तक

पहुँचाया जाता है—एक आदमी दूसरे को बताता है, एक दूसरे को दिखाता है। लोक-ज्ञान सास जितनी शीघ्रता से फैलता है और उतना ही स्वचेतना से रहित होकर भी। कोई औपचारिक नियन्त्रण उसपर नहीं लगते; कक्षाएँ और शिक्षक कुछ नहीं होते। पाठ्य पुस्तकें नहीं होती और प्रमाण रूप में सामने सगीत-निर्देशिका नहीं होती। प्रमाण सिर्फ यह होता है कि “जो ने मुझे बताया था” अथवा “टेक्स ऐसे ही इसे करता है” और इतने से प्रमाण पर भी शायद ही कभी सन्देह प्रकट किया जाता है।

क्योंकि इस तरीके से इसका विस्तार होता है, इसलिए लोक-ज्ञान की हर चीज़ पर व्यक्ति की छाप पड़ी रहती है। ठीक है, सामग्री परम्परागत होती है, वैसे ही, जैसे कि बोली परम्परागत होती है। लेकिन हर व्यक्ति जिस शैली में अपने को व्यक्त करता है, वह व्यक्तिगत होती है। लोक-निर्मित कच्ची ईंटों के दो घर, पेन्सिलवेनिया के दो खलिहान, वर्जीनिया के दो धूम्रपान-घर ठीक उतने ही एक-से नहीं होते जितने कि थोक निर्माता द्वारा बनाए गए मटर के बीजों जैसे घर एकसमान होते हैं। हर चीज़ पर व्यक्ति की छाप अंकित रहती है।

लोक-ज्ञान की प्रकृति अनिवार्य रूप से हाथ से बनी और मशीन से बनी, अमानित और मानित, व्यक्ति और भीड़ के अन्तर में निहित है। वह पंचमेल खिचड़ी (गोश्त, अजवायन, तेजपात, बछड़े का एड़ी से जाघ तक का मांस, गाय का मांस, अजमोद, गाजर, प्याज़ और लाल शराब) के अंगीठी पर उबलते बर्तन और तैयार मानित खाद्य के डिब्बे के बीच का अन्तर है। वह घर की बनी मिठाई और कैंडी की होचा बार के बीच का अन्तर है तथा व्याकरण के एक जड़ पृष्ठ और बोलचाल की भाषा का अन्तर है।

जिस पद्धति से लोक-ज्ञान फैलता है उससे, अमरीका के लोक कौन है, यह बात समझना भी आसान हो जाता है। जब कांग्रेस के पुस्तकालय ने अपनी लोक-गीतों की पुस्तक में जज लर्नेड हैड के दो गीत भी प्रकाशित किए तो समाचारपत्रों के संवाददाताओं को बड़ी उत्कठा हुई। “आप उन्हें लोक का सदस्य तो नहीं मानते न?” पूछे जाने पर जज हैड ने स्वयं

उत्तर दिया, “इस गीत (‘दि आयरन मेरिमैक’) को मैंने लगभग साठ वर्ष पहले एलिजाबेथ टाउन मे सीखा था। वह न्यूयार्क की एसेक्स काउण्टी के एडिराण्डक पहाड़ों मे स्थित एक बहुत ही छोटा-सा गांव है। मेरी अपनी उम्र के लड़के इसे गाया करते थे। इसके बारे में इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानता। सम्भवतः इसे मेरे चचा का नौकर, जिसने गृह-युद्ध मे भाग लिया था, गाया करता था; लेकिन इस बारे मे मैं एकदम अनिश्चित हू। मैं नहीं जानता कि हम लड़कों ने इसे कहा से ले लिया।”

एक नौकर और एक छोटा-सा गांव—ये शर्तें अनिवार्य नहीं है। दूसरे गीत ‘फिल शेरीडन’ के बारे मे जज हैड कहता है, “उस गीत को मैंने १८९५ अथवा ९६ के लगभग हार्वर्ड ला स्कूल मे पहले-पहल सुना था। एक जार्ज बी० इलियट नाम का आदमी उन दिनों इसे गाया करता था। बाद मे वह अतलातक कोस्ट लाइन का प्रमुख सलाहकार बन गया और अब वह मर चुका है। वह उत्तरी केरोलिना का था। गीत के बारे में मैं और कुछ नहीं जानता। उसके बाद कभी उसे यह गीत गाते मैंने नहीं सुना। मुझे कुछ पता नहीं यह गीत कहा से आया और उस व्यक्ति ने इसे कहा से लिया।”

जिस सीमा तक हम लोक-ज्ञान की पद्धति से अपने ज्ञान को और अपनी जीवन-पद्धति को हाथ-दर-हाथ ग्रहण करते है और उसमे आस्था रखते हैं उसी सीमा तक जज हैड की तरह हम सभी लोक के सदस्य है। हममे से प्रत्येक के सघटन मे, चाहे कितना भी थोडा क्यों न हो, स्वीकृत लोक-ज्ञान का कुछ न कुछ अंश तो रहता ही है। बचपन मे याद किए हुए छन्द, एक पारिवारिक नुस्खा, एक बदरग निरर्थक कविता, रोजगारीवर्ग का एक अनर्गल शोर अथवा किसी परम्परागत गीत का एक टुकड़ा।

मैंने ‘अमरीकी लोक-ज्ञान’ पद का प्रयोग किया है। लेकिन इसमे कुछ विशिष्टता ले आने की जरूरत है। वास्तव मे, एक राजनीतिक सीमा के भीतर रहनेवाले सभी लोगों के लिए जो सामान्य हो ऐसा कोई लोक-ज्ञान अस्तित्व नहीं रखता। और राजनीतिक सीमाएँ लोक-ज्ञान को न बन्द

रख सकती है, न सीमित । कोई गीत अथवा बोलने का लहजा ओहियो, फ्लोरिडा की सीमा पर पहुँचकर रुक नहीं सकता । राजनीतिक सीमाओं के स्थान पर प्रमुख पृष्ठभूमि होते हैं — वर्ग, स्थानीय और प्रादेशिक भिन्नताएँ, भूगोल (रेगिस्तान, पहाड़, समुद्रतट), भाषा, जाति, वाणिज्य और काम-धन्ये । ये प्रमुख तत्त्व अनगिनत वर्गों का सृजन करते हैं । इन सब वर्गों का कुल जमा लोक-ज्ञान ही अमरीकी लोक-ज्ञान है, क्योंकि ये सभी अमरीका में अस्तित्व रखते हैं । वैसे इस लोक-ज्ञान के अधिकांश की जड़ें दुनिया-भर में फैली हैं ।

लट्टों का केबिन देलावरे में उतरनेवाले स्वीडनवासियों के साथ पहा आया । न्यू इंग्लैंड के लकड़ी के ढाँचे पर बना घर अंग्रेजों की देन है । दक्षिण-पश्चिम के दागनेवाले लोहे स्पेन से मैक्सिको के रास्ते हमें मिले । 'दि स्ट्रीट्स आफ लारेडो' नामक गीत एक मरते हुए अंग्रेज सिपाही के बारे में लिखा गया था (कौनसा चरवाहा ढोल और बसी की आवाज़ के साथ दफनाया गया था ?) केलिफोर्निया के तूना मछली पकड़नेवालों के रिवाज एड्रियाटिक सागर में जहाजरानी करनेवाले यूगोस्लावों के साथ आए थे । क्रिसमस का पेड़ जर्मनी से मिला था और साता क्लाज़ (क्रिसमस पर बच्चों के लिए उपहार लानेवाला बूढ़ा) हालैंड से । यूनानी बच्चे भेड़ों के टखनों की हड्डियों से गिट्टे खेला करते थे, पत्थर के गिट्टों के चलन से बहुत पहले । हमारे संगीत की धुनों का एक बहुत बड़ा भाग अफ्रीका तक खोजा जा सकता है और हमारी बोली संसार-भर की भाषाओं से शब्द ग्रहण करती है । चलन में आने की लौकिक प्रणाली के अधीन ये चीज़ें, सच ही, हमारे देश का स्थानीय और प्रादेशिक रंग अपना लेती हैं और हमारी अपनी बन जाती हैं । केण्टकी की पहाड़ियों के लहजे और उतार-चढ़ाव के साथ गाई जानेवाली एक इंग्लिश गीत-कथा इंग्लिश नहीं रहती । "मोण्टाना में 'क्वार्टर सैकिल यू' (वृत्त का चतुर्थांश) बनानेवाला चरवाहा लड़का स्पेन से अपरिचित है और न्यूयार्क का टैक्सी चालक 'मैं पैज़ी (Patsy) हूँ' कहते समय नहीं जानता कि इतालवी भाषा का ठीक इसी प्रकार उच्च-

रित होनेवाला 'पैज़ी' (Pazzi) शब्द क्या होता है।

यह सच है कि हमारे इस यन्त्र-युग में लोक-ज्ञान को काफी ठोक-पीट सहनी पड़ी है। इंग्लैंड में औद्योगिक क्रान्ति के साथ-साथ इसकी ठोका-पीटी शुरू हो गई थी और हमारेस माज के बढ़ते हुए वाणिज्यिक-औद्योगिक चरित्र के समानान्तर उसकी गति भी बढ़ती गई। यदि साफ-साफ कहें तो हमारी सस्कृति अतीत को मिटा देनेवाली ऐसी सस्कृति है जैसी ससार ने कभी नहीं देखी थी। हमारे पिछवाड़े के तख्ते तक पर यह धोषणा लिखी रहती है—“एकदम नई।” कुल मिलाकर यह सहार अच्छे के लिए ही हुआ है। सिर्फ एक प्रमाणित मिनीवर चीवी ही जुकाम की गोली के बदले हींग और बतख की चरबी इस्तेमाल करना अथवा बाज़ार में उपलब्ध बधे मक्खन को न लेकर, गृहिणियों को मक्खन बिलोने के लिए भेजना चाहेगा। लोक-ज्ञानवादी की ऐसा करने की कोई इच्छा नहीं है। उसकी चिन्ता लोक-स्तर पर हमारे अतीत को, एक जाति के रूप में हमारी जड़ों को, इतिहास के खाली तथ्यों के पूरक विवरणों को सुरक्षित रखना ही है।

विद्वान और संग्रहालय अपने ढंग से लोक-ज्ञान को सुरक्षित रखते हैं और उसका अध्ययन करने हैं। कनेक्टिकट में मिस्टिक के मैरिनर्स संग्रहालय में रखा जहाज़ का विचित्र अग्रभाग और कांग्रेस के पुस्तकालय में रक्षित एक लोक-गीत, ठीक है, अपने स्वाभाविक स्थान से बाहर खींच लाए गए हैं, पर उन्हें बदला नहीं गया है। इसी प्रकार हारवर्ड अथवा इंडियाना और केलिफोर्निया के विश्वविद्यालयों में लोक-ज्ञान के अध्ययनकर्ता मूल सामग्री की वफादारी से सरक्षा करते हैं। विद्वान और संग्रहालय लोक ज्ञान के सरक्षक हैं क्योंकि लोक स्वयं वैसा नहीं कर सकता।

हमारे समाज के अकादमीयेतर स्तर पर हाल की दशाब्दियों में लोक-ज्ञान बहुत अधिक जनप्रिय हुआ है। लोक-कथाओं के संग्रह और लोक-ज्ञान पर पुस्तकें सबसे अधिक बिकनेवाली पुस्तकों में से हैं। बर्लआइन्ज़ और जो स्टेफर्ड को लाखों लोग सुनते हैं। हर सप्ताह चौराहों के नर्तकों को हजारों लोग देखते हैं। और एशेविले, नार्थ कैरोलिना से लेकर नेवादा

के रेनो तक सैकड़ों सम्प्रदाय लोक-त्योहारों को वार्षिक रूप में मनाते हैं। जो कुछ यहाँ हो रहा है, वह न तो लोक-ज्ञान का पुनर्जन्म है, न उसका संरक्षण। वह तो मछली की एक भिन्न बटलोई ही है। उदाहरणार्थ, लोक-गीतों का गायक लोक-गायक जैसा ही नहीं होता, न ही एक कामकाजी लेखक द्वारा छपने के लिए फिर से लिखी गई कहानी तन्दूर के पास बैठकर कही गई लोक कथा रह पाती है। वाणिज्य-सदन के साथ लगा और हालीवुड की सज्जाओं से सजा पशु-बाड़ा धन्धेवाले चरवाहों के पशु-उत्सवों से बहुत भिन्न होता है, और आर्थर मरे के चौक का नृत्योत्सव अथवा प्रयास-सिद्ध लोक-त्योहार केनटकी की पहाड़ियों में शनिवार की रात में होनेवाले उत्सव से बहुत ही कम सम्बन्ध रखता है।

लोक-ज्ञान के इस लेन-देन और प्रयोग में कोई बुराई की बात नहीं है। अज्ञात समय से ऐसा होता रहा है और होता रहेगा। लेकिन असली चीज़ और उसके मागे हुए रूप के बीच वर्तमान अन्तर को ध्यान में रखना चाहिए। लोक ज्ञान एक चीज़ है और लोक-ज्ञान का उपयोग दूसरी। यह एक बार समझ लेने पर कि लोक-ज्ञान क्या है और क्या नहीं है—लोक और जनप्रिय—के बीच की उलझन समाप्त हो जाती है और यह भी साफ हो जाता है कि तथाकथित लोक-ज्ञान की वर्तमान जनप्रियता अतीत के वास्तविक लोक-ज्ञान को हमें वैसे ही नहीं लौटा देती जैसे कि धर्मयुद्धों अथवा उजड़, जंगली पश्चिम (पश्चिमी अमरीका) में रुचि लेने से वे युग वापस नहीं लाए जा सकते।

सामग्री का, ठीक ऐसा ही और समान प्रकृति का लेन-देन विरोधी दिशा में भी होता है। लोक-ज्ञान की विशुद्धतम चीज़ें लोक-स्तर पर ही पैदा होती हैं, लेकिन लोक हमारे समाज के सार्वजनिक अथवा साधारण अंश से भी लगातार कुछ न कुछ लेता रहता है। क्योंकि संचरण की लौकिक प्रणाली से ही इस सामग्री में अदल-बदल की जाती है, इसलिए इसकी मूल प्रकृति नष्ट हो जाती है और विभिन्न स्तरों पर लोक-ज्ञान का ही एक अंग यह बन रहती है। लोक-ज्ञान बनने के लिए आवश्यक है

कि इसे फैलना चाहिए और लौकिक तरीके से इसमें फेर-बदल होनी चाहिए ।

इस फेर-बदल का एक प्रस्तुत उदाहरण है, लोक-गीत 'दि डाइग काउबाय' (मरता हुआ चरवाहा लड़का) अथवा 'ओ वरी मी नॉट ऑन दि लोन प्रेरी' (मुझे उजाड़ प्रेरी में मत दफनाना) । इसका मूल लोक में नहीं है । किसी चरवाहे से इसका कोई सम्बन्ध नहीं था । इसका स्रोत है सम्मान्य ई० एच० शेपिन की एक कविता, 'दि ओशन बरियल', जो १८३६ में 'दि सदर्न लिटरेरी मेसेजर' में प्रकाशित हुई थी । इसका संगीत जार्ज एन एलन ने १८५० में तैयार किया था । गीत का विषय है एक युवक जो समुद्र पर मर रहा है :

अरे मुझे गहरे, गहरे समुद्र में न दफनाना,
जहा लहरो का कफन मुझपर लहराएगा,
जहा अघेरी ठडी लहरो मे कोई प्रकाश मुझपर नहीं फूटेगा,
और सूर्य की कोई किरण मेरी कब्र पर नहीं पड़ेगी ।

वहा से लेकर, चरवाहे और टेक्सास के मैदानों के नाम पर इसे गढ़कर (हम नहीं जानते कि कब और कैसे) इसे जबानी फैलाया गया और यह एक लोक-गीत बन गया । आज यह कितने ही प्रकार के भाषाई और गायकी रूपों में वर्तमान है और देश-भर में बड़े लोगो से इसे सुना जा सकता है ।

क्योंकि हमारा निजी लोक-ज्ञान उतने ही स्वाभाविक रूप में हमारे साथ रहता है जैसेकि मछली पकड़ने के काटे के चारे पर थूकना, हम आम तौर से उसके प्रति सचेत नहीं रहते । बहुधा, सचेत हम तब होते हैं जब अपने निजी रिवाजो और परम्पराओ से भिन्न अन्य रिवाजो और परम्पराओ को हम देखते हैं ।

एक कन्सासवासी यदि मैक्सिको हो आए तो अपनी निजी पद्धति के बारे में, दस वर्ष घर पड़े रहने की अपेक्षा, वह अधिक सीख सकेगा । इस प्रकार प्रमुख फर्क साफ हो जाते हैं । यह स्वाभाविक ही है कि पूर्ववाले

पश्चिम की 'खोज' करते हैं और पश्चिमवाले पूर्व की ।

लोक-ज्ञान के प्रति सचेत होने के लिए यात्रा आवश्यक ही नहीं है, न ही उसे अनुभव करने के लिए प्रतिदिन अपने निजी क्षेत्र को छोड़कर दूर जाने की जरूरत है । लोक-ज्ञान, इस शब्द में ही पहचानने योग्य भिन्नता निहित हैं । लोक-ओषधि, उदाहरणार्थ, ओषधि-विज्ञान के अस्तित्व का अर्थ देती है, जबानी और बेढगा लोक-साहित्य एक लिखित साहित्य की वर्तमानता का और लोक-संगीत एक कलात्मक संगीत का भान कराता है । लोक-ज्ञान हमारे समाज के अंश के रूप में वर्तमान लोक का ज्ञान है । पर वह उसके संस्कृत अंश से बहुत हटकर है ।

लोक-ज्ञान हममें बहुत गहरे उतरा हुआ है, अविस्मरणीय है । वह एक बच्चा है जो भिल्ली के साथ पैदा हुआ है । वह देहाती सड़क पर ले जाया जानेवाला चीड़ की लकड़ी का ताबूत है । वह घरती का है । वह एक जाति की जड़े और उसकी महानता है । नियोन रोशनियों के नीचे सड़क की पटरियों पर वह हमारे साथ चलता है ।

पिछले साल कांग्रेस के पुस्तकालय में यह पत्र मेरे पास पहुंचा । यह फ्लोरिडा से मेरे पास आया था :

“यह है जिसे मैंने होते देखा, यद्यपि मैं समझता था कि यह चीज बहुत समय से चलन में नहीं रही है । एक दोपहर बाद जब सब कुछ शान्त था, एक विशाल पशु-बाड़े के भेड़ोवाले खड में से मैं गुजर रहा था । मैंने देखा कि दो युवक भेड़ों के एक झुंड में घुसे उनकी ऊन में बहुत ध्यानपूर्वक खोज-बीन कर रहे हैं । मैं अहाते के चौकीदार के पास गया, पूछने कि यह क्या हो रहा है । उसने उन्हें गोठों में जाने की अनुमति दे रखी थी । उन्हें भेड़ों के ज़िन्दा चीचड़ों की जरूरत थी और उन्हें वे एक बोतल में रख रहे थे । इसके बाद भेड़ों के ज़िन्दा चीचड़ों को वे कैपसूलों में रखेंगे और दादी के पास ले जाएंगे कि वह उन्हें निगल ले ; क्योंकि दादी को पीलिया हो गया है । कैपसूल गल जाएंगे और चीचड़े दादी के जिगर पर से अभिशाप को चर लेंगे ।”

यद्यपि मैं समझता था कि यह चीज बहुत समय से चलन में नहीं रही है.....’

न्यू इंग्लैंड और पेन्सिलवेनिया में गांव के चौक के चारों ओर बस्ती बस जाती है। ये लोग इंग्लैंड और जर्मनी से आए थे और वहाँ की स्थापित परम्पराओं को अपने साथ लाए थे। पश्चिम में कोई चौक नहीं होते। बस्ती की प्रधान सड़क पश्चिम की ओर जानेवाले राजमार्ग की एक सीधी शाख होती है, जो बस्ती का एक हिस्सा उतना नहीं होती जितना कि चलते राजमार्ग का—सान्टा फेट्रेल, ओरेगन ट्रेल, ओवरलैंड ट्रेल। एक ओर एक परम्परा है, जो देश में लाई गई है, दूसरी ओर एक परम्परा है, जो देश में ही पैदा हुई है, जो देश के लोगों की अपनी अस्थिरता का फल है।

दीवालिया ?

“कुए में जाए, मैं एक लम्बे डंडे से एक फुट पर साढ़े आठ डालर के हिसाब से गिरते पैसों की गति से पैसे नहीं बना सका.....”

इक मार्ग-चिह्न को मैंने देखा जो दक्षिणी इंडियाना के एक छोटे गांव का नाम इस प्रकार घोषित कर रहा था—ना बोन (Gnaw Bone)। बहुत समय पहले यह जगह फ्रन्सीसियों की थी, लेकिन केण्टकीवासी, जो बाद में आए, उन्हें नारबोने (Narbonne) का कोई ज्ञान नहीं था।

दूर पूर्व में ऋतु-निर्देशक होते हैं : जहाज, मल्लाह और काड मछलिया और न्यूयार्क के खेतों में होते हैं : दुलकी दौड़ते घोड़े और मोटी गायें। लोग ऋतु के सहारे रहते हैं और उनका कहना है कि यदि अक्तूबर में भारी पाला पड़े तो जाड़े में भारी बर्फ ज़रूर पड़ेगी, और तूफान आने से पहले सुअर चीखा करते हैं और इधर-उधर भागा करते हैं, क्योंकि वे हवा के रंगों को देख लेते हैं, जो लाल होता है।

नेवादा के खनिक शिविर के लकड़ी के होटल में आग से बचने का कोई रास्ता नहीं था। मैंने होटलवाले से पूछा कि आग लग जाए तो क्या

किया जाए ? “खिडकी में से कूद पड़ो और बाईं ओर मुड़ जाओ।”

कहा जाता है कि सान फ्रान्सिस्को में स्लाट के दक्षिण में स्थित घरों में जब खटमलों को बिस्तरों से बाहर खदेड़ा जाता तो वे नाराज़ हो जाते थे, झाड़-फानूसों पर कूद जाते थे और लोगों पर भूकते थे।

टेक्सास के पशु-पालन केन्द्रों में वे अद्भुत (सनोबिच) खिचड़ी खाते हैं। बनानेवाला इसमें हर चीज़ भर देता है, लेकिन अगर आप बता सकें कि इसमें क्या-क्या है तो भला क्या बात हुई। एक केण्टकीवाले के बारे में एक कहानी कही जाती है कि वह एक टेक्सासवाले के सामने अपने राज्य की डींगे मार रहा था, “अरे, हमारे यहां संसार की सबसे खूबसूरत स्त्रिया है; सबसे बढ़िया घोड़े हैं; सबसे उत्तम चरागाह है। दुनिया में जितना सोना है उससे कहीं ज्यादा हमारे पास है। फोर्ट नाक्स में हमारे यहां इतना सोना है कि उससे टेक्सास राज्य के चारों ओर चार फुट ऊंची और एक फुट मोटी दीवार खड़ी की जा सकती है।”

“तो मैं कहता हूँ तुम चलते जाओ और उसे बना डालो। मुझे पसन्द आ गई तो मैं उसे खरीद लूंगा।”

डेनवर में मिसूरी के एक बूढ़े से मेरा परिचय हुआ, जो विंडसर के दालान की उजड़ी शान-शौकत के बीच बैठा धूप सेक रहा था। वह कहने लगा, “मैंने एक किताब लिखनी शुरू की है जो मेरे अपने जीवन से सम्बन्धित है।” मैंने उसका शुरू का भाग पढ़ा :

“इस किताब को लिखते समय, जितना मेरे लिए याद करना मुमकिन हुआ, उतनी ही अच्छी तरह मैंने इसे बनाया है। क्योंकि मैं एक ६६ साल का आदमी हूँ और हर दिन की बातों की कोई डायरी मैंने कभी नहीं रखी—जो मुझे रखनी चाहिए थी—क्योंकि मैंने कभी इस किताब को लिखने के नहीं सोची थी। जितना हो सकेगा मैं उन पुरानी बातों को याद करूंगा, और तथ्यों को उतनी ही अच्छी तरह दूंगा जितना कि मैं याद कर सकूंगा। शैरिटन काउण्टी मिसूरी में १९ जनवरी, १८६९ के दिन मैं

पैदा हुआ था और जब मैं १८ महीने के लगभग था तभी मेरी मा मर गई थी....”

कागज और कापिया मैंने उसे दे दी और वह आगे बढ़ चला :

“और जहाँ तक पढ़ाई का मतलब है, मेरा दादा हल और बैल ही हमारे लिए रखता था, स्कूल की किताबें नहीं और इसलिए हमारी पढ़ाई बहुत ही थोड़ी हो सकी...लेकिन मेरी सौतेली दादी ने मेरे दादा को मज्बूर किया कि वे हमें स्कूल भेजें और हम लगभग दो महीने स्कूल गए और इससे पहले जीवन-भर में जितना मैंने सीखा था उससे अधिक मैंने तब सीखा। स्कूल के उन दो महीनों ने मुझे चालू कर दिया और किताबों में मुझे रुचि हो गई और मैं घर पर ही अपने चचा की सहायता से पढ़ने लगा। मैं बहुत बढ़िया चला और जितनी भी शिक्षा मैंने पाई उतनी सिर्फ अपनी कोशिशों से। जैसे मैं बड़ा होता गया प्रकृति और घोंड़ों ने मुझे बहुत अधिक सिखाया। मैं डींग नहीं मारता, लेकिन चीजों के बारे में मेरी नज़र काफी पैनी है, और यह सब मैंने अपने निजी अनुभव और दूसरों को करते देखकर ही सीखा है।”

तीन सौ पृष्ठों के बाद उसने इस प्रकार समाप्त किया

“और अब क्योंकि हम अपनी कहानी को समाप्त कर रहे हैं, हम अपना दिली धन्यवाद देंगे और एक प्रार्थना करेंगे, क्योंकि मैं जानता हूँ कि प्रार्थना यदि आपको कोई लाभ नहीं देगी तो कोई चोट भी नहीं पहुँचाएगी। क्योंकि हम वहाँ हैं जहाँ हम नहीं जानते कि किस रास्ते पर कदम रखना है, हम महसूस करते हैं कि भगवान हमारे लिए क्या ठीक है क्या गलत, यह न जान सकने के लिए हमें जिम्मेदार ठहराएंगे क्योंकि यदि हमें इस बात का ज्ञान हो कि कौनसा रास्ता ठीक है तो हम ठीक रास्ते पर ही चलना पसन्द करेंगे। इसलिए अब हम प्रार्थना करते हैं।

“स्वर्ग में रहनेवाले हमारे पिता, तेरे नाम से तेरा राज्य पवित्र बना है; जैसे वह स्वर्ग में चलता है वैसे ही धरती पर चलेगा। हमें आज हमारी रोटी दे और जैसे हम अपने कर्जदारों को माफ कर दे, तू हमारे ऋणों को

माफ कर दे। तू हमे दण्ड की ओर न ले जा, बल्कि सब पापों से हमे उबार, क्योंकि सदा तेरी ही शक्ति और तेरा ही ऐश्वर्य अमर है। आमीन।”

आरम्भ और अन्त के बीच एक अमरीकी का चित्र है, जो प्राचीन ढग पर निडर और स्वतन्त्र है और अपने प्रति, अपनी आत्मा के परमात्मा के प्रति उत्तरदायी है, और उसमे मिसूरी की भूमि है और वहा के लोगो की बोली है।

बच्चे नगर की पटरियो पर खेलते है, “दरार पर कूदो, अपनी मां की कमर तोड़ दो, लाइन पर कूदो, अपनी मा की रीढ़ की हड्डी तोड़ दो।” उनके छन्द अतिथयार्थवादी है, डाली के छन्दो से भी अधिक। और कोई नही जानता कि वे कहा से आए। वे गाते है

हैरी, हैरी किसी काम का नही है।
हम उसे जलाने के लिए काट लेगे
यदि आग नही जलेगी,
तो हैरी बस एक बड़ा मोटा कीड़ा ही है।

वे इस प्रकार गिनते है :

आग बुझानेवाले, आग बुझानेवाले, नम्बर आठ
उसके सिर को दरवाजे से टकरा दो
दरवाजा अन्दर को खुला, दरवाजा बाहर को खुला,
और लो आग बुझ गई।
इबिटी, बिबटी, सिबिटी, सैब...

लोगो के अपने विश्वास और अर्ध-विश्वास होते है : एक नये शिशु को मेज की एक टांग के चारो ओर तीन बार घुमाओ, उसे सौभाग्य दिलाने के लिए। मरते हुए आदमी के काटे में घोर विष होता है। शादी का सातवां साल बड़ा खतरनाक होता है; अगर आपको अलग होना है तो

उसी वर्ष होंगे नहीं तो कभी नहीं होंगे। मुह पर की चित्तियों से छुटकारा पाने के लिए तरबूज के रस से अपना मुह धोओ। बिस्तर में पेशाब करने का इलाज है, भूना हुआ चूहा। जहाज खेते हुए हवा के लिए मस्तूल में एक चाकू घुसेड देना चाहिए। यदि कोई पति या पत्नी भटक जाए तो परसिमन नामक फल की सात कोपले आग में जलाओ, और जो पथ-भ्रष्ट होगा उसे सात बार तेज दर्द उठेगा और वह घर लौट आएगा। नव वर्ष के दिन सुअर के बाल और काली चिन्दी वाली मटर खाइए और पूरे वर्ष आपको भरपूर खाना मिलेगा। काला साप यदि किसी गाय को चूग ले तो उसका दूध सूख जाएगा। शुक्रवार को कोई नया काम या कोई यात्रा आरम्भ नहीं करनी चाहिए। अगर तुम जुए में अच्छी रकम जीतना चाहते हो तो किसी अजनबी स्त्री को चूमो या चमगादड़ का दिल अपनी जेब में रखो। मुर्गी को अंडे देना बन्द करने से रोकने के लिए अलार्म घड़ी घोंसले में रखो और उसे बजने दो। घर के अन्दर कुल्हाड़ी रखने का अर्थ है मौत। अपने बाये कन्धे पर नमक छिड़को। टूटते हुए तारे की कसम खाओ। अपनी उंगलियों को उलझाकर रखो। लकड़ी को छुओ। एक तीली पर तीन...

हवा तेज चल पड़ती है। मोन्टाना में गाडी की जजीरे हवा के साथ-साथ सीधी खड़ी हो जाती है और कभी-कभी तो उनके जोड़ तक खुल जाते हैं। हैरी ओलीवर कहता है कि सर्चलाइट में उसने एक मुर्गी को हवा की ओर पूछ करके उसी अण्डे को पाच बार देते हुए देखा था।

लोग अमरीका की अपनी शैली में बातें करते हैं। डैनियल बून उजाड़ जगहों की दो वर्ष की यात्रा के बाद लौटा और उसने अपने अनुभव बताए। एक सुननेवाले ने पूछा, वह कभी खोया तो नहीं। “खोया? नहीं, मैं कभी नहीं खोया। लेकिन एक बार तीन दिनों तक मैं बौखलाया-सा रहा।” अरकान्सास का गवर्नर जेफ डेविस बोला, “मैं गा नहीं सकता। जब मैं बच्चा था तब शोरबे के लिए चिल्लाते-चिल्लाते मेरी आवाज खराब हो गई थी।” वान्स रैन्डालफ एक किसान के बारे में कहता है कि एक बार एक गाली-गलौज करनेवाले राजनीतिज्ञ की बातें बिना कोई टिप्पणी किए

वह कुछ देर तक सुनता रहा । तब वह बोला, यह आदमी मुझे उस समय की याद दिलाता है जब मेरे गोदाम में स्कक (बदबूदार जीव) इकट्ठे हो गए थे ।” एक लगभग असम्भव काम के बारे में एक मिसूरीवासी बोला, “इससे अच्छा तो मैं ईल मछली (सर्प मीन) का बोझ बांहों में भरकर किसी काटेदार पेड़ को ठोकर लगाऊंगा ।” मरते हुए एक बूढ़े ने बड़े ही सुन्दर रूप में कहा, “अब अधिक देर नहीं है कि एक हरी रजाई मुझे उड़ा दी जाएगी ।”

हमसे कुछ के लिए लोक-ज्ञान अमरीका के अतीत और हमारे अपने अतीत की यादगार है । अन्यो के लिए वह एक सजीव विरासत है, उतनी ही सजीव जितना कि दक्षिणी चरागाह का कोई बछेरा ।

दोनों के लिए ही वह अच्छा है, क्योंकि जड़े अच्छी होती है ।

जॉन स्टीनबेक

एडमंड विल्सन

जॉन स्टीनबेक

जान स्टीनबेक भी केलिफोर्निया के ही ठेठ वासी है और इन अन्य लेखकों की अपेक्षा राज्य के जीवन के साथ स्वयं को उन्होंने सबसे अधिक सम्बद्ध रखा है। उनके उपन्यासों में सालिनास घाटी प्रदेश को जानने की भावना ऐसी दृढ़ और खोजपूर्ण है जैसी हमारे हाल के कथा-साहित्य में कही नहीं मिलती। हा, मिसीसिपी राज्य का फाकनर द्वारा किया गया विस्तृत अध्ययन इसका अपवाद है।

और जिस प्रदेश को श्री स्टीनबेक इतनी अच्छी तरह जानते हैं उसमें उन्होंने क्या पाया है ? मेरा विश्वास है कि उनकी कलाकारिता ने एक विशुद्ध तकनीकी ढंग से उनके विचारों को ढकने का उपक्रम किया है। उनके कथा-साहित्य की लगभग आठ पुस्तकें छपी हैं जिनमें कितने ही प्रकार के कला-रूप हैं, जिन्होंने यह भ्रम पैदा किया है कि इन्हें कितने ही भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से लिखा गया है। 'टोरटिला फ्लैट' एक वर्णनात्मक व्यंग्य-गीत है जो बहुत कुछ एक लोक-कथा जितना ही सहज-सरल है। 'इन डूबियस बैटिल' एक हड़ताली उपन्यास है जो साम्यवादी सगठनकर्ताओं के चतुर्दिक् घूमता है और बहुत कुछ गतानुगतिक शैली पर चलता है। 'आफ माइस एण्ड मैन' एक छोटा-सा गुथा हुआ नाटक है जिसे शायद बहुत अधिक चतुराई से गढ़ा गया है। यह एक नीति-कथा भी है जो राजनीति से इतर एक दृष्टिकोण से मानवता की आलोचना करता है। 'दि लाग बैली' कहानियों का एक संग्रह है। इसकी अधिकांश कहानियां पशुओं पर हैं और इनमें काव्यात्मक प्रतीकों को वास्तविक परिवेश में रखकर उन्हें ठोस विवरणों से भरा गया है। 'दि ग्रेप्स आफ रैथ' एक प्रचारात्मक

उपन्यास है जो उपदेशों और समाजशास्त्रीय विष्कम्भों से भरा है और जिसे एक 'एपिक' के स्तर तक विकसित किया गया है। इस प्रकार श्री स्टीनबेक की कृतियों की विषय-वस्तु से हमारा ध्यान इस तथ्य के कारण हट जाता है कि जब भी पर्दा उठता है वे एक भिन्न प्रकार का रूप धारण किए सामने आते हैं।

फिर भी श्री स्टीनबेक के कथा-साहित्य में एक ऐसा मूलाधार है जो स्थायी रहता है और जो उसे एक निश्चित सत्त्व प्रदान करता है। श्री स्टीनबेक में जो एक तत्त्व स्थायी है वह है उनका जीव-विज्ञान से प्रभावित दृष्टिकोण। वे शब्दशः एक जीवशास्त्री हैं और जीव-विज्ञान की खोजों में स्वयं को नियुक्त करते हैं। उनकी कहानी 'दि स्नेक' की जीव-वैज्ञानिक प्रयोगशाला साफ-साफ एक ऐसी चीज है जिससे उनका सीधा परिचय है और जिसके लिए उनमें एक पुष्ट और विशिष्ट लगाव है। उनके शब्द-भंडार की भी यह विशेषता है कि वह जीव-वैज्ञानिक परिभाषाओं को ग्रहण करता है। लेकिन साथ ही 'दि स्नेक' में वर्णित, पानी की सतह से ऊपर उठा छोटा-सा सकरा मकान वह प्रयोगशाला जिसमें कि वैज्ञानिक सापों को सफेद चूहे खिलाता है और मछलियों के अण्डे पालता है—उनके कथा-साहित्य के प्रधान बिम्बों में से है। वह श्री स्टीनबेक की मानव को एक जीव के रूप में प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति का एक प्रतीक है।

लगभग सदा ही अपनी कृतियों में श्री स्टीनबेक निम्नतर श्रेणी के पशुओं को या इतने अविकसित मानवों को, जो लगभग पशुस्तर पर होते हैं, अपना विषय बनाते हैं। और पशुओं और मनुष्यों के बीच के सम्बन्ध वहाँ उतने ही घनिष्ठ हैं जितने कि डेविड गार्नेट और डी० एच० लारेन्स के पशु-प्रेमी साहित्य में हैं। 'दि पास्चर्स आफ हैविन' का जड मूर्ख जिसे नन्हा मेढक और भेड़िया कहा गया है, पक्षियों और पशुओं की तस-वीरें लगातार खीच-खीचकर पशु-जगत् से अपने रिश्ते को प्रकट करता है। 'टोरटिला फ्लैट' में एक समुद्री डाकू है जो अपने कुत्ते के साथ ही कुत्ता-घर में रहता है और जो मानव के संग को व्यवहारतः भूल चुका है।

‘इन डूबियस बैटिल’ में एक और चरित्र है जिसका व्यक्तित्व उसके कुत्ते के साथ उलझ गया है। ‘दि ग्रेप्स आफ रैथ’ में जोड्स की यात्रा आरम्भ में कछुए की गति के माध्यम से चित्रित की गई है और रास्ते-भर पशुओं, कीड़ों और पक्षियों के माध्यम से उसकी व्यंग्यानुकृति (पैरोडी) तैयार की गई है। जब ओकलाहोमा में बेदखल हिस्सेदार अपने खेतों से निकल जाने पर मजबूर कर दिए जाते हैं, तब चमगादड़ों, लकड़बगधों, उल्लुओ, चूहों और अब फिर जगली बन गई पालतू बिल्लियों द्वारा घर पर चढ़ाई कर देने का एक विस्तृत चित्र हमारे सामने रखा जाता है। ‘आफ माइस एण्ड मैन’ का लेनी पालतू पशुओं को साथ लिए फिरना पसन्द करता है। पर जैसेकि मानवों की प्रति इसी तरह उनके प्रति भी उसमें हत्या की पाश-विक अन्तर्वृत्ति विद्यमान है। ‘दि लाग वेली’ की कहानियां लगभग सबकी सब पौधों और पशुओं के बारे में हैं। श्री स्टीनबेक लारेन्स और किर्पलिंग की तरह पशुओं को मानवों के स्तर तक रूमानि ढंग से उठा देने का प्रयास नहीं करते, बल्कि वे मानवों को पशुओं के साथ एकरूप कर देते हैं। ‘दि क्राइसेन्थिमस’, ‘दि व्हाइट क्वेल’ और ‘दि स्नेक’ उन स्त्रियों को विषय बनाती हैं जो क्रमशः गुलदाउदी के फूलों, सफेद बटेर और साप के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेती हैं। ‘फ्लाइट’ में एक मैक्सिकी लड़का एक व्यक्ति की हत्या करके पहाड़ों में भाग जाता है और अन्त में वह पशु-स्थिति के इतने निकट पहुंच जाता है कि एक पहाड़ी शेर गलती से उसे एक दूसरा चौपाया पशु समझ लेता है। ‘सेट केटी दि वर्जिन’ फेटेसी में एक दुष्ट सुअर से पश्चात्ताप कराया जाता है और वह सन्त बन जाता है। परिणाम एक पशु को प्रतिष्ठा देना नहीं हुआ है, जैसाकि ‘लिटिल फ्लावर्स आफ सेट फ्रान्सिस’ में अगूबियों के भेड़िये के साथ किया जाता है, बल्कि मानवीय धर्म का मज्जाक उड़ाना हुआ है।

न ही स्टीनबेक पशुओं से डी० एच० लारेन्स की तरह का प्रेम करते हैं। इस विशिष्ट दृष्टिकोण का ‘टु ए गाड अननोन’ में टामस वेन के सम्बन्ध में अच्छी तरह विश्लेषण किया गया है : “वह पशुओं के प्रति दयालु नहीं

था; कम से कम उससे अधिक दयालु नहीं था जितने कि वे एक-दूसरे के प्रति होते हैं। लेकिन निश्चय ही उसने उतनी स्थिरता के साथ व्यवहार अवश्य किया होगा जिसे पशु समझ सके, कारण कि सभी जीवों का विश्वास उसमें था। टामस पशुओं को पसन्द करता था और उन्हें समझता था, और उन्हें मारते हुए उसमें उससे अधिक भावना नहीं होती थी, जितनी कि वे एक-दूसरे को मारते समय महसूस करते हैं। वह स्वयं इतना अधिक पशु था कि भावुक हो नहीं सकता था।” और स्टीनबेक अपने विभिन्न पशुओं को उनके अपने निजी रूप में पूर्ण दिखाने की भी चिन्ता नहीं करते, जैसी कि लारेन्स करते हैं। पशुओं की आदतें और उनके बर्ताव ही उनकी रुचि के विषय हैं, पशुओं द्वारा छोड़े जानेवाले प्रभाव नहीं।

इस प्रकार श्री स्टीनबेक के कथा-साहित्य का प्रधान विषय मानवता के वे पक्ष नहीं हैं जहाँ मानव अत्यन्त विचारशील, कल्पनाशील और सृजन-शील होता है, न ही पशुओं के वे पक्ष हैं जो मानवों को अत्यन्त आकर्षक प्रतीत होते हैं, बल्कि स्वयं जीवन की प्रणालियाँ ही हैं। प्रकृति के साधारण क्रम में सजीव जीव लगातार नष्ट हो रहे हैं और जो प्रधान चीजें उन्हें नष्ट करती हैं उनमें हैं हिंस्र भूख और प्रतियोगिता की अन्तर्वृत्ति, जो भोजन और प्रजनन करनेवाले प्राणियों के संरक्षण के लिए बहुत जरूरी है। हत्यारे की यह अन्तर्वृत्ति ‘आफ माइस एण्ड मैन’ के लेनी जैसे जड़ मूर्ख में ऐसे रूप में सरक्षित है कि वह लगभग अबोध बन गई है। फिर भी अपने अधिक विकसित मित्रों से लेनी ने यह सीख लिया है कि इस अन्तर्वृत्ति के सामने समर्पण करना एक ‘बुरा’ काम है। अन्तर्वृत्ति के विरुद्ध इस संघर्ष में लेनी हार जाता है। लेनी अच्छा है या बुरा? लेखक का भाव यह है कि जिस प्रकार हमारे मानवीय मन्तव्य सदा हमारी पशु-प्रकृति की अनिश्चितताओं द्वारा ढके जाते हैं, उसी तरह वह भी ढगा जाता है। नियमपूर्वक, इस आदिम स्तर पर ही श्री स्टीनबेक नैतिक प्रश्नों पर विचार करते हैं। अपराध जैसे गुण उनके लिए इन योजनाहीन, लगभग लक्ष्यहीन, और लगभग अचेतन पद्धतियों के ही अंश हैं। ‘दि ग्रेप्स आफ रैथ’ का उपदेशक मानवीय

नैतिकताओं के प्रति निर्भ्रम हो गया है। जीवन-काल में बहुत ही लम्पट और नीच ग्रैम्पा जोड़ की कब्र पर दिया गया उसका उपदेश स्पष्ट ही श्री स्टीनबेक के दृष्टिकोण को ही व्यक्त करता है: “यह बूढ़ा यहाँ एक जिन्दगी जिया और मरकर उससे दूर चला गया। मैं नहीं जानता कि वह अच्छा था या बुरा। यह अधिक महत्त्व की बात भी नहीं है। महत्त्व की बात यही है कि वह जीवित था। अब वह मर गया है और यह भी कोई महत्त्व की बात नहीं है। एक आदमी कभी एक कविता गाया करता था, वह कहता था, ‘जितना कुछ भी जीवित है वह सब पवित्र है।’ ”

‘दि ग्रेन्स आफ रैथ’ के बारे में माना जाता है कि उसका विषय मानव-समाज है। पर उसका विषय वही है जो ‘दि रैंड पॉनी’ का है, जिसके बारे में यह माना जाता है कि वह घोड़ों से सम्बन्ध रखती है। यह समान विषय है, स्वयं जीवन के प्रति भक्ति। जो लोग अपने को, लाल घोड़े को मर जाने देने के लिए, जिम्मेदार समझते हैं उनको घोड़ी का बलिदान करके इसका प्रायश्चित्त करना चाहिए जिससे कि एक नया घोड़ा इस ससार में जन्म ले सके। इसी प्रकार शारन जोड़ की रोज़ को, जिसने एक अपुष्ट और मृत बच्चे को जन्म दिया है, उजड़े अस्तबल में, जो उसके पास सिर छुपाने की एकमात्र जगह बच रही है, भूख के कारण मृत्यु की सीमा तक पहुँचे अकाल और बाढ़ के एक अन्य दयनीय शिकार को अपना दूध पिलाना ही चाहिए। घोड़े और ओकी किस लक्ष्य के लिए इस धरती पर जीवित रहे चले आए? “और मैं उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना नहीं करूँगा जो मर गया है,” उपदेशक आगे कहता है। “वह बिल्कुल ठीक है। उसे करने को एक काम मिल गया है। पर उसके लिए सब कुछ निर्धारित है और उसे करने का बस एक ही रास्ता है। लेकिन हमें, हमें भी एक काम करने को मिला है और उसे करने के हजार रास्ते हैं, और हम नहीं जानते कि हम कौन-सा रास्ता अपनाएँ। यदि मुझे प्रार्थना करनी है तो मैं उन लोगों के लिए करूँगा जो नहीं जानते कि किस ओर मुड़ना है।”

यह उपदेशक जिसने अपने धर्म को खो दिया है, ढूँढ लेता है कि उसे

किस ओर मुड़ना है। वह मजदूरों का नेता बन जाता है। यह विचार पहले के एक उपन्यास 'इन डूबियस बैटिल' में अधिक पूर्ण रूप में रखा गया है। श्री स्टीनबेक की क्रान्तिकारी नेतृत्ववाले मजदूर-आन्दोलन की इस तसवीर में और उस अवधि के इन विषयों के अधिकांश निर्वचनों में जो अन्तर है, वह जीव-वैज्ञानिक दृष्टिकोण का ही है। अधिकांश उपन्यासों की तरह इसमें भी हड़ताली नेता कम्युनिस्ट ही है। लेकिन 'इन डूबियस बैटिल' वास्तव में साम्यवादी सिद्धान्तवाद के तत्त्वों पर आधारित नहीं है। कम्युनिस्ट आन्दोलन और हड़तालों में कम्युनिस्ट कूटनीति ने (परसों के कम्युनिज्म ने) जिस प्रकार के चरित्र पैदा किए हैं, श्री स्टीनबेक ने उनका वर्णन किया है और यह वर्णन बहुत कुछ प्रशंसापूर्वक ही किया गया है। लेकिन 'इन डूबियस बैटिल' का कम्युनिस्ट एक मार्क्सवादी की तरह— यहाँ तक कि स्टालिनवादी सशोधन काल के मार्क्सवादी की तरह भी बातें नहीं करता। इन क्रान्तिकारियों की क्रूरता को, यद्यपि ये लोग एक उदार आदर्श के लिए काम कर रहे हैं और संघर्ष में अपनी आत्मबलि तक दे देंगे, लेखक बिना किसी तरह की लीपा-पोती के उसी तरह पेश करता है जैसे कि उसने अर्धजड़ लेनी की क्रूरता को पेश किया है। पुस्तक के बीच हम यह महसूस करने को बाध्य हो जाते हैं कि यद्यपि चरित्र प्रभावशाली है, पर उन्हें हमारे इस युग में जीवन जिस प्रकार चल रहा है, मुख्य रूप से इसके उदाहरणों के रूप में ही प्रस्तुत किया गया है। कहानी के बीच समूह-मानव के पशु रूप होने का एक पूरा दर्शन विकसित किया गया है। ऐसा विशेष रूप से एक सहायत्री डाक्टर के माध्यम से किया गया है, जो हमें श्री स्टीनबेक के निजी विचारों के कम्युनिस्ट की अपेक्षा कहीं अधिक निकट लगता है।

“मैंक, यह ऐसा हो सकता है : समूह-मानव जब कुछ करना चाहता है, तो वह एक आदर्श बना लेता है। 'ईश्वर चाहता है कि हम पवित्र भूमि पर फिर कब्जा कर लें,' अथवा वह कहता है, 'प्रजातन्त्र के लिए संसार को निर्विघ्न बनाने को हम युद्ध करते हैं,' अथवा वह कहता है, 'हम कम्यु-

बाद में जब फल तोड़नेवाले हडतालियों की भीड़ काबू से बाहर होने लगती है, तब कम्युनिस्ट स्वयं उनके बारे में इस अधोमानवीय शैली में सोचना आरम्भ कर देते हैं।

“वे अब वहाँ पहुँच गए हैं। ईश्वर के लिए, मैक, तुम्हें उन्हें देखना चाहिए था। लगता था जैसे वे सब गायब हो गए हैं और उनकी जगह बस एक बड़ा पशु है, जो सड़क पर बड़ा जा रहा है। बस, सिर्फ एक पशु।”

“पशु बैरिकेड नहीं चाहता। मैं नहीं जानता कि वह क्या चाहता है। कठिनाई यह है कि जो व्यक्ति समूह का अध्ययन करते हैं वे सदा यही समझते हैं कि समूह मानव है। पर समूह मानव नहीं है। समूह मानवों से उतना ही भिन्न है जितने कि कुत्ते हैं। जिम, जब हम उसका उपयोग कर सकते हैं, तो वह बहुत बढ़िया रहता है। लेकिन उसके बारे में हम काफी नहीं जानते। जब वह चल पड़ता है, तो कुछ भी कर सकता है।”

‘दि लीडर आफ दि पीपुल’ का बूढ़ा पायनियर एक पश्चिमोन्मुख देश-परिवर्तन का, जिसका नेतृत्व कभी स्वयं उसने ही किया था, इस प्रकार वर्णन करता है, “लोगों का झुंड का झुंड एक विशाल रेंगते पशु के रूप में बदल गया था... हर आदमी अपने लिए कुछ न कुछ चाहता था। लेकिन वे सब मिलकर जिस पशु का रूप बन गए थे, वह सिर्फ पश्चिम की ओर बढ़ना ही चाहता था।”

मानव जाति को पशु रूप में चित्रित करने की स्टीनबेक की प्रवृत्ति स्पष्ट ही व्यक्ति-मानवों के सृजन में उनकी अपेक्षाकृत असफलता का एक कारण है। ‘टोरटिला फ्लैट’ के पैसानो वास्तव में पूरे मानव-प्राणी नहीं है। वे चालाक नन्ही, सजीव गुड़ियाएँ हैं, जो हमारा मनोरंजन उसी प्रकार करती हैं जैसे पालतू गिनीपिग, गिलहरियाँ अथवा खरगोश करते हैं। उन्हें एक विशिष्ट रूढ़ि के माध्यम से पेश किया जाता है जिसका योजनाबद्ध लक्ष्य लेखक अथवा पाठक से उनकी किसी भी प्रकार की आत्मीयता को काट देना होता है। दूसरी ओर ‘दि ग्रेप्स आफ रैथ’ में श्री स्टीनबेक ने बेदखल किसानों के परिवार के साथ अपने मानवीय रिश्ते का अनुभव पाठक

को कराने के लिए अपने सभी साधनों का उपयोग किया है, फिर भी परिणाम बहुत वास्तविक नहीं हो सका है। 'दि ग्रेप्स आफ रैथ' के चरित्र मानो सजीव नहीं है, बल्कि उनमें सिर्फ गीत भरकर उन्हें चालू कर दिया गया है। वे एक काफी बढिया तरह लिखे गए नाटक के अत्यन्त सजीव अभिनय करनेवाले उत्कृष्ट चरित्र-अभिनेताओं जैसे ही हैं। उनकी बोली अच्छी तरह व्यवस्थित है लेकिन वे सदा ही थोड़े नाटकीय प्रतीत होते हैं। उन्हें साहसी मानव-प्रतीक बनाने के श्री स्टीनबेक के प्रयत्नों के बावजूद, पाठक यह महसूस किए बिना नहीं रह सकता कि ये ओकीज भी उनके लिए मानव के रूप में अस्तित्व नहीं रखते। ऐसा लगता है जैसे लेमिंगो (उत्तरी ध्रुव के छोटे जीव) की उस भीड़ को मानवीय सम्बेदनाएँ और बोलियाँ दे दी गई हैं, जो स्वयं को समुद्र में फेंक देने के लिए चले जा रहे हैं। 'जानी बियर' नामक छोटी कहानी याद आती है। जानी बियर स्टीनबेक के जड़ मूर्खों में एक और है। उसका शरीर ठीक भालू जैसा है और लगभग हर रूप में वह एक अर्धमानव है। पर उसमें एक अजीब गुण है। जो भी बात-चीत वह सुनता है, उसकी पूरी नकल वह कर सकता है, वैसे उनके अर्थों को वह एकदम नहीं समझता।

'दि ग्रेप्स आफ रैथ' से स्टीनबेक के एक बहुत आरम्भिक उपन्यास 'टु ए गाड अननोन' तक लौटना बहुत ज्ञानप्रद रहेगा। इस पुस्तक में उन्होंने प्रकृति के मूल सिद्धान्तों के रूप में संहारक और प्रजनक शक्तियों को प्रकट रूप में अपना विषय बनाया है। एक जगह एक चरित्र नायक का वर्णन यह कहकर करता है, "कि उसने व्यक्ति को कभी नहीं जाना है।" "जोजेफ, तुम्हें व्यक्तियों का कोई परिचय नहीं है। तुम सिर्फ जनता को जानते हो। जोसेफ, तुम इकाइयों को नहीं देख सकते सिर्फ समष्टि को ही देख सकते हो।" लगभग अचेतन रूप में और ईसाइयत के प्रतिकूल, वह अपने को एक आदिम प्राकृतिक धर्म का आचरण करते हुए पाता है। एक बार भयानक सूखा पड़ने पर वर्षा की आकांक्षा में रक्त-बलि देने के लिए, वह पहले अपनी पत्नी की और फिर स्वयं अपनी बलि दे डालता है। यद्यपि

यह कहानी बेहूदा है पर इसमें एक विशेष रोचक तत्त्व निहित है। ससार और उसे चलानेवाली शक्तियों के बारे में अपने निजी विचारों को अभिव्यक्त करने के तीस वर्षीय स्टीनबेक के सच्चे प्रयास का यह स्पष्ट प्रतिनिधित्व करता है। यदि उनके बाद के उपन्यासों में से उनके नीरस शब्द-जाल की भूरी को आप भाड़कर बाहर फेंक सकें तो मानवता की वही व्याख्या आपको उपलब्ध हो जाएगी जो इकाइयों की नहीं बल्कि समूह की होगी, जो सहार और पूर्वजन्म के कालचक्र की वैसी ही निराशापूर्ण तसवीर है।

ऐसा नहीं है कि जॉन स्टीनबेक द्वारा मानव का लेमिगो, अथवा सूखने के लिए पड़ी घास के रूप में चित्रण, जिस युग में हम रह रहे हैं उससे, स्पष्ट सगति नहीं रखता। लगता है, हमारे इस युग में शेक्सपियर का क्रुद्ध लंगूर अपनी अल्पसत्ता के द्वारा बाकी की सारी मानव-जाति को क्रुद्ध लंगूर अथवा भयभीत मूषक बनाए दे रहा है। एल्डस हक्सले के उपन्यास 'आफ्टर मेनी ए समर डाइज दि स्वेन' में एक चीज की बड़ी प्रखरता से कल्पना की गई थी कि अठारहवीं सदी का एक गुलामो का व्यापारी एक भ्रूण बन-मानुस का रूप धारण कर लेता है। ससार के कितने ही भागों में आज जोड़ जैसे प्रवासियों की बाढ़ आ रही है। मानव-समाज की प्रतिष्ठा इन्हें प्राप्त नहीं है। मानवीय श्रम का सम्मान इनसे छीन लिया गया है। और प्रेरी के मैदानों में आग लग जाने पर प्रेरी के कुत्ते जिस प्रकार भागते हैं, अपने घरों से उसी प्रकार इन्हें भगाया गया है। हमारे अमरीकी मानवतावादियों की तरह ही एल्डस हक्सले को उस मूलभूत नैतिक अन्तर के बारे में बहुत कुछ कहना है जिसे, उन्हें विश्वास है कि, वे मानव और पशु-स्तर के बीच खोज सके हैं। इन दोनों के बीच अन्तर करने के महत्त्व पर भी उन्हें प्रकाश डालना है। और मानवतावादियों की तरह ही वे भयभीत हो उन सश्लिष्ट सम्प्रदायों में से एक को अपना बैठे हैं, जो हमारे विलुप्त धर्मों की जगह काम कर रहे हैं। इसके विपरीत, 'इन डूबियस बैटिल' में डाक्टर को इस-लिए लाया गया है कि वह उन धर्म-तत्त्वों को भी निन्दित कर डाले जो

मजदूर आन्दोलन में भी ज्यो-ज्यो घुस आए हैं, पर साथ ही वह मार्क्स-वादियों के काल्पनिक स्वर्ग से भी कोई मतलब नहीं रखता। जब सघर्ष की बर्बरता से वह उदास हो जाता है और नवदीक्षित जिम उसे याद दिलाता है कि “उसे सिर्फ लक्ष्य के बारे में ही सोचना चाहिए। इस सघर्ष में से एक अच्छी चीज़ पैदा होनेवाली है,” तो वह उत्तर देता है कि “उसके अल्प अनुभव में तो लक्ष्य अपनी प्रकृति में साधनों से कभी भी बहुत भिन्न नहीं होता...” मुझे लगता है कि आदमी उस अतीत में से, जिसकी उसे कोई याद नहीं, उस भविष्य में जाने के लिए, जिसे न वह देख सकता है न समझ सकता है, एक अन्धे और भीषण सघर्ष में जुटा हुआ है। सभी रुकावटों और दुश्मनों से वह टकराया है और उन्हें उसने परास्त किया है। वह बस सिर्फ एक अपने को ही नहीं जीत सका है। मानव जाति स्वयं अपने से कितनी घृणा करती है?” “हम अपने से घृणा नहीं करते,” जिम कहता है, “हम उस पूजा से घृणा करते हैं जो हमें कुचल रही है।” “जिम, दूसरा पक्ष भी आदमियों से ही बना है, ठीक तुम्हारे जैसे आदमियों से। मनुष्य अपने से ही घृणा करता है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि मानव की आत्मरति उसकी आत्मघृणा के द्वारा पूरी तरह सन्तुलित है। मानव-जाति को वैसा ही रहना है। हम अपने से ही लड़ते हैं और मनुष्यों को मारकर ही हम जीत सकते हैं।”

साफ है श्री स्टीनबेक का दर्शन अपने आरम्भिक अथवा बाद के रूप में भी सन्तोषजनक नहीं है। मानव द्वारा आत्मघृणा और आत्मसंहार वाली इस दृष्टि का विरोध करने के लिए स्टीनबेक के पास जीवन में अक्षय आस्था के सिवाय और कुछ नहीं है और दीन मानव के बारे में जो भी तथ्य वे देते हैं वे जीव-वैज्ञानिक यथार्थ तक हमें पहुँचा देते हैं जो कि उसके मन की सहज प्रवृत्ति ही है। फिर भी पशु-मानव के प्रति उनका यह दृष्टिकोण मुझे श्री हक्सले के रहस्यवाद की अपेक्षा अधिक उचित लगता है। मेरा विश्वास है कि मानव-व्यवहार का इस भावना से अध्ययन करके जीवन के नियन्त्रण और उन्नयन के लिए कुछ मूल्यवान खोजा जा सकेगा।

जबकि वैज्ञानिक परम्परा के ह्रास में से आधारहीन और जीवनहीन रूप में उगनेवाले आत्ममनन के विधान से जिसका प्रतिनिधित्व हक्स्ले बन्धुओं का नवीनतम दर्शन करता है—वैसा होना सम्भव नहीं लगता ।

शेष यह कि श्री स्टीनबेक निरीक्षण और अन्वेषण के साधनों से अच्छी तरह सम्पन्न है जो असाधारण हैं और कभी-कभी तो आश्चर्यजनक लगते हैं । उनमें वह रंग है जो एकदम उनका अपना है, लेकिन पता नहीं किस कारण उसमें वह गुण नहीं है जिसे जादू कहा जाता है । यह अनुभव करना कठिन है कि अब तक की उनकी कोई भी कृति वास्तव में प्रथम श्रेणी की है । उन्होंने केलिफोर्निया के कृषि-जीवन का और केलिफोर्निया के प्राकृतिक दृश्यों का एक विस्तृत चित्र दिया है जो हमारे साहित्य में अद्वितीय है और कुछ अशुद्ध रूपों में इतने उत्कृष्ट है कि यह मान लेने पर विवश होकर हम परेशान हो उठते हैं कि कला की दृष्टि से उनमें कुछ खराबी आ गई है । पश्चिमी तट के दृश्य को किसने उतनी बढिया तरह खींचा है जितना वह 'टु ए गाड अननोन' में खींचा गया है । उसमें गंधे हाकते उस प्रतिष्ठित बूढ़े से हम मिलते हैं जिसने अपनी भोपड़ी ऊँची टेकरी पर बनाई है; इसलिए कि वह रेडवुड्स के सीधे ऊँचे स्तम्भों जैसे पेड़ों को और दूर नीचे फैले समुद्र को भाँककर देख सके और महसूस कर सके कि इस पश्चिमी दुनिया में वह अन्तिम व्यक्ति है जिसने सूर्य को छिपते देखा है । जो बात यहाँ गलत है वह है इसी क्षण बूढ़े का पशु-बलि देना । यह बात हमें याद दिलाती है कि श्री स्टीनबेक की कृतियों में गम्भीरता और निष्कृष्टता के मिश्रण का विरोधाभास सदा वर्तमान रहता है । मुझे सन्देह है कि 'टोरटिला फ्लैट' लोक-कथा की परम्परा द्वारा आरोपित सीमाओं के कारण ही कलात्मक रूप में उनकी सफलतम रचना नहीं बन पाई है ।

फिर भी इनकी अन्य पुस्तकों में प्राप्त पत्रकारिता, नाटकीयता और चतुराई के पीछे एक ऐसा दिमाग है जो जीवन के निर्भय निरीक्षण में प्रथम कोटि का प्रतीत होता है ।

हकलबेरी फिन

ल्योनल ट्रिलिंग

हकलबेरी फिन

१८७६ में मार्क ट्वेन की 'दि एडवेचर आफ टाम सायर' प्रकाशित हुई और उसी वर्ष उन्होंने एक अन्य पुस्तक लिखनी आरम्भ की जिसे 'लडको की एक और किताब' कहकर उन्होंने सम्बोधित किया। इस नये प्रयास से बहुत थोड़ी आस उन्होंने लगाई और यह कहा कि इसे "बजाय किसी और उद्देश्य के सिर्फ व्यस्त रहने" के लिए ही उन्होंने हाथ में ले लिया था। उनका दिल इसमें नहीं था—"जब तक इसे लिखता रहता हूँ तभी तक थोड़ा-बहुत इसे पसन्द करता हूँ," उन्होंने कहा था, "और सम्भव है, खत्म हो जाने पर इसे उठाकर ही रख दूँ या पाडुलिपि को जला ही डालूँ। खत्म होने से पहले ही उन्होंने इसे उठाकर रख दिया, वह भी पूरे चार वर्षों के लिए। १८८० में फिर इसे हाथ में लिया और थोड़ा-सा आगे बढ़ाया, पर फिर छोड़ दिया। वे सहज रचना के सिद्धान्त में विश्वास रखते थे और उनकी मान्यता थी कि पुस्तक को अपनी रचना आप करनी चाहिए। जिस पुस्तक को उन्होंने 'हक फिन की आत्मकथा' नाम दिया उसने अपना सृजन स्वयं करने से इन्कार कर दिया। और मजबूर उसे वे कर नहीं सकते थे।

पर फिर १८८७ की गर्मियों में मार्क ट्वेन में साहित्यिक ऊर्जा का ऐसा वेग पैदा हुआ कि उन्होंने हावेल्स को लिखा कि कितने ही वर्षों के अनुभव में, यह वेग सबसे प्रखर था। हर दिन और पूरे दिन वे काम करते और जब-तब इतने थक जाते कि एक या दो दिन सिगरेट पीने और बिस्तर में पडकर पढते रहने पर ही अपनी शक्ति वे लौटा पाते। यह असम्भव है कि यह न सोच लिया जाए कि यह महान सृजन-प्रेरणा वर्ष के आरम्भ में

की गई उनकी मिसीसिपी-यात्रा से सम्बन्धित थी या शायद उसीका सीधा परिणाम थी। 'लाइफ ऑन दि मिसीसिपी' के दूसरे भाग की सामग्री इसी यात्रा ने जुटाई है। उनका लडकपन और यौवन, जो उनकी इस अत्यन्त प्रिय नदी पर बीता था, मार्क ट्वेन के जीवन का सबसे आनन्दमय और सबसे महत्वपूर्ण अंश था। अब मध्य आयु में वहा लौटने पर कितनी ही स्मृतियाँ हरी हो गई थी जिन्होंने 'हकलबेरी फिन' के विचार को नया जीवन दिया और उसे ताजा बनाया। अन्ततः अब यह पुस्तक अपनी रचना आप करने के लिए न सिर्फ तैयार थी, बल्कि उत्कृष्ट थी। लेकिन लेखक की ओर से पर्याप्त सचेत सहयोग उसे नहीं मिल पाया। मध्यम कोटि की साहित्यिक योजनाओं से उनका हाथ भरा रहता था और अब गर्मियों के आरम्भिक सप्ताहों में, जबकि 'हकलबेरी फिन' स्वयं को पूरा करने की प्रतीक्षा में थी, अपनी तत्पर ऊर्जा को उन्होंने ऐसे ही कुछ व्यर्थ के कामों में भोक दिया। इन कामों को पूरा करके उन्हें उतनी ही तृप्ति मिली जितनी बाद में अन्ततः 'हकलबेरी फिन' में डूब जाने में मिली।

जब आखिर 'हकलबेरी फिन' पूरी हो गई और छप गई और उसे भारी प्रशंसा मिली तब जाकर मार्क ट्वेन को थोड़ा-बहुत अहसास हुआ कि जिस पुस्तक को उन्होंने एक यात्रा-विवरण के रूप में शुरू किया था, जिसकी निन्दा की, जिसे टाला, जिसे नष्ट कर डालने तक के लिए वे तैयार हो गए, उसमें क्या उपलब्धि उन्होंने भर दी थी। यह उनका महानतम ग्रन्थ है और शायद यह बात वे अब महसूस करने लगे थे। लेकिन यह ससार की महानतम पुस्तकों में से एक है और अमरीकी संस्कृति का एक मुख्य दस्तावेज है, यह अनुमान उन्होंने कठिनाई से ही लगाया होगा।

इसकी महानता किस बात में निहित है ? प्रथमतः तो सच कहने की इसकी शक्ति में। यह गुण 'टाम सायर' में जिस रूप में वर्तमान है उसके प्रति सचेत होकर ही एक बार अपनी इस आरम्भिक कृति के बारे में 'मार्क ट्वेन' को कहना पड़ा था, "यह तो लड़कों की किताब एकदम नहीं है। सिर्फ बड़े ही इसे पढ़ेंगे। बड़ों के लिए ही यह लिखी भी गई है।" लेकिन ऐसा

कहना, सत्य की जिस अवस्था को मार्क ट्वेन ने प्राप्त कर लिया था उसे एक प्रकट खीझ के साथ कह डालने, जोर देकर बता देने का एक तरीका-मात्र था। यह लडको की किताबों अथवा लडको के बारे में उनके सामान्य विचारों को व्यक्त नहीं करता। जैसाकि वे अच्छी तरह समझते थे, सत्य को जितना मूल्य एक लडका देता है उतना कोई और नहीं दे सकता। वयस्को की दुनिया से किसी भी लडके की एकमात्र सचेत मांग होती है, सत्य। वह ऐसा सोच सकता है कि वयस्को की दुनिया उसे झूठ बताने का षड्यन्त्र रच रही है, और यही विचार, जो एकदम निराधार नहीं है, टाम और हक और सभी लडको में एक नैतिक सजगता, न्याय के प्रति एक अनन्त चिन्ता पैदा कर देता है—जिसे वे औचित्य कहते हैं। साथ ही बहुधा यह उन्हें अपने बचाव में एक अत्यन्त पटु और गम्भीर झूठ बोलनेवाला भी बना देता है। फिर भी वयस्को की तरह चरम झूठ वे कभी नहीं बोलते—वे अपने प्रति झूठे कभी नहीं बनते। इसीसे मार्क ट्वेन ने महसूस किया था कि टाम सायर को लडकपन से परे खींच ले जाना असम्भव है। बड़ा बनकर, “एक अकेले घोड़े पर सवार, साहित्य के अन्य व्यक्तियों की तरह ही वह भी झूठ बोलेगा और पाठक में उसके प्रति भी एक दिली घृणा पैदा हो जाएगी।”

‘हकलबेरी फिन’ की महानता के नीचे भी, ‘टाम सायर’ की अल्पतर महानता की तरह ही, एक तत्त्व निश्चय ही वर्तमान है और वह है—पहले लडको की पुस्तक के रूप में उसकी सफलता। व्यक्ति उसे दस वर्ष की अवस्था में भी पढ़ सकता है और आगे प्रतिवर्ष पढ़ता रह सकता है और हर वर्ष महसूस कर सकता है कि वह पिछले साल जितनी ही ताजी है। परिवर्तन सिर्फ इतना हुआ है कि वह थोड़ी अधिक लम्बी बन गई है। छुटपन में इसे पढ़ना एक छोटे पौधे को रोपने जैसा है। प्रतिवर्ष वह बढ़ जाता है और एक नया अर्थ दे जाता है और पेड़ की तरह ही पुस्तक से उकताहट होने की सम्भावना बहुत ही कम रहती है। हम कल्पना कर सकते हैं कि इसी प्रकार एथेन्स का लडका ओडीसी के साथ-साथ ही बड़ा होता होगा। अन्य ऐसी पुस्तकें बहुत कम होंगी जिन्हें इतने छुटपन में हम

पढ सकते है और जिनसे इतनी लम्बी देर तक हम प्यार करते रह सकते है ।

‘टाम सायर’ से ‘हकलबेरी फिन’ का सत्य एक भिन्न कोटि का है । वह एक अधिक गहन, अधिक भयानक, अधिक उलझा हुआ सत्य है । ‘टाम सायर’ का सत्य ईमानदारी का सत्य है । चीजो और अनुभूतियो के बारे मे जो वह कहता है वह कभी गलत नही होता, उचित और सुन्दर सदैव वह दोनो ही होता है । ‘हकलबेरी फिन’ मे इस कोटि का सत्य भी है, पर उसमे नैतिक आकाक्षा का सत्य भी है; मानव-हृदय की साधुता और दुष्टता पर वह सीधा विचार करता है ।

‘हकलबेरी फिन’ की महानता का सर्वोत्तम सकेत शायद उस एक लेखक ने दिया है जो मार्क ट्वेन से उतना ही भिन्न है जितना किसी भी मिसूरीवासी का दूसरे से भिन्न होना सम्भव है । टी० एस० इलियट की कविता, ‘दि ड्राई साल्वेजेज,’ जो उसके ‘फोर क्वार्टेट्स’ की तीसरी कविता है, मिसीसिपी के चिन्तन से आरम्भ होती है, जिसे श्री इलियट सेट लुई के अपने लडकपन के दिनो से पहचानते है ।

मै देवताओ के विषय मे अधिक नही जानता, पर मेरा विचार है कि नदी एक सशक्त भूरा देवता है...

और उसका चिन्तन देवता के बारे मे यो कहता जाता है :

नगर के रहनेवालो ने उसे लगभग भुला दिया है—पर वह सदा की भाति अप्रसाद्य है । अपनी ऋतुओं व रोषो को कायम रखनेवाला, सहारक वह, मानवो को उस चीज की याद दिलाता है जिसे वे भूल जाना चाहते है । यन्त्र-पूजक उसे मान नही देते, उसका तर्पण नही करते, पर वह प्रतीक्षा मे है, देख रहा है, देख रहा है, इन्तजार कर रहा है ।^१

१. कापीराइट, १९४३, टी० एस० इलियट, हारकोर्ट, ब्रेस एण्ड कम्पनी की अनुमति से पुनर्मुद्रित ।

‘हकलबेरी फिन’ एक महान पुस्तक है क्योंकि वह एक देवता के बारे में है अर्थात् एक ऐसी शक्ति के बारे में है जिसके पास, लगता है, अपना दिमाग और अपनी इच्छा-शक्ति है और जो नैतिक कल्पनावाले व्यक्तियों को एक महान नैतिक धारणा का साकार रूप प्रतीत होता है।

स्वयं हक इस नदी-देवता का सेवक है और जिस सत्ता की सेवा वह कर रहा है उसकी दिव्य प्रकृति को पहचान लेने के बहुत निकट तक वह पहुंच जाता है। जिस दुनिया में वह रह रहा है वह एक इष्ट देवता को अपनाने के लिए पूरी तरह समर्थ और साधन-सम्पन्न है क्योंकि उन प्रभावों और गूढ़ार्थों से वह परिपूर्ण है जिन्हें नदी प्राकृतिक सकेतो और अति-प्राकृतिक शकुनो एव निपेधो के द्वारा जतलाती है—बाघे कन्धे पर से चाद को देखना, दिन छिप जाने के बाद मेजपोश को भाडना; साप की केचुली को छेड़ना—ये सब अदृश्य और व्यापक आत्माओं को नाराज करने के तरीके हैं। अपने परिचित प्रचलित धर्म के एकमात्र रूप से ‘हक’ नैतिक और सौन्दर्यात्मक आधारों पर असहमत है। उसका आत्यन्तिक नैतिक जीवन, लगभग पूरा का पूरा, नदी के प्रति उसके प्रेम से प्रसूत माना जा सकता है। मिसिसिपी की शक्ति और उसके आकर्षण की निरन्तर स्तुति ही उसका जीवन है। ‘हक’ निश्चय ही, जितना वह जान सकता है, उससे कहीं अच्छा स्वयं को व्यक्त कर सकता है, लेकिन उसकी वाणी की शक्ति को, अपने इष्ट देवता के प्रति उसकी भावना जितना प्रेरित करती है उतना कोई और चीज नहीं करती। तट के सामाजिक जीवन में प्रवेश करने के बाद हर बार आराम और आभार-प्रदर्शन के लिए वह नदी पर लौट आता है, और लौटकर हर बार नियम से किसी यूनानी त्रासदी के कोरस जितना ही प्रकट-स्पष्ट एक गीत अपने देवता के सौन्दर्य, उसकी रहस्यमयता और शक्ति की स्तुति में तथा मानव की तुच्छता की तुलना में देवता के उदार गौरव को लक्ष्य करके वह गाता है।

देवता आम तौर पर उदार है; लम्बे प्रकाशमय दिनों और खुली रातों का एक प्राणी है। लेकिन किसी भी देवता की तरह वह खतरनाक और

छलपूर्ण भी है। वह धुन्ध पैदा करता है, जोकि हडबडा देती है। वह गूजें और भूठी दूरिया पैदा करता है, जो गडबडा देती है। रेत की उसकी दीवारे किसी भी बड़ी भाप की नाव को रोक सकती है और छुपी हुई जडे और शाखें उसे घातक चोट पहुंचा सकती है। वह मानव के पैरों के नीचे से ठोस धरती को काटकर फेंक सकता है और उसके घर को वहां ले जा सकता है। नदी के खतरे की आशका ही वह भाव है जो प्राकृतिक जीवन की सामाजिक जीवन से तुलना करनेवाली अधिकांश पुस्तकों में प्राप्त भावुकता और नैतिक अपटुता के स्पर्श से इस पुस्तक को बचाए रखता है।

नदी स्वयं सिर्फ दिव्य है, वह नैतिक और भली नहीं है। लेकिन, जो उसे प्यार करते हैं और अपने को उसके तरीकों में ढालने की कोशिश करते हैं, उनकी अच्छाई में वृद्धि करने की उसकी प्रकृति प्रतीत होती है। और हमें समझ लेना चाहिए की नदी और मानव-समाज के बीच एक चरम विरोध हम पैदा नहीं कर सकते और यह कि मार्क ट्वेन भी वैसा नहीं करते। नदी-तट के जीवन का अधिकांश आकर्षण 'हक' को मानवीय ही लगता है। वह जीवन है—लट्टों की नाव और आदिवासी भोपडा और जिम। कुमारी वाट्सन और विधवा डगलस और अपने क्रूर पिता से दूर भागकर उसने एक व्यक्तिवादी स्वच्छन्दता में प्रवेश नहीं कर लिया है। जिम में उसका सच्चा पिता उसे बहुत कुछ वैसे ही मिल गया है जैसे जेम्स जायस के 'यूलिसिस' में स्टीफन डिडेलस ल्योपाल्ड ब्लूम में अपने सच्चे पिता को पा लेता है।^१ लडका और हब्शी गुलाम मिलकर एक परिवार

१ जायस के 'फिनेगन्स वेक' में मार्क ट्वेन और हकलबेरी फिन दोनों ही अक्सर प्रकट होते हैं। इस पुस्तक में भी नदी की कथा प्रमुख है। हक का नाम जायस का प्रयोजन सिद्ध करता है, क्योंकि उसके हीरो के बहुत नामों में एक नाम फिन भी है। आम बोली के प्रति मार्क ट्वेन का प्रेम और उसे उनकी देन एक और कारण है जो जायस की उनमें शक्ति का ज़िम्मेदार है।

बना लेते हैं, एक आदिम सम्प्रदाय —और यह एक सन्तो का सम्प्रदाय होता है।

‘हक’ की आत्यन्तिक, यहाँ तक की उलझी हुई नैतिक विशेषता शायद पहली बार पढ़ने में प्रकट न हो सके, क्योंकि अपने बारे में उसके निजी अनुमान, अपने सुस्त मुखवाद के विषय में उसकी लम्बी-लम्बी बातें और अकेलेपन की उसकी दृढ़ चाह तथा सभ्यता के प्रति उसकी अरुचि—इन सबमें व्यक्ति उलझ सकता है, इनपर विश्वास कर सकता है। वास्तव में तथ्य तो यह है कि वह नाक तक सभ्यता में डूबा हुआ है। समाज से उसका पलायन, समाज स्वयं अपने लिए जो आदर्श रखता है, उस तक पहुँचने का उसका तरीका-मात्र है। उत्तरदायित्व उसके चरित्र का एकदम सार-तत्त्व ही है और शायद यह बात प्रासंगिक है कि हक का मूल, टाम ब्लेकनशिप नामक ‘मार्क ट्वेन’ का लडकपन का साथी, हक की तरह ही देश छोड़कर भाग गया था, पर मोन्टाना में शान्ति का संरक्षक, एक अत्यन्त सम्मानित और भला नागरिक बनने के ही लिए।

‘हक’ में निश्चय ही साधारण खुशी प्राप्त करने की वे सभी शक्तियाँ हैं जिन्हें वह मानता है कि उसमें हैं। लेकिन परिस्थितियाँ और उसकी अपनी नैतिक प्रकृति उसे सबसे कम मस्त रहने देती हैं। वह सदा ही किसी न किसीके झगड़ को लेकर ‘पसीना बहाता हुआ’ देखा जाता है। मानव-जीवन के विषाद की उसे गहरी पकड़ है। यद्यपि वह अकेला रहना चाहता है पर ‘अकेला’ और ‘अकेलापन’—ये शब्द उसके मुँह पर चढ़े हुए हैं। उसकी विशिष्ट सम्वेदनशीलता का सकेत कहानी के आरम्भ में ही दिया गया है—“तो, जब टाम और मैं पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गए तो हमने नीचे गाँव की ओर देखा और हमने देखा कि तीन या चार रोशनियाँ चमक रही हैं। शायद कुछ बीमार वहाँ थे। हमारे सिर पर तारे बहुत ही नफीस चमक रहे थे और नीचे गाँव के पास से नदी बही जा रही थी। पूरे मील का पाट था उसका और वह भयानक रूप में शान्त और शानदार थी।” रोशनियों का बीमार सन्तरियों की लालटेनों से तादात्म्य

‘हक’ के चरित्र की परिभाषा कर देता है।

उसकी सहानुभूति तेजी से और तुरन्त जगती है। जब सरकस देखने-वाले उस अनुमानत धुत्त व्यक्ति के घोड़े पर चढ़ने के प्रयास पर हसते हैं तो ‘हक’ उदास हो जाता है। “मुझे यह मजाक की बात नहीं लगी...” उसके खतरे को देखकर मैं तो काप उठा।” जब वह हत्याकामी हत्यारो को टूटी हुई भाप की नाव पर बन्दी बना देता है, तो उसके मन में पहला विचार यही आता है कि कैसे किसीको ढूँढा जाए जो जाकर उन्हें बचा ले, क्योंकि वह सोचता है कि “हत्यारो के लिए भी वैसे सकट में पड़ना कितना खतरनाक है। कुछ कहा नहीं जा सकता, हो सकता है मैं स्वयं एक हत्यारा बनूँ और तब इस स्थिति में क्या अनुभव करूँगा।” लेकिन उसकी सहानुभूति कभी भी भावुक नहीं होती। अन्त में जब वह समझ लेता है कि हत्यारो की सहायता नहीं की जा सकती, तब झूठी करुणा दिखाने का उसका मन नहीं होता। “उस गिरोह के बारे में थोड़ा-सा मेरा मन भारी हुआ, लेकिन अधिक नहीं, क्योंकि मैंने हिसाब लगाया कि यदि वे इसे सह सकते हैं तो मैं भी सह सकता हूँ।” उसकी सकल्प-शक्ति वास्तव में अच्छी है और अपगन्धपूर्ण पुनर्विचारों से स्वयं को त्रास देने की जरूरत उसे नहीं पड़ती।

लोगों के प्रति हक की भावना के बारे में कोई कम उल्लेखनीय बात यह भी नहीं है कि उसकी कोमलता इस धारणा के साथ-साथ चलती है कि उसके साथी मनुष्य खतरनाक और कुटिल भी हो सकते हैं। वह बिना अपना परिचय दिए यात्रा करता है। अपने बारे में सच बात एकदम नहीं बताता। और एक झूठ दो बार कभी नहीं बोलता, क्योंकि वह किसीका भी विश्वास नहीं करता। और जब उसकी जरूरत नहीं होती तब भी झूठ उसे सान्त्वना देता है। वह अन्तर्बोधवश जानता है कि लोगों के एक दल को लट्ठों की नाव पर उपस्थित जिम से दूर रखने का सर्वोत्तम उपाय यही है कि उन्हें यही बुला लिए जाए कि वे चेचक से पीड़ित उसके परिवार की सहायता करें। यदि मानवीय दुर्बलता, मूढ़ता और कायरता का ज्ञान उसे

पहले से ही न होता तो भी यह वह शीघ्र ही प्राप्त कर लेता, क्योंकि जितनी भी टक्करे उसने ली—ग्रेगरफोर्ड्स और शैफर्डसन्स का मूर्खतापूर्ण झगडा; ड्यूक और राजा द्वारा लट्टो की नाव पर हमला, वाग्स की हत्या; दड देकर मार डालनेवालो का गिरोह और कर्नल शरबर्न का भाषण—वे सब इसीकी बलान् शिक्षा उसे दे रही थी। फिर भी मानव की दुष्टता का गहरा और कड़वा ज्ञान उसे मानव के प्रति मित्रतापूर्ण रहने से कभी नहीं रोक पाता।

कोई व्यक्तिगत अह उसके न्याय-सगत कामो मे हस्तक्षेप नहीं करता। वह जानता है, सामाजिक स्थिति क्या चीज है और कुल मिलाकर वह उसे मान्यता देता है। वस्तुतः वह एक अत्यन्त 'प्रतिष्ठित' व्यक्ति है और 'उच्च स्तर' के लोगो को पसन्द करने की ओर उसका झुकाव है। लेकिन सामाजिक स्थिति स्वयं उसपर कोई असर नहीं डाल पाती। उसकी कभी कोई उच्च स्थिति नहीं रही। वह सदा ही नीची से नीची कोटि का रहा है और जो पर्याप्त दौलत 'दि एडवेचर्स आफ टाम सायर' मे उसने प्राप्त की है वह कभी उसे वास्तविक नहीं लगी है। जत्र ड्यूक प्रस्ताव रखता है कि हक और जिम उसकी निजी सेवा मे रहे, क्योंकि यह उनके पद की माग है, तो हक सिर्फ इतना कहता है, "यह आसान था इसीलिए ऐसा हमने किया।" ड्यूक और राजा हर सम्भव तरीके से उसे आघात पहुंचाते हैं, उसका उपयोग करते हैं, उसे चूसते हैं और उससे लाभ उठाते हैं। फिर भी जब वह सुनता है कि वे एक भीड के हाथो सकट मे पड गए हैं तब उसकी स्वाभाविक भावना होती है कि वह उन्हें चेतावनी दे दे। और जब वह अपने प्रयोजन मे विफल हो जाता है और उन दोनो व्यक्तियों के मुह पर कालिख पोतकर उनके सिरो पर पल्ल लगाकर उन्हें एक गाडी पर चढा दिया जाता है, तब वह सोच उठता है, "हा, यह सब देखकर मेरा मन खराब हो गया और मैं उन बेचारे दयनीय दुष्टों के लिए दुखी हो गया हू। ऐसा लगता है जैसे कि संसार मे अब कभी उनके प्रति कठोर भाव मैं अनुभव नहीं कर सकूंगा।"

और यदि हक और जिम लट्टो की उस नाव पर सचमुच ही सन्तो का एक दल बनकर रहते हैं तो ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके बीच घमड़ का लेश भी नहीं है। फिर भी यह बात पूरी तरह सच नहीं है, क्योंकि सिर्फ एक बार उनमें मनमुटाव हुआ और वह अह को लेकर ही। यह उस अवसर पर हुआ जब कुहरे ने जिम और हक को विलग कर दिया था। जिम ने समझ लिया कि हक मर गया है। वह रोया और थककर सो गया। जब वह जागा तो उसने देखा कि हक लौट आया है। वह बड़ा खुश हुआ। लेकिन हक ने उसे विश्वास दिलाया कि यह सब घटना जिम ने सिर्फ स्वप्न में देखी है। नकही कुहरा उठा, न वे अलग हुए, न खोज की, न फिर मिले। और तब वह उसे उस सपने का विस्तृत अर्थ लगाने देता है जिसे वह सच मान बैठा है। तब मज्जाक खुलती है और प्रभात की उगती हुई रोशनी में हक लट्टो की नाव पर पत्तो का ढेर और टूटे हुए चप्पू की ओर इशारा करता है।

जिम ने उस कूड़े की ओर देखा और तब मेरी ओर देखा और दुवारा फिर उस कूड़े पर दृष्टि डाली। उसके मस्तिष्क में सपने का विचार ऐसा गहरा जम गया था कि वह उसे हिला न सका और तथ्यों को उनकी जगह ठीक बैठा न सका। लेकिन जब पूरी बात वह अच्छी तरह समझ गया तब उसने बिना मुस्कराए मेरी ओर स्थिरतापूर्वक देखा और कहने लगा :

“इन सबसे क्या मतलब निकलता है ? मैं तुम्हें बताता हूँ। जब मैं श्रम से और तुम्हें आवाज़ें देने से थककर चूर हो गया तो मैं सो गया। मेरा दिल टूट गया था क्योंकि तुम खो गए थे और मुझे इस बात की कतई परवाह नहीं रही कि मेरा या इस नाव का क्या बनेगा। लेकिन जब मैं जागा तो मैंने तुम्हें ठीक, पूरी तरह सुरक्षित और स्वस्थ लौटा पाया, तो आंसू मेरी आखों में भर आए। मैं अपने घुटनों पर झुककर तुम्हारे पैरों को चूमना चाहने लगा। मैं बहुत आभारी हुआ। और तुम तब यह सोच रहे थे कि बूढ़े जिम को झूठ बोलकर कैसे बेवकूफ बनाया जाए। वह सब निश्चय ही कूड़ा है और वे लोग भी बकवास हैं जो अपने मित्र के सिर पर

धूल डालते हैं और उसे गर्मिन्दा करते हैं।”

तब वह धीमे-धीमे उठा और भोपडी की ओर चल दिया और उसके सिवाय कुछ और कहे बिना ही अन्दर घुस गया।

मानवीय स्नेह के गर्व को आघात पहुँचा था। यह थोड़े-से उन आत्म-गर्वों में से है जिन्हें सच्चा गौरव प्राप्त है। और उसके कह लेने के बाद अपनी स्थिति का जो गर्व, श्वेत व्यक्ति होने के नाते अपनी अवस्था का जो अहसास हक में था उसका अन्तिम चिह्न भी मिट गया, पूरी तरह गायब हो गया—“एक नीग्रो के पास जाने और उसके सामने अपने को विनत करने के लिए स्वयं को तैयार करने में मुझे पन्द्रह मिनट लग गए। लेकिन मैंने वैसा किया और इसके लिए बाद में कभी भी अफसोस मुझे नहीं हुआ।”

यह घटना उस नैतिक परीक्षण और विकास का आरम्भ है जिसमें से गुजरना हक जितने नैतिक रूप में सम्बेदनशील चरित्र के लिए एकदम अनिवार्य होता है। और यह चरित्र एक वीरतापूर्ण चरित्र बन जाता है, जब स्नेह की पुकार पर हक, जिस नैतिक नियम को उसने सदा ही मान्य माना, उसकी अवज्ञा करके, जिम को गुलामी से भाग निकलने में सहायता देने का निश्चय करता है। इस कृत्य से प्रेरित उसके संघर्ष की गहनता सूचित करती है कि जिस समाज का वह बहिष्कार करता है उसमें कितना गहरा वह डूबा है। इस घटना की व्यंग्यपूर्ण उत्कृष्टता दरअसल इस बात में है कि हक अपनी समस्या का हल ‘ठीक’ काम नहीं, बल्कि ‘गलत’ काम करके निकालता है। वह केवल अपनी आत्मा से—पिछली शताब्दी के मध्य के एक दक्षिणी लड़के की आत्मा से पूछता है कि क्या उसे जिम को गुलामी में वापस लौटा देना चाहिए। और जैसे ही वह अपनी आत्मा के अनुकूल फैसला करता है और जिम के बारे में सूचना दे देना तय करता है, सचेत पुण्यकृत्य की सन्तोषप्रद भावनाएँ उसमें उमड़ पड़ती हैं। “वाह, आश्चर्य की बात है, मैं एकदम ही एक पख-जितना हलका महसूस करने लगा हूँ और मेरी सभी मुसीबतें कट गई हैं। मैं अच्छा अनुभव कर रहा हूँ। पहली बार

मेरे पाप पूरी तरह धुल गए हैं। जीवन में ऐसा तो मैंने कभी महसूस नहीं किया था। और अब मैं प्रार्थना कर सकता हूँ।” और अन्त में जब उसने देखा कि वह अपने फैसले पर कायम नहीं रह सकता और एक पवित्र हृदय की तृप्ति की बलि उसे देनी ही चाहिए और भाग जाने में जिम की मदद करनी ही चाहिए, तो ऐसा इसलिए नहीं घटा कि गुलामी के बारे में कुछ नये विचार उसे मिल गए। उसे विश्वास है कि दास-प्रथा के उन्मूलन से वह घृणा करता है। जब उससे पूछा गया कि भाप की नाव के फट जाने से किसीको चोट तो नहीं पहुंची, तब स्वयं उसीने तो उत्तर दिया था, “नहीं, नहीं, सिर्फ एक नीग्रो मर गया है।” और सचमुच इस प्रत्युत्तर में भी कोई गलत बात उसे नहीं लगी थी। “शुक्र है, भाग्य की बात है, क्योंकि कभी-कभी इससे लोग चोट खा जाते हैं।” विचार और आदर्श उसके नैतिक सकट में उसकी सहायता नहीं कर पाते। ट्रिस्ट्रम और लान्सलेट विवाह की जितनी निंदा करते हैं, उससे अधिक गुलाम-प्रथा की निंदा वह नहीं करता। वह उतना ही सचेत दुष्ट है जितना कोई भी अनैतिक प्रेमी हो सकता है और एक व्यक्तिगत अनुरक्ति के लिए दंडित होने को वह तैयार है। जो दण्ड उसे दिया जाए उसकी न्याय्यता पर सन्देह करने के लिए वह प्रस्तुत नहीं है।

एक बार कुछ पुस्तकालयों और विद्यालयों में ‘हकलबेरी फिन’ का प्रवेश निषिद्ध घोषित कर दिया गया था, इस आधार पर कि इससे नैतिकता के उच्छिन्न हो जाने का डर है। अधिकारियों के दिमाग में इस पुस्तक में पाई जानेवाली भूठ की स्थानीय बीमारी, छोटी-मोटी चोरिया, प्रतिष्ठा और धर्म पर आक्षेप, भद्दी भाषा और दोषपूर्ण व्याकरण आदि बातें थी। इस आत्यन्तिक सतर्कता पर हम मुस्करा पड़े थे; पर यह तथ्य ही है कि ‘हकलबेरी फिन’ सचमुच ही एक उच्छेदक पुस्तक है। हक के महान नैतिक सकट की तर्कशीलता को जो भी विचारपूर्वक पढ़ेगा वह प्रतिष्ठित नैतिकता की जिन धारणाओं के सहारे अब तक जीता रहा है, उनके प्रति कुछ सन्देह और कुछ व्यंग्य की भावना ग्रहण किए बिना कभी नहीं रह सकेगा।

साथ ही, आगे कभी वह इस बारे में भी निश्चितमत नहीं हो सकेगा कि जिन्हे वह नैतिक बुद्धि के स्पष्ट आदेश मानता है वे उसके समय और स्थान के रूढ़, रिवाजी विश्वास नहीं हैं।

हकलबेरी फिन में महान नदी के जो सूक्ष्म, नैतिक निहितार्थ उपलब्ध हैं उनकी उपेक्षा हम नहीं कर सकेंगे। लेकिन यह हो सकता है कि इन नैतिक निहितार्थों को हम बस जाती व व्यक्तिनिष्ठ आचरण से सम्बद्ध मान लें। अब क्योंकि व्यक्तिनिष्ठ तुच्छता की रोकड़ कुल मिलाकर काफी स्थिर है इसलिए सम्भव है इस पुस्तक को सामान्यतः पूरी मानव-जाति, सभी कालों और सभी स्थानों पर लागू भी हम मान लें और 'सार्वभौमिक' कहकर इसकी प्रशंसा हम करें। और वैसा है भी; लेकिन यह बड़ा विशेषण जिनपर लग सकता है उन कितनी ही पुस्तकों की तरह ही यह स्थानीय भी है और विशिष्ट भी। गृहयुद्ध के बाद के अमरीका से इसका एक विशिष्ट नैतिक सम्बन्ध है। श्री इलियट की उक्ति के अनुसार उसी युग में तो 'नगर निवासियों' और 'यन्त्र के उपासकों' द्वारा नदी को भुला दिया गया था।

गृहयुद्ध और रेलों के विकास ने उस शानदार युग को समाप्त कर दिया जब नदी राष्ट्र की केन्द्रीय धमनी थी। 'लाइफ आन दि मिसिसिपी' के प्रथम भाग के नदी-तटवर्ती जीवन की उष्ण और तुमुल ऊर्जा तथा दूसरे भाग की सविषाद स्मृतियों के बीच तुलना से बढ़कर कोई अन्य तुलना नहीं हो सकती। और जिस युद्ध ने शानदार मिसिसिपी-युग का अन्त कर दिया उसीने अमरीकी जीवन के सत्त्व में भी एक परिवर्तन ला दिया। बहुत-से लोगो के विचारानुसार यह परिवर्तन अमरीका के नैतिक मूल्यों में भ्रष्टता आ जाने के रूप में हुआ। वैसे, यह मानव का स्वभाव है कि वह अतीत की ओर देखता है तो उसे वर्तमान की अपेक्षा अधिक बढ़िया और अधिक मासूम पाता है। फिर भी प्रस्तुत स्थिति में फैंसले का एक निरपेक्ष आधार मौजूद दीखता है। हम, हेनरी एडम्स, वाल्ट व्हिटमैन, विलियम डीन हावल्स और स्वयं मार्क ट्वेन जैसे विभिन्न व्यक्तियों की साक्षी की उपेक्षा नहीं कर सकते। ये उनमें से कुछेक के ही नाम हैं और इस

विषय पर ये सभी एकमत है। इन सभीने उस चीज का उल्लेख किया है जो युद्ध के बाद अमरीकी जीवन में से निकल गई; एक सादगी, एक मासूमियत, एक शान्ति। पुराने समय में भी सामान्य मानवीय वक्रता काफी मात्रा में मौजूद थी, इस विषय पर उपर्युक्त व्यक्तियों में से कोई भी भ्रम-ग्रस्त नहीं था और मार्क ट्वेन तो निश्चय ही नहीं थे। फर्क जनता के रुख में पड़ा। उन चीजों में पड़ा जिन्हें अब मान्यता मिल गई और जिन्हें राष्ट्रीय आदर्श का सम्मान प्राप्त हो गया। उन सभीने महसूस किया कि यह फर्क धन के प्रति नई भावनाओं से सम्बन्धित था। जैसा कि मार्क ट्वेन ने कहा है, जहाँ पहले “लोग धन की कामना करते थे” वहाँ अब वे ‘उस-पर गिरे पड़ते हैं और उसकी पूजा करते हैं।’ नया मन्त्र यह बन गया, “धन कमाओ। जल्द कमाओ। बहुतायत से कमाओ। अत्यधिक बहुतायत से कमाओ। हो सके तो बेईमानी से कमाओ। यदि अनिवार्य ही हो तो ईमानदारी से कमाओ।”

गृहयुद्ध की समाप्ति के साथ-साथ पूजीवाद अपनी स्थापना कर चुका था। सीमान्त का सुविधापूर्ण प्रभाव अब अन्त पर था। अमरीकी अधिकाधिक सख्या में ‘नगरो के वासी’ और ‘यन्त्र के उपासक’ बन गए थे। मार्क ट्वेन स्वयं इस नई व्यवस्था के एक उल्लेखनीय अंग बन गए थे। यन्त्र की इतनी पूजा किसीने भी नहीं की जितनी उन्होंने की, अथवा अपने विचार से उन्होंने की। पेग नामक टाइप की मशीन के प्रति उनके अनुराग ने उन्हें बरबाद कर दिया। उन्होंने चाहा था कि उससे वे, जितना लिखने से कमाया था, उससे भी अधिक रुपया कमाए। ‘ए कनेक्टिकट याकी इन किंग आर्थर्स कोर्ट’ में उन्होंने यन्त्र-युग की प्रशंसा गाई है। अमरीकी उद्योग-क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से उन्होंने गहरे सम्बन्ध स्थापित किए थे। फिर भी, साथ ही, जीवन की इस नई पद्धति से वे घृणा भी करते थे। अपनी इस घृणा की कटु स्मृतियाँ उन्होंने संरक्षित की हैं, निम्न नैतिकता पर अथवा आदर्शों को आकार देनेवालों और राष्ट्र के भाग्य-निर्माताओं की कुरचि पर उन्होंने टीका-टिप्पणियाँ की हैं।

मार्क ट्वेन ने 'टाम सायर' के बारे में कहा है, "वह बस एक मंत्र है जिसे सासारिक ध्वनि देने के लिए ही गद्य का जामा पहना दिया गया है।" ठीक यही वे 'हकलबेरी फिन' के बारे में भी कह सकते थे और कही अधिक पुष्ट तर्क के साथ कह सकते थे। यह भी एक मंत्र है जिसमें हमेशा के लिए बीते हुए एक पुराने अमरीका की स्तुति गाई गई है—उस अमरीका की जिसमें अपने बृहत् राष्ट्रीय दोष थे; जो हिंसा, यहाँ तक कि क्रूरता तक से पूर्ण था; पर इतने पर भी जिसने अपनी वास्तव बुद्धि को बनाए रखा था, क्योंकि अभी तक वह चरम भ्रान्ति और भूठ के जनक धन के द्वारा अभिभूत नहीं हुआ था। धन-देवता के विरुद्ध नदी-देवता खड़ा है जिसकी टिप्पणियाँ मूक हैं—वे हैं सूर्य का प्रकाश, खुला स्थान, अव्यस्त समय, स्तब्धता और खतरा। जैसे ही इसकी व्यावहारिक उपयोगिता समाप्त हुई इसे भुला दिया गया। लेकिन जैसा कि श्री इलियट की कविता में कहा गया है, "नदी हमारे भीतर है।"

रूप और शैली की दृष्टि से 'हकलबेरी फिन' लगभग एक पूर्ण कृति है। सिर्फ एक दोष का आरोप आज तक इसपर लगाया गया है। वह यह कि इस पुस्तक का अन्त, जिम के भाग निकलने की टाम सायर वाली विस्तृत घटना के साथ हुआ है। निश्चय ही यह घटना अत्यन्त लम्बी है। मूल मसौदे में तो यह बहुत ही अधिक लम्बी थी। और यह भी निश्चित है कि यह भी नदी की घटनाओं से वैसे उद्भूत है जैसे कि लगभग किसी भी घटना को होना होगा। फिर भी इसमें एक निश्चित, औपचारिक औचित्य है, वैसा ही जैसा कि उस तुर्की दीक्षा में है जिसके साथ 'मोलियर' के 'ला बुर्जुआ जेण्टिलहोम' का अन्त होता है। एक विचार का यह बहुत कुछ एक यान्त्रिक विकास है। फिर भी कोई उपाय तो चाहिए ही था जिससे हक अपनी अनामता में वापस लौट सकता, नायक की भूमिका छोड़कर अपनी मनचाही पृष्ठभूमिका को पुनः ग्रहण कर सकता। कारण, कि सभी बातों में वह विनीत है और पुस्तक के अन्त में एक नायक को जो ध्यान और चमक-दमक प्राप्त होती है, उसे वह पूरी तरह सहन नहीं कर

सकता था। इस मतलब के लिए साहित्यिक सजावटों से युक्त टाम सायर के दिमाग से बढ़िया चीज और क्या हो सकती थी—अनुभव-प्राप्ति और नायक की भूमिका के लिए उसकी सजग रूमानी इच्छा और उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उसकी निष्कपट जोड़-तोड़।

पुस्तक का रूप, उपन्यास-रूपों में जो सरलतम है, उसपर आधारित है, अर्थात् वह या तो खलनायकों के साहसिक कारनामों का उपन्यास है अथवा एक यात्रा-उपन्यास है जिसमें घटनाएँ नायक की यात्राओं के धागे में पिरोई रहती हैं। लेकिन जैसाकि पास्कल ने कहा है, “नदिया वे सड़के हैं जो बह रही हैं।” और अपने निजी रहस्यमय जीवन में सड़क का बहना कृति के रूप की आदिम सरलता को बदल देता है। यात्रा के इस उपन्यास में स्वयं सड़क सबसे बड़ा चरित्र है और नायक का नदी से बार-बार विदा होना और उसपर वापस लौटना एक सूक्ष्म और विशिष्ट ढाँचा निर्मित करते हैं। साहसिक कारनामों वाले इस उपन्यास की सीधी दूर-गामी सरलता को, कहानी का एक स्पष्ट नाटकीय गठन और अधिक बदल डालता है। इसमें एक आरम्भ है, एक मध्य है और एक अन्त है, और रुचि की दृष्टि से धीमे-धीमे पहुँचती एक चरम सीमा है।

जहाँ तक इस पुस्तक की शैली का सम्बन्ध है, अमरीकी साहित्य में किसी भी प्रौढ़ कृति से कम यह नहीं है। ‘हकलबेरी फिन’ के गद्य ने अमरीकी बोली की विशेषताओं को लिखित गद्य के रूप में स्थिर बना दिया है। उच्चारण या व्याकरण से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। भाषा के प्रयोग में सहजता और स्वच्छन्दता से ही इसका सम्बन्ध है। सबसे अधिक वाक्य के उस विन्यास से इसे मतलब है जो सरल, सीधा और प्रवाहमय हो, जो बोली के शब्द-समूहों और बोलनेवाली आवाज़ के उतार-चढ़ावों को सुरक्षित रखे।

भाषा को लेकर अमरीकी साहित्य के सामने एक विशेष समस्या थी। इस नये राष्ट्र की यह धारणा बन गई थी कि सच्ची साहित्यिक रचना उस आडम्बरमयता और प्राजलता में ही है जो सामान्य बोली में नहीं मिलती।

इसलिए अपनी आम बोली और साहित्यिक बोली के बीच की खाई को उसने लगातार बढ़ाया। उसी युग के अंग्रेजी साहित्य ने उतनी सीमा तक इस बात की अनुमति कभी नहीं दी थी। पिछली शताब्दी के प्रथम अर्धश के हमारे सर्वोत्तम लेखकों तक की कृतियों में भी कभी-कभी एक खोखली ध्वनि सुनाई पड़ती है, उसका यही कारण है। कूपर और पो मे जो आल-कारिक आधिक्य की प्रवृत्ति दीख पड़ती है, और जो मेलविले और हाँथार्न तक में पाई जाती है, समान स्तर के अंग्रेज लेखकों में वह कभी नहीं मिलेगी।

फिर भी जहाँ महत्वाकांक्षी साहित्य की भाषा बहुत ऊँची थी और इस प्रकार झूठ के खतरे से सतत ग्रस्त थी, वहाँ अमरीकी पाठक दैनन्दिन बोली की तथ्यताओं में गहरी रुचि रखता था। बोली-सम्बन्धी मुद्दों से हमारा साहित्य जितना अभिभूत था, उतना सच ही कोई नहीं था। हमारे गम्भीर लेखकों तक को आकर्षित करनेवाली जनबोली हमारे जनप्रिय हास्य-लेखन की मान्यताप्राप्त सामान्य आधारभूमि थी। सामुदायिक जीवन में बोली द्वारा ग्रहण किए जानेवाले विभिन्न रूप, जैसे कि आप्रवासी आयरिश लोगो का अक्खड़ लहजा, अथवा जर्मनों का गलत उच्चारण, अंग्रेजों का बनकर बोलना, बोस्टनवासियों की प्रसिद्ध यथातथ्यता, या की किसान कानाक में बोलना और पाइक जिलेवालों का धीमे-धीमे बोलना—यह सब बड़ा ही मजेदार प्रतीत होता था। मार्क ट्वेन वस्तुतः इस रुचि का लाभ उठानेवाली हास्य-परम्परा के ही लेखक और कोई भी अन्य उसे उतनी चतुराई से प्रयुक्त नहीं कर पाता था। यद्यपि ध्यानपूर्वक सही हिज्जे में लिखी जानेवाली उन्नीसवीं शताब्दी की बोलियों में निहित अमरीकी हास्य अब काफी मन्द प्रतीत होता है, पर 'हकलबेरी फिन' की बोली की सूक्ष्म विभिन्नताएं, जिनपर मार्क ट्वेन संगत गर्व कर सकते हैं, पुस्तक की सजीवता और उसके स्वाद के लिए आज तक ज़िम्मेदार हैं।

अमरीका की असल बोली के ज्ञान के बल पर मार्क ट्वेन ने एक क्लासिक गद्य का निर्माण किया। यह विशेषण अजीब शायद लगे पर यह सगत

है। गलत हिज्जो और व्याकरण के दोषों को यदि भुला दिया जाए तो गद्य अधिकतम सहजता, सरलता, स्पष्टता और दीप्ति के साथ बहता दृष्टि पड़ेगा। ये गुण किसी भी दशा में आकस्मिक नहीं हैं। मार्क ट्वेन का अध्ययन विस्तृत था और शैली की समस्याओं में उन्हें अत्यन्त गहरी रुचि थी। हकलबेरी फिन के गद्य में सब कहीं सूक्ष्मतम साहित्यिक संवेदना के चिह्न पाए जाते हैं।

जब अर्नेस्ट हेमिंग्वे ने कहा था कि “पूरा आधुनिक अमरीकी साहित्य मार्क ट्वेन की ‘हकलबेरी फिन’ नामक एक पुस्तक से प्रसूत है,” तब उनके दिमाग में प्रमुखतया यह गद्य ही था। हेमिंग्वे का अपना गद्य सीधे और सचेत रूप में इसीसे पैदा हुआ है। इसी प्रकार हेमिंग्वे की आरम्भिक शैली को सबसे अधिक प्रभावित करनेवाले उन दो आधुनिक लेखकों, गरट्रूड स्टीन और शेरवुड एण्डरसन का गद्य भी उसीसे निकला है (यद्यपि इन दोनों में से कोई भी अपने आदर्श की खरी शुद्धता को बनाए नहीं रख सका)। इसी प्रकार विलियम फॉकनर का श्रेष्ठ गद्य भी उसीकी उपज है और मार्क ट्वेन की तरह ही वे साहित्यिक परम्परा से लोक-भाषाई परम्परा को पोषण देते हैं। वास्तव में यह कहा जा सकता है कि लगभग हर सम-सामयिक अमरीकी लेखक जो गद्य की समस्याओं और सम्भावनाओं पर सजग रूप में विचार करता है, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में उसे मार्क ट्वेन के प्रभाव को महसूस करना ही पड़ता है। वे उस शैली के विशेषज्ञ हैं जो मुद्रित भाषा की रूढ़ता से मुक्त है, जो हमारे कानों में श्रुत ध्वनि की—अकृत्रिम सत्य की सही आवाज की गूँज पैदा करती है।

हमारा एक महान स्वप्न

जेम्स ट्रुसलो एडम्स

हमारा एक महान स्वप्न

हमने अपनी कहानी के स्रोत को तिथिहीन युगो के उस उद्गम तक खोजा है जब हमारे महाद्वीप पर, पता नहीं कहा से आए बर्बर लोग डोला करते थे। तब से चलकर मैक्सिको और दक्षिणी अमरीका की सम्पन्न, पर क्रूर सभ्यताओं के अभिलेखों में अकित समय और तिथियों तक हम पहुँचे। हमने उस विस्मय को देखा जिससे हमारे इन द्वीपों और तटों पर उतरने-वाले पहले श्वेतों का स्वागत किया गया। बाद में तो श्वेत लोग और अधिक जल्दी-जल्दी और अधिक बड़ी संख्याओं में आने लगे। हमने फ्रांसीसियों, अंग्रेजों और स्पेनवालों के प्रयासों और सघर्षों को भी देखा है। वर्जीनिया में मुट्ठी-भर भूखे मरते अंग्रेजों से आरम्भ कर संसार की सभी जातियों से मिलकर बने १२,००,००,००० लोगों के एक राष्ट्र को बनते भी हमने देखा है। जेम्स टाउन स्थित गोदाम को थोड़े-से नगरे आदिवासियों से बचाने में भी कठिनाई से ही समर्थ वह प्राथमिक रक्षक दल बढ़ते-बढ़ते आज सैनिक आयु के लगभग २,५०,००,००० व्यक्तियों में बदल गया है। इनमें से उतनों को हम सहज ही चुन सकते हैं, जितनों को समुद्र-पार के अपने शत्रुओं के विरुद्ध भोक देना हमें जरूरी प्रतीत हो। और यह सब नौ पीढ़ियों के भीतर ही हो गया है। जो महाद्वीप पाँच लाख बर्बरों को भोजन देने में भी असमर्थ था, वह आज उससे लगभग दो सौ पचास गुने उन लोगों को पाल रहा है जो संसार की किसी भी जाति जितने ही तत्पर और परिश्रमी हैं।

विशाल खाली भूमि, घरों, सड़कों, रेलों, स्कूलों, कालिजों, अस्पतालों और सबसे प्रगतिशील भौतिक सभ्यता के सभी आरामों से भरपूर हो गई है। विराट और अतुल्य भौतिक कर्म किए गए हैं। प्रगति की हर महत्त्व-

पूर्ण मजिल पर विज्ञान के नये उपकरण हमे मिले है जिन्होंने हमारी चाल को तेज किया है। त्वरा और श्रम के ऐसे आकर्षक इनाम हमे मिले है जैसे पहले के मानव को कभी नहीं मिले थे। हमारी स्फूर्ति एक ऐसी जलवायु से प्रेरित है, जिसने स्नायविक ऊर्जा के उपयोग को एक शारीरिक आवश्यकता बना दिया है। अपने वातावरण को भौतिक तरीको से अपने वश मे करने के काम मे स्वयं को एक ऐसे आत्मार्पण के साथ हमने भोक दिया कि अपने आरम्भिक दिनो मे जैसा कुछ निर्मित करना हमने शुरू किया था, उसका काफी हिस्सा अब हम पीछे छोड आए है।

इसी प्रकार, सामने की सीमा सदा ही पीछे की ओर खिसकती रही है और प्रतीप लहरो के माध्यम से अपना प्रभाव हम तक भेजती रही है। अठारहवीं सदी मे हमारी एक स्थिर, संस्थापित सभ्यता थी, जिसके भौतिक और आध्यात्मिक मूल्य टिकाव पर थे। यह अनकहे वैभव के लिए हमने एक होड आरम्भ की। यह वैभव इन्द्रधनुष के चरणो मे पडा था। क्योंकि हम सदा पश्चिम की दिशा में ही बढे है, इसलिए टिकाव के स्थान पर एक स्थायी बहाव आया और तब से हम उसी बहाव के बीच जी रहे हैं। अभी-अभी एक भोज के अवसर पर मिले एक प्रतिष्ठित अंग्रेज साहित्यकार ने मुझसे शिकायत की थी कि हम हर बात के जवाब मे सीमा के बहाने का बहुत अधिक प्रयोग करते है। बहाना यह नहीं है पर निश्चय ही एक सफाई यह है। जिस सभ्यता की नींव हमारे पूर्वजो ने रखी थी उसके निर्माण-पथ से, इसीके कारण स्वयं को हमने बहुत अधिक बिचल जाने दिया है। सीमाएं स्वयं मेरे बचपन तक हमारे दरवाजो से आगे ही आगे फैलती गई है। जब मेरी पड़दादी, जिस वृद्धा के साथ मैं एक युवक के रूप मे अक्सर बातें किया करता था, पैदा हुई थी, तो सयुक्त राज्य कुल मिसीसिपी तक विस्तृत था। फ्लोरिडा और गल्फकोस्ट भी इसमे शामिल नहीं थे। जब हमारी सीमाओ को रॉकीज तक ले जानेवाला टामस जेफर्सन^१ मरा, उस समय

१. जेफर्सन (१७४३-१८२६) अमरीका का तीसरा राष्ट्रपति।

मेरे दोनो दादा बच्चे थे। जब मेरे पिता बच्चे थे, तब तक ओकला-होमा के दक्षिण का और राकीज के पश्चिम का पूरा प्रदेश स्पेन के अधिकार में ही था। जब मैं पैदा हुआ तब तक सिओ और नेज पर्सेज लड ही रहे थे। मैं पाच वर्ष का था, जब दक्षिण-पश्चिमी सीमा दक्षिणी प्रशान्त तक पहली बार फैली; और मैं बारह का था जब सीमा को औपचारिक रूप से बन्द घोषित किया गया।

भौतिक विजय और निर्माण मे इस प्रकार व्यस्त रहकर भी एक अधिक उदात्त की दृष्टि को हमने पूरी तरह खो नहीं दिया था। यदि हम सोने की धरती के पीछे भागे तो स्वयं इन्द्रधनुष को भी हमने देखा और महसूस किया कि पहले की ही तरह अब भी वह मानव-जाति के लिए एक आशा से भरपूर है। विचार के क्षेत्र मे मौलिक और सिद्धान्तवादी होने के बदले हम व्यावहारिक और ढलनशील है। वैसे यह बात याद रखने की है कि आज खगोल-विज्ञान मे हमारा स्थान बहुत ही ऊँचा है। ओषधि-विज्ञान के क्षेत्र मे ससार को हमने अकूत मूल्य की खोजे प्रदान की है। अनेको मानववादी सुधारो की ओर भी हम ससार को ले गए हैं, उदाहरणार्थ कर्जदारो और पागलो के इलाज की दिशा मे। विश्वयुद्ध के बाद की प्रतिक्रिया तक हम, राष्ट्रों के लिए एक अधिक न्यायपूर्ण कानून के लिए और अन्तर्राष्ट्रीय झगडों मे युद्ध के स्थान पर पंच-फैसले के प्रसार के लिए सघर्ष करते रहे। यद्यपि कला के क्षेत्र मे हम कलाकारो की टक्कर का कोई व्यक्ति पैदा नहीं कर सके फिर भी ऐसी कृतिया हमने पैदा की है जो समसामयिक सार्वभौम मापदण्ड की दृष्टि से बहुत ऊँची है और जिनके बिना ससार की कला-निधि हीनतर ही बनेगी। साहित्य, नाटक के क्षेत्र मे आज सयुक्त राज्य से अधिक अच्छा काम कही भी नहीं हो रहा है। पिछली शताब्दी या और पीछे तक भी कोई अन्य देश ऐसा नहीं है जो चरित्र के दुर्बोध सूक्ष्म क्षेत्र मे वाशिंगटन^१ और

१. जार्ज वाशिंगटन (१७३२-१७९९) अमरीका का मुक्तिदाता और प्रथम राष्ट्रपति।

लिकन^१ से अधिक महान दो व्यक्ति प्रस्तुत कर सके ।

लेकिन आखिर इनमें कितनी चीजें कोई नहीं है और यदि यही कुछ अमरीका को देना था तो यह देन और अधिक लोगों के लिए एक जगह-भर अर्थात् मानव-जाति के लाखों-लाखों लोगों के पैदा होने और बढ़ने की जगह-भर ही तो हुई । अन्य स्थलों पर, यह कहने में मैं हिचका नहीं हूँ कि कितने ही अन्य देश ऐसे हैं जहाँ कई रूपों में जीवन अधिक सुखमय है और अनगढ़ अमरीका की अपेक्षा अधिक उत्तेजक और अधिक आकर्षक भी है । अमरीका अभी तक अनगढ़ है और वह भी फिजूल हो । मोटरों में चलने-वाले लाखों लोगों की बर्बर लापरवाही, सड़कों के साथ-साथ फैले अव्यवस्थित वितान, हमारे सर्वश्रेष्ठ दृश्यों का उन पदार्थों के विज्ञापन के लिए उपयोग जिनका सिर्फ इसी आधार पर बाइकाट कर देना चाहिए—ये सब इस बात के चिह्न हैं कि हम जीवन के सभ्य स्तर से नीचे गिर रहे हैं । हमारे कानून-भंग और भ्रष्टाचार और जनता द्वारा इनकी क्रूर उपेक्षा भी इसी बात का प्रमाण है । इनमें कितने ही मामलों पर मैंने और जगह विचार किया है और आगे भी कर सकता हूँ । इनमें कुछ समस्याएँ जितनी अमरीका की हैं उतनी यूरोप की भी हैं । इनमें कुछ अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं से निर्द्वन्द्व नागरिक समस्याएँ हैं । नागरिक भीड़ की भीड़-वृत्ति आधुनिक सभ्यता के लिए हर कहीं एक खतरा बनती जा रही है । प्रजातन्त्र का आदर्श और भीड़ का यथार्थ आधुनिक सरकार की ढाल की दो तरफें हैं । “मैं सोचता हूँ कि हमारी सरकारें जब तक मुख्यतः कृषि-निर्भर बनी रहेगी तभी तक वे नेक बनी रह सकेंगी । और ऐसा तभी तक हो सकेगा जब तक अमरीका के किसी भी हिस्से में खाली जमीनें मिलेंगी । जब यूरोप की तरह वे भी बड़े-बड़े नगरों में एक-दूसरे के ऊपर चढ़ेंगे, तब वे यूरोप की तरह ही भ्रष्ट बन जाएंगे ।” बोर्बनो^२ के दिनों में जेफर्सन ने लिखा था ।

१. अब्राहम लिकन (१८०६-१८६५) सोलहवा राष्ट्रपति तथा गुलामों को मुक्ति दिलानेवाला ।

२. फ्रान्स का प्रतिक्रियावादी राज्य-परिवार ।

जैसा मैंने कहा है, जो चीजे सूचीबद्ध की गई हैं, यदि वही सब अमरीका को देना था तो उसने मानव-जाति को कोई विशिष्ट और अनोखा उपहार नहीं दिया है। लेकिन साथ ही एक अमरीकी स्वप्न भी तो रहा है—उस देश का एक स्वप्न जिसमें हर व्यक्ति को अधिक अच्छा, सम्पन्न और भरा-पूर जीवन मिलेगा और प्रत्येक को अपनी योग्यता अथवा उपलब्धि के अनुसार अवसर मिलेंगे। यह एक कठिन स्वप्न है और यूरोप के उच्च वर्ग इसका सही अर्थ नहीं लगा सकते। स्वयं हमसे कितने ही इससे उकता गए हैं और इसके प्रति अविश्वासी हो गए हैं। सिर्फ मोटरकारों और ऊँचे वेतनो का स्वप्न यह नहीं है। यह एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का स्वप्न है जिसमें हर पुरुष और हर स्त्री उतनी पूर्णता तक पहुँचने के योग्य बनेंगे, जितने तक पहुँचने की उनमें सहज सामर्थ्य है; और जन्म अथवा स्थिति की भाग्याधीन परिस्थितियों की उपेक्षा करके अन्य लोग भी, जो वे हैं उसे ही मान्यता देगे। एक बार एक बुद्धिमान युवक फ्रांसीसी न्यूयार्क में मेरा अतिथि बना और कुछ दिनों के बाद मैंने उससे पूछा कि उसके नये अनुभवों में क्या चीज उसे सबसे अधिक अच्छी लगी है। बिना हिचके उसने उत्तर दिया, “यह ढग कि हर वर्ग का हर व्यक्ति विषमता का कोई विचार किए बिना सीधा आपकी आखों से आखे मिला सकता है।” कुछ समय पहले एक विदेशी मेरा कुछ काम किया करता था। उसने काफी अच्छी शिक्षा प्राप्त कर ली थी और वह अक्सर काम से निबटकर मेरे अध्ययन-कक्ष में ही मेरे पास बैठ जाया करता था और मुझसे बातें किया करता था। एक दिन उसने कहा कि ऐसा एक रिश्ता बन जाना, यही अमरीका और उसके निजी देश के बीच का एक बड़ा भारी अन्तर है। उसने बताया, “वहाँ काम के बदले में शायद एक मीठा शब्द मुझे मिल सकता है, पर मैं बैठकर इस प्रकार बतिया नहीं सकता। सामाजिक स्तरों के बीच वहाँ एक अन्तर है, जिसे लाचा नहीं जा सकता। मैं वहाँ एक व्यक्ति के रूप में नहीं बल्कि अपने स्वामी के रूप में ही आपसे बातें कर सकता हूँ।”

नहीं, जिस अमरीकी स्वप्न ने पिछली सदी में सभी राष्ट्रों के लाखों-लाखों लोगों को हमारे तटों की ओर खींचा है वह मात्र भौतिक प्रचुरता का स्वप्न नहीं है, यद्यपि निस्सन्देह उसका भी भारी महत्त्व रहा है। वह उससे बहुत ऊँची चीज़ है। यह स्वप्न स्त्री और पुरुष के रूप में पूर्णतम विकास में समर्थ बनने का एक ऐसा स्वप्न है जिसे पुरानी सम्यताओं द्वारा धीमे-धीमे खड़े किए गए अवरोध रोक न सके और प्रत्येक वर्ग के सीधे-सादे सभी मानव-प्राणियों के लाभ के लिए नहीं बल्कि विशेष वर्गों के लाभ के लिए विकसित समाज-व्यवस्थाएँ जिसे कुचल न सके। और यह स्वप्न वास्तविक जीवन में जितनी अधिक पूर्णता से यहाँ उपलब्ध किया गया है, और कहीं भी नहीं किया जा सका है। हा, हमारे बीच भी उसका रूप अभी अत्यन्त अपूर्ण ही है।

यह एक महान जाति-काव्य और एक महान स्वप्न सिद्ध हुआ है। पर, अब भविष्य की क्या स्थिति है ?

आर्थिक दृष्टि से सम्भावना है कि एक या दो सालों में यह अत्यधिक मन्दी गुजर जाएगी। कुछ देशों में सामाजिक और राजनीतिक उलट-फेर हो सकते हैं, जिनसे सभलने में उन्हें देर लग सकती है। मैं यहाँ थोक उत्पादन से सम्बद्ध जागतिक वितरण और उपभोग के सम्बन्धों द्वारा उत्पन्न अधिक दूरगामी आर्थिक समस्याओं पर विचार नहीं कर रहा हूँ। अत्यन्त गम्भीर इन आधारभूत समस्याओं पर अन्य अधिक समर्थ व्यक्तियों ने अन्य स्थलों पर काफी विचार किया है। लेकिन, अगले दस वर्षों में चाहे हम एक भीषण आर्थिक गति को फिर से प्राप्त कर ले अथवा अपने आर्थिक यन्त्र के प्रकटतः धीमे पड़ जाने का सामना हमें करना पड़े; इनमें से किसी भी स्थिति का मुकाबला हम किस तरह करते हैं, इसका प्रमुख स्रोत अमरीकी दिमाग ही है। इसके सम्बद्ध एक रोचक प्रश्न यह उठता है कि सीमावाद से हमारी लम्बी सम्बद्धता ने और दूसरे अमरीकी प्रभावों ने एक नई चीज़ को जन्म दिया है या बस एक मामूली परिवर्तन-भर ला दिया है। क्या हम अच्छाई से चिपटे और बुराई से बचे रह सकते हैं ? क्या

स्वप्न और सीमा और नये देश का आदर्शवाद उन भद्दे निशानों के साथ जटिल रूप में घुल-मिल गया है, जिन्हें तीन सदियों लम्बे इस महाद्वीप की गुलामी और इसके शोषण ने हमारे चेहरे पर छोड़ा है।

हम यह दिखाने का प्रयत्न कर चुके हैं कि इनमें से कुछ निशान किस तरह पड़े हैं, कैसे हम कारोबार को, पैसा बनाने को और भौतिक उन्नति को स्वयं अपने में एक अच्छाई मानने की जिद ठाने रहे, कैसे इन्होंने नैतिक गुणों के चेहरे ओढ़े, कैसे हम एक अविचारपूर्ण आशावाद को अनिवार्य मानने लगे, कैसे जिस भी स्थिति में हम पड़ते उसके अधरे और हीन पक्ष को देखने से हमने इन्कार कर दिया, कैसे अपने इन नये समुदायों के लिए आलोचना को हमने बाधक और खतरनाक समझा, कैसे हम सदाचरण को अलोकतन्त्रीय और एक संस्कृत मन को सफलता के रास्ते में रोड़ा तथा अकुशल स्त्रैणता का चिह्न मान बैठे, कैसे भौतिक विकास का आकार और उसकी सांख्यिकीय किस्म आध्यात्मिक मूल्यों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण हमारी आंखों में बन बैठी, कैसे सीमा के निरन्तर आगे सरकते जाने से भविष्य की आशाओं में अतीत की दृष्टि को हमने खो दिया, कैसे जीविका कमाने के संघर्ष में हम जीना भूल गए, कैसे हमारी शिक्षा उपयोगवादी और उद्देश्यहीन बन गई और कैसे वे अन्य दुर्भाग्यपूर्ण प्रवृत्तियाँ विकसित हुईं जो आज बहुत अधिक प्रकट हैं।

जिस बीच हम अपने कामों में डूबे रहे हैं, दुनिया भी बदली है। अकेले हम अमरीकियों ने ही मूल्यों के मापदण्ड और आधार की खोज नहीं की है। लेकिन कुछ कारणों से यह काम हमारे लिए अपेक्षाकृत अधिक आवश्यक बना रहा है। एक ओर तो एक नई दुनिया में हमारे स्थानान्तरण और इस दुनिया के खाली फैलाव में हमारे निरन्तर बढ़ते जाने ने यूरोप-वालों की अपेक्षा हमारे लिए पुराने मूल्यों को अधिक अस्थिर बना डाला; दूसरी ओर मात्र इस तथ्य ने कि यहाँ मिटा डालने के लिए कोई पुरानी चीज़ नहीं थी, जब हम औद्योगिक जीवन की ओर मुड़े तो हमें औद्योगिक क्रान्ति के परे प्रभाव को और मशीनों के असर को उसके जन्मदाता यूरोप

की अपेक्षा, कहीं अधिक मात्रा में महसूस करना पड़ा।

लगता है, जैसे कि वह समय आ गया था जब मूल्यों का यह प्रश्न हमारे लिए चरम और आवश्यक महत्त्व का बन चुका था। लम्बे समय तक हम इसकी उपेक्षा करने में समर्थ बने रहे हैं। नगरों के निर्माण और महाद्वीप के विकास के कामों में जुटे हममें से कितनों के ही लिए मूल्य सरल और भौतिक रूप ले गए थे। जब कोई आदमी एक ज़मीन साफ करने का नया काम उठा लेता है और अपनी पत्नी और बच्चों को गृहविहीन पाता है, तब यह विचार करने की आवश्यकता उसे नहीं रहती कि एक मानवीय और तृप्तिकर जीवन में कौन-से वास्तविक मूल्य होने चाहिए। तब बस पेड़ गिराए जाते, लट्टों की भोपड़ी बनाई जाती, ठूठ जलाए जाते, और फसल बोई जाती है। इस प्रकार सरलीकरण दिमाग की एक आदत बन जाती और खाली भूमि-खंड के एक सम्पन्न नगर बन जाने के बहुत बाद भी हम उसे अपने जीवन में ग्रहण किए रहते। लेकिन दिमाग की ऐसी आदत भी मूल्यों की उपेक्षा नहीं करती। वह बस कुछेक को गर्भित रूप में ग्रहण कर लेती है। हमारा सबसे विशिष्ट दर्शन विलियम जेम्स का प्रैग्मैटिज्म^१ (Pragmatism) भी ऐसा ही करता है। यह कहने से काम नहीं चलेगा कि हमारे कोई पूर्वसिद्ध मानदण्ड नहीं होंगे और किसी चीज या विचार के मूल्यवान होने का सबूत यही होगा कि वह काम का हो। पर इस 'काम का होने' से हमारा क्या मतलब है? क्या इसका यही मतलब नहीं है कि यह वह परिणाम देगा या उसकी ओर प्रवृत्त होगा जो हमें वाछनीय लगेगा। अर्थात् वह चीज जिसे हम अपने दिमाग में पहले ही काम की ठहरा चुके हैं? दूसरे शब्दों में क्या यही मानदण्ड या मूल्य नहीं है?

अब सीमा नहीं रही है जो हमें बिचलाए या हमारी शक्तियों को चूसे। स्थिरतापूर्वक हम एक अधिक सघन बसा देश बन जाएंगे और उसमें हमारे

१. विलियम जेम्स (१८४२-१९१०) द्वारा प्रचारित नवस्फूर्तिवादी दर्शन।

सामाजिक आदर्श ऐसे होंगे जो हमें एक सस्कृत तृप्ति दे सकें। इस समय जिस गडबडभाले में हमारी शिक्षा फस गई है, उसे साफ करने के लिए मूल्यों की परिभाषा करनी ही पड़ेगी। जब तक हम इसपर सहमत न हो सकें कि जीवन के मूल्य क्या हैं, तब तक शिक्षा का कोई स्पष्ट उद्देश्य हम स्थिर नहीं कर सकते। और यदि हमारा कोई लक्ष्य नहीं है तो प्रणालियों पर विचार करना एकदम बेकार है। एक बार सीमा की अवस्था—अर्थात् सिर्फ जीविका कमाने और एक खासा आर्थिक आधार निर्मित करने का स्तर पार हो जाए तो अमरीकी स्वप्न स्वतः ही मूल्यों से सम्बन्धित सभी प्रकार के प्रश्न प्रस्तुत करता है। यह कहना आसान है कि एक अधिक अच्छा और अधिक सम्पन्न जीवन सभी लोगों को मिले। पर अधिक अच्छे और अधिक सम्पन्न का क्या रूप है ?

अन्य मामलों की तरह, इस मामले में भी बड़े कारोबारी नेता नेतृत्व करने के बदले हमें पथ-भ्रष्ट ही अधिक कर पाए हैं। उदाहरण के लिए उनके द्वारा लागू किए गए ऊँचे वेतन-मानों के आधुनिक लोकप्रिय सिद्धान्त में खतरा है। खतरा इस तथ्य में निहित है कि प्रस्तुत सिद्धान्त का उद्देश्य मनुष्य के पास फालतू समय बढ़ाकर उसके बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग का अवसर उसे देना नहीं है, बल्कि उसका एकमात्र स्वीकृत प्रयोजन 'उपभोक्ता' के रूप में उसकी शक्तियों को बढ़ाना है। इस प्रकार, दबाव अथवा भासे के हर सम्भव तरीके से वस्तुओं का उपभोग करने में वेतन खर्च करने पर उसे मजबूर किया जाता है। उसे चेतावनी दी जाती है कि यदि बिना मूल्य के मनोरंजनों को प्राप्त करने के बदले वह एक सीमा तक वस्तुएँ नहीं खरीदता, तो उसे न सिर्फ ऊँचे वेतन नहीं मिलेंगे बल्कि शायद किसी भी वेतन से उसे वंचित कर दिया जाएगा। शेष हम सबकी तरह ही, वह भी एक ऐसी चक्की में फसा प्रतीत होता है जहाँ वह कमाई इसलिए नहीं करता कि वह उसका आनन्द ले सके, बल्कि इसलिए करता है कि कार-खानों के मालिकों को और अधिक धनवान बनाने के लिए उसे खर्च कर सके।

उदाहरणार्थ, फोर्ड^१ के वैभव को अक्सर ईमानदारी से कमाया गया बताया जाता है। वह दिखावा करता है कि उसे धन से घृणा है। वह डीगें हांकता है कि वह ऊँचे वेतन देता है और उसकी कारें सस्ती हैं। फिर भी या तो उसके दिए वेतन अब भी बहुत कम हैं या उसकी कारें बहुत अधिक महंगी हैं, क्योंकि अपने इस कारखाने से उसने १,००,००,००,००० डालर इकट्ठे कर लिए हैं। यदि उसने समाज की सेवा भी की होती, तब भी उस सेवा की यह बहुत ही ऊँची कीमत होती। साथ ही कुछ सौ हज़ारों स्त्री-पुरुषों का जीवन उसकी सनक और उसके शब्द पर निर्भर करता है।

यदि हम शिक्षा-प्रणाली का विवेकपूर्ण सुधार करना चाहते हैं अथवा यह समझना चाहते हैं कि उसे किस दिशा में जाना है, तो हमें मूल्यों पर निर्भर कुछ उद्देश्य स्थिर करने ही पड़ेंगे। यही बात कारोबार और अमरीकी स्वप्न के बारे में भी समान रूप से सच है। हमारा लोकतन्त्र बड़े कारो-बारी स्वार्थों और उनकी शक्तियों को दबाने, निर्देशित अथवा नियन्त्रित करने का प्रयत्न तब तक नहीं कर सकता जब तक वैसा करने चलते समय प्रयोजन का नक्शा हमारे दिमाग में साफ न हो। यदि हम मनुष्य को मात्र उत्पादक या उपभोक्ता ही समझते हैं तब तो निर्मम रूप से कुशल बड़ा उद्योग ही अधिक अच्छा है। उपभोग की बहुत-सी चीजें निस्सन्देह ही मान-वीय मूल्यों के एक उच्च मानदण्ड के आधार पर भी मनुष्य को अधिक स्वस्थ, अधिक सुखी और अधिक अच्छा बनाती हैं। लेकिन यदि हम मनुष्य को पहले एक मानव और बाद में गौणत एक उपभोक्ता मानें, तब हमें यह सोचना पड़ेगा कि मानव-प्राणी के रूप में कौन-से मूल्य सबसे अच्छे और सबसे अधिक तृप्तिकर हैं। हम उपभोक्ता के रूप में नहीं बल्कि मानव के रूप में कारोबारों का नियन्त्रण करने की कोशिश कर सकते हैं, क्योंकि कितनी ही ऐसी जरूरतें और इच्छाएँ हममें हैं जिनका उपभोक्ता के रूप में

१ फोर्ड (१८६३-१९४७) मोटरकारें बनानेवाला अमरीकी उद्योगपति ।

वह कारोबार अथवा थोक उत्पादन की जरूरतों से अपने काम का जोड़ बिठाए। यदि वेतनों को अनिश्चित रूप में ऊँचे चढ़ते जाना है, क्योंकि थोक उत्पादन में निहित सम्भावनाएँ उन्हें ऊँचा उठा सकती हैं, तो बौद्धिक कम-कर अथवा कलाकार को भी अपनी सभी सेवाओं और किराये जैसे खर्चों के सभी मुद्दों पर अधिकाधिक खर्च करना पड़ेगा और इस प्रकार वेतन एक काफी ठोस तत्त्व बन जाएगा। इस प्रकार बढ़ती हुई वेतन-दरों के कारण उसको अपनी लागत बढ़ेगी। उसे पता लगेगा कि अपने बौद्धिक पदार्थों के लिए एक सीमित बाजार पाकर, इस दुनिया में, जोकि थोक उत्पादन के लाभों पर टिकी है, वह जी नहीं सकता। निरन्तर बढ़ती थोक उत्पादन की लागतों को थोक उत्पादन के लाभ को किसी न किसी रूप में पाए बिना वह अदा नहीं कर सकता। यदि थोक उपभोग का अर्थ अधिकांशतः विचार और अभिव्यक्ति की किस्म में एक प्रकट गिरावट न हो, तो यह कोई बुरी बात नहीं है। यदि कलाकार अथवा बौद्धिक कमकर एक वर्ग अथवा दल के बदले बहुसंख्यक सामाजिकों को पा सके तो उनके अपने काम पर इसका बड़ा ही उत्प्रेरक प्रभाव पड़ेगा। लेकिन इसके लिए इन बहुसंख्यक सामाजिकों को कृति के उच्चतम स्तर पर उसे समझने की योग्यता प्राप्त करनी होगी। थोक उत्पादन का सिद्धान्त जब सूक्ष्म वस्तुओं पर लागू किया जाता है तो वह टूटकर बिखर जाता है। कम्पनियों का विशाल संगठनों में संगठित होना और लाखों-लाखों उपभोक्ताओं के बाजारों के लिए एक ही स्थिर मान की और कम कीमत की सेमे या कारे पैदा करना हमारी भौतिक जरूरतों के क्षेत्र में तो सम्भव हो सकता है, पर दिमाग के क्षेत्र में ऐसा होना सम्भव नहीं है। फिर भी आजकल पूरा रुख इसी दिशा में है। अखबार आज ऐसे एक-दूसरे में समा रहे हैं जैसे कि कारखाने समाते हैं। और दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाएँ दात के मजून की तरह थोक बिक्री पर निर्भर बनती जा रही हैं।

इसका फल यह हुआ है कि उनमें प्रकाशित विचारों का स्तर लाखों उपभोक्ताओं के दिमागों के सबसे निचले सामान्य स्तर तक नीचे गिर गया है।

यदि अमरीकी स्वप्न को सच बनना है और उसे हमारे अनुकूल रहना है तो मूल में उसे स्वयं आम लोगो पर निर्भर करना पड़ेगा। यदि हम सबके लिए एक अधिक सम्पन्न और भरा-पूरा जीवन उपलब्ध करना है, तो सबको यह जानना होगा कि ऐसी उपलब्धि का क्या अर्थ है। एक आधुनिक औद्योगिक राज्य में सबके लिए एक आर्थिक आधार अनिवार्य है। हम घमंड के साथ अपनी 'राष्ट्रीय आय' की ओर सकेत करते हैं, पर राष्ट्र व्यक्ति पुरुषो और व्यक्ति स्त्रियो की एक कुल जमा ही तो है। और जब हम कुल आय के अकेले अक से व्यक्तियों की आय की ओर मुड़ते हैं तो हमें कुल के वितरण में एक अत्यन्त उल्लेखनीय अन्याय दीख पड़ता है। सम्पत्ति जो एक सामाजिक उत्पत्ति है, क्यों समाज के हित में उसका अधिक समतापूर्वक नियन्त्रण और वितरण न किया जाए? इसका कोई कारण समझ में नहीं आता है। लेकिन जब तक हम जीवन के मूल्यों के विषय में निश्चित मन न हो जाए, तब तक बहुत सम्भावना है कि हम एक गलत दिशा में बढ़ जाएंगे और फूस में गिरे पैसे को ढूँढने के लिए खलि-हान को ही जला डालेंगे।

मात्र आर्थिक आधार से ऊपर और परे, मूल्यों के एक मानदण्ड की आवश्यकता और भी अधिक उग्र हो जाती है। यदि हम ऐसे युग में प्रवेश कर रहे हैं जब न सिर्फ उद्योगों में बल्कि जीवन के दूसरे विभागों में भी भीड़ की गिनती अधिक होती है, व्यक्ति की कम और यदि प्रत्येक को और सभीको एक अधिक सम्पन्न और भरपूर जीवन का आनन्द उठाना है, तो भीड़ के स्तर को, जो वह इस समय है, उससे काफी ऊँचा उठाना होगा। या तो उसे खामे ऊँचे सामुदायिक जीवन की ऊँचाई तक उठाना पड़ेगा या जीवन को राजनीतिक नेतृत्व, कला और साहित्य के क्षेत्रों में अपने निजी स्तर तक नीचे खींच लाना होगा। अमरीका पर यह दोष मढ़ने का कोई लाभ नहीं कि वह एक 'बैबिट वारेन'^१ है। अधिकांश देशों की

१ सिनक्लेयर लेविस के उपन्यास का नायक जो मध्य श्रेणी का धनी पर उजड़ पदार्थवादी है।

अपेक्षा आध्यात्मिक और बौद्धिक दृष्टि से अमरीका का शीर्ष और तल पर-स्पर कही अधिक निकट है। लेकिन हर कही बहुत काफी 'बैबिट' रहते ही है। 'मेन स्ट्रीट'^१ ससार में सबसे लम्बी है क्योंकि वह पूरे भूगोल पर घूम जाती है। यह नाम अमरीकी है पर राजमार्ग (मेन स्ट्रीट) सिर्फ अमरीकी मार्ग नहीं है। कोई भी व्यक्ति जेनिथ जितनी ही घुटन किसी भी अंग्रेजी कस्बे अथवा फ्रांसीसी प्रान्तीय नगर में भी महसूस कर सकता है। मुद्दा यह नहीं है।

मुद्दा यह है कि यदि हमें एक ऐसा सम्पन्न और भरपूर जीवन जीना है जिसमें सभी अपना-अपना हिस्सा ले सके और अदा कर सके, यदि अमरीकी स्वप्न को वास्तव बनना है, तो हमारा सामुदायिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक जीवन, उन अन्य स्थानों की अपेक्षा प्रकटत. ऊँचा होना ही चाहिए जहाँ वर्गों और दलों के शौक, स्वभाव, बाजार, कला और जीवन सब अलग-अलग है। यदि स्वप्न का पूरा होना सम्भव नहीं है, तो अच्छा हो हम भी घोर यथार्थवादी बन जाएं। हम एक बार फिर वर्ग-चेत बन जाएं और जिस प्रकार व्यक्ति अथवा वर्ग एक-दूसरे से संघर्ष करते हैं, वैसे ही हम भी संघर्ष करें। यदि उसे सच बनना है तो, जो लोग आर्थिक, बौद्धिक अथवा अन्य दृष्टियों से शीर्ष पर हैं, उन्हें 'महान समाज' के प्रति स्वयं को समर्पित करना ही पड़ेगा और जो लोग निचले स्तर पर हैं उन्हें न सिर्फ आर्थिक, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी ऊँचा उठने की कोशिश करनी ही होगी। व्यक्तियों के रूप में स्वार्थों, शारीरिक सुविधाओं और सस्ते मनोरंजनों में स्वयं को डुबाकर हम एक महान लोकतन्त्र नहीं बन सकते। सभी के लिए एक अधिक अच्छे और अधिक सम्पन्न जीवन के अमरीकी स्वप्न का आधार ही यह है कि सभी विभिन्न मात्राओं में, इसमें हिस्सा लेना चाहने के योग्य बनें। सस्ते लोगों अथवा 'जोनेसेज़'^२ के साथ बने

१. लेविस का उपन्यास जिसमें पदार्थवादी प्रादेशिकता का चित्रण है।

२. सीनेटर जोन्स (१८६३-१९३२) जिसने वाल्सटेड नियम (मद्य-निषेध कानून) के अधीन कठोर दण्ड का विधान कराया था।

रहने' से इसे वास्तविकता में कभी नहीं बदला जा सकता। एक सम्पत्ति में स्वयं निज में अथवा एक आदमी में स्वयं अपने में कुछ नहीं होता। सब इस बात पर निर्भर करता है कि प्रत्येक से क्या कुछ निर्मित किया जाता है। लेकिन इसलिए बड़ा नहीं था कि वह एक लट्टो के केबिन में पैदा हुआ था, बल्कि इसलिए बड़ा था कि वह उससे बाहर निकल सका। अर्थात् क्योंकि वह गरीबी, अज्ञान, महत्वाकांक्षा की कमी, चरित्र की लाचारी, तुच्छ चीजों और हीन लक्ष्यों में सन्तुष्टि, इनसे ऊपर उठ सका। ये सब हजारों को उन्हीं भोपड़ों में बनाए रखते हैं, जिनमें वे पैदा हुए थे।

यदि हमें उस स्वप्न को सच्चा बनाना है तो हमें बृहद् निर्माण करने के लिए नहीं, बल्कि अधिक अच्छा निर्माण करने के लिए मिलकर काम करना होगा। एक समय आता है जब मात्रा आतक बन जाती है और ह्रास-मान प्रतिलाभ का सिद्धान्त लागू होने लगता है, लेकिन किस्म के साथ ऐसा नहीं होता। एकसाथ काम करने से मेरा मतलब यह नहीं है कि एक दूसरा सघटन बनाया जाए। इनसे तो यह देश ऐसा भरा-पूरा है, जैसाकि कन्सास फर्तिगो से है। मेरा मतलब एक सच्ची व्यक्तिगत खोज और जीवन के अनुकूल मूल्यों के लिए प्रयास करने से है। अमरीका जैसे बड़े देश में भविष्यवाणी करना उतना ही असम्भव है जितना कि सामान्य नियम बनाना और वह भी बिना मुह के बल गिरे। लेकिन मुझे लगता है कि स्थान आशा के लिए भी है और अविश्वास के लिए भी। स्वप्न के बिना महाकाव्य अपने गौरव को खो देता है। जब तक मैं स्वप्न में आस्था न रख सकूँ, आकार, संख्या और वैभव के आकड़ों मेरे लिए बेकार हैं।

हमारे बारे में अब तक लिखी गई सर्वोत्तम पुस्तकों में से एक में जैसा कहा गया है, अमरीका अब भी 'अन्तर्विरोधों की भूमि' है। कभी तो ओक-लाहामा का कोई व्यक्ति अपने राज्य के बारे में ऐसा बहकता है और ऐसी निराशाजनक छाप हमपर डालता है जैसे कि इस छोटे-से राज्य में तेल के

कुओ और करोडपतियो के सिवाय कुछ भी हो ही नहीं। लेकिन अगले ही दिन व्यक्ति वहा के विश्वविद्यालय से एक शानदार त्रैमासिक आलोचनात्मक सूची प्राप्त करता है, जिसमे एकदम हाल ही मे फ्रांस, स्पेन, जर्मनी और इटली मे छपी पुस्तको की सूची होती है, और जिसमे एक सक्रिय बौद्धिक जीवन तथा दुनिया की दूसरी ओर के विचारो को लेकर एक बौद्धिक सक्रियता के आरम्भ का हर सकेत होता है।

आशा का इससे अधिक अच्छा सकेत और क्या हो सकता है कि अपनी सम्यता की उन प्रवृत्तियो की विवेकपूर्ण और गम्भीर आलोचना की जाए जिनके निर्मम पर्यवेक्षण की आवश्यकता है। इस दृष्टि से हम प्रकट ही सीमावादी स्तर से दूर निकल चुके है। हमारे जीवन को और हर राष्ट्र को आज ऐसे परीक्षण की आवश्यकता है। लेकिन क्योकि हमारी दृष्टि अशुभ सकेतो पर ही अधिक रहती है, इसलिए अच्छो को भूल जाना बेहूदा ही होगा। मेरीमाउण्ट के मार्टन^१, बेनेडिक्ट आर्नल्ड^२, 'बिली दि किड', थेडियस स्टीवन्स^३, जे गाउल्ड^४, पी० टी० बार्नम^५, ब्रिघम यंग^६, टॉम लासन^७ और अन्यो की शैली पर हमारे अतीत का इतिहास लिखना अनालोचनात्मक होगा। इन सबको एक अबोधगम्य राष्ट्रीय गाथा का एक असाधारण गडबडभाला बनाने के लिए तो एकत्र किया जा सकता है। यह वैसा ही होगा जैसाकि पूरी तरह जान विन्थाप^८, वाशिंगटन, जान

१. (१५७५-१६४६) अग्रेज उपनिवेशवादी।
- २ (१७४१-१८०१) क्रान्तिकारी, जनरल और देशद्रोही।
- ३ (१७६२-१८६८) राजनीतिज्ञ।
- ४ (१८३६-१८६२) अमरीकी पूजीपति।
- ५ (१८१०-१८६१) अमरीकी तमाशेवाला।
- ६ (१८०१-१८७७) शिक्षा-शास्त्री और चर्च प्रेजिडेण्ट।
- ७ (१८५७-१९२५) लेखक और उद्योगपति।
- ८ (१५८८-१६४६) उपनिवेश-गवर्नर।

क्विची अदम्स^१, जेफर्सन, लिंकन, एमर्सन^२, एडिसन^३, जनरल गोगार्जि^४ एव अन्यो की शैली में अतीत कथा को लिखना और एक उतनी ही झूठी तस्वीर पेश करना ।

आज राष्ट्र एकमात्र बैबिट्स से ही नहीं भर उठा है (यद्यपि वैसे बहुत सारे हैं) । कितने ही युवक कवि हममें हैं । विशेषकर जवान पुरुषों और स्त्रियों में, उनकी गहरी गहराइयों में एक स्वास्थ्यप्रद हलचल चल रही है । उनमें एक निश्चय पनप रहा है कि कारोबार के लाभ के लिए एकमात्र उपभोक्ताओं के रूप में ही उन्हें नहीं जीना है । वे एक विवेकपूर्ण और सम्यक् जीवन जीना चाहते हैं । जब व्यक्ति, जो चित्रपट उद्योग एक महान कला के रूप में विकसित हो सकता था, उसकी गणिकावृत्ति पर विचार करता है, तो उसका ध्यान देश-भर में हर कहीं चल रहे छोटे नाटक-गृहों और लोक-नाट्यों की सृष्टि के तथा एक पीढ़ी पहले तक लगभग अज्ञात-अस्तित्व लोक-कविताओं के संग्रह के आन्दोलनों की ओर भी चला जाता है । एक जागरणशील संस्कृति के कितने ही अन्य आशाप्रद चिह्न भी प्रकट हो रहे हैं जो सीधे और स्वाभाविक रूप में हमारी निजी मिट्टी और अतीत में से फूट रहे हैं । परस्पर-विरोधी अच्छाई कितनी दूर तक बुराई पर विजय पा सकती है, यही हमारी समस्या है । दस हजार सिनेमा के पर्दों पर उभरे एक चुम्बन से रात के समय रोमांचित होनेवाले लोगों की सख्या को ओ नील^५ के नाटक के दर्शकों की सख्या से मिलाना कोई आनन्द-प्रद बात नहीं है । लेकिन दूसरी ओर हमें यह भी नहीं भूल जाना चाहिए कि जिस देश ने पिछले साल १५,००,००० वे फोर्ड कारें बनाई जो अपनी

१ (१७३५-१८२८) अमरीका का दूसरा राष्ट्रपति ।

२ (१८०३-१८८२) कवि, दार्शनिक ।

३ (१८४७-१९३१) अन्वेषक ।

४ (१८५४-१९२०) सफाई-विशेषज्ञ ।

५. (१८८८-१९५३) अमरीकी नाटककार ।

छोटी आयु समाप्त करके बहुत बड़ी सख्या मे हमारी बस्तियो की गलियो मे पडे ढचरो के रूप मे कबाडखानो की वृद्धि करेगी, वही देश पिछली अर्द्ध-शताब्दी की सर्वोत्तम शिल्प-कृति को बनाने मे शायद सफल हो सका है। राकफेलर द्वारा वैभव के सचयन मे दिखाई गई प्रेरणा की हम अब उसके वितरण मे दिखाई जानेवाली प्रेरणा से तुलना कर सकते है।

ग्रामीण प्रदेशो की सडको की तरह ही हमारा पूरा राष्ट्रीय जीवन सीमा युग के हमारे अनुभवों के अस्त-व्यस्त अवशेषो से अटा पड़ा है। और उन लोगो को हर सम्भव सहायता दी जानी चाहिए जो इनमे से इस या उसकी सफाई का सच्चा प्रयास कर रहे है। लेकिन इस सीमा ने भी एक अमरीकी स्वप्न हमे दिया है जो कितने ही हृदयो और कितनी ही सस्थाओ मे उफन रहा है।

मै अक्सर सोचा करता हू कि इन सस्थाओ मे जो एक सस्था इस स्वप्न को सर्वोत्तम रूप मे साकार करती है, वह है कांग्रेस का पुस्तकालय—पुस्तकालयो के इस देश का महानतम पुस्तकालय। अधिकाशत मुझे उन लोगो के विशाल उपहारो और नियमो मे बहुत थोड़ी रुचि है जिनकी आय इतनी अधिक है कि वे सम्भवत खर्च नही कर सकते और जिनकी लागते बर्फीले भरनो की तरह बहती है। ऐसे लोग बस अपनी सम्पत्ति का एक हिस्सा ही उस समाज को लौटाते है—वह भी बहुत ही कम अमूर्खतापूर्वक—जिसके बिना वे इस सम्पत्ति को कमा ही नही सकते थे, और कमाई के बीच बहुत अधिक बार इन्होने उसे लूटा भी है। यह मुख्यत हमारे आर्थिक ढांचे मे वर्तमान एक कुव्यवस्था का प्रमाण है। यह वह ढांचा है जो साधारण आदमी और अत्यन्त धनी के बीच की खाई को स्थिरतापूर्वक बढाता है, जो समाज के स्रोतों को व्यक्तिगत वैभवो के रूप मे संचित होने की अनुमति देता है। इनके स्वामी करोडों प्रतिवर्ष कमाते है। मौके की ही बात है कि इनमे से कुछ अपने फालतू धन मे से थोडा-सा पूरी तरह उनके द्वारा चुने गए तरीको से जनता पर खर्च करने के लिए विगलित हो उठते है। यह निश्चय ही एक क्षयपूर्ण, और अन्यायपूर्ण व्यवस्था है। अमरीकी स्वप्न के

लिए यह उतनी ही अपकारी है जितनी कोई भी अन्य चीज हो सकती है। मैं कुछ लोगो की उदारता अथवा उनके जन-सेवा के उत्साह को छोटा बनाना नहीं चाहता। यह तो व्यवस्था ही है जो अभी तक कसूरवार है। जो इससे सबसे अधिक लाभ उठाते हैं, उनमें यह आशा नहीं की जा सकती कि वे इसे अपने हाथों से बदलेगे। किसी भी शासक-वर्ग ने कभी भी चाहकर सत्ता नहीं छोड़ी है। यदि लोकतन्त्र स्वयं अपनी रक्षा न कर सके तो उसे कभी बचाया नहीं जा सकता और वह बचाए जाने योग्य होगा भी नहीं।

कांग्रेस का पुस्तकालय सीधा लोकतन्त्र के हृदय से आया है और उसी तक उसे पहुँचाया भी गया है और यहाँ मैं, जो कुछ लोकतन्त्र स्वयं अपनी प्रेरणा से उपलब्ध कर सकता है, उसीका प्रतीक उसे मान रहा हूँ। इसे कितनों ने ही उपहार दिए हैं, लेकिन इसका सृजन कांग्रेस के माध्यम से हमारे द्वारा किया गया है। कांग्रेस ने स्वयं इसके प्रति स्थिरतापूर्वक अधिकाधिक उदारता और कृपा प्रदर्शित की। इसे जनता ने स्थापित किया और बनाया और जनता के लिए ही यह है। जिस किसीने भी यूरोप के विशाल संग्रहों का इस्तेमाल किया है और उनपर लगे बन्धनों और वहाँ के भ्रष्टाचार और प्राप्ति में कठिनाइयों का सामना किया है, वही जब कांग्रेस के इस पुस्तकालय के पुस्तक-कक्षों में घुसना है तो अमरीकी लोकतन्त्र के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है।

लेकिन कांग्रेस का पुस्तकालय अमरीकी स्वप्न को सिर्फ इतनी ही दूर तक पूरा नहीं करता कि उसमें जन-धन का विवेकपूर्ण इस्तेमाल हुआ है। इससे भी अधिक स्वयं जनता के अपने दो रूपों में वहाँ दर्शन होते हैं। कांग्रेस का पुस्तकालय कांग्रेस की उदार सहायता के बावजूद जो आज है वह न बन पाता यदि डा० हर्बर्ट पुटनैम^१ जैसे नागरिक इसके सर्वोच्च संचालक न

१. डा० पुटनैम चालीस वर्षों से अधिक की सेवा के बाद 'लायब्रेरियन एमेरिटस' बनकर १९३६ में निवृत्त हो गए थे। उन्होंने अपने स्मारक के रूप में एक विशाल, अत्यन्त सुगठित और अद्वितीय सस्था छोड़ी है जो

होते। उन्होंने और उनके कार्यकर्ताओं ने चालीस लाख और इससे भी अधिक पुस्तकों और गुटकों से जनता की सेवा उस स्तर तक करने में अपने जीवन होम दिए, जिस स्तर को पुरानी दुनिया की कोई भी समकक्ष महान संस्था पहुँच नहीं सकती। दूसरे वह जनता है, जो इन सुविधाओं का उपयोग करती है। जब व्यक्ति सर्वसाधारण पठन-कक्ष की ओर, जिस अकेले में दस हजार ग्रन्थ हैं और जिन्हें बिना किसीसे पूछे पढ़ा जा सकता है, दृष्टि-पात करता है तो वह देखता है कि कुर्सियाँ शान्त पाठकों से भरी हैं। बूढ़े और जवान, धनी और निर्धन, काले और श्वेत, व्यवस्थापक और मजदूर, सेनापति और सिपाही, प्रसिद्ध विद्वान और स्कूली बालक—सब अपने निजी लोकतन्त्र द्वारा निर्मित अपने निजी पुस्तकालय में पढ़ रहे हैं। सदा ही मुझे लगा है कि यह अमरीकी स्वप्न के एक ठोस दृष्टान्त का पूर्ण प्रस्तुतीकरण है। स्वयं जनता के सचित स्रोतों ने इसके साधन जुटाए हैं। जनता इसके इस्तेमाल की पर्याप्त बुद्धि रखती है। उच्च प्रतिष्ठा के लोग जो स्वयं महान लोकतन्त्र के अंग हैं, इस अविच्छिन्न सम्पूर्ण की भलाई के लिए स्वयं दत्त-

पुस्तकालय की इस सामान्य तस्वीर से अत्यन्त भिन्न थी कि पुस्तकालय को पुस्तकों, हस्तलिखित ग्रन्थों, नक्शों, आदि का गोदाम होना चाहिए। राष्ट्रपति द्वारा उनके उत्तराधिकारी की नियुक्ति एक आश्चर्य बनकर ही आई। श्री आर्चिबाल्ड मैकलीश को पुस्तकालय का कोई अनुभव नहीं था। ऊँची प्रतिष्ठा के एक छोटे कवि, 'फार्चून' और अन्य पत्रिकाओं के लिए एक लेखक और एक वक्ता के रूप में ही उनकी प्रसिद्धि थी। अपना लिखना और भाषण देना उन्होंने जारी रखा है। और उन्हें एक युद्ध-कार्यालय, तथ्यों और आकड़ों के दफ्तर का प्रधान भी बना दिया गया है। पुस्तकालय अध्यक्ष के रूप में उनके काम को इतना शीघ्र तो आका नहीं जा सकता। लेकिन जो जानते और समझते हैं कि डा० पुटनैम के निर्देशन में कांग्रेस पुस्तकालय क्या बन गया है, वे उनकी सफलता की निश्चित कामना ही कर सकते हैं।

चित्त है।

मुझे लगता है कि मात्र किसी ऐसे रूप में ही जिसे हमारे राष्ट्रीय जीवन के सभी विभागों में लागू किया जा सके, अमरीकी स्वप्न को एक अनुकूल वास्तविकता में परिणत किया जा सकता है। राजनीतिज्ञों की विवेकपूर्ण सरपरस्ती और कारोबार प्रमुखों की असीम बुद्धि में मुझे बहुत ही थोड़ा विश्वास है। जब तक विपुल व्यक्तियों के रूप में अपनी निजी व्यक्तिगत आत्माओं में ही कुछ महानता हम विकसित नहीं कर लेते, तब तक एक महान राष्ट्र के रूप में एक तृप्तिकर और मानवीय अस्तित्व के मार्गों पर अपने नेतृत्व के लिए न तो हम सरकार की ओर देख सकते हैं, न ही महान निगमों के प्रमुखों की ओर ही। जब तक अनगिनत स्त्री और पुरुष स्वयं अपने हृदयों में अनुभव और सम्भवतः भ्रमोन्मूलन के माध्यम से यह तय नहीं कर लेते कि वास्तविक रूप में तृप्तिदायक जीवन, पुराने ग्रीक अर्थों में एक 'भला जीवन' क्या है, तब तक राजनीतिज्ञों अथवा कारोबार-प्रमुखों से आस लगाने की जरूरत हमें नहीं है। हमारी राजनीतिक प्रणाली के अधीन, किसी राजनीतिज्ञ से यह आशा करना कि वह अपनी शक्ति के स्रोत से ऊँचा उठ सकेगा, किसी दुर्लभतम सुखद दुर्घटना को छोड़ व्यर्थ ही है। जब तक स्वयं हम अस्तित्व के भौतिक आधार के विस्तार-मात्र से और अपने भौतिक अधिकारों के गुणित होने जाने से सन्तुष्ट हैं, तब तक यह सोचना बेहूदा है कि वे लोग, जो आध्यात्मिक चीजों से घृणा करनेवाले लोकतंत्र का उपयोग अपने लिए अनन्त सम्पत्ति और शक्ति प्राप्त करने में कर सकते हैं, इन दोनों को त्यागकर लोकतन्त्र के आध्यात्मिक नेता बन जाएंगे। जब तक वैभव और शक्ति सफलता के एकमात्र प्रतीक हमारे लिए हैं, तब तक महत्वाकांक्षी लोग इन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न करते ही रहेंगे।

भविष्य आज अनुत्साहक है, पर आशाशून्य नहीं। जब हम आज के अमरीका की तुलना १९१२ के अमरीका से करते हैं तो लगता है कि हम बहुत दूर पीछे हट गए हैं। लेकिन यह अवधि छोटी है और पूरा ससार इस

बीच नरक की आग में दहकता रहा है। आकाश में सुसम्भावना के कम चिह्न आज नहीं हैं। चिह्न यह कि लोग स्वयं, थोक उत्पादन-युग के श्रम और प्रतिफल में जो कुछ सरनिष्ठ हैं, उससे अधिक की लालसा एक बार फिर करने लगे हैं। उन्होंने यह समझ लेना शुरू कर दिया है कि क्योंकि कोई आदमी अपने लिए धन और शक्ति की विशाल राशियाँ संचित करने की एक विशेष प्रेरणा लेकर पैदा हुआ है, इसलिए इसी आधार पर न तो वह अनुसरण के लिए एक योग्यतम नेता बन सकता है, न ही जीवन के उत्तम दर्शन की व्याख्या के लिए योग्यतम विचारक। यदि हम अपने राष्ट्र के जीवन में अमरीकी स्वप्न को उपलब्ध करना चाहते हैं तो हमें एक लम्बा और कठोर मार्ग तय करना पड़ेगा, लेकिन यदि हम विफल रहते हैं तो प्राचीन शाश्वत चक्र के सिवाय कुछ भी बाकी नहीं रहता। तब स्वशासन की विफलता, पूरी ऊँचाई तक उठने में सामान्य जन की विफलता, अमरीकी स्वप्न ने मानव-जाति के लिए जो आशा और सम्भावना सजोई है उसकी विफलता ही बस बाकी बचेगी।^१

१ इसे १९३१ में लिखा गया था। तब से अमरीका वाले बहुत काफी कुछ देख चुके हैं—मन्दी, नया उपचार (न्यूडील) और द्वितीय विश्वयुद्ध। जिस अमरीका के बारे में उस समय मैं लिख रहा था और भविष्यवाणी करने की कोशिश कर रहा था, आज का अमरीका कितने ही रूपों में उससे बहुत ही अधिक भिन्न है। हमारी सभ्यता की यह किस्म, जीवन की अमरीकी पद्धति, अमरीकी स्वप्न, सभी दाव पर हैं। मैं यहाँ भविष्यवाणी के विवरण में नहीं जा सकता, पर जब लड़ाई समाप्त हो जाएगी तब पूरा ससार ही एक भिन्न चीज होगा। जीवन अनगिनत रूपों में बदल चुकेगा। लेकिन मेरा विश्वास है कि स्वतन्त्र मानवों का दावा तब भी ज्यों का त्यों रहेगा और अमरीकी स्वप्न, अमरीकी हृदय में इतना गहरा गड़ा है कि वह भी शायद जीवित रहेगा, और शायद पहले से अधिक बड़ी वास्तविकता में रूपान्तरित हो चुकेगा। उसे यदि खोया जा

यह स्वप्न किसी एकाकी विचारक की देन नहीं था । लाखों-करोड़ों भारग्रस्त आत्माओं और हृदयों में से, जो सभी राष्ट्रों से हमारे पास आए हैं, यह उभरा है । यदि हमें लगता है कि उनमें से कुछ में आत्यन्तिक आस्था रही है तो हम अभी नहीं जानते कि आस्था क्या उपलब्ध कर सकती है । और हमें उनमें से एक-एक जवान आप्रवासी लड़की, जो रूस से यहाँ आई थी, मेरी एण्टिन के शब्दों को सुनना चाहिए । उसीके शब्दों में, 'मध्य युगों' से निकलकर वह हमारी बीसवीं सदी में आ पहुँची थी । बोस्टन जन-पुस्तकालय, जहाँ मानवीय विचार के भरपूर खजाने उसके लिए खुल गए थे, की सीढ़ियों पर बैठकर उसने लिखा था, "यह मेरा सबसे नया घर है । एक नये आनन्दप्रद जीवन का आमन्त्रण यह मुझे दे रहा है । अनगिनत युग, मेरे खून में सचमुच ही घड़क चुके हैं । लेकिन आज मेरी नसों में एक नई लय नाच रही है । मेरी आत्मा स्मरणीय अतीत से उसी तरह नहीं बंधी है, जैसे मेरे पैर अब पहाड़ी के नीचे स्थित मेरे दादा के मकान से बंधे नहीं रहेंगे । अतीत, बस, मेरा पालना था और अब मैं उसमें समा नहीं सकती, क्योंकि मैं बहुत बड़ी हो गई हूँ । ठीक इसी तरह पोलोट्ज्क का वह नन्हा-सा मकान जो कभी मेरा घर था, अब स्मृति का एक खिलौना बन गया है, क्योंकि अब मैं अपनी इच्छानुसार, जिसकी छाया एकड़ों में फैली है, इस शानदार महल के खुले आँगनों में घूम रही हूँ । नहीं, यह नहीं कि मैं अतीत से सम्बद्ध हूँ, बल्कि यह कि अतीत मुझसे सम्बद्ध है । अमरीका राष्ट्रों में सबसे छोटा है और इतिहास में जो कुछ पहले बीत चुका है, वह सब इसे उत्तराधिकार में मिला है । और मैं अमरीका के बच्चों में सबसे छोटी हूँ और मेरे हाथों में उसकी सारी अमूल्य बपौती टेलिस्कोप से देखे गए अन्तिम श्वेत तारे तक और दार्शनिक के अन्तिम महान विचार तक, सारी कुछ आ गई । पूरा शानदार अतीत मेरा है और उज्ज्वल भविष्य मेरा है ।"

सकता है तो स्वयं हम अमरीकी ही उसे खो सकते हैं । मैं नहीं मानता कि हम उसे भूल जाना चाहते हैं या उसे सच बनाने की कोशिश बन्द करना चाहते हैं ।

ललित कलाकार की स्वतंत्रता : निष्कर्ष

...इस सामग्री को एक नया रूप, अपने
निजी मस्तिष्क अथवा कल्पना का रूप देना ।

—एरिच फ्रैंक

यदि मानवीय स्वतन्त्रता-विषयक इस लेख का तर्क सही है तो कलाकार की सृजनशीलता को प्राकृतिक आधारों पर स्पष्ट किया जा सकता है । जैसा-कि हम देख चुके हैं, सर्जक-रूप कलाकार की सौन्दर्यात्मक समस्या को, अनुशीलन के दो एकदम भिन्न स्तरों में पैदा हुए सम्भ्रम ने ढक दिया है । पहले स्तर के अनुसार कलाकार की ईश्वर—सर्जक ईश्वर और जगत्-पिता ईश्वर—से साधर्म्यता की लम्बी परम्परा ने मौलिक मस्तिष्क और कुशल कारीगर को सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता के गुणों से युक्त एक प्रतिनिधि बना दिया है । प्रतिभा के आकार की कल्पना के प्रति आकर्षण ने भी इसे धुधला बनाया है और यह स्थिति वहाँ तक पहुँचकर भी बनी रही है जहाँ प्रतिभा की धारणा सौन्दर्य के क्षेत्र में प्रवेश कर गई है । विचारों के इतिहास में इस परम्परा के सौन्दर्यात्मक अनुशीलन का कम मूल्य नहीं लगाया जाना चाहिए । अधिक विशेष बात यह है कि इसने उन मूल्यों के बाहक का काम किया है, जो अन्यथा पूरी तरह लुप्त हो गए होते ।

अनुशीलन के दूसरे स्तर के अनुसार, उस एक तर्क के, जिसने आदमी की कल्पना को अनियन्त्रित मौलिकता का स्रोत बना दिया है और बाद में प्रतिक्रियावश जो अनुशीलन के एक अतिवादी रूप के विरोध में कला को विज्ञान बना देने में जुट पड़ा है, स्वेच्छाचारी पक्षों ने स्वतन्त्रता की सौन्दर्या-

त्मक समस्या को थोड़ा-सा कम ही धुधलाया है। हमने तर्क किया है कि ललित कला की किसी कृति को मात्र एक चिह्न, कारीगरी का एक प्रतिफल अथवा भावाभिव्यक्ति-मात्र समझ लेना इसे उस व्यक्ति की कृति समझ लेने से कम गलत नहीं है जो विश्वास रखता है कि वह एक प्रशिक्षित घोड़े की पीठ की अपेक्षा एक जगली घोड़े की पीठ पर कही अच्छा तमाशा कर सकता है। अनुशीलन के इस दूसरे स्तर का मूल्य दुहरा रहा है, उस अनुशीलन के, जो सौन्दर्यशास्त्र और धर्मशास्त्र के सम्भ्रम में पड़े योग्य व्यक्तियों की शक्तियों का सद्व्यय अब विज्ञान और कलाओं से प्राप्त ज्ञान की सीमाओं के भीतर करता है। विफलता कुछ ही कम प्रकट है, प्रमुख रूप से इस बात के कारण कि सौन्दर्यात्मक मूल्य के सभी फैसले तथ्यात्मक बना दिए जाते हैं।

हमने तर्क दिया है कि जितनी दूर तक उचित रूप में अभिहित ललित कला मुक्त भी है और कला भी उतनी दूर तक ललित कला की भी एक कला है। ऐसा माना गया है कि ललित कला ललित कला की ऐसी कृतियाँ पैदा करती है जो मौलिक भी है और बुद्धिग्राह्य भी। बातचीत की सौन्दर्यात्मक परिधि के भीतर ही इन पदों के अर्थ हमने लगाए हैं और इनका अर्थ व्यक्ति-निष्ठ और वर्गीकरणीय है। यह तर्क नहीं दिया गया है कि इस लेख के आरम्भिक अंश में जिसकी कृति का उल्लेख आया है, उस एरिच फ्रैंक जैसे अध्यात्मवादी का यह कहना भी गलत है कि “मानवात्मा की बढ़िया से बढ़िया उपलब्धि भी वास्तविक सृजन नहीं है क्योंकि सभी मानवीय सृजन सामग्री के रूप में उस ससार को ही ग्रहण करते हैं जिसे स्वयं मानव ने नहीं बनाया है।” वास्तव में, फ्रैंक के आगे के इस विचार से हम सहमत हैं कि “हम बस इतना ही कर सकते हैं कि सामग्री को एक नया रूप, अपने निजी मस्तिष्क का रूप दे दें।” हमने स्थापित किया है कि सामग्री, प्रतीको, अनुभूतियों द्वारा आरोपित सीमाओं के भीतर और सीमा बाधनेवाले प्रत्ययों और मूल्यों के अधीन कुछ नया पैदा करना कला-क्षेत्र में मानवीय स्वतन्त्रता के अर्थ को स्पष्ट करना ही है।

सृजनशीलता से हमारा अर्थ न तो मात्र पूर्णता से है, न ही सिर्फ मौलिकता से, बल्कि दोनों के ऐसे मिश्रण से है जो ललित कलाकृति के मूल्य की परिभाषा करता है। इन्हीं मूल्यों के आधार पर हमने कहा है कि ललित कला का सही काम स्रष्टा का सृजन करना है, काट के शब्दों में, सुख-सम्पन्न व्यक्ति को 'उसकी निजी मौलिकता की अनुभूति तक' उसे पहचाना और स्वयं अपनी कला के 'स्वतन्त्र पर्यवेक्षण' के लिए उसे तैयार करना है। स्वतन्त्रता के बारे में प्रमुख बातें ये हैं पहली कि यह शब्द तब तक अर्थ-शून्य है जब तक इसका इस्तेमाल उन अवस्थाओं का संकेत नहीं करता जिनमें यह प्रभावी है, दूसरे कि जो कलाकार सृजनशील है वह दोनों स्तरों पर लागू होनेवाले अधिनियम बना लेता है।

यदि हम सही हैं तो रुचि और आलोचना, कलापूर्ण रचना और मुक्त कला से सम्बन्धित हैं। सभी पदों का उत्कृष्ट, सुन्दर, करुण और हास्य से रिश्ता है। ललित कलाकार की स्वतन्त्रता की परीक्षा इस बात में है कि निर्विशिष्ट तथ्यों का निर्देश, और सौन्दर्यात्मक वर्गों के विषय को विशिष्टता प्रदान करके रुचिशील व्यक्ति को नये मूल्यों के सृजन की ओर ले जाने में वह सफल होता है या असफल। इस अर्थ में सृजनशील आलोचक का काम मानवीय स्वतन्त्रता से कोई कम सम्बद्ध नहीं है और सर्जक कलाकार की अपेक्षा वह कठिनाई से ही कम दुष्कर भी है। कलाकार के लिए अन्य ललित कलाओं में प्रस्तुत माध्यमों की अपेक्षा 'भाषा' कहीं अधिक उलझी हुई है। भाषा के इस माध्यम में प्रचुरता से अभिव्यक्त होनेवाली कला के प्रसंग में महान आलोचक को सर्जक प्रतिभा की शक्तियों से सम्बद्ध रुचि का निर्देश प्रयोगपूर्वक करना चाहिए। आलोचक वही है जो स्वतन्त्रता के अर्थों में ललित कलाकार के सबसे अधिक निकट है। उसे मौलिक होना चाहिए पर अपनी कला को उसे 'स्वतन्त्रतापूर्वक प्रयुक्त' भी करना चाहिए। उसके मूल्यांकन मौलिक और बुद्धिग्राह्य एकसाथ होने चाहिए। उनका सहीपन ठोस, प्रकट रूप में नापा जा सकना चाहिए और उनकी मौलिकता को ललित कलाकृति के रूप में देखा जा सकना चाहिए। मानवीय स्वत-

सियरा में पहली गर्मियां

१५ जुलाई—हम मोनोट्रेल से घाटी के पूर्वी कगार पर चलने-चलने लगभग उसकी चोटी तक पहुँच गए। तब हम दक्षिण की ओर मुड़कर एक झोटी, कम गहरी घाटी की ओर चले, जो योसेमाइट के कगार तक फैली है। दोपहर तक हम यहाँ पहुँच गए और हमने तम्बू लगा लिया। खाने के बाद मैं तेजी से ऊँची भूमि की ओर बढ़ा और इंडियन दर्रे के पश्चिमी ओर वाले टीले की चोटी से मैंने ऊँचे शिखरों का यह श्रेष्ठतम दृश्य देखा, जैसा पहले कभी मैंने नहीं देखा था। मर्सीड की घाटी का ऊपरी भाग लगभग पूरा दीख पड़ रहा था और उसके शानदार बुर्ज और गहरे सकरे दर्रे, ऊपर की ओर फैलते घने जंगल और आकाश में गहरी धमनी गफेंद चोटियों की शानदार कतार, जिनका हर अंग चमक रहा था तथा मौनदर्य को किशोरों के मास और हड्डियों में ऐसे उडेल रहा था जैसे कि वे आग से निकली गर्म किरणें हों। चारों ओर धूप थी। हवा की एक लहर तक नहीं थी जो वहाँ की गम्भीर शान्ति को भग करती।

टीला धीमे-धीमे दक्षिण की ओर ढल रहा था। उसपर बढ़कर अन्त में उस विशालकाय चट्टान की भौह तक आ पहुँचा, जो इंडियन दर्रे और योसेमाइट भरनों के बीच में स्थित है। और यहाँ उस दूर-दूर तक प्रगिद्ध घाटी का लगभग पूरा फैलाव अचानक मेरी दृष्टि-सीमा में आ गया। ऊँची दीवारें, जो गुम्बदों और तिकोनी बुजियों, शिखरकोणों, दातेदार कगारों और खड़े करारों आदि अनन्त रूपों में शिल्पित थी, सबकी सब गिरते पानी की भयंकर गर्जना से काप रही थी। घाटी की समतल तली, लगता था जैसे एक बगीचे के रूप में सजी हो। यहाँ-वहाँ धूप में चमकने

घास के मैदान और चीड़ और बजु के पेड़ों के झुंड और उनके बीच से शान के साथ बहती हुई मर्सी नदी, सूर्य की किरणों को प्रतिबिम्बित करती हुई। विशाल टिसियक अथवा हाफ डोम (आधा गुम्बद) घाटी के ऊपरी सिरे से लेकर लगभग एक मील ऊंचा उठा है। वह बड़े सही अनुपात में निर्मित है और जीवनपूर्ण लगता है। सब चट्टानों में वह सबसे अधिक प्रभावोत्पादक है। अनुरक्त प्रशंसा से भरी दृष्टि उसपर टिक जाती है। भरनो अथवा घास के मैदानों अथवा सुदूर पहाड़ों तक की ओर से दृष्टि को वह बार-बार अपनी ओर खींच लेती है। अदभुत खड़ी चट्टानें हैं वे। सिर चकरा देनेवाली गहराई और उनका कटाव बहुत ही शानदार है। वे सहायता की दृष्टान्त हैं। हजारों-हजारों वर्षों से वर्षा, बर्फ, पाला, भूचाल और हिमानियों को वे खुले आकाश में खड़ी सह रही हैं। फिर भी यौवन की चमक उनपर मौजूद है।

घाटी की कगरी के साथ-साथ मैं पश्चिम की ओर घूमता चला। इस कगरी का अधिकांश किनारे पर गोल हो गया है। इसलिए ऐसी जगहों को ढूढ़ पाना आसान नहीं है जहां से व्यक्ति दीवार की चोटी से साफ, सीधा नीचे तली तक देख सके। जब ऐसी जगह मिली और मैंने अपना पैर सतर्कतापूर्वक जमा लिया और अपने शरीर को सीधा तान लिया तो थोड़ा-सा डर मुझे लगे बिना न रह सका कि कहीं चट्टान का सिरा न हट जाए और मैं नीचे गिर न पड़ू। यह गिरना कितना भीषण होगा—तीन हजार फुट से अधिक नीचे गिरना। मेरे पैर फिर भी नहीं कापे और उन स्थलों पर पैर जमाने में न्यूनतम अनिश्चय तक मैंने महसूस नहीं किया। मेरा डर इतना ही था कि कहीं पत्थर की कोई पपड़ी उतर न पड़े। कुछ स्थानों पर जोड़ बहुत कुछ खुले थे और फाड़ चट्टान की सतह के समानान्तर चल रही थी। ऐसे स्थलों से पीछे हटकर और जो दृश्य अभी देखा था उसकी उत्तेजना से भरकर मैं अपने से कहता, “अब फिर कगार तक मत जाना।” लेकिन योसेमाइट के दृश्य के सामने सतर्क निषेध बेकार रहता है। इसके जादू के अधीन, लगता है, शरीर जहां चाहता है वहां जाता है और उसकी इच्छा के

ऊपर हमारा कोई नियन्त्रण रहता प्रतीत नहीं होता ।

इस स्मरणीय चट्टान से लगभग एक मील आगे चलने के बाद मैं योसे-माइट स्रोत तक पहुँच गया । इसके सहज, गौरवपूर्ण, आत्मविश्वस्त बहाव की मैंने प्रशंसा की । सकरी धारा में बहकर यह वीरतापूर्वक आगे आता है और अपने अन्तिम पर्वतीय गीतो को गाता हुआ अपनी नियति की ओर बढ़ जाता है । चमकते हुए ग्रेनाइट पत्थर पर कुछ गज्र और बहकर यह चमकदार भाग उगलता हुआ लगभग आधा मील नीचे दूसरी दुनिया में जा गिरता है और मर्सीड में खो जाता है जहाँ का जलवायु, वनस्पति, निवासी, सभी भिन्न हैं । अपने अन्तिम तग दर्रे से निकलकर, चौड़ी झलरदार छलाग लगाता हुआ, एक चिकने ढलान पर फिसलकर यह एक कुड में इकट्ठा हो जाता है । लगता है जैसे यहाँ यह विश्राम करता है और शानदार छलाग लगाने से पहले अपनी भूरी उत्तेजित लहरों को एकत्र करता है । तब कुड के होठों पर से धीमे से फिसलता हुआ उस दूसरे चिकने ढलान पर अत्यधिक तेज गति से दौड़ता है और उस विशालकाय चट्टान के कगार की ओर बढ़ता है और अपने श्रेष्ठ भाग्यपूर्ण आत्मविश्वास के साथ खुली हवा में उन्मुक्त कूद पड़ता है ।

मैंने अपने जूते और जुराबे उतार ली और अपने पैरों और हाथों को चमकदार चट्टान पर कसकर जमाते हुए, झपटते पानी के साथ-साथ मैंने नीचे की ओर सतर्कतापूर्वक अपना रास्ता बनाया । गरजती और दहाड़ती हुई धारा मेरे सिर के पास से गुजर रही थी और बड़ी ही उत्तेजना दे रही थी । मैंने आशा की थी कि यह ढालू चट्टानी परिधान घाटी की लम्बमान दीवार के साथ समाप्त हो जाएगा और इसके कदमों में से जहाँ ढलान कम खड़ा है, मैं काफी आगे की ओर झुककर ऊपर से नीचे तली तक के झरने के रूपों और आचरणों को देख सकूँगा । लेकिन मैंने देखा कि एक और छोटा-सा उभार वहाँ है जिसके ऊपर से मैं झुक नहीं सकता था । मानव-कदमों के लिए वह बहुत ही अधिक खड़ा प्रतीत हो रहा था । बहुत बारीकी से जाँच करके मैंने पाया कि ठीक कगार पर तीन इंच चौड़ी एक सकरी

पट्टी थी जो बस इतनी चौड़ी थी कि पैर उसपर टिक सकें। लेकिन इतने खड़े उभार पर चढ़कर उस तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं दीखता था। अन्त मे सतह की बहुत ध्यानपूर्वक छानबीन करने के बाद पानी की चोट की पहुँच से कुछ ही दूर इधर चट्टान की एक पर्त की एक अनियमित पट्टी मैने देखी। यदि मैं उस खुरदरी पट्टी की कगरी पर किसी तरह उतर सकू तो शायद वहाँ मेरी उगलिया थोड़ा-बहुत ठहर सकें। वस यही एक रास्ता था। लेकिन इसकी बराबर की ढलान खतरनाक रूप में चिकनी और खड़ी थी और नीचे, सिर के ऊपर और बराबर मे पानी की गरजती तेज बाढ़ दिल दहलानेवाली थी। इसलिए मैने तय किया कि आगे न बढ़ा जाए। लेकिन वैसा मैने किया नहीं। पास ही चट्टान की दरारो मे आर्टिमीसिया के गुच्छे उगे हुए थे। मैने उनके कड़वे पत्तो से अपना मुँह भर लिया, यह सोचकर कि शायद इससे सिर की चकराहट रुक सके। तब साधारण परिस्थितियो मे अज्ञात सतर्कता के साथ उस लम्बी-सी कगर पर मैं सुरक्षित उतर गया। उसपर मैने अपने पैर अच्छी तरह जमा लिए। तब समतल दिशा मे बीस या तीस फुट आगे सरका, यहाँ तक कि मैं छलांग लगाती धारा से सट गया। धारा मुझ तक नीचे उतरकर अब एकदम सफेद बन गई थी। यहाँ मैने नीचे बर्फीली, गुनगुनाती, पुच्छल तारे जैसी पतली धाराओ की भीड़ के रूप मे अलग-अलग होकर बिखरते विशाल भरने का पूरा दृश्य देखा।

उस सकरी पट्टी पर चिपके समय खतरे का प्रकट भान मुझे नहीं था। आकार, आवाज और गति के रूप मे और वह भी इतने अधिक पास उस भरने की भीषण विशालता ने मेरे डर की अनुभूति का गला घोट डाला था। ऐसे स्थलो मे शरीर स्वतः ही सुरक्षा का गहरा ध्यान रखता है। मैं कठिनाई से ही बता सकता हू कि मैं कितनी देर तक वहाँ नीचे रहा और कैसे मैं लौटा। कुछ भी हो वह समय शानदार रूप मे बीता। लगभग अधेरा होने तक मैं तम्बू पर लौट आया। एक विजयोत्लास से मैं भरा था पर जल्द ही एक सुस्त थकान मुझपर हावी हो गई। (१६ जुलाई) भरने के शीर्ष

पर मेरा यह मनोरजन अच्छी नीद के लिए बहुत ही भारी पड़ा। घबराहट और कपकपी से पूरी रात मैं चौक-चौक पड़ता रहा। अधनीद में मुझे लगता रहा कि जैसे, जिस पहाड़ पर हमारा तम्बू था, उसकी चूले हिल गई है और वह योसेमाइट घाटी में गिर रहा है। मैं स्वयं को जगाता और गहरी नीद के लिए नये सिरे से एक व्यर्थ आरम्भ करता। मेरी नसों पर बहुत भारी दबाव पड़ा और बार-बार मुझे यह सपना दीखता रहा कि जैसे मैं जल और चट्टानों की एक शानदार हिमानी के ऊपर हवा में बहता जा रहा हूँ। एक बार तो मैं सीधा खड़ा हो गया और बोल उठा, “इस बार सब कुछ वास्तविक है। सभीको मरना पड़ेगा और एक पर्वतारोही को इससे अधिक शानदार मौत और कहा मिल सकती है !”

दिन निकलने के जल्द बाद ही मैं डेरे से निकल पड़ा और पूरे दिन पूर्व की ओर भटकता फिरा। इण्डियन बेसिन (घाटी) की ऊँचाई को मैंने पार किया और दरे की चोटी से नार्थडोम को लावकर डोम अथवा पार्कुपाइन क्रीक की घाटी में बढता गया। यहाँ जंगल में छुपे, घास के कितने ही बढिया मैदान हैं जो लिली के फूलों से भरे हैं। लगभग आठ हजार फुट की यह ऊँचाई इन फूलों के लिए सबसे अधिक उत्तम प्रतीत होती है। और मैंने ऐसे नमूने देखे जो मेरे सिर से एक या दो फुट ऊँचे थे। मैंने ऊपरी पहाड़ों और ससार में सबसे शानदार कही जानेवाली चट्टान, विशाल साउथडोम का अधिक उत्कृष्ट दृश्य देखा। वह चट्टान विशालतम हो सकती है क्योंकि उसके आयाम और उसका शिल्प बहुत ही श्रेष्ठ हैं। यह एक अद्भुत रूप में प्रभावशाली स्मारक है। इसके कटाव अत्यन्त नफीस हैं। यद्यपि आकार में यह बृहद् है, फिर भी एक उत्कृष्टतम कलाकृति की तरह यह बनी-सवरी है और सजीव लगती है।

१७ जुलाई—इण्डियन केनयन के रास्ते बहकर योसेमाइट में गिरनेवाले एक छोटे-से सोते के उद्गम पर स्थित सफेद फलों के एक बढिया कुज में हमने नया डेरा बनाया। यहाँ हम कुछ सप्ताह रहना चाहते हैं। यह एक बढिया स्थल है, जहाँ से विशाल घाटी में उसकी नीची तक यात्राएं की जा सकती

है। रेखाचित्र बनाने, पौधों को सरक्षित रखने और यहां के शानदार मान-चित्र तैयार करने तथा हमारे प्रसन्न साथी मर्त्य पडोसियो, जगली जानवरो का अध्ययन करने मे दिन खूब बढिया बीतेगे। लेकिन दूरस्थित उन विस्तृत पहाड़ो के बीच मै कब घुस पाऊंगा और कब उनके साथ रह पाऊंगा?

दोपहर के आसपास एक सक्षिप्त पर जोरदार अन्धड और वर्षा ने हमपर पत्थराव-सा किया। उसकी भारी गर्जना पहाड़ो और दरों के बीच गूज उठी। पास के कुछ आघात, उद्विग्न लहरदार हवा मे चौका देने-वाली आतुरता के साथ टकराते और बज-बज उठते थे। और दूरस्थ चोटिया बादलों की झालरो और वर्षा की चादरो के बीच से शान के साथ चमक-चमक उठती थी। अब तूफान बीत चुका है और ताज़ी धुली हवा फूलो के बगीचो और कुजो की गन्धो से भरी है।

१८ जुलाई—दोपहर के लगभग फिर आंधी और वर्षा आई और तेज़ चौका देनेवाली गरज गूजी। धातु की सी, बजने, टकराने और झनझनाने जैसी आवाजें पैदा हुई और धीमे-धीमे, दबे, मन्द स्वर का रूप लेकर दूर पर फिसलने और फुसफुसाने लगी। कुछ मिनटो तक तो बारिश एक झरने की भारी धारा के रूप मे गिरी। तब ओले आए। कुछ ओले एक इंच व्यास के थे। सख्त बर्फीले और आकार मे अनियमित, वैसे ही जैसे विसकान्सिन में अक्सर दीख पड़ते हैं। कार्लो एक प्रबुद्ध आश्चर्य के साथ उन्हें देखता रहा और वे पेड़ो की कांपती शाखाओ के बीच से टपटपाते और टकराते गिरते रहे। बादलो का दृश्य बड़ा ही भव्य था। दोपहर बाद का समय शान्त, धूप से युक्त और साफ हो गया था। फरों और फूलो और धुधियाती जमीन की सुहानी ताज़गी और सुगंध से वह युक्त था।

१९ जुलाई—मैं दिन फूटने और सूर्य निकलने का दृश्य देखता रहा हू। पीली लाली से युक्त गुलाब और जामुनी आकाश धीमे-धीमे क्रमशः हल्का पीला और सफेद बन रहा है। चोटियो के बीच के दरों में से, योसे-माइट के गुम्बदों के ऊपर से सूर्य की किरणे आ रही है और उनके कगारो को गरमा रही हैं। नीचे बीच की धरती पर सफेद फर अपने नोकदार

सिरो पर उस चमक को ग्रहण कर रहे हैं और हमारे डेरेवाला कुज उस शानदार प्रकाश से भरपूर और स्पन्दित है। हर चीज सजग होकर जाग रही है और आनन्द से भर रही है। चिड़ियाएँ कुलमुलाने लगी हैं और अनगिनत कीड़े इकट्ठे हो गए हैं। हिरन चुपचाप सदाबहार बज्र वृक्षों में पत्तेदार स्थलों में जाकर छुप रहे हैं। ओस गायब हो रही है। फूलों ने अपनी पखुडियाँ फैला दी हैं। हर धड़कन जोर से धड़क रही है। हर जीवाणु आनन्दमय है। स्वयं चट्टानों तक जीवन से स्फुरित प्रतीत होती हैं। पूरा दृश्य उत्साह की चमक से चमत्कृत एक मानवीय चेहरे जैसा दीख पड़ रहा है और अन्तरिक्ष के पास से पिलकाया, नीला आकाश एक विशाल फूल की तरह सबके ऊपर शान्तिपूर्वक झुका है।

दोपहर के लगभग, सदा की तरह घुघराले मेघ-पुज जगलों के ऊपर उठने लगे और उनमें से गिरनेवाली तेज वर्षा, अब तक देखी बारिशों में सबसे अधिक प्रभावशाली है। चादी की सर्पिली बिजली के भाले साधारण से अधिक लम्बे हैं और गरज भव्य प्रभाव डालनेवाली, उत्कट, कड़क-दार और सघनरूप में सकेन्द्रित है और भीषण शक्ति के माध्यम से बात करती है। अतः साफ गूजती चोटों का स्थान गहरी धीमी आवाज़ें ले लेती हैं और ये भी क्रमशः धीमी पड़ती जाती हैं और दूर गूजते पहाड़ों की गहराइयों में सिमिट-सी जाती हैं जैसे कि अपने घरों में वापस लौट गई हों। तब एक के बाद एक छोटे कड़क और टकराहट के साथ तोड़ती हुई-सी जल्दी-जल्दी पड़ती हैं। अब वर्षा आती है। वह भी उतनी ही फालतू शान के साथ ऊँची और नीची भूमियों को एक बहते जल की चादर से ढक लेती है। चट्टानों में चटक और चमक ला देती हैं। दरारों में भर जाती हैं। सोतों को बाढ़ से उफना देती हैं। और गरज के उत्तर में उन्हें चीखने और चिल्लाने पर बाध्य करती हैं।

तूफान अब बीत चुका है। आकाश स्वच्छ है। गरज के साथ पड़ती अन्तिम बौछार चोटियों पर व्यय हो चुकी है। वर्षा की वे बूँदें अब कहाँ हैं? और चमकदार उस गहरे आवेग का क्या हो गया है? कुछ तो अभी

से भाप बनकर आकाश की ओर उड़ रहा है। अदृश्य दरवाजो मे को गोल कोशो मे पहुचकर पौधो मे समा गया है। कुछ बर्फ के रवो और कुछ चट्टान के रवो मे कैद हो गया है। कुछ छिद्रमय कूड़े-करकट के ढेरो मे रिस गया है जिससे छोटी-छोटी धारे बहती रह सके। कुछ नदियों मे मिलकर लम्बी यात्रा करके समुद्र की अधिक बड़ी बूदो के साथ मिलने चला गया है। आकार से आकार मे, सौन्दर्य से सौन्दर्य मे निरन्तर बदलता, कभी आराम न लेते प्रेमोत्साह की तरह तेज दौडता, तारो के साथ मिलकर सृष्टि का शाश्वत गीत गाता वह बढा जा रहा है।

२० जुलाई—बढिया शान्त सुबह। हवा रुकी हुई और साफ। मन्दतम समीर भी अनस्थिर। हर चीज चमकती हुई। गीले रवो वाली चट्टानें। ओस से भीगे-भीगे पौधे। हर चीज, ओस की सतरंगी बूदो और सूर्य की किरणो का अपना हिस्सा ऐसे प्राप्त कर रही है जैसेकि जीवित जन्तु अपना नाश्ता लेते है। ओस का सोमरस तारोभरे आकाश से नन्हे-नन्हे तारो की भीड़ की तरह ही गिरा आ रहा है। और ओस की बौछारो मे वर्तमान कण कितने अद्भुत रूप मे बढिया लगते है। एक बूद हजारों कणो से मिलकर बनती है। अधेरे मे वे ऐसे चुपचाप बढते है जैसेकि घास उगती है। इस विजन भूमि को फला-फूला रखने के लिए प्रकृति को कितने कष्ट उठाने पडते है—बर्फ की बौछारे, वर्षा की बौछारे, ओस की बौछारें, प्रकाश की धाराए, अदृश्य भाप की धाराए, बादल, हवाएं, हर तरह की ऋतुए, पौधे की पौधे पर, पशु की पशु पर प्रतिक्रियाए आदि। यह सब विचार से बहुत परे है। प्रकृति के तरीके कितने शानदार है ! कितनी गहराई से सौन्दर्य सौन्दर्य से मढा है। धरती बिल्लौरों से ढकी है, बिल्लौर काई और काई-नुमा घास से और नन्ही घासो और फूलों से ढके हैं। और ये सब अधिक बड़े पौधो से आवृत है जिनके पत्तों पर पत्ते चढे है, जो सदा रंग और आकार बदलते रहते हैं। इन सबके ऊपर फरो के चौडे पत्ते फैले है और इन सबके ऊपर बैलपलावर जैसा नीला गुम्बद फैला है और ऊपर तारों के ऊपर तारे बिखरे है।

दूर साउथ डोम खडा है। इसका मुकुट हमारे डेरे से बहुत ऊंचे पर है, यद्यपि इसकी नींव हमसे चार हजार फुट नीचे है। यह बहुत ही शानदार चट्टान है, लगता है यह विचारो से पूर्ण है, सजीव ज्योति से ढकी है। मृत पाषाण के कोई लक्षण इसमे नहीं है। यह एकदम आत्ममय है। न भारी दीखती है, न हल्की और एक देवता की तरह गम्भीरशक्ति में स्थिर है।

हमारा चरवाहा एक अजीब चरित्र का आदमी है और इम उजाड़ मे उसकी कोई सगति काँठनाई से ही बैठती है। लाल सूखे कचरे से भरी निकम्मी धूल-मिट्टी मे बनी एक खोखल में और उस लट्ठे के बराबर मे जो उस अहाते की दक्षिणी दीवार का एक हिस्सा बन गया है, वह अपना बिस्तर लगाता है। यहा वह अपने अद्भुत अक्षय बिस्तर पर लाल कम्बल मे लिपटकर लेटता है। इस प्रकार, न सिर्फ जर्जर लकड़ी की ही, बल्कि उस अहाते की धूल को भी वह सास के साथ ग्रहण करता है; जैसेकि दिन-भर तम्बाकू चबाने के बाद अब रात-भर तिक्त सुघनी के लिए कृतसकल्प हो। भेड़ों के पीछे जाते हुए अपनी पेटी पर एक ओर तो वह छ गोलियो-वाली पिस्तौल लटका लेता है और दूसरी ओर अपना खाना। सीधा कढाई से लिया गया गोश्त जिस पुराने कपड़े मे लपेटकर वह लाता है वह एक छन्ने का सा काम देता है और उसमे से चूती साफ चरबी और गाढा रस निकल-निकलकर उसके दाहिने चूतड और टाग पर एकत्र हो-होकर चूने के कणों की तरह जमता जाता है। तेलयुक्त वह जमाव बैठने, लोटने, लट्टो पर आराम करने के समय टाग पर टाग रखने आदि के कारण जल्द ही टूट जाता है और फलकर हमवार बनकर उसके पतले कपड़े मे समा जाता है। और इस प्रकार उसकी कमीज और पैट गफ और चमकदार बन जाते है। विशेषकर उसकी पैट तो चर्बी और राल के मिश्रण से ऐसी चिपचिपी बन गई है कि कीड की पत्तियां, छाल की पतली पर्त और रेशे, बाल, अबरक की तहे और बिल्लौर तथा ग्रेनाइट आदि के बारीक कण, पख, बीजों के छिलके, पतंगे, तितलियों के पंख, अनगिनत कीडो की टागे और सूड, छोटे गुबरैलो, भनगो और मच्छरों जैसे तो पूरे कीडे तक, फूल की पखुड़िया,

फूलों की धूल और उस प्रदेश के सभी पौधों, पशुओं और सभी धातुओं के अश उससे चिपक गए हैं और सुरक्षित रूप में उसमें गुथ गए हैं। इस प्रकार, यद्यपि वह एक प्रकृतिशास्त्री नहीं है, फिर भी हर चीज के आशिक नमूने उसके पास एकत्र हैं और वह अपने ज्ञान की अपेक्षा अधिक सम्पन्न बन गया है। उसके ये नमूने, हवा की स्वच्छता और जिनमें वे दब गए हैं उस राल की चेपदार पर्तों के कारण काफी ताजे रहते हैं। मनुष्य एक साक्षात् सूक्ष्म जगत् है, कम से कम हमारा यह चरवाहा तो है, अथवा उसकी पतलून है। ये कीमती वस्त्र कभी उतारे नहीं जाते। कोई नहीं जानता कि ये कितने पुराने हैं। इनकी मोटाई और इनके घने बुनाव से बस अनुमान ही लगाया जा सकता है। पहनने से पतले होने के बदले ये मोटे हो रहे हैं और अपने स्तर-विन्यास में इन्हें कोई मामूली भूगर्भशास्त्रीय महत्त्व प्राप्त नहीं है।

बिली भेड़ों को चराने के अतिरिक्त कसाई का काम भी करता है। मैं लोहे और टीन के बर्तनों को धोता हूँ और रोटी बनाता हूँ। जैसे ही ये छोटे-मोटे काम समाप्त होते हैं और सूर्य पर्वत-शिखरों से खासा ऊँचा उठ आता है, मैं रेवड़ से आगे निकल जाता हूँ और सभी लम्बे, अनश्वर दिनों के बीच उस उजाड़ में घूमने और आनन्द मनाने में मैं स्वतन्त्र रहता हूँ।

यहाँ कोई पीडा नहीं, सुस्त, खाली समय नहीं, अतीत का डर नहीं, भविष्य का भय नहीं। ये उत्कृष्ट पर्वत ईश्वरीय सौन्दर्य से ऐसे ठसाठस भरे हैं कि किसी तुच्छ व्यक्तिगत आशा तथा अनुभव को यहाँ स्थान नहीं है। इस शैम्पेन जैसे जल को पीना शुद्ध आनन्द है। ठीक वैसा ही है इस सजीव हवा में सास लेना। हाथ-पैरों की हर हरकत आनन्दपूर्ण है और जब पूरा शरीर इसके प्रति उन्मुक्त होता है तो सौन्दर्य को वह वैसे ही अनुभव करता लगता है, जैसे कि आग की लपटों अथवा धूप को वह अनुभव करता है। यह सौन्दर्य सिर्फ आँखों के जरिये ही नहीं बल्कि समान रूप से पूरी त्वचा के जरिये चमकदार गर्मी की तरह उसके अन्दर प्रवेश करता है और एक तीव्र आह्लादक आनन्द की अवर्णनीय चमक उसमें भर जाती है। तब व्यक्ति का

पूरा शरीर ऐसा एकरग हो जाता है जैसेकि बिल्लौर हो ।

योसेमाइट की भव्यता को समझने अथवा किसी रूप मे उसे स्पष्ट करने से अधिक उसे महसूस करना आसान है । चट्टानो, पेड़ो और सोतो के विस्तार ऐसी मृदुतापूर्वक एकतान है कि वे अधिकांशत ओझल हो गए है । ३००० फुट ऊंची खड़ी चट्टानो पर ऊंचे पेड़ ऐसे सटकर उगे है जैसेकि किसी निचली पहाड़ी पर घास । इन खड़ी चट्टानो के पैरो मे एक मील चौड़ी अथवा सात या आठ मील लम्बी एक घास की पट्टी है । लगता है जैसे कोई किसान एक दिन के भीतर ही उसे काटनेवाला है । ५०० से २००० फुट तक की ऊचाई से गिरनेवाले झरने, जिनपर से वे गिरते है, उन विशाल चट्टानो के ऐसे अधीन है कि वे धुए के गुब्बारो और धीमे बहते बादलो जैसे लगते है । हा, उनका शोर घाटी मे भर रहा है और चट्टानो को कपा रहा है । पूर्वी आकाश के साथ-साथ स्थित पहाड जिनके सामने गुम्बद खडे है; जिनके बीच बहनेवाले फूले-फूले, लहज सोतो के सिलसिले, और भी और फूलते जाते है, जिनके खोखलो मे गहरे घने जंगल उगे है जो भारी-भरकम पर उल्लासपूर्ण आकार और सौन्दर्य के कारण गम्भीर लगते है—ये पहाड भी योसेमाइट मन्दिर की भव्यता को आवृत करने का ही और अधिक उपक्रम करते हैं और विशाल एकरग दृश्य के एक दबे हुए, अधीन रूप मे ही उन्हें प्रकट करते है । इस प्रकार किसी भी एक विशेषता की प्रशंसा करने का हर प्रयत्न अन्य सभीके हावी होते प्रभाव के द्वारा पराजित कर दिया जाता है । और, जैसेकि यह सब काफी न हो, लीजिए आकाश मे एक और पहाड उठ रहा है, जिसकी रूपरेखा उतनी ही अनगढ और ठोस दीख पडती है जितनी कि नीचेवाले की । वही बर्फीली चोटिया और गुम्बद और छायादार योसेमाइट घाटिया जैसेकि यह बर्फीली सियरा का एक दूसरा संस्करण हो, एक नई सृष्टि हो जिसके आगे-आगे आधिया और बिजलिया चलती है । अपनी सौन्दर्य-सिक्त कोमलता के बीच-बीच प्रकृति कितनी भीषण और निष्ठापूर्वक जंगली होती है । एक ओर लिली के फूलों का अनुरजन, उन्हें पानी देना और माली की तरह प्यार-भरे हाथ से एक फूल से दूसरे फूल तक जाकर

उन्हे प्यार करना और दूसरी ओर बिजली और वर्षा से पूर्ण चट्टानी पहाड़ो और बादली पहाड़ो का निर्माण। हम प्रसन्नतापूर्वक दौडकर सिर पर लटकी एक चट्टान के पीछे आश्रय ले लेते हैं और सान्त्वना-सी देती उस फर्न घास और काई का निरीक्षण करते हैं जो दरारो और कटावो के बीच सुन्दर प्रेम-चिह्नो के रूप में उगी है। डेजी और इवेसिया जो प्रकाश के इतने छोटे जगली शिशुओ को कि वे डरना नहीं जानते, अपने में छुपाए हैं। व्यक्ति का हृदय इनकी ओर दौडता है। और तूफान के स्वर मन्द पड जाते हैं। अब सूर्य फूट आता है और सुगन्धित भाप उठने लगती है। चिडियाए कुजों के किनारो पर गाती हुई आ बैठी हैं। पश्चिम में सुनहरी और गुलाबी लपटे उठ रही हैं जो सूर्यास्त के उत्सव के लिए तैयार हैं। और अपनी टिप्पणियो और तस्वीरो के साथ, जिनमे से सर्वोत्तम मेरे दिमाग पर सपनो के रूप में चित्रित है, मैं डेरे पर लौट आता हू।

२१ जुलाई—गुम्बद का चित्र बना रहा हू। वर्षा नहीं है। दोपहर के समय बादल लगभग चौथाई आकाश को भर देते हैं और सोतो के उद्गम-स्थल, सफेद पहाड़ो पर असरदार मेल के साथ अपनी छायाए डालते हैं। गर्म समय में बगीचो को वे एक शान्तिप्रद चादर उढा देते हैं।

मैंने एक साधारण मक्खी और फतिगा और एक भूरा भालू देखा। मक्खी और फतिगा गुम्बद की चोटी पर मुझसे खुशी-खुशी मिलने आए। और भालू गुम्बद और डेरे के बीच स्थित एक छोटे-से घास के मैदान में फूलो के बीच सतर्कतापूर्वक ऐसे खडा था जैसेकि वह लाभप्रद रूप में देखे जाने के लिए राजी हो। उससे मैं वही मिलने गया। इस सुबह मैं डेरे से चलकर आध मील से अधिक नहीं गया था कि मुझसे कुछ गज्र आगे चलता कालों अचानक ही सतर्क होकर एकदम स्थिर हो गया। पूछ और कान नीचे झुक गए और उसकी जानकार नाक आगे की ओर सध गई। लगता था जैसेकि वह कह रहा हो, “अहा, क्या है यह ? मैं समझता हू भालू है यह !” तब कुछ कदम होशियारी से उसने बढ़ाए और एक शिकारी बिल्ली की तरह अपने पैर धीमे से जमा दिए और मिली गन्ध के

बारे में वह मानो हवा से तब तक पूछताछ करता रहा, जब तक सभी शक दूर नहीं हो गए। तब वह मेरे पास लौटा। मेरे चेहरे को उसने देखा और अपनी बोलती आखो से मुझे बताया कि पास ही एक भालू है। और तब एक अनुभवी शिकारी की तरह धीमे से देखभालकर जरा-सा भी शोर न करते हुए वह मुझे आगे की ओर ले चला। बार बार वह पीछे मुड़कर देखता था जैसे कि फुसफुसा रहा हो, “हा यह भालू है। आओ मैं तुम्हे दिखाए देता हूँ।” शीघ्र ही हम वहा आ गए जहा फरो के गुलाबी गुच्छो के बीच से सूर्य की किरणे बही आ रही थी। इससे पता लगता था कि हम एक खुली जगह के निकट है। और यहा कार्लो मेरे पीछे आ गया। उसे निश्चय था कि भालू बहुत ही निकट है इसलिए घास के एक संकरे मैदान के तट पर स्थित रोडो और पन्थरो के एक छोटे टीले पर मैं सरक आया। मुझे पूरा विश्वास था कि भालू इसी घास के मैदान में है। उस मजबूत पहाड़ी जन्तु को बिना चौकाए, अच्छी तरह देख लेने के लिए मैं उत्सुक था। इसी-लिए, बिना शोर किए मैं वहा खड़े पेडों मे एक सबसे बड़े पेड के पीछे आ गया। झाककर मैंने उसकी भारी पुस्तो को देखा। मेरे सिर का बस एक अंश ही बाहर निकला था और वही थोड़ी-सी दूर पर वह पड़ोसी ब्रियून (भालू) खड़ा था। उसका पृष्ठभाग लम्बी घास और फूलो से ढका था और उसके पैर एक फर के तने पर जमे थे, जो सामने घास पर आ गिरा था। उसने अपना सिर इतना ऊचा उठा रखा था कि वह सीधा खड़ा-सा लगता था। उसने अभी तक मुझे नहीं देखा था। पर वह इतने ध्यान से देख और सुन रहा था जैसे कि किसी भी तरह हमारी पहुच का उसे पता हो। मैंने उसके हाव-भाव को देखा और उसके बारे मे कुछ सीख सकने का जो मौका मुझे मिला था उसका अधिकतम लाभ उठाने की कोशिश मैंने की। पर मैं डर रहा था कि कही वह मुझे देख न ले और भाग न जाए। मुझे बताया गया था कि इस प्रकार के सिनामन नामक भूरे भालू अपने दुष्ट भाई आदमी से डरकर सदा ही भाग जाते हैं; और जब तक घायल न हो जाए या बच्चो की रक्षा न करनी हो, वे लडते नहीं।

धूपयुक्त उस जंगली घास के बगीचे में सतर्क खड़ा वह एक जोरदार चित्र प्रस्तुत कर रहा था। अपना काम वह कैसी खूबी से अदा कर रहा था। आकार, रंग और भबरे बालों के रूप में पेड़ों के तनों और घनी बनस्पति के साथ वह ऐसा एकरूप दीख रहा था जैसे कि वह उस दृश्य के किसी भी हिस्से जितना ही प्राकृतिक हो। मैंने फुर्सत से मुआयना किया। उत्कठापूर्वक आगे निकली नुकीली थूथनी, चौड़ी छाती पर उगे भबरे बाल, लगभग बालों में धसे सख्त खड़े कान और अपने सिर को हिलाने का उसका धीमा बोझीला ढंग—यह सब मैंने देखा। मैंने सोचा कि मुझे इसका दौड़ने का अन्दाज भी देखना चाहिए। इसलिए उसे डराने के लिए चीखता और अपने टोप को हिलाता हुआ मैं अचानक उसकी ओर झपटा। मुझे आशा थी कि वह तेजी से भाग निकलेगा। लेकिन जब वह न तो भागा और न उसने भागने का सकेत ही दिया तब मैं घबरा उठा। इसके विपरीत लड़ने के लिए और आत्म-रक्षा के लिए वह जमकर खड़ा हो गया। उसने अपना सिर झुका लिया। उसे सामने की ओर खोस दिया और मेरी ओर तीखे और भयावह रूप में देखा। अब अचानक मैं डर उठा कि कहीं यह भाग उठने का काम मुझे ही न करना पड़े। पर मैं भागने से डरता था और इसलिए, भालू की तरह ही मैं भी अड़ा रहा। गम्भीर खामोशी के साथ एक-दूसरे को घूरते हुए कुछ गज्र अथवा लगभग उतनी ही दूरी पर हम जमे रहे। मैं उत्कट आशा करता रहा कि जंगली पशुओं पर मानवीय आखों का प्रभाव वैसा ही सिद्ध होगा जैसा कि कहा जाता है। मैं नहीं जानता कि भयानक रूप में लम्बी हमारी यह मुठभेड़ कितनी देर तक चली। पर अन्ततः धीमे-धीमे बीते भरपूर समय के बाद अपने भारी विशाल पंजों को उसने उस लट्ठे पर से उतारा और एक शानदार अन्दाज के साथ मुड़कर, फुर्सत के साथ घास के मैदान पर बढ़ चला। बार-बार रुककर, अपने कंधे पर से मुड़कर वह पीछे देख लेता कि कहीं मैं उसका पीछा तो नहीं कर रहा हूँ। और तब वह फिर आगे बढ़ जाता। प्रकट था कि न तो वह मुझसे डर रहा है, और न ही मेरा अधिक विश्वास कर रहा है। वह शायद लगभग ५०० पौंड का

होगा। अनियन्त्रित जगलीपन का एक अनगढ़ गट्ठर वह था; एक प्रसन्न जीव जिसका भाग्य उसे आनन्दमय स्थानों में ले आया था। फूलोभरा यह घास का भूखण्ड, जिसमें एक बढिया तस्वीर के रूप में मढे जैसा मैंने उसे देखा, मेरे आज तक देखे सभी बगीचों में सर्वोत्तम है। प्रकृति के कीमती पौधों का एक खजाना ही उसे समझो। लम्बी लिली भालू की पीठ पर अपनी घटियों को झुला रही थी। और चगोरी, पुष्पक्षुप, भेकपाद और गुलबहार उसकी पुस्तों के साथ रगड़ रहे थे। भालूओं के बदले कहना चाहिए, यह स्थान स्वर्गदूतों के लिए ही उपयुक्त है।

इन विशाल दरों में ब्रियून का एकच्छत्र राज्य है। वह प्रसन्न है और जब तक हज़ार किस्म के खानों में से एक भी सुरक्षित है, वह भूखा नहीं मर सकता। सभी मौसमों में उसका भोजन सुरक्षित है। और भण्डार-घर के तख्तों की तरह पहाड़ों पर वह सजा है। ऊपर या नीचे चढ़ता-उतरता, एक से दूसरे पर वह जाता है और विभिन्न मौसमों में हर एक को बारी-बारी से जाचता है और भोजनों का आनन्द लेता है। लगता है जैसे कि हज़ारों मील चलकर उत्तर या दक्षिण के अनेकों देशों में वह जाता हो और वहाँ की अलग-अलग उपजों का रस लेता हो। मैं अपने इन झबरे भाइयों को अधिक अच्छी तरह जानना चाहता था। यद्यपि इस विशेष योसेमाइट के भालू अपने पड़ोसी के पीछे-पीछे इस सुबह मैं घूमता-फिरता दूर तक निकल गया। न चाहते हुए भी मैं डान की रायफल लाने के लिए वापस डेरे पर गया, जिससे जरूरत पड़े तो भेड़ों की रक्षा के लिए उसे गोली से उड़ा सकूँ। सौभाग्यवश मैं उसे पा नहीं सका और हाफमैन पहाड़ की ओर एक या दो मील तक उसका पीछा करने के बाद मैंने उसे नमस्कार किया और प्रसन्नता-पूर्वक योसेमाइट गुम्बद पर अपने काम पर लौट गया।

२२ जुलाई—काली पूछ वाले हिरनों का एक नमूना इस सुबह डेरे के पास से निकल गया। वह चौड़े फँले हुए सींगोंवाला एक हिरन था, जिसमें प्रशंसनीय शक्ति और गौरव था। उजाड़ प्रदेशों के पशुओं का सौन्दर्य, शक्ति और उनके आकर्षक हाव-भाव बड़े ही अद्भुत होते हैं। प्रकृति ही

इनकी देखभाल करती है। सभी जगली जन्तुओं की तरह हिरन भी पौधे जैसे स्वच्छ है। सतर्क हो या आराम की स्थिति में, उनके हाव-भावों और रूखों का सौन्दर्य, उनकी चपल उल्लासपूर्ण शक्ति की अपेक्षा कहीं अधिक आश्चर्यजनक है। उनकी हर हरकत और अदा शानदार है, आचरण और चेष्टा की एक कविता है। जितना ही मैं हिरन को देखता हूँ, पर्वतारोहियों के रूप में उनकी प्रशंसा कर उठता हूँ। वे अनगढ़ से अनगढ़ उजाड़ों की गहराइयों में भी अपनी स्थिर शक्ति के बल पर रास्ता बना लेते हैं। गिरे हुए पेड़ों और बड़े-बड़े पत्थरों के ढेरों और झाड़ियों की घनी पट्टियों के बीच से दर्रों और गरजते सोतों और बर्फ के मैदानों के पार वे चले जाते हैं और सदा ही अपने सौन्दर्य और साहस का प्रदर्शन करते हैं।

सदा की तरह दोपहर के आसपास भव्य श्वेत बादलों के पहाड़ और गुम्बद और अनन्त किस्मों के टीले और श्रेणियाँ बनती हैं जैसे कि प्रकृति इस प्रकार के काम से बहुत प्यार करती हो और अनन्त श्रम के साथ बार-बार और लगभग हर दिन उन्हें बनाती हो और उस सौन्दर्य को पैदा करती हो जो कभी रूखा नहीं पड़ता। बिजली की कुछ टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें, पाँच मिनट की बौछार, तब क्रमशः उसका हलका पड़ना और साफ हो जाना।

२३ जुलाई—दोपहर के बादलों का फिर आना और उस शक्ति और सौन्दर्य का प्रदर्शन करना जिसे देखने में व्यक्ति कभी थकता नहीं, जिसका चित्र बनाया नहीं जा सकता और जिसके बारे में बताया नहीं जा सकता। गरीब मर्त्य बादलों के बारे में क्या कह सकते हैं? जब तक उनके विशाल चमकते गुम्बदों और टीलों, छायादार खाड़ियों और दर्रों और परो जैसे नुकीले खड्डों का वर्णन किया जा रहा होता है तब तक वे गायब भी हो जाते हैं और कोई दृश्य अवशेष नहीं छोड़ते। कुछ भी हो, आकाश के ये उड़ते हुए पहाड़ उतने ही ठोस और विशिष्ट हैं जितने कि उनके नीचे के अधिक देर टिकनेवाले ग्रेनाइट के उभार।

२४ जुलाई—दोपहर के बादलों ने लगभग आधे आकाश पर छाकर भारी वर्षा की और ससार के एक स्वच्छन्दतम दृश्य को धोकर और साफ़

कर दिया। कितनी अच्छी तरह उसे धोया गया है! बर्फ से धुली पटरियो और टीलो, गुम्बदो और दरों और भाग से ढकी लहरो की तरह बर्फ से छपछपाई चोटियो की अपेक्षा समुद्र कठिनाई से ही कम धूलयुक्त है। बादलो की अन्तिम पतों के आकाश से धुल जाने के बाद जगल कितने ताजे और शान्त हो गए है। कुछ ही मिनट पहले हर पेड कितना उत्तेजित था! गरजते तूफान के सामने वह झुक रहा था, हिल रहा था, घूम रहा था और एक भव्य उत्साह के साथ अपनी शाखाओ को उछाल रहा था। लेकिन यद्यपि बाहरी कामो के लिए पेड़ अब चुप है, पर उनके गीत कभी रुकते नहीं। हर छुपा हुआ कोश सगीत और जीवन से स्पन्दित है। हर रेशा तारो की तरह झनझना रहा है और राल की घटियो और पत्तो से एक सुगन्ध निरन्तर उठ रही है।

२५ जुलाई—बादलो का एक और पहाड। गर्मी की दोपहर के सियरा के बादल, हमवार, निश्चित रूपरेखाओ और वक्रताओ के कारण हिमानियो से धुले गुम्बदो की तरह सुन्दर लगते है। ग्यारह के लगभग वे बनने शुरू होते है और इस ऊचे डेरे से इतने निकट और साफ प्रतीत होते है कि इच्छा हो उठती है कि उनपर चढ़ जाया जाए और उन सोतो की खोज की जाए जो उन धुधले फव्वारो से भारी झरनो की तरह गिरते है। जिस वर्षा को वे जन्म देते है वह अक्सर बहुत भारी होती है। एक झरने की तरह ऐसी जोरदार वह गिरती है जैसेकि चट्टानी पहाडो से गिर रही हो। अपनी सभी यात्राओ मे कोई चीज इतनी अधिक सत्य, नवीन और रोचक मुझे नहीं मिली जितने कि आकाश के ये दोपहरी पहाड। इनके रंगो का बढिया मेल, इनका शानदार दृश्यमान उभार और सदा बदलते रहनेवाले नजारे बड़े ही आकर्षक है।

कारण यह ही नहीं है कि सिद्धान्त को व्यावहारिक अनुभव से लगातार सशुद्ध करते रहने के कारण निर्णय की गम्भीरता उनमें कही अधिक थी और इसी बात ने उनके लोकतन्त्रीय सिद्धान्त को मानवीय सीमाओं के भीतर बनाए रखा ।

मुख्य कारण यह है कि जेफर्सन की व्यवस्था, अपनी नींव में, अपनी पद्धति में और अपने उद्देश्य में पूरी तरह नैतिक है, उनकी आस्था का मूल उनके इन शब्दों में व्यक्त है, “मानव के अविच्छेद्य निहित अधिकारों के सिवाय कोई चीज अपरिवर्तनीय नहीं है ।” जिन शब्दों में उन्होंने स्वतन्त्र सस्थाओं के नैतिक आधार का आख्यान किया है, वे अब चलन में नहीं रहे हैं । हम स्वतन्त्रता की घोषणा के आरम्भिक शब्दों को दोहराते हैं, लेकिन वे ऐसी भाषा में रखे गए हैं कि जब तक हम उनका अनुवाद न कर ले, तत्काल हमारी जीभ पर आ जाने पर भी आज वे हमारे दिमाग में उतर नहीं पाते । उन्होंने लिखा था, “ये सत्य स्वयं-प्रकट है—कि सभी मनुष्य समान भिरजे गए हैं; कि स्रष्टा ने उन्हें निहित, अविच्छेद्य अधिकार बख्शे हैं, कि इनमें जीवन, स्वतन्त्रता और खुशी की खोज सम्मिलित है ।” आज हम किन्हीं भी स्वयं-प्रकट कहलानेवाले सत्यों से चौकते हैं । हम राजनीति को स्रष्टा की योजनाओं से जोड़ने का उपक्रम नहीं करते । उनकी अभिव्यक्ति-शैली सहज अधिकारों के जिस सिद्धान्त से अनुशासित है, ऐतिहासिक और दार्शनिक समालोचना ने उसे कमजोर बना दिया है ।

स्वयं को जेफर्सन की धारणा के सम्पर्क में बनाए रखने के लिए हमें ‘प्राकृतिक’ शब्द को ‘नैतिक’ में बदलना पड़ेगा । जेफर्सन अपने समय के आस्तिकवाद के प्रभाव में थे । उनके चिन्तन में, प्रकृति और एक उदार एवं विवेकी स्रष्टा की योजनाएं कभी पृथक् नहीं रही थी । लेकिन यदि हम इस ‘प्रकृति’ शब्द से इसके सभी विशिष्ट सन्दर्भों को अलग कर दें और इसकी जगह उन उपलब्धि-योग्य आदर्श उद्देश्यों और मूल्यों की बात करें जो यद्यपि आदर्श हैं पर जो बादलों में नहीं बसते और मानवता की आवश्यकताओं और मांगों में जो कुछ भी गहरा और अविनश्वर है, वही जिनकी

जड़ में है, तो जेफर्सन के मूलभूत विश्वास अपने सत्त्व में अपरिवर्तनीय ही सिद्ध होंगे।

जो कुछ मैंने कहा है यदि उसका सम्बन्ध कुछ विवरण के साथ मैं जेफर्सन के भाषणों और पत्रों (उन्होंने कोई सैद्धान्तिक अभिलेख नहीं लिखे हैं) से जोड़ने लगू तो मैं शायद एक पक्षपातपूर्ण काम ही कर रहा हूँगा। इसके लिए मुझे जब-तब शाब्दिक व्याख्याओं में उतरने पर विवश होना पड़ेगा, जिससे उन विचारों का श्रेय मैं उन्हें दे सकूँ जो उनके दिमाग में नहीं थे। कुछ भी हो, अमरीकी लोकतन्त्र के बारे में जो कुछ भी कहा जाना है, उसमें तीन मुद्दे ऐसे हैं जिन्हें मैं स्पष्टतः उनके नाम के साथ सम्बद्ध करूँगा। प्रथम तो ऊपर दिए उदाहरण में लोकतन्त्र के लक्ष्यों, मानव के अधिकारों—बहुवचन मानवों के नहीं—को अपरिवर्तनीय बताया गया है। जिनके द्वारा निहित नैतिक मागों को उपलब्ध किया जाए, उन रूप और तरीकों को अपरिवर्तनीय बने रहना नहीं है। जेफर्सन के घोषित अनुयायियों तक ने, जिस व्यक्ति के शिष्य वे स्वयं को बताते हैं, उसके शब्दों तक का अनुसरण अक्सर नहीं किया है, भावना की तो बात ही दूर है। क्योंकि उसने कहा था, “मैं जानता हूँ कि कानून और सस्थाओं को मानव-मस्तिष्क की प्रगति के हाथ में हाथ डालकर बढना चाहिए। जैसे-जैसे नई खाँजे की जाएं, नये सत्य प्रकट हों, और परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ-साथ तरीके और मन्तव्य बदलें, सस्थाओं को भी बदलना चाहिए और उन्हें भी समय के साथ कदम मिलाने चाहिए। हम किसी व्यक्ति को वही कोट कैसे पहना सकते हैं, जो उसने तब पहना था तब वह लडका था। हम एक सभ्य समाज को उसके बर्बर पूर्वजों के शासन में कैसे हमेशा के लिए रख सकते हैं !”

अन्तिम वाक्य के कारण उनके मन्तव्य के यह अर्थ लगाए जा सकते हैं कि वे पहले की सस्थाओं के विरुद्ध सरकार में विशिष्ट परिवर्तन लाने का मत पुष्ट कर रहे हैं। लेकिन उन्होंने आगे कहा है, “हर पीढ़ी को अधिकार है कि वह अपने लिए शासन का वह रूप चुन ले जो उसके विश्वास के

अनुसार उसकी निजी प्रसन्नता को सबसे अधिक बढ़ा सकता है।” इसीलिए उन्होंने यह भी कहा है कि “यह धारणा कि राष्ट्र के इस्तेमाल के लिए निर्मित सस्थाओं को उनके उद्देश्यों की सिद्धि की जवाबदेही तक के लिए भी छुआ अथवा सुधारा नहीं जा सकता, एक राजाशाही की खराबियों के खिलाफ एक हितकर माध्यम भले ही हो, स्वयं राष्ट्र के विरुद्ध तो यह एक अत्यन्त बेहूदी धारणा ही है।” “एक पीढी को वे सभी अधिकार और शक्तियाँ प्राप्त हैं जो कभी उनके पूर्वजों की थी और अपनी सुविधा के अनुसार कानूनों और सस्थाओं को वह बदल सकती हैं।” बफन^१ का आधार लेकर कुछ गणनाएँ भी उन्होंने की थी, जो आश्वासक से अधिक पटु ही ज्यादा थी और एक पीढी की स्वाभाविक जीवनावधि को उन्होंने १८ वर्ष और ८ महीने निश्चित किया था। इस प्रकार उन्होंने उस आवृत्ति-क्रम की ओर सकेत किया था जिसके अनुसार ‘कानूनों और सस्थाओं’ को ‘नई खोजों, नये सत्यों, तरीकों और मन्तव्यों में आए परिवर्तनों के अनुकूल अदल-बदल लेना उचित समझा जाए। सस्कृति शब्द का प्रयोग उन्होंने नहीं किया है। इसके प्रयोग से उनका वक्तव्य कमजोर पड़ जाता। लेकिन जेफर्सन के घोषित अनुयायी मात्र ही उनकी शिक्षाओं पर चलने में विफल नहीं रहे हैं, हम सभी के साथ यह बात उतनी दूर तक सच है जितनी दूर तक कि हमने सस्थापित क्रिया-विधियों में अनुचित आश्रय लेना तय किया है। जेफर्सन के लोकतन्त्रीय दृष्टिकोण का सबसे खुल्लमखुल्ला भग यथावत् वर्तमान सविधान की जड़ पूजा और इस प्रवृत्ति के प्रयासपूर्वक पनपाए जाने के रूप में किया गया है। यह बात इस उदाहरण से भी बहुत आगे तक जाती है। लोकतन्त्र में आस्था रखनेवालों के रूप में हमारा न सिर्फ यह अधिकार ही है बल्कि कर्तव्य भी है कि हम दृष्टान्ततः मताधिकार की वर्तमान कार्य-विधियों पर प्रश्न-चिह्न लगाएँ और यह पूछें कि क्या कोई कार्यकारी संघटन ऐसा है जो जनमत को रूप देने और उसे प्रकट करने के

काम को वर्तमान तरीकोसे कही अधिक अच्छी तरह कर सके। यह कहना प्रसंग से बाहर न होगा कि बीसियो अश ऐसे उद्धृत किए जा सकते हैं जिन-मे जेफर्सन ने अमरीकी सरकार को एक प्रयोग बताया है।

जिस दूसरे विषय पर मैं कुछ कहूंगा, वह एक ऐसे मुद्दे से घनिष्ठ रूप मे सम्बद्ध है जो विवादास्पद और पक्ष-भागी बन गया है। वह है, राज्यो के अधिकारो के मुकाबले सघीय शक्ति का प्रश्न। इससे कोई मतलब नहीं कि इस मुद्दे पर जेफर्सन की क्या स्थापना थी, न ही इससे है कि सरकार द्वारा स्वतन्त्रता के अपहरण के प्रति वे सामान्यतः आशंकित थे। उनके लिए यह बात अनिवार्य भी थी क्योंकि ब्रिटिश आधिपत्य के विरुद्ध विद्रोह का यही तो कारण था और हैमिल्टनवाद^१ के खिलाफ संघर्ष का भी यही आधार था। लेकिन जो भी व्यक्ति जेफर्सन के सिद्धान्त के इस विशिष्ट पक्ष पर रुक जाता है, वह सर्वाधिक महत्त्व के एक गर्भित सिद्धान्त को छोड़ जाता है। राज्यो की कार्यवाही को वे वाशिंगटन की आत्यन्तिक शक्ति के विरुद्ध एक अवरोध बनाने के पक्ष मे थे। क्रियात्मक रूप मे, जबकि इस बारे मे उनकी चिन्ता एकदम प्रत्यक्ष थी, अपने सैद्धान्तिक लेखो मे प्रमुख महत्त्व उन्होंने बहुत कुछ न्यू इंग्लैंड की कस्बा-समिति की योजना जैसी स्थानीय स्वाशासन इकाइयो को ही दिया था। छोटी इकाइयो के आधार पर—इतनी काफी छोटी कि उनके सदस्य एक-दूसरे से सीधा सम्पर्क बनाए रख सकें और सभी सामाजिक मामलो की देखभाल कर सकें—सामान्य राजनीतिक संघटन की उनकी योजना पर कभी भी अमल नहीं किया गया। तात्कालिक क्रियात्मक समस्याओ के दबाव मे उसने कभी भी अधिक ध्यान आकर्षित नहीं किया।

लेकिन इस योजना के महत्त्व को अधिक जतलाए बिना लोकतन्त्र की गम्भीरतम वर्तमान समस्याओ मे से एक का संकेत इसमें हमें मिल जाता है। मैं पहले बता चुका हू कि कैसे व्यक्ति आजकल स्वयं को उन अपार

१. एलेग्जेंडर हैमिल्टन (१७५७-१८०४) की विचार-धारा।

शक्तियों की जकड़ में जकड़ा पाते हैं जिनके प्रभावों और परिणामों पर असर डालने की कोई ताकत वे नहीं रखते। स्थिति मुहं दर मुहं सम्पर्कों की ओर जोरदार ध्यान देने की माग करती है। इनसे उत्पन्न पारस्परिक क्रिया-प्रतिक्रियाएँ वर्तमान ताकतों की बाढ़ के अव्यक्तिक आतंक पर यदि काबू नहीं पा सकेगी तो उसे छितरा अवश्य सकती है। ससर्ग के अर्थ में समाज और समुदाय के बीच एक अन्तर है। विद्युदणु, परमाणु और अणु एक-दूसरे के ससर्ग में रहते हैं। पूरी प्रकृति में कहीं कोई भी चीज़ अपना पृथक् अस्तित्व नहीं रखती। एक समुदाय के अस्तित्व के लिए प्राकृतिक ससर्ग एक शर्त है, लेकिन समुदाय परस्पर सम्प्रेषण का काम और ले लेते हैं जिसमें भावनाओं और विचारों में भागीदार बना जाता है और मिल-जुलकर कितने ही काम किए जाते हैं। आर्थिक शक्तियों ने ससर्गात्मक कामों के दायरे को बहुत ज्यादा बढ़ा दिया है। लेकिन ऐसा उन्होंने साम्प्रदायिक वर्ग-हितों और वर्गीय हलचलों में निहित घनिष्ठता और ऋजुता की कीमत पर ही किया है। 'सम्मिलित' होने का अमरीकी स्वभाव समस्या की वास्तविकता की आशंसा ही है, पर उसके समाधान की दिशा में वह बहुत दूर तक नहीं गया है। हगामेबाज की ताकत, विशेषकर समग्र-वाद की दिशा में उसकी शक्ति खासकर इस कारण है कि वह सीधी एकता और साम्प्रदायिक एकजुटता की एक बनावटी अनुभूति पैदा कर देने की सामर्थ्य रखता है और वह भी सिर्फ एक सामान्य असहिष्णुता और घृणा के भाव उत्पन्न करके।

मैं कुछ वर्ष पहले लिखे गए शब्दों को उद्धृत करता हूँ, "जिन दोषों को बिना समालोचना किए और बिना सोचे-विचारे उद्योगवाद और लोकतन्त्र के माथे मढ़ा जाता है, अधिक बुद्धिमानी से काम लिया जाए तो उनके लिए स्थानीय समुदायों के विस्थापित और विचलित हो जाने को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। ठोस और व्यापक स्नेह-सम्बन्ध एक ऐसे ससर्ग की घनिष्ठता में से ही पैदा हो सकते हैं जिसकी सीमाओं को आवश्यक रूप में सीमित रखा गया है। कम सामुदायिक सस्थाओं की यथार्थता को वापस

लाना और उनके सदस्यों में स्थानीय सामुदायिक जीवन की अनुभूति भरना और उससे उन्हें सराबोर करना क्या सम्भव है ? लोकतन्त्र को घर से आरम्भ करना चाहिए और उसका घर है पड़ोसीपन से भरा समुदाय।”^१ दूरी के समाप्त हो जाने और सासारिक आयामों के फैल जाने के कारण ससर्गक्षेत्र का भारी विस्तार हो गया है जिससे स्पष्ट हो जाता है कि राजनीतिक और अराजनीतिक सामाजिक माध्यमों को स्थान-विशेष तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता। लेकिन सामुदायिक समागम की सीधे सम्पर्कों से रहित विस्तारपरक हलचलों एवं गहन हलचलों के बीच सामाज्यपूर्ण मेल की समस्या लोकतन्त्र के लिए महत्वपूर्ण है। इसमें स्वशासन की व्यावहारिक पद्धतियों में शागिर्दों से भी कहीं अधिक कुछ सन्निहित है। यह महत्वपूर्ण है और जेफर्सन के दिमाग में भी यही था। सच्चार और सहयोग के स्थानीय माध्यमों के विकास की बात इसमें शामिल है जिससे स्थायी अनुरक्त ससर्ग स्थापित किए जा सकें और वर्तमान संस्कृति की केन्द्रापसारी शक्तियों के विरुद्ध विद्रोह किया जा सके। साथ ही ये, बड़ी, अदृश्य और अनिश्चित जनता की मांगों का एक प्रकार का भद्र उत्तर भी हो। क्रियाशीलता पर आधारित वर्ग सम्भवतः बड़ी सीमा तक भौतिक निकटता पर आधारित वर्गों का स्थान लेंगे। परिवार में दोनों तत्त्वों का समुच्चय है।

तीसरा मुद्दा जिसका मैं प्रकट उल्लेख करूंगा, यह है कि जेफर्सन और उसके लोकतन्त्र ने सम्पत्ति के बारे में क्या विचार रखे हैं। यह समझना बेहूदा होगा कि उनके व्यक्तिगत विचार ‘क्रान्तिकारी’ थे, सिवाय इसके कि सम्पत्ति के सकेन्द्रण के प्रति उन्होंने भय प्रकट किया है और किसी भी दिशा में अतिवादी बने बिना धन के सामान्य बटवारे की उचित इच्छा उन्होंने प्रकट की है। पर कभी-कभी यह बताया जाता है कि उनकी ‘खुशी की खोज’ यह उक्ति आर्थिक सक्रियता के लिए है। और जीवन, स्वतंत्रता और सम्पत्ति ऐसे अधिकार हैं जिन्हें, उनके विचारानुसार, सगठित समाज को बनाए

रखना चाहिए। लेकिन ठीक यही वह जगह है जहा वे लॉके से पूगी तरह टूट गए हैं। सम्पत्ति के सम्बन्ध में, खासकर भूमि-सम्पत्ति के बारे में उन्होंने अपने निर्विकल्प वक्तव्य दिए हैं और कहा है कि कोई भी पीढ़ी आगे आने-वालों को बाधने में अयोग्य है। जेफर्सन की मान्यता थी कि सम्पत्ति के अधिकार एक सामाजिक समझौते से उपजे हैं, निहित, व्यक्तिगत नैतिक मागों से नहीं। उन्हें पूरा करना सरकार की नैतिक बाध्यता है।

खुशी की खोज करने का अधिकार जेफर्सन की दृष्टि में इस माग से कम कुछ नहीं था कि हर मानव को अपनी निजी जीविका चुनने और अन्य मानवों की उच्छृंखल इच्छा द्वारा आरोपित अवरोधों और बन्धनों से मुक्त अपने निजी चुनाव और निर्णय के अनुसार चलने का हक है। ये अन्य मानव भले ही सरकारी अफसर ही क्यों न हों, जिनसे कि जेफर्सन खास तौर पर भयभीत थे अथवा ये वे व्यक्ति हो सकते हैं जिनकी मुट्ठी में पूजी है और लाभदायक कामों में लगने के अवसरों पर जिनका नियन्त्रण दूसरों की 'खुशी की खोज' की योग्यता को सीमित करता है। जेफर्सन का अधिकारों की समानता का सिद्धान्त, किसीके भी प्रति खास पक्षपात दिखाए बिना, व्यक्तिगत अधिकारों के सम्पत्तिगत अधिकारों से सघर्ष में आते ही व्यक्तिगत अधिकारों को प्रमुखता देता है। यद्यपि एक निश्चित समय में वर्तमान आर्थिक सम्बन्धों पर किए गए अल्प-विचारित आक्रमणों के विरुद्ध उनके मन्तव्यों को काफी उद्धृत किया गया है, फिर भी यह मानना एकदम विकृति ही होगा कि जेफर्सन के लोकतन्त्र में कोई ऐसी बात है जो आर्थिक अवस्थाओं में वह समता लाने के लिए राजनीतिक कार्यवाही की मनाही करती है, जिससे सभीके मुक्त विकल्प और मुक्त क्रियाशीलता के समान अधिकार को बनाए रखा जा सके।

मैंने खास मुद्दों पर जेफर्सन के विचारों का जिक्र कुछ विशिष्टता के साथ इसलिए किया है, क्योंकि उनमें इस बात के सबूत मिल जाते हैं कि अमरीकी लोकतांत्रिक परम्परा का स्रोत नैतिक है, तकनीकी, सूक्ष्म और सकीर्ण रूप में राजनीतिक अथवा पदार्थमूलक उपयोगितावादी नहीं। वह

नैतिक इसलिए है क्योंकि वह व्यक्तियों के लिए स्वतन्त्रता उपलब्ध करने की मानव-प्रकृति की योग्यता में आस्था रखती है। ऐसी स्वतन्त्रता दूसरे लोगों के प्रति सम्मान और प्रतिष्ठा और शोषण के बदले सहयोग पर निर्मित सामाजिक स्थिरता के आधार पर ही हो सकती है। क्योंकि यह परम्परा नैतिक है इसलिए इसपर किए गए आक्रमण चाहे वे कैसे भी, किसी भी ओर से, अन्दर या बाहर किसी भी दिशा से किए जाएं, नैतिक प्रश्नों से युक्त ही होंगे और उनका निपटारा सिर्फ नैतिक आधारों पर ही किया जा सकता है। हममें लोकतांत्रिक आदर्श जितनी दूर तक भी धुधला पड़ गया है, इस धुधलेपन का कारण और प्रभाव नैतिक ही है। यह धुधलापन उस अव्यवस्था की उत्पत्ति भी है और अभिव्यक्ति भी, जो एक प्राचीन व्यवस्था से नई पर आने के साथ-साथ पैदा होता ही है। इस नई व्यवस्था का सूत्रपात उस समय ही हो पाया था जब अवस्थाओं ने उसे उस आर्थिक सत्ता में निक्षिप्त कर दिया जो इतनी नई थी कि उसके लिए उचित तैयारी पहले नहीं हो पाई थी और उसने व्यक्तियों के पारस्परिक स्थिर सम्बन्धों को अस्त-व्यस्त कर डाला था।

न तो लोकतांत्रिक व्यवस्था की नूतनता को न्यून करने के प्रयत्नों से कुछ प्राप्त होनेवाला है. न ही पुरानी और लम्बे समय से चली आती परम्पराओं में आवश्यक परिवर्तन की संभावनाओं को कम करने से ही। हमारे पास अभी तक एक ऐसी सामान्य और सर्व-स्वीकृत शब्दावली तक नहीं है, जिसमें लोकतन्त्र की उपलब्धि के लिए आवश्यक नैतिक मूल्यों का क्रम-निर्णय किया जा सके। किसी समय शिक्षित ईसाई प्रदेशों में प्राकृतिक कानून की भाषा सार्वभौम के सिवाय सभी कुछ थी। इसे शक्ति देने-वाली स्थितियाँ समाप्त हो गईं। तब प्राकृतिक अधिकारों से अपील की गई और कुछ लोगों के अनुमानानुसार ये अधिकार इक्के-दुक्के व्यक्तियों में केन्द्रभूत थे, मूल अमरीकी विधि-रचना में नहीं। आज व्यक्ति के प्रति अपील मद्धिम पड़ गई है क्योंकि हम एक आस्थापूर्ण व्यक्ति को ढूँढ निकालने में असमर्थ हैं। यद्यपि हम यह मानने के लिए मजबूर हैं कि भिन्न और

उन्हे हुए बहुसंख्यक तत्त्वों की एक एकान्त परिणति के लिए मिलकर काम करके ही व्यक्ति की स्वतन्त्रता को बनाए रखा जा सकता है, पर हम नहीं जानते कि किसी स्वैच्छिक प्रयोजन के आधार पर उन्हें समन्वित कैसे किया जाए।

व्यक्तिवाद और निजी मुनाफे के लिए की जानेवाली व्यापारिक सक्रियता के बीच जो घनिष्ठ सम्बन्ध वर्तमान माना जाता है, उसने व्यक्तिवाद को एक विकृत अर्थ दे डाला है। फिर जो लोग पुराने धर्मशास्त्रीय विश्वासों को सामान्यतः माने जा रहे हैं उनमें भी व्यक्ति की पवित्रता से सम्बद्ध कल्पनापूर्ण विचारों और भावनाओं में आई दुर्बलता ने ठोस नैतिक पक्षस्थ से लोकतांत्रिक व्यक्तिवाद को विक्षुब्ध कर दिया है। आध्यात्मिक कहलानेवाली सभी वस्तुओं से सम्बद्ध प्रेरक शक्ति भी अब कम पड़ गई है। हम 'आदर्श' शब्द का प्रयोग हिचकिचाहट के साथ करते हैं और नैतिक शब्द पर भी व्यक्तियों के बीच पारस्परिक स्निग्ध सम्बन्धों के सीमित क्षेत्र से अधिक जोर डालने में हमें कठिनाई होती है। आज यह बात बहुत कुछ अविश्वसनीय लगती है कि जेफर्सन जैसे काम-काजी आदमी को भी निम्नलिखित तर्कवाद में गहरा सार कभी दीख पड़ा था, "आदमी को सामाजिक सम्बन्धों के लिए बनाया गया था, लेकिन सामाजिक सम्बन्धों को एक न्याय-भावना के बिना बनाए रखा नहीं जा सकता। तब तो मनुष्य की सृष्टि न्याय-भावना से युक्त ही हुई होगी।"

यदि लोकतन्त्र में हमारी एक अड़िग आस्था भी हो तब भी हम शायद उसकी अभिव्यक्ति उस प्रकार नहीं कर सकते जैसे जेफर्सन ने अपनी आस्था की है। "मुझे बस यही डर है कि हमारे प्रयोग का परिणाम यही होगा कि लोग एक अधिपति के बिना ही स्वयं को शासित करने के उपयुक्त शायद मान लिए जाएं। यदि इससे उलटी बात सिद्ध हो गई तो मुझे इस निष्कर्ष पर पहुँच जाना चाहिए कि या तो ईश्वर है ही नहीं या वह एक ईर्ष्यापूर्ण प्राणी है।" जेफर्सन का विश्वास कि लोगों के मध्य शासन का एकमात्र सगत उद्देश्य यह है कि "उसकी अधीनता में आई साधारण भीड़ के लिए

जितनी सम्भव हो खुशी की बड़ी से बड़ी अवस्था उपलब्ध की जाए," उसके इस विश्वास से सम्बन्धित है कि प्रकृति अथवा ईश्वर नत्त्वतः उदार है। उसने मनुष्यों को खुशी के लिए ही बनाया है, पर इस शर्त पर कि वे प्राकृतिक व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त करें और उस ज्ञान की मांगों को अपने कामों द्वारा पूरा करें। जो सब लोग राजनीतिक सस्थाओं को नैतिक आधार पर चलाने की समस्या का मुकाबला करने के लिए लोकतन्त्र के विचारों को कायम रखने और उनकी प्रगति करने के लिए कृतसंकल्प हैं, उनके लिए और उन नैतिक सिद्धान्तों के लिए जिनके द्वारा लोग मिलकर काम करते हुए उस व्यक्ति-स्वातन्त्र्य को उपलब्ध करेंगे, जिसका अर्थ होगा एक-दूसरे के साथ भ्रातृत्व सम्बन्ध स्थापित करना, भाषा का यह अप्रचलन इसे और भी अधिक अनुल्लङ्घ्य बना देता है। प्रकृति में, उसके कानूनों और अधिकारों में, मानव-हित करने के उसके उदार संकल्पों में हमारी आस्था जितनी ही कमजोर पड़ती जाएगी उतनी ही शीघ्र यह आवश्यक है कि उन विचारों पर आधारित आस्था हममें निर्मित हो जो बौद्धिक रूप में विश्वसनीय हों, जो वर्तमान आर्थिक अवस्थाओं के अनुसार हों, जो बहुत कार्य-प्रेरणा हममें भरे। कुछ उस जोश से हमें प्रेरित और नियोजित करे जो पहले धार्मिक विषयों के सम्बन्ध में मिलता था।

प्रकृति की भौतिक ऊर्जाओं पर मानव का अधिकार बहुत अधिक बढ़ गया है। नैतिक आदर्श के अनुसार, भौतिक प्रकृति पर मानव की सत्ता का उपयोग मानव पर मानव की सत्ता को अधिकाधिक कम करने और अन्ततः समाप्त करने में किया जाना चाहिए। मनुष्यों को दूसरे मनुष्यों के अधीन बनानेवाले, नये, अधिक ठोस, अधिक शक्तिशाली साधनों के इस्तेमाल को रोकने में इसका उपयोग किस प्रकार किया जाए? राष्ट्रों के बीच युद्ध और शान्ति की युगल समस्याएँ तथा मानवीय मुक्ति अथवा मानवीय गुलामी देनेवाले भावी वर्षों और पीढ़ियों के आर्थिक सम्बन्धों की समस्याएँ इसमें सम्मिलित हैं। एक शताब्दी पहले जिस शक्ति का सपना भी नहीं लिया जा सकता था, वह शक्ति पैदा हो गई है, और जब तक वैज्ञानिक जिज्ञासा

चलती रहती है इसके और बढ़ने की कोई सीमा बाधी नहीं जा सकती। यह एक निश्चित तथ्य है। जो चीज अभी तक अनिश्चित है वह है कि हम इसका क्या उपयोग करनेवाले हैं। यह एक शक्ति है, यह इस बात से भी प्रकट है कि यह विद्युत् की है आणविक है रासायनिक है। इसका क्या किया जाएगा, यह एक नैतिक प्रश्न है।

भौतिक परस्पर-निर्भरता इतनी अधिक बढ़ गई है कि इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। उद्योगों में श्रम-विभाजन की प्रत्याशा तो थी और उसे सन्तोष के साथ ग्रहण भी किया गया था। लेकिन आज की स्थिति में यही अनुपात सबसे कम जोरदार वस्तु बन गया है। व्यक्तियों की जीविका, उनका जीवन, उनकी सुरक्षा और सम्पन्नता सब अब ससार के दूसरे हिस्से में घटनेवाली घटनाओं से प्रभावित होती है। इन घटनाओं के पीछे वर्तमान ताकतों को वह छू नहीं सकता, उन्हें प्रभावित नहीं कर सकता। वह शायद इतना ही कर सकता है कि राष्ट्रों के विरुद्ध राष्ट्रों के युद्ध में सम्मिलित हो जाए। ऐसा लगता है, हम ऐसे ससार में रह रहे हैं जहाँ नई स्थितियों द्वारा उत्पन्न समस्याओं का समाधान राष्ट्र अपनी ओर अधिकाधिक खींचकर, अपनी स्वतन्त्र राष्ट्रवादी स्वायत्तता का अधिकाधिक आत्यन्तिक आरोप करके ही करते हैं। हालांकि निरकुशता प्राप्त करने की दिशा में वे जो कुछ भी करते हैं वह युद्ध की स्थिति को छोड़कर दूसरे राष्ट्रों के साथ उसके घनिष्ठतर सम्बन्धों तक ही उसे सदा ले जाता है।

वर्तमान अवस्थाओं में युद्ध उन देशों तक को, जो स्वयं को सर्वाधिक लोकतन्त्रात्मक घोषित करते हैं, सत्तावादी और समग्रवादी बन जाने पर विवश करता है। १९१४-१८ के विश्वयुद्ध के फलस्वरूप अलोकतन्त्रवादी इटली और जर्मनी फासिस्ट समग्रवादी और अलोकतन्त्रवादी रूस बाल-शेविक समग्रवादी बन गया और इन्होंने इस देश में राजनीतिक, आर्थिक और बौद्धिक प्रतिक्रिया को बढ़ावा दिया। भौतिक परस्पर-निर्भरता को नैतिक-मानवीय परस्पर-निर्भरता में बदल देना लोकतन्त्रीय समस्या का ही एक

अंग है। और इतने पर भी, आज दिन भी यही कहा जाता है कि लोकतन्त्रीय देशों की मुक्ति का मार्ग युद्ध ही है।

स्वतन्त्रता की आवश्यक शर्तों—सुरक्षा और हिफाजत को दूसरों के ससर्ग में ही लोग प्राप्त कर सकते हैं और तब कुशलता-प्राप्ति के साधन के रूप में जिस सघटन का रूप ये ससर्ग ग्रहण करते हैं वही इसमें शामिल लोगों की स्वतन्त्रता को सीमित कर देता है। पिछले सौ वर्षों में सघटन का महत्त्व इतना बढ़ गया है कि यह शब्द सस्था और समाज के पर्यायवाची के रूप में काफी सामान्य बन चुका है। सघटन, अधिक से अधिक, वह यन्त्र है जिसके माध्यम से ससर्ग सक्रिय होते हैं। तादात्म्य प्रमाण है कि किस सीमा तक सेवक स्वामी बन गया है और साधनों ने, जिसके लिए वे अस्तित्व में आए थे, उस लक्ष्य से उसका पद छीन लिया है। धर्मसंकट यह है कि व्यक्तित्व को अपने विकास और अपनी स्थिति के लिए ससर्ग की आवश्यकता है और ससर्ग को अपने तत्त्वों के नियमन और सयोजन की अर्थात् सघटन की आवश्यकता है क्योंकि उसके बिना वह रूपहीन और शक्तिशून्य है। लेकिन आज हमारे पास एक प्रकार का कोमल चमड़ीवाला सघटन है, जिसके अन्दर कोमल व्यक्ति और बाहर सख्त, सकुचनशील खोल रहता है। व्यक्ति अपनी इच्छा से उन ससर्गों में प्रवेश करते हैं, जो व्यवहारतः सघटनों के सिवाय और कुछ नहीं रहे हैं और तब वे चाहे या न चाहे, जिन परिस्थितियों के अधीन वे काम करते हैं वे, जो वे करते हैं उन्हें अपने वश में कर लेती हैं।

जो व्यक्ति सरकार द्वारा आरोपित व्यूह-रचना के खतरों के प्रति अत्यन्त जागरूक रहते हैं वे उन लाखों-करोड़ों के बारे में अन्धकारग्रस्त हैं जिनके व्यवहार को उस आर्थिक पद्धति ने नियन्त्रित कर रखा है जिसके हस्तक्षेप के बिना उन्हें जीविका तक नहीं मिल सकती। अन्तर्विरोध इसलिए और अधिक प्रकट बन जाता है क्योंकि नये सघटन अधिकांशतः स्वतन्त्रता के नाम पर ही निर्मित किए गए थे और कम से कम आरम्भ में स्वैच्छिक आधार पर उन्हें बनाया गया था। लेकिन जिस ढंग का सहकर्म इनसे फलित हुआ है वह मशीन के हिंस्रों के सहकर्म जैसा इतना अधिक है कि

वह उस सहयोग का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता जो स्वतन्त्रता को अभिव्यक्त भी करता है और उसे कुछ देता भी है। लोकतन्त्रीय समस्या का यह कोई छोटा अंश नहीं है कि ऐसे ससर्ग कैसे पैदा किए जाएं जिनके हिस्सों का क्रम वह शक्ति भी दे दे जो कि सहज स्थिरता में से आती है और परिवर्तन के प्रति एक लचनशील प्रतिक्रिया को भी जो बढ़ावा दे।

अन्त में, इस संक्षिप्त सर्वेक्षण में मानवीय प्रकृति और भौतिक प्रकृति के सम्बन्धों की समस्या भी आई है। प्राचीन जगत् ने इस समस्या का हल सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्त के स्तर पर प्रकृति की अन्तरिक्षीय सम्भावनाओं के भीतर मानवता में मिल सकनेवाले उच्चतम और श्रेष्ठतम कोटि के आदर्शों एवं नैतिक गुणों से उसे सम्पन्न बनाकर कर लिया था। धर्म-सिद्धान्तों और चर्च के कर्मकाण्डों ने इस सूक्ष्म सिद्धान्त को पश्चिमी दुनिया के लोगों के जीवन में एक सीधा महत्त्व दे डाला। कारण कि इसने उन व्यावहारिक माध्यमों को प्रदान किया जिनके द्वारा विश्व की सर्जक और पालक शक्ति इस दुनिया और अगली दुनिया में व्यक्तियों की सहायता के लिए आती है, ऐसा माना गया। भौतिक विज्ञान की उन्नति ने प्राचीन सिद्धान्त के इस बौद्धिक आधार के प्रति लोगों की निरन्तर बढ़ती सख्या को सशयशील बना दिया। विज्ञान और धर्म के विरोध के नाम से चलनेवाली अव्यवस्था ने सिद्ध कर दिया है कि उन नीवों में विच्छेद आ गया है जिनपर कि हमारी संस्कृति टिकी है। यह विभाजन ज्ञानरूप विचारों और उन विचारों के बीच आया है जो भावनात्मक और कल्पनात्मक हैं और आचरण को सीधा प्रेरित करते हैं।

नैतिक पक्ष में इस गड़बड़ी को उन लोगों ने बहुत ही अधिक बढ़ावा दिया है जो बौद्धिक कारणों से इस अव्यवस्था से बहुत दूर हैं। यह नये भौतिक विज्ञान के व्यावहारिक उपयोग के प्रभाव-परिणामों के रूप में प्रत्येक तक पहुँच जाती है। वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और विवरण की वर्तमान व्यवस्था के सभी स्थूल अंग नये भौतिक विज्ञान की ही देन हैं, जबकि विज्ञान के विशिष्ट मानवीय तत्त्व अभी तक भी उसके जन्म से

पहले से सस्थित आदतो और विश्वासो के द्वारा ही आज भी निर्धारित किए जाते हैं। लोकतन्त्र इस फटाव को हल करने में यदि अभी तक भी सफल नहीं हो सका है तो इसमें निराशा की कोई बात नहीं है। शर्त यही है कि मानवीय सम्भावनाओं और आदर्शों को एक ओर तो विज्ञान की आत्मा और उसके तरीको से जोड़ा जाए और दूसरी ओर उसे आर्थिक पद्धति की कार्य-प्रणाली से सम्बद्ध किया जाए। हस्तक्षेप न चाहनेवाले व्यक्तिवाद ने बहुत काफी समय तक समस्या को देखे जाने तक से रोके रखा। नई आर्थिक हलचल को उसने इस रूप में लिया जैसे कि वह उन शक्तियों की एक साधारण अभिव्यक्ति हो जो मानवीय ढाँचे में मूलतः निहित थी और अब हाल ही में स्वतन्त्र सक्रियता के लिए उन्मुक्त की गई है। वह यह देखने में विफल रहा कि जो भारी विस्तार हो रहा है वह वास्तव में भौतिक शक्तियों की उन्मुक्ति के कारण ही हो रहा है; और जहाँ तक मानवीय कार्य और मानवीय स्वतन्त्रता का सम्बन्ध है, एक समाधान नहीं, इस प्रकार एक समस्या ही खड़ी हुई है। समस्या यह कि नूतन भौतिक शक्तियों का प्रबन्ध और दिशा-निर्देशन किस प्रकार किया जाए कि वे मानवीय सम्भावनाओं की उपलब्धि में योगदान दे सकें।

जो आन्दोलन समस्या को पकड़ने में ऐसे सर्वनाशक रूप में विफल रहा, उसके अनिवार्यतः टूट जाने ने जिस प्रतिक्रिया को जन्म दिया उसने विषम परिणाम पैदा किए हैं। उसकी विषमता हमारे जीवन की वर्तमान गड़बड़-गड़बड़ स्थिति का ही एक अंग है। एक सुरक्षित और मुक्त जीवन के भौतिक साधनों का उत्पादन एक त्वरित गति से असीमित रूप में बढ़ गया है। यह आश्चर्यजनक नहीं है कि एक बड़ा वर्ग इन सब लाभों का मिलने का श्रेय वास्तविक और ठोस रूप में उस आर्थिक सत्ता को देता है जिसके अधीन वे मिले हैं और उस वैज्ञानिक ज्ञान की उपेक्षा कर देता है जो प्राकृतिक ऊर्जाओं के भौतिक नियन्त्रण का स्रोत है। यह वर्ग बड़ा है। यह न सिर्फ़ उनसे निर्मित है जो इस पद्धति का तात्कालिक लाभ पाते हैं, बल्कि इससे भी अधिक बहुसंख्यक उन लोगों से बना है जिनको आशा है कि वे अथवा

कम मे कम उनके बच्चे इसके लाभो मे पूरा हिस्सा बटाएंगे । मुक्त भूमि द्वारा दिए गए अवसरो, विशाल अप्रयुक्त प्राकृतिक साधनो और बढ्दमूल वर्गभेदो की अनुपस्थिति के कारण (यूरोपीय देशो मे सामन्तवाद की कानूनन समाप्ति के बावजूद ये भेद अभी तक वर्तमान है) यह वर्ग इस देश मे विशेष रूप से बडा है । इसका प्रतिनिधित्व वे लोग करते है जो इस देश मे, रहन-सहन के उच्चतर स्तर पर निगाह जमाए है और वे भी करते है जो इस देश द्वारा प्रस्तुत प्रगति के बृहत्तर अवसरो के प्रति उन्मुख रहे है । सक्षेप मे, अपने दोनो प्रकार के अवयवो-समेत यह वर्ग प्रत्यक्ष-लब्ध वास्तविक लाभो से ही प्रभावित हुआ है । इनमे एक प्रकार की अन्धी और मर्म-स्पर्शी आस्था है कि अधिक या कम सहज रूप मे तब तक सुधार होता चला जाएगा जब तक वे और उनके बच्चे भी उसका लाभ नही उठाने लगते ।

फिर एक बहुत छोटा वर्ग ऐसा है, जो ठोस रूप मे हमारी मुट्ठी मे आए भौतिक साधनो द्वारा प्रस्तुत असीम सम्भावनाओ के प्रति बहुत, शायद बहुत अधिक संवेदनशील है, लेकिन हमारी विफलता के प्रति जो अत्यधिक जागरूक है । यह वर्ग वर्तमान दुखों, क्रूरताओ, शोषणो और निराशाओ को ही देखता है । इस वर्ग की कमजोरी भी यही है कि यह भी वर्तमान परिस्थितियो के पैदा होने में नई वैज्ञानिक पद्धति की जिम्मेदारी को महसूस करने में विफल रहा है । वर्तमान बुराइयो के कारणो को विवरण और विश्लेषण के साथ निर्धारित करने और उन्हे मिटाने के साधनो को खोजने के लिए वैज्ञानिक पद्धति के और अधिक विशद और सतत प्रयोग की आवश्यकता को भी इसने मान्यता नही दी है । जिक्र किया गया सामूहिक मानसिक रुख मामूली परिवर्तन के साथ सामाजिक मामलो मे भी निरन्तर मिल रहा है । यह महत्वाकांक्षी और अतिव्याप्त विश्वासो और नीतियो के निर्माण का कारण बनता है । मानवीय आदर्श वास्तव मे विशद है । जहा से वर्तमान परिस्थितियो को परखा जाए और परिवर्तन की दिशा का निर्णय किया जाए, ऐसे एक केन्द्रबिन्दु के रूप में यह बहुत अधिक अन्तर्भूतात्मक नही बन सकता । लेकिन परिवर्तन लाने की समस्या साधनो

की ओर अनथक ध्यान देने से सम्बन्ध रखती है और साधनों का निर्णय,, जिन रूपों में हर समस्या सामने आती है, उन परिस्थितियों के निश्चित विश्लेषण द्वारा ही किया जा सकता है। स्वास्थ्य एक विशद और अति-व्याप्त आदर्श है, लेकिन इसकी ओर प्रगति उतनी ही सीमा तक हो सकी है जितनी सीमा तक राम-बाण ओषधियों की खोज त्यागी गई है और जिज्ञासा को गड़बड़ियों के निर्धारण और उनके निदान के लिए साधनों की प्राप्ति की दिशा में मोड़ा गया है। इस वर्ग का प्रतिनिधित्व अपने आत्यन्तिक रूप में वे लोग करते हैं जिनका विश्वास है कि एक अनिवार्य ऐतिहासिक नियम सभी घटनाओं के क्रम को निमन्त्रित करता है। अतः जो कुछ भी जरूरी है वह जान-बूझकर किया गया अनुकूल अभिनय ही है। अतः वह नियम, जिसके अधीन वर्ग-सघर्ष अपनी निजी तर्क-विद्या के जोर से अपने से एकदम उलट चीज पैदा करता है, श्रेष्ठतम नियम तथा कार्य की नीतियों और पद्धतियों के निर्धारण का एकमात्र निर्देशक बन जाता है।

यदि भौतिक शक्तियों को मानवीय उद्देश्यों की पूर्ति करनी है तो मानव-प्रकृति का अधिक निश्चित ज्ञान चाहिए—इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता। लेकिन यह मानना गलत होगा कि निज का यह ज्ञान मानवीय शक्तियों के नियन्त्रण की योग्यता हमें उसी प्रकार दे देता है जैसे भौतिक विज्ञान ने भौतिक शक्तियों के नियन्त्रण के योग्य हमें बना दिया है। इसमें वही भ्रान्ति है जिससे वे लोग ग्रस्त हैं जो मान बैठे हैं कि हमारे हाथ में आई भौतिक शक्तियाँ मानवीय प्रगति और सम्पन्नता निश्चय ही प्रदान करेंगी। मानव-प्रकृति का एक अधिक सही विज्ञान उन माध्यमों को, बोधगम्य रूप में, शायद गुणित ही करेगा जिनके द्वारा कुछ मानव-प्राणी दूसरे मानव-प्राणियों को अपने निजी लाभ के लिए इस्तेमाल करते हैं। मूल्यों और उद्देश्यों के प्रश्न के जायजे में समस्या के नैतिक पक्ष को न ले सकना एक शताब्दी पहले के उन सिद्धान्तवादियों की भ्रान्ति में—यद्यपि विरोधी सिरे से—वापस लौट जाना ही सूचित करता है, जो मानते हैं कि मानवीय जरूरतों और उद्देश्यों की मुक्त अर्थात् राजनीतिक दृष्टि से अनवरुद्ध

अभिव्यक्ति सामाजिक सम्पन्नता, प्रगति और सामंजस्य को लाने में सहायक होगी। यह उस मार्क्सवादी विचारणा की ही सहायक भ्रान्ति है जिसके अनुसार इतिहास का एक आर्थिक अथवा 'पदार्थवादी' तर्कवाद है जिसके द्वारा एक निश्चित रूप से वाछनीय (और उस अर्थ में नैतिक) उद्देश्य को मूल्यों के चुनाव और उनकी उपलब्धि के प्रयास के बिना ही प्राप्त किया जा सकेगा। जैसा कि मैंने कुछ वर्ष पहले लिखा था, "मानव-विज्ञान का भौतिक विज्ञान के साथ सम्मिश्रण एक अन्य प्रकार के परमवादी तर्क को, अर्थात् एक प्रकार के भौतिक परमवाद को ही प्रस्तुत करता है।"

कुछ भी हो, सामाजिक घटनाएं मानव-प्रकृति और सांस्कृतिक अवस्थाओं के बीच क्रिया-प्रतिक्रिया का परिणाम ही निरन्तर रहेगी। इसलिए प्राथमिक और मूलभूत प्रश्न सदा ही यह रहेगा कि हम किस प्रकार के सामाजिक परिणाम सबसे अधिक चाहते हैं। मानव-प्रकृति का सुधरा हुआ विज्ञान अब अनुपस्थित उन साधनों को हमारे हाथ में दे देगा जिनके द्वारा समस्या का रूप-निर्णय और उसके समाधान का प्रभावी प्रयत्न किया जा सकेगा। लेकिन सिवाय इसके कि यह विज्ञान के साहस के प्रति हमारे सम्मान को बढ़ाएगा और इस प्रकार वैज्ञानिक पद्धति बनकर प्रकट होने-वाली प्रवृत्तियों को व्यक्तियों की प्रकृति में समाविष्ट करेगा, उन्हें फैला-एगा और गहरा बनाएगा, हो सकता है, यह वैसी ही उलझन भी पैदा करे जैसी सुधारे हुए भौतिक विज्ञान ने पैदा की है। जो भी चीज सामाजिक समस्या की मूलतः नैतिक प्रकृति को धुंधलाती है वह हानिकारक है, भले ही वह सिद्धान्त के भौतिक अथवा मनोवैज्ञानिक किसी भी पक्ष से उत्पन्न हो रही हो। जो भी सिद्धान्त मूल्यों के चुनाव और चुने हुए मूल्यों के लिए इच्छाओं और भावनाओं का समग्र करने के काम को समाप्त करता है अथवा उसे धुंधलाता भी है, वह निर्णय और काम की व्यव्यवगत जिम्मेदारी को कमजोर करता है। इस प्रकार यह उन प्रवृत्तियों को पैदा करने में सहायक बनता है जो समग्रवादी सरकार का स्वागत करती हैं और उसे घुंष्ट बनाती हैं।

मैंने मोटी रूपरेखा के रूप में लोकतांत्रिक स्वतन्त्रता की सेवा में सन्नद्ध सस्कृति की समस्या के कुछ असाधारण पक्षों का जिक्र किया है और कठिनाइयों और रुकावटों पर बल दिया है। यह बल इस तथ्य का परिणाम है कि समस्या को प्रस्तुत किया गया है। समस्या पर बल इस विश्वास के कारण पड़ा है कि घटनाओं द्वारा उद्घाटित कितनी ही कम-जोरियाँ मानवता को लोकतांत्रिक मार्ग पर डाल देने के कार्य की विशालता को पहचानने में रही विफलता से सम्बन्धित है। हजारों अलोकतांत्रिक समाजों की पिछली भूमिका के कारण लोकतन्त्र के पहले के वकील ने समस्या को बहुत ही अधिक सरल बनाकर पेश कर दिया। यह स्वाभाविक भी था। कुछ समय तक तो यह सरलीकरण निस्सन्देह लाभदायक बना रहा। बहुत लम्बा खिंचने पर अब वह हानिप्रद बन गया है।

यदि लोकतांत्रिक आन्दोलन को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रखा जाए तो समस्या के आयाम और उसकी गहराई की मान्यता निरुत्साहित अथवा परेशान नहीं करती। जिन विचारों के द्वारा इसने स्वयं को व्यवस्थित किया उनके पीछे एक लम्बा इतिहास है। उनके स्रोत को हम हेलेनिक मानववाद और ईसाई विश्वासों में खोज सकते हैं और अत्याचार के किसी विशिष्ट रूप के विरुद्ध किसी खास संघर्ष के पीछे इन विचारों के इस या उस विशेष पक्ष को उपलब्ध करने के बार-बार के प्रयास भी हमें देखने को मिलते हैं। उचित चुनाव और अनुक्रमण के द्वारा इस विचार के पक्ष में यह स्थापना भी हम कर सकते हैं कि पूरा पिछला इतिहास स्वतन्त्रता-प्राप्ति का प्रथमतः अचेत और फिर सचेत एक आन्दोलन ही था। इतिहास को अधिक गम्भीर रूप में देखने से पता लगता है कि उन्नीसवीं शताब्दी में लोकतन्त्र का तेज़ी से फैलना और उसकी पूर्ण विजय घटनाओं के एक बहुत ही भाग्यपूर्ण संघटन का परिणाम था। यह निष्कर्ष कि घटनाओं के एक दुर्भाग्यपूर्ण संघटन के कारण अब उसे विनाश का खतरा पैदा हो गया है, निराशाजनक नहीं होना चाहिए। निष्कर्ष यह निकलना चाहिए कि जो चीज़ पहले कम-अधिक बाह्य और आकस्मिक तरीके से उपलब्ध की गई

थी उसे अब जाने-बूझे और विवेकपूर्ण प्रयास द्वारा प्राप्त करना और बनाए रखना है।

इस प्रकार प्रस्तावित यह मुकाबला इस तथ्य की ओर ध्यान दिलता है कि मानव-गणियो में निहित ज़िद्दी प्रवृत्तियाँ उन परम्पराओं, रिवाजों और सस्थाओं ने बनई थी जो तब वर्तमान थी जब लोकतन्त्र नहीं थे; जब वस्तुनः लोकतान्त्रिक विचारों और आकांक्षाओं का गला जन्मते ही घोट दिया जाता था। इन मूलभूत संस्कारों का चलते रहना, एक ओर, लोकतन्त्र पर आकस्मिक आक्रमण के कारणों का पता बतलाता है। यह प्राचीन भावनात्मक और बौद्धिक आदतों की ओर लौट जाना है। अथवा, लौट जाना यह उतना नहीं है जितना उन प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति है जो पूरे समय वर्तमान रही पर कम-अधिक ढकी-ढबी रही। उन ही ज़िद भी वर्तमान समस्या की गहराई और फैलाव को स्पष्ट करती है। लोकतन्त्र के लिए सवर्ष को उतने ही सारे क्षेत्रों में लाया जाना है जितने कि संस्कृति के पक्ष है—राजनीतिक, आर्थिक, अन्तर्गोष्ठीय शैक्षिक, वैज्ञानिक, कलात्मक और धार्मिक। यह तथ्य कि आज हमें एक ऐसे निश्चित प्रयोजन को पूरा करना है जो पहले समय में कम-अधिक ईश्वर की देन था, समस्या को नैतिक बना देता है। उसे नैतिक आधार पर ही हल किया जाना चाहिए।

हम जो अमरीका में रहते हैं, हमारा मध्यमियाँ परिस्थितियों का भाग्यपूर्ण समागम, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इस तथ्य से प्रकट है कि हमारे पूर्वजों ने स्वयं को एक नई दुनिया में पाया था। भौतिक विस्थापन के धक्के ने पुरानी प्रवृत्तियों में एक बहुत बड़ा परिवर्तन ला दिया था। लम्बी शताब्दियों के संस्कारों की उपज विचार और अनुभूति की आदतें ढीली पड़ गईं। कम गहरे स्वभाव छूट गए। इस प्रकार नई सस्थाएँ निर्मित करने का काम बहुत अधिक आसान बन गया। इस तरह यह पुनर्व्यवस्था प्रवृत्ति में एक सामान्य नमनशीलता पैदा करने में प्रधान कारण बन गई। और इसने, गृहयुद्ध को छोड़कर, न्यूनतम बाध्य सवर्ष के दिना और हिंसा की परम्परा के बावजूद एक सद्भाव के साथ परिवर्तन को सहन करने के

योग्य हमें बना दिया । ऐसे ही परिणामों के कारण भौगोलिक नई दुनिया मानवीय अर्थ में एक नई दुनिया बन सकती है । और अधिकांशतः इसी कारण स्थिति ऐसी बन गई है कि जिन अधिकतर बातों के बारे में हम आत्मतृप्त और आत्मप्रशंसक रहे हैं उन्हें, एक व्यक्त नियति के विकास-फल के रूप में प्राप्त करने के बदले, विचार और प्रयास से ही अब हमें उपलब्ध करना है ।

वर्तमान परिस्थितियों में पुरानी और नई नैतिक दुनियाओं का संघर्ष लोकतन्त्र के लिए संघर्ष का सार बन गया है । हमारे लिए यह बिलगाव-वाद का प्रश्न नहीं है; यद्यपि जिन भौतिक तत्त्वों ने यूरोप की परस्पर युद्ध-रत महत्वाकांक्षाओं से हमारे भौतिक बिलगाव को सम्भव बनाया है, सकट के समय वे वाछनीय ही हैं । यह संघर्ष शस्त्रों का संघर्ष नहीं है । यद्यपि यह प्रश्न कि हम यूरोप की युद्ध-भूमियों पर जाकर उन लक्ष्यों के लिए, जो इस देश के लक्ष्यों से भिन्न हैं, युद्ध करें या न करें, इस निर्णय पर वज्रन डालेगा कि हम अपनी ही ज़मीन पर अपने ही युद्ध को जीतते हैं या हारते हैं । जिन कारणों का लोकतन्त्र की सुरक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं है, बल्कि काफी अधिक आर्थिक लाभों से है, उनका सहारा लेकर अलग रह जाना ठीक वैसा ही है जैसा कि लोकतन्त्र के लिए लड़ने की भ्रान्ति में फँसकर उसमें हिस्सा लेना है ।

वह संघर्ष, जिसका सम्बन्ध उस लोकतन्त्र से है, जिसके साथ इतिहास ने हमें बाँध दिया है, हमारी अपनी सस्थाओं और प्रवृत्तियों में ही चलना है । इसे लोकतांत्रिक तरीकों के प्रयोग को बढ़ावा देकर ही जीता जा सकता है । ये तरीके हैं—परामर्श, समझाना-बुझाना, बातचीत, सूचना देना और सहयोगपूर्ण समझ-बूझ । इनसे हमारी अपनी राजनीति, उद्योग, शिक्षा अर्थात् सामान्यतः हमारी संस्कृति, लोकतांत्रिक विचारों की एक साधिका और उनकी एक विकासशील अभिव्यक्ति बन सकती है । सैनिक शक्ति का सहारा लेना पहला निश्चित चिह्न है कि हम लोकतांत्रिक जीवन-पद्धति के लिए संघर्ष करना त्याग रहे हैं । और इसका भी कि पुरानी दुनिया नैतिक

रूप में वैसे ही जीत गई है जैसे कि भौगोलिक रूप में और अपने आदर्शों और विचारों को वह हमपर लादने में सफल हो गई है।

यदि कोई एक निष्कर्ष ऐसा है जिसकी ओर मानवीय अनुभव अबूझ इशारा करता है तो वह यह है कि लोकतांत्रिक लक्ष्य अपनी उपलब्धि के लिए लोकतांत्रिक तरीकों की माग करते हैं। सत्तावादी तरीके अब नये रूपों में हमारे सामने पेश होते हैं। वे एक वर्गहीन समाज में स्वतन्त्रता और समानता के चरम लक्ष्यों को पुष्ट करने का दावा करने हुए आते हैं। अथवा वे एक समग्रवादी सत्ता से लड़ने के लिए समग्रवादी सरकार को ग्रहण करने की सिफारिश करते हैं। वे स्वयं को किसी भी रूप में पेश करें, बहुलाने-फुसलाने की उनकी ताकत उनके इस दावे में निहित है कि वे आदर्श लक्ष्यों को पुष्ट कर रहे हैं। हमारी पहली सुरक्षा यह समझ लेने में है कि हमारे प्रस्तावित लक्ष्यों के अनुरूप तरीकों के हमारे सामान्य जीवन के हर स्तर में, धीमे-धीमे दिन-प्रतिदिन प्रवेश कर लेने और उनके अन्दर तक संक्रामक रूप में रिस जाने में ही लोकतन्त्र की सेवा है। एकसत्तावादी, समग्रवादी, स्वेच्छाचारी पद्धतियों का अपना मानव-स्वतन्त्रता को धोखा देना ही है, भले ही किसी भी रूप में वे अपने को प्रकट करें। अमरीकी लोकतन्त्र इसी रूप में विश्व की सेवा कर सकता है कि वह अपने निजी जीवन के निर्वाह में बहुल, आशिक और प्रायोगिक तरीकों की सामर्थ्य को प्रदर्शित करे जिससे कि उस स्वतन्त्रता की सेवा में, जो सहयोगवादी है और उस सहयोग की सेवा में जो कि स्वैच्छिक है, मानव-प्रकृति की शक्तियाँ निरन्तर वर्द्धमान रूप में उन्मुक्त होती रह सकें।

अन्तिम परिणति के बारे में अपनी आत्मतृप्ति को सही सिद्ध करने के लिए समय से अपील करने का हमें कोई अधिकार नहीं है। हमें हर अधिकार है कि हम मानव-इतिहास के लम्बे, अलोकतन्त्रीय और लोकतन्त्र-विरोधी गति-क्रम का और, लोकतन्त्र के नयेपन का हवाला देकर सामने प्रस्तुत कार्य की विराटता की छाप को अंकित करें। अनुभव का नयापन स्वयं यह स्पष्ट करता है कि समस्या को हमारे सामान्य दैनिक जीवन के

किसी एक तत्त्व, रूप अथवा पक्ष में सीमित कर देना असम्भव है। हमें हर अधिकार है कि हम विशेष अवस्था में, घटनाओं को एक अस्थायी, ऐहिक दृष्टि से देखने के फलस्वरूप पैदा होनेवाले निराशावाद से अपनी रक्षा करने के लिए समय की लम्बी और धीमी पद्धति का सहारा लें। हमें यह जानना चाहिए कि लक्ष्यों की साधनों पर निर्भरता ऐसी है कि एकमात्र चरम परिणाम वही परिणाम तो है जो आज, कल, अगले दिन, और उससे अगले दिन, आनेवाले वर्षों और पीढ़ियों में उपलब्ध किया जाता है। सिर्फ इसी प्रकार हमें निश्चय हो सकता है कि अपनी समस्याओं का मुकाबला, जिस क्रम से एक-एक करके विवरणपूर्वक वे पैदा होती हैं, उसीके अनुसार, उन सभी साधनों के द्वारा हम कर सकते हैं जो सहयोगी कार्य में लगने-वाली सामूहिक बुद्धि ने हमें दिए हैं। अन्त में भी और आरम्भ में भी लोक-तान्त्रिक तरीका मूलभूत रूप में उतना ही सरल और उतना ही आत्यन्तिक कठिन है जितना कि उस एक सतत वर्तमान नई सड़क का जोशपूर्वक, निरुत्साहित हुए बिना अनवरुद्ध निर्माण करते जाना जिसपर हम सभी एक-साथ चल सकते हैं।

□ □ □